ईश्वरीय सृष्टि का अद्भुत चमत्कार

एक पुरातन ऋषि का दिव्य जन्म

१४ सितम्बर सन् १९४२, में उत्तर-प्रदेश के गाजियाबाद जिले के, ग्राम खुर्रमपुर-सलेमाबाद में एक विशेष बालक का जन्म हुआ। बालक जन्म से ही एक विलक्षणता से युक्त था। और विलक्षणता यह कि जब भी यह बालक सीधा, श्वासन की मुद्रा में, कुछ अन्तराल लेट जाता या लिटा दिया जाता, तो उसकी गर्दन दायें-बायें हिलने लगती, कुछ मन्त्रोच्चारण होता और उसके उपरान्त विभिन्न ऋषि-मुनियों के चिन्तन और घटनाओं पर आधारित ४५ मिनट तक, एक दिव्य प्रवचन का प्रसारण होता। पर एक अपठित ग्रामीण बालक के मुख से ऐसे दिव्य प्रवचन सुनकर जन-मानस आश्चर्य करने लगा, बालक की ऐसी दिव्य अवस्था और प्रवचनों की गूढ़ता के विषय में कोई भी कुछ कहने की स्थिति में नहीं था। इस स्थिति का स्पष्टीकरण भी दिव्यात्मा के प्रवचनों से ही हुआ। कि यह आत्मा सृष्टि के आदिकाल से ही विभिन्न कालों में, शृङ्गी ऋषि की उपाधि से विभूषित और सतयुग के काल में आदि ब्रह्मा के शाप के कारण इस युग में जन्म लेने का कारण बनी। इस जन्म में अपठित रहने की स्थिति में जैसे ही यह शरीर श्वासन की मुद्रा में आता तो कुछ अन्तराल बाद इस दिव्यात्मा का पूर्व जन्मों का ज्ञान उद्बुद्ध हो जाता और अन्तरिक्ष में उपस्थित सूक्ष्म शरीरधारी दिव्यात्माओं के समक्ष एक सत्संग सदृश्य स्थिति बन जाती जिसमें इस महान आत्मा का सूक्ष्म शरीरधारी आत्माओं के लिए प्रवचन होता। जिसमें इस आत्मा के पूर्व जन्मों के शिष्य महर्षि लोमश मुनि पूज्य महानन्द के प्रवचन भी होते। क्योंकि इस दिव्यात्मा का स्थूल शरीर यहां मृत्यु लोक में स्थित होने के कारण वहां सत्संग में दिये जाने वाला दिव्य प्रवचन इस शरीर के माध्यम से यहाँ उपस्थित जन-मानस को भी सुनाई देते हैं। इन प्रवचनों में ईश्वरीय सृष्टि का अद्भुत रहस्य समाया हुआ है, जो किसी भी मनुष्य को, समाज और राष्ट्र को उच्च कोटि का जीवन जीने का कारण पैदा करने का सामर्थ्य रखते हैं। -शृङ्गी ऋषि वेद विज्ञान प्रतिष्ठान

१ याग में परिणत हो जाएं २० ०३ १९९०

जीते रहो, देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहां परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप है, याग उसका आयतन है, उसका गृह है, उसका सदन है, और वह उसी में वास कर रहा है, तो इसीलिए परमपिता परमात्मा को यज्ञोमयी स्वरूप माना गया है। परम्परागतों से ऋषि-मुनि, उस महान यज्ञोमयी स्वरूप का वर्णन करते रहे हैं विचारवेत्ता बड़े ऊर्ध्वा में उड़ाने उड़ते रहे हैं, इसीलिए परमपिता परमात्मा को यज्ञोमयी स्वरूप माना है जितना भी ये संसार है अथवा ब्रह्माण्ड है एक प्रकार के तारतम्य से मानो वो कटिबद्ध है और परमात्मा इस प्रकार रहता है जैसे मानो देखो, जैसे माला में धागा होता है ओर उस धागे में में नाना मनके पिरोए जाते हैं तो वह सूत्र की भांति रहता है। तो इसीलिए इस ब्रह्माण्ड रूपी यज्ञशाला का वे परमपिता परमात्मा ही तो मानो सूत्र कहलाता है। और उसी में हम पिरोया हुआ है उसी में रत्त हो रहा है, तो इसीलिए हम परमपिता परमात्मा को यज्ञोमयी स्वरूप और स्वीकार करते हम अपने में आराधना करें, और उसको अपना आराध्य देव स्वीकार करते हुए, उस परमपिता परमात्मा के उस संसार रूपी यज्ञशाला को, हम प्रायः अपने में विचार-विनिमय करने लगें। मेरे प्यारे! वे परमपिता परमात्मा इस ब्रह्माण्ड का स्वयं ब्रह्मा है, क्योंकि ये ब्रह्माण्ड उसका आयतन है। उसका गृह है, उसका सदन है। और उसी में वह वास करता रहता है। तो वे परमपिता परमात्मा एक अनन्तमयी धारा में रत्त रहने वाला है इसीलिए परमपिता परमात्मा को ब्रह्मा के रूप में वर्णित किया गया है। आत्मा यज्ञमान है। और यह पंच महाभूत मानो देखो, होता के रूप में विद्यमान है। हमारे यहां ऋषि-मुनि, परम्परागतों से बेटा! आध्यात्मिकवाद ओर भौतिक दोनों प्रकार की इस यज्ञ स्वरूप को ले करके उड़ाने उड़ते रहे हैं और उनका एक ही मन्तव्य रहा है, कि हम परमपिता परमात्मा को चहुं ओर मानो दृष्टिपात करते रहे, कोई स्थली ऐसी नही जहां वह परमपिता परमात्मा वास न करता हो, वह सर्वज्ञ है, सर्वत्रता में विद्यमान रहता है। तो मेरे प्यारे! आओ, आज मैं तुम्हें, ऐसे क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ, जहां भौतिक और आध्यात्मिकवाद दोनों की चर्चाएं प्रायः हमें प्राप्त होती रही हैं मेरे वाक्यों को पूर्व काल में भी बेटा! मैंने तुम्हें प्रगट किया है और आज भी मुझे वे वाक् बारम्बार स्मरण आते रहते हैं, क्योंकि वह वाक् सदैव नवीन बने रहते हैं, उनमें वृद्धपन नही आता है, वह मानो सदैव नवीनता में परिणत रहते हैं।

तो मेरे प्यारे! आज का हमारा वाक् एक रसता के लिए उद्गीत गा रहा है मेरे पुत्रों! देखो, मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जिस काल में याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के यहां, ब्रह्मचारी अपने में अध्ययन करते रहे है। और उनका अध्ययन का जो माध्यम था, वह बड़ा विचित्र, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज, प्रातःकालीन देखो, नैतिक शिक्षा देते रहे हैं क्योंकि हमारे यहां विद्यालयों में जहां पठन-पाठन का कर्म चलता है, पठन-पाठन के अनुसार मानो देखो, क्रियात्मक बोद्धिक वाक्यों को भी वर्णन किया गया है। यह परम्परागतों से बेटा! अपने में, विचित्रता में परिणत रहा है, कि आचार्य, ब्रह्मचारियों के मध्य में विद्यमान हो करके, अपने में नैतिक और आत्मीय शिक्षा को देने का प्रयास करते रहे हैं। जिससे मानो देखो, मध्य में याग भी हो, और उपासना के माध्यम से मानो देखो, उसको नैतिकवाद में परिणत किया जाएं। और पठन-पाठन की पद्धति उसके पश्चात मानो देखो, उसका क्रियाकलाप प्रारम्भ होता है। तो मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के यहां एक नियमावली बनी हुई, परम्परागतों की भांति, क्या मुनिवरों! ब्रह्मचारी अपनी अपनी पंक्तियो में विद्यमान थे और अपनी योग्यता के अनुसार पंक्तियां लगी हुई है।

ओर मुनिवरों! देखो, आचार्य, उनके मध्य में विद्यमान हो करके न्यौदा में वेदमन्त्रों का अध्ययन कराया और न्यौदा में वेदमन्त्रों का अध्ययन कराते हुए कहा हे ब्रह्मचारी! तुम्हें याज्ञिक बनना है मानो तुमने अपने जीवन को ऊर्ध्वा में ले जाना है, तो मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज इस प्रकार की नैतिकवाद की शिक्षा देते देखो, यह आध्यात्मिक और भौतिक दोनों प्रकार से तुम्हें आत्मिक यागों में परिणत होना है जैसे यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो करके वह मानो देखो, भौतिक देवपूजा करते हुए और अपने अन्तर्हृदय में जो आत्मा है उसको उदबुद्ध करने के लिए वह तत्पर होता है इसी प्रकार हे यज्ञमान ब्रहा हे ब्रह्मचारियों! तुम अपने में याज्ञिक बनो। तो मेरे प्यारे! देखो, जब यह उपदेश दे रहे थे, न्यौदा में वेदमन्त्रों का उद्गीत गा रहे थे, वर्णनं ब्रह्मा तपं ब्रहे कृतं हे ब्रह्मचारियों! देखो, तुम अपने को वर करके, परमपिता परमात्मा को अपना वरणीय बना करके, और तुम अपने में याज्ञिक बनो, जिससे तुम्हारा मानवीय जीवन, पवित्रता की धारा में रत्त हो जाएं। मेरे प्यारे! देखो, जैसे वह न्यौदा में वेदमन्त्रों का उद्गीत गा रहे थे, याग के ऊपर ऋषिवर अपनी उड़ान उड़ रहे थे, और यह उच्चारण कर रहे थे, कि प्रत्येक मानव को याज्ञिक बनना चाहिए। प्रत्येक मानव को सुगन्धित में रत्त रहना चाहिए, क्योंकि विचारों में सुगन्धि क्रियाकलापों में सुगन्धि, और मानो देखो, उनके पठन-पाठन में भी सुगन्धि होनी चाहिए। जिस प्रकार का व्यवधान होना चाहिए।

मेरे पुत्रों! देखो, इतने में यज्ञदत नाम का ब्रह्मचारी और एक रोहिणी कृतिका ब्रह्मचारी, दोनों उपस्थित हुए उन्होंने एक रूपक बनाया और उन्होंने कहा हे भगवन! हे देव! हे ब्रह्मबेत्ताओं! हम यह जानना चाहते हैं, कि आप याग की बड़ी विवेचना प्रगट करते रहते हैं परन्तु देखो, ये यज्ञमान याग करना चाहता है। कितने होताओं के द्वारा यज्ञमान याग करे? तो बेटा! देखो, उसमें उन्होंने कितना अपने में विस्तृत विचारों को लिया है और आध्यात्मिकवाद से कितना सुगठित याग को माना है। उन्होंने कहा याज्ञवल्क्य मुनि बोले कि यदि याग करना है तो मानं ब्रह्मा वर्णासुतं देवत्वां मानो देखो, चौबीस होताओं के द्वारा याग होना चाहिए तो उन्होंने बेटा! इस मानवीय शरीर को मापने का प्रयास किया और इस मानो देखो, भौतिक पिण्ड में पिण्ड को यज्ञशाला के रूप में वर्णन करते हुए कहा है कि इसमें चौबीस होताओं के द्वारा याग हो रहा है, इसमें बेटा! दस प्राण हैं, दस इन्द्रिया हैं, मन, बुद्धि और चित्त अहंकार है, मानो देखो, ये चौबीस होताओं के द्वारा याग को उन्होंने स्वीकार किया। और यह कहा कि इस प्रकार चौबीस होताओं के द्वारा, याग होना चाहिए। जिस याग में मानो देखो, अपना-अपना व्यवधान किया जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, चौबीस होताओं ने सबसे प्रथम मानो देखो, पांच ज्ञानेन्द्रियों में सर्वत्र मानो पंच महाभूतों की आभा निहित रहती है, और उसमें जो कर्म किया जाता है, वह पंच ज्ञानेन्द्रियों में विद्यमान रहता है, और दस प्राण हैं बेटा! जो अपने-अपने रूप में नृत्त करते रहते हैं, जैसे प्राण, अपान है ये नाना मानो देखो, ध्रुवा में ऊर्ध्वा में ले जाने वाला है और यही मानो परमाणुवाद को देखो, अरबों खरबों परमाणुओं को प्रदान करता रहता है प्राण, तो इसी प्रकार अपने दस प्राण हैं, अपने-अपने में क्रियाकलापों में सदैव तत्पर रहते हैं। तो मुनिवरों! देखो, दस प्राण, दस इन्द्रियां मैं इनकी विवेचना नहीं कर रहा हूँ केवल तुम्हें परिचय देने आया हूँ और परिचय यह है कि मुनिवरों! देखो, दस प्राण हैं अपान व्यान और समान और मुनिवरों! देखो, उदान ये पंच प्राण कहलाते हैं। नाग देवदत, धनंजय, कुरू और कृकल ये पांच उप प्राण देखो, यह दस प्राण है। प्राणों का विशेष मानो इनका विभाजन नही होता है। संसार में जब रचना का भाव होता है, तो ये दस प्राण हैं मानो देखो, जो ब्रह्माण्ड में अपनी गतियां कर रहे हैं, और उसी गति के आधार पर ये ब्रह्माण्ड अपने में गतिशील हो रहा है मुनिवरों! देखो, पांच ज्ञानेन्द्रिया हैं। इन पांचों ज्ञानेन्द्रियों में पंच महाभूतों का व्यवधान होता रहता है, और पंच ज्ञानेन्द्रियां देखो, इनसे कर्म की प्रतिष्ठा होती हैं इसी प्रकार देखो, जब आन्तरिक जगत में प्रवेश करते हैं, तो बेटा! मन, बुद्धि, चित्त अहंकार, ये मानो देखो, चतुष कहलाता है तो यह चौबीस होताओं के द्वारा यज्ञमान याग करता है, जब यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में

विद्यमान होता है, तो ये चौबीस होताओं को यह अग्रणीय बना करके वह स्वाहा कहता है और कहता है प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, और उदाना स्वाहाः, समानाय स्वाहाः कह करके हूत करता है क्योंकि यही तो संसार के भोगतव्य में ले जाते हैं। तो इस प्रकार मुनिवरों! देखो, यागां ब्रह्मणे ये चौबीस होताओं के द्वारा यज्ञशाला में यज्ञमान याग करे तो बेटा! जब ब्रह्मचारियों ने यह सब श्रवण किया, तो यज्ञदत ने ये प्रश्न किया हे प्रभु! यज्ञमान याग करना चाहता है ये कितने होताओं के द्वारा याग करे? तो उन्होंने याज्ञवल्क्य ने उत्तर दिया, क्या यह मानो सत्रह होताओं के द्वारा याग करें। बेटा! सत्रह होता कौन से हैं? मानो देखो, दस प्राण है, पंच महाभूत हैं, उनकी सूक्ष्म धाराएं हैं। पंच महाभूतों की सूक्ष्म कृणिका है, और मुनिवरों! देखो, मन और बुद्धि ये सत्रह तत्त्व कहलाते हैं। सत्रह के द्वारा ही मानो देखो, यज्ञमानं यागं ब्रह्मे होता बना करके, याग करे, ये मुनिवरों! देखो, जब इस शरीर को त्यागा जाता है, तो सत्रह तत्त्वों का मानो देखो, सूक्ष्म शरीर कहलाता है। ये मानो देखो, जिसमें दस प्राण है, पंच तन्मात्राएं हैं, और मन और बुद्धि कहलाती हैं, ये मानो देखो, दस सत्रह होताओं के द्वारा सूक्ष्म शरीर यज्ञशाला के रूप में परिणत होता है। जब भी इस शरीर को त्यागा जाता है, तो बेटा! देखो, सत्रह अवयवों का बन करके ये शरीर चला जाता है, और वह मेरे प्यारे! देखो, उस मानो देखो, वासनाओं को अपने में ग्रहण करता रहता है, और वायुमण्डल में, वायु में लोकों में रमण करता हुआ पुनः मानो देखो, जैसे संस्कार होते हैं उसी के आधार पर यह देखो, शरीरों को भी प्राप्त करता रहता है। तो इसी प्रकार ऋषि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा हे ब्रह्मचारियों! यदि तुम याग करना चाहते हो, तो सत्रह मानो सूक्ष्म शरीर को, यज्ञशाला को ले करके देखो, तुम याग करो जिससे तुम मानो देखो, भूः, भुवः स्वः इस ब्रह्माण्ड की तीन मात्राओं में तुम अग्रणीय बन सको। और मात्रावादी बन करके तीन लोकों को विजय कर लो और देखो, इसी में भूः भुवः स्वः इसी में यह तीन मात्रा हैं अ उ और मैं और मुनिवरों! देखो, तीन ही पदार्थ है आत्मा, परमात्मा और प्रकृति और तीन ही मानो देखो, शब्दों की मात्रा है अ उ और म तो इसी प्रकार बेटा! देखो, तीन रजोगुण, तमोगुण सतोगुण माने जाते हैं, इनको मानो देखो, अपने में जानते हुए सागर से पार होने का प्रयास करें, क्योंकि यही तो मानो सूक्ष्मतम कहलाता है। तो मेरे प्यारे! जब ऋषि ने इसी प्रकार परिचय दिया तो उस समय ब्रह्मचारी ने कहा यज्ञदत ने हे प्रभु! यह जो मेरी माता जो हमे वर्णन कराती रही है हम यह जानना चाहते हैं मानो देखो, यज्ञमान याग करना चाहता है, कितने होता होने चाहिए?

तो उस समय ऋषि कहते हैं क्या देखो, यज्ञमान याग करना चाहता है क्या अमृतं मानो ब्रहे अस्सुतम ग्यारह होताओं के द्वारा याग होना चाहिए, मानो देखो, ग्यारह होता कौन से हैं? बेटा! पांच ज्ञानेन्द्रिया और पांच कर्मेन्द्रियां और ग्यारहवां मन देखो, धुरे की भांति रहता है। तो बेटा! देखो, वह इस प्रकार देखो, ग्यारह होताओं के द्वारा याग करे ग्यारह होताओं देखो, हमारे यहां बड़ा महत्व माना गया है, क्योंकि जितने भी ज्ञानेन्द्रिया हैं, कर्मेन्द्रिया हैं, ये सब एक रूप हो करके और मानो देखो, मन इनसे जकड़ा है, क्योंकि मन का सम्बन्ध आत्मा से है, और आत्मा देखो, आत्मा का सम्बन्ध देखो, मन से है और मन का समन्वय बेटा! देखो, इन्द्रियों से हैं, और इन्द्रियों का सम्बन्ध प्रकृति के मण्डल से है और प्रकृति के मण्डल का समन्वय बेटा! देखो, सूक्ष्म प्रकृति से कहलाता है। जो सूक्ष्मतम कहलाता है। यह आज जो मन आत्मा से प्रकाश लेता है, और देखो, इन्द्रियों को प्रकाशित करता है, और इन्द्रियों को प्रकाशित करके वह मानो देखो, वह रथी कहलाता है मन ही तो रथी है यह प्रकृति मण्डल में बेटा! जब यह रह जाता है तो सूक्ष्म प्रकृति का मण्डल ही ये मन माना गया है, जिसके ऊपर बेटा! मानव अपने में अन्वेषण करता रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो, ग्यारह होताओं के द्वारा, यज्ञमान जब याग करता है, तो इसीलिए कहता है क्या पांच ज्ञानेन्दिंया, पांच कर्मेन्द्रियां, इनको एकाग्र करके और मन के द्वारा मानो

देखो, मनं ब्रहे वृत्ति भांति बेटा! वह स्वाहा वह याग करने वाला हो, इन्हें ग्यारह को संयम में बनाता हुआ, ग्यारह को अपने वशीभूत करता हुआ, जब याग करता है, तो बेटा! देखो, यह लोक को विजय कर लेता है, यह त्रि लोकों को विजय कर लेता है। तो इसीलिए वेद का ऋषि कहता है, धारां भूतं ब्रह्मे होतां ब्रहे हमारे यहां होताओं का बड़ा वर्णन माना है, बड़ा महत्व माना गया है। तो इसीलिए हमारे यहां यागों में परिणत कर देना चाहिए और याग होने चाहिए। परन्तु देखो, याग ग्यारह होताओं के द्वारा।

तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने जब इस प्रकार वर्णन किया तो उस समय यज्ञदत ब्रह्मचारी ने कहा प्रभु! जब हम माता की लोरियों का पान करते रहे हैं, तो माताओं ने हमें यह वर्णन कराया है हम ये जानना चाहते हैं कि यज्ञमान याग करना चाहता है कितने होताओं के द्वारा याग होना चाहिए? उन्होंने कहा देखो, यह नौ के द्वारा होना चाहिए जब मानव शरीर को परमपिता परमात्मा ने जब इसकी रचना की, यज्ञशाला रूप बना करके, मेरे प्यारे! इस मानव शरीर की रचना की, तो मुनिवरों! देखो, उस रचनाकार ने इस शरीर में नौ द्वारों का व्यवधान किया है। ये नौ द्वार कहलाते हैं बेटा! देखो, दो नेत्रों के छिद्र हैं, दो नासिका के छिद्र है, और मुखारबिन्दु हैं, और मुनिवरों! देखो, दो उपस्थ और ग्रीवा के छिद्र कहलाते हैं और मुनिवरों! देखो, दो श्रोत्रों के छिद्र हैं, यह नौ द्वार कहलाते हैं यह नौ द्वारों बेटा! नौ देवता विद्यमान रहते हैं मानो देखो, जैसे वाणी पर अत्रि है और देखो, नेत्रों पर जमदग्नि है, और विश्वामित्र है इसी प्रकार मेरे प्यारे! देखो, घ्राण में कश्यप और देखो, वशिष्ठ कहलाता है। और मुनिवरों! देखो, जब श्रोत्रों में जाते हैं, तो वहां मुनिवरों! देखो, श्रीण केतु मम्ब्रहे वहां मेरे प्यारे! देखो, श्रेणकेतु सम्भूति विराजमान हैं, और वरुण भी विद्यमान रहता है, मानो देखो, चन्द्रमा का उपस्थ स्थान है, पृथ्वी का मानो देखो, ध्रुवा स्थान है, और मुनिवरों! देखो, देवता दोनों देखो, नासिका के छिद्रों में विद्यमान हैं, मेरे प्यारे! देखो, ये परमात्मा ने शरीर रूपी यज्ञशाला जब रचयिता ने निर्माण किया, तो बेटा! ये नौ द्वारों वाले शरीर का निर्माण किया। देखो, यह नौ द्वार अयोध्या कहलाती है यही तो अयोध्या है। मानो देखो, जब हमारे यहां संसार में आने के पश्चात् जब देखो, भगवान मनु ने, जब अयोध्या का निर्माण किया तो बेटा! यह अयोध्या उस समय समुद्र के तट पर थी, और देखो, तो उस समय देखो, भगवान मनु ने अयोध्या का निर्माण किया। जैसे परमात्मा ने इस मानव शरीर का निर्माण किया। इसमें नौ द्वार है अष्ट चक्रा नौ द्वारों वाली यह पुरी है, यह अयोधया पुरी है, जो किसी से विजय न हो सके। तो मेरे प्यारे! देखो, अमृतं इन नौ द्वारों के देवताओं को जान करके और देवताओं को अग्रणीय बना करके, विचार बना करके, जब वह स्वाहाः कहता है, प्राण को अग्रणीय बना करके स्वाहा कहता है देवताओं को अग्रणीय बना करके स्वाहा कहता है मेरे प्यारे! देखो, नौ द्वारों से नौ होताओं के द्वारा यज्ञमान को याग करना चाहिए। इन्द्रियों को संयम में बनाता हुआ, जब याग करता है, तो यह भुवः लोक को विजय कर लेता है, तो मेरे प्यारे! देखो, उस समय अमृतं ब्रह्मा वर्णसुते जब इस प्रकार ऋषि ने वर्णन किया, तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से, बेटा! यज्ञदत ब्रह्मचारी ने कहा प्रभु! यज्ञमान याग करना चाहता है, तो कितने होताओं के द्वारा याग करें? उन्होंने कहा यज्ञमान याग करना चाहता है तो ये अमृतं मानो देखो, सप्त होताओं के द्वारा याग करें, बेटा! सप्त होता कौन से हैं? जो सात ऋषि विद्यमान रहते हैं, जो नेत्रों के द्वार पर हैं, एक वाणी पर है, दो घ्राण में हैं और मुनिवरों! देखो, दो श्रोत्रों में विद्यमान हैं, मेरे प्यारे! देखो, उन होताओं के द्वारा याग करे, इसको पवित्र बनाएं। नेत्रों से सुदृष्टिपान करता है और मुनिवरों! देखो, वाणी से रस को करता रहे, और मुनिवरों! देखो, वह नासिका में ब्रह्मे पृथ्वी से अपना समन्वय करके सुगन्धि को पान करता रहे, सु शब्दों को लेता रहे, और सु शब्दों को ले करके इनका साकल्य बना करके, बेटा! वह जब वह याग करता है तो याग में परिणत होता हुआ, अपने को मानो याग में अव्रतों को वह स्वः लोक को विजय कर लेता है। तो मेरे प्यारे! वह देखो, यज्ञमान जब इस प्रकार के यागों में

परिणत हो जाता है, तो वही तो मानो देखो, वृत्तियां कहलाती हैं। इसी को जान करके सागर से पार होना है।

तो आओ मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने वर्णन किया कि सप्त होताओं के द्वारा यज्ञमान याग करें, सात होता होने चाहिए। जिनसे सप्त होताओं का याग करने वाला यज्ञमान बेटा! देखो, अपनी मानवीय मानवतव को विजय कर लेता है, द्यौ में प्रवेश हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, अपने में रत्त होता हुआ, अपने इस संसार को विजेता बन करके सागर से पार हो जाता है। इस प्रकार जब बेटा! देखो, ऋषि ने वर्णन किया, तो याज्ञवल्क्य से ब्रह्मचारी ने कहा प्रभु! यज्ञमान याग करना चाहता है कितने होता हों? उन्होंने कहा पंच महाभूतों से, पंच होताओं के द्वारा याग होना चाहिए बेटा! पंच महाभूतों के द्वारा वह होता कहलाते हैं। मेरे प्यारे! देखो, जैसे हमारे यहां देखो, सबसे प्रथम पृथ्वी है, जल है, अग्नि है, और वायु है, और अन्तरिक्ष मानो देखो, उसको जानता हुआ और इसका साकल्य बना करके जब बेटा! याग करता है मेरे प्यारे! देखो, गुरूतव तरलतव तेजोमयी ये तीन प्रकार के परमाणु हैं, जिनके ऊपर विज्ञान स्थिर रहता है। विज्ञानवेत्ता जब बेटा! विज्ञानशाला में अपनी में प्रवेश करते हैं, तो यह तीन परमाणुओं को ले करके अन्वेषण करते हैं, यन्त्रों का निर्माण करते हैं, और वायु उनको गति देने वाला है अन्तरिक्ष में वह गतिवान रहते हैं। तो बेटा! देखो, पंच महाभूतों को जान करके, और जब वह याग करता है, तो बेटा! पंचीकरण को अपने में विजय कर लेता है। मेरे प्यारे! आत्मा के लोक को जान लेता है, आत्मा उसी लोक में विद्यमान हैं। हृदय उसी लोक में विद्यमान है, वह हृदय ग्राही बन करके हृदय मानो देखो, अपने में हृदय का समन्वय करता हुआ, बेटा! यज्ञ में प्रवेश कर जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, वह स्वः लोक को विजय करता हुआ, पंचीकरण प्रकृति को अपने में विजय कर लेता है और आत्मा परमात्मा से अपना मिलान करता है। वह बेटा! योगेश्वर कहलाता है। नाना प्रकार के मण्डलों में रमण करता हुआ, नाना प्रकार के लघु मस्तिष्कों को जानता हुआ, सागर से पार हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने जब इस प्रकार वर्णन किया, तो ब्रह्मचारी ने कहा प्रभु! यज्ञमान याग करना चाहता है भगवन! कितने होताओं के द्वारा याग करे उन्होंने कहा कि तीन होताओं के द्वारा याग करे। बेटा! तीन होता कौन से हैं मानव रजोगुण, सतोगुण तमोगुण ये तीन होता कहलाते हैं मेरे प्यारे! देखो, सतोगुण में विष्णु है, रजोगुण में शिव है, और तमोगुण में ब्रह्म कहलाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, वह ब्रह्मा है अमृतं देखो, जब माता ने तीन प्रकार के गुण होते हैं, सतोगुण से पालन है, रजोगुण से शासन है, और तमोगुण में बेटा! देखो, उत्पति का मूल विद्यमान रहता है। इन तीनों को जान करके एक ही सूत्र के मनके हैं। और जो इनको एक सूत्र का मनका स्वीकार करके बेटा! देखो, रजोगुण, तमोगुण की प्रवृत्तियों को जानता हुआ बेटा! देखो, साकल्य बनाता है। वह बेटा! देखो, हूत करता है, वह परमात्मा की कृति को जानता है। और तीनों गुण बेटा! देखो, इस ब्रह्माण्ड में पिरोऐ हुए हैं .... देखो, लोक-लोकान्तरों में रहते हैं जब माता तमोगुण में प्रवेश करती है, तो वहां सतोगुण भी मिश्रित रहता है, रजोगुण भी मिश्रित रहता है। इसी प्रकार मेरे प्यारे! देखो, सतोगुण में यह माता की भावना होती हैं, पितर की भावना होती हैं, परन्तु देखो, वह पालना के मूल में विद्यमान रहती है। इसी प्रकार रजोगुण में अनुशासन है। अनुशासन मानव की प्रत्येक इन्द्रियों के ऊपर गुरु में जाओगे, तो इन्द्रियों पर अनुशासन हो, यदि किसी सभा में जाते हो, तो वाणी पर अनुशासन हो यदि तुम गृह में विद्यमान हो तो अपनी इन्द्रियों पर अनुशासन हो, तो मेरे प्यारे! देखो, अनुशासन में अनुशासन है। जो मानो अनुशासित रहता है। तो जीवन में उसका कल्याण होता है।

तो आओ मेरे प्यारे! मैं तुम्हें विशेष चर्चा नही केवल विवेचना देने नही सूक्ष्म परिचय देने के लिए आया हूँ, जब उन्होंने देखो, तीनों गुणों का वर्णन किया माता देखो, वही तमोगुण है, वही रजोगुण और वही सतोगुण कहलाती है। तीनों मनके एक दूसरे के पूरक कहलाते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन

किया, उन्होंने कहा ब्रह्मचारियों तीन होताओं के द्वारा तुम याग करो। मेरे प्यारे! यज्ञदत ने कहा प्रभु! यज्ञमान याग करना चाहता है, कितने होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। उन्होंने कहा कि दो होता होने चाहिएं। दो होताओं के द्वारा याग सम्पन्नता को प्राप्त हो सकता है। उन्होंने कहा दो होता कौन से हैं, बेटा! प्रकृति और ब्रह्म है मानो देखो, दोनों का ही इस संसार में व्यापार चल रहा है। प्रकृति अपना विभक्त होती रहती है। परमात्मा उनमें गति प्रदान करते रहते हैं, तो बेटा! यह याग हो रहा है। यह यज्ञशाला अपने में यज्ञोमयी स्वरूप को प्राप्त हो रही है। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि एक होता होना चाहिए। वह ब्रह्म का उपासक होना चाहिए। और ब्रह्म का यह यज्ञ है, मानो ब्रह्म को अपने अन्तर्हृदय में धारण करते हुए मानो देखो, उसी में याग में परिणत हो जाएं। एक ही होता के द्वारा याग होना चाहिए। वह ब्रह्म और ब्रह्म का जो उपास्य होता है, वही बेटा! देखो, वह पवित्रता को प्राप्त होता है। वह महानता की ज्योति को प्राप्त कर लेता है। वही अनन्तमयी धारा में परिणत होता हुआ अपने में मानो देखो, अपनेपन को प्राप्त कर लेता है। आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करना नही चाहता हूँ, विचार-विनिमय क्या वेद के ऋषि ने इस प्रकार बेटा! देखो, यज्ञशाला का वर्णन किया यज्ञ अपने में मानो कितना विशिष्ट है। उसकी विवेचना करने लगूंगा कई समय की आवश्यता है कई दिवस चाहिएं मानो वर्षों चाहिए इसकी व्याख्या करने के लिए आज तो मानो देखो, मैं तुम्हें संक्षिप्त परिचय दे रहा हूँ। क्या हृदय और हृदय से जगत और जगत हृदय में जब समाहित हो जाता है। तो याग में सफलता को प्राप्त कर लेता है। तो मेरे प्यारे! देखो, आज का विचार अब यह सम्पन्न होने जा रहा है। अब मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगें।

पूज्य महानन्द जीः- ओ३म् देवां भूतं भवि वर्णनसुतं देवां भविता मनाः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल, अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे, अथवा गागर में सागर को भरण कर रहे थे। हमें ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे हम याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के विद्यालय में विद्यमान हो हम अपने में ऐसा अनुभव करते रहते हैं। क्या जब गागार में सागर की कल्पना की जाती है। आज जहां हमारी यह आकाशवाणी जा रही है, वहां एक याग सम्पन्न हुआ है, मेरा अन्तरात्मा याग के सदैव प्रसन्नतव को प्राप्त होता रहता है। और मैं मानो देखो, यज्ञमान को अपनी सुकामना देता रहता हूँ, सुआशीष देता रहता हूँ, हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। और देखो, तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे। क्योंकि द्रव्य का सदुपयोग होना ही गृह को महान बनाना है। अपने को महान बनाना है गृह का दुरूपयोग होना गृह को दूषित बनाना है, और अपने को मानो देखो, नारकिक बनाना है, तो इसीलिए देखो, द्रव्य का सदुपयोग होना चाहिए। द्रव्य का दुरूपयोग मृत्यु है। द्रव्य का सदुपयोग होना ही जीवन और प्रकाश में माना गया है। आज मैं विशेष केवल यह कि अमृतं हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। आज मैं कोई विशेष चर्चा नही दूंगा, मैं कहीं समय से उच्चारण करता रहा हूँ। क्या देखो, आधुनिक यह जो काल है, यह वाममार्ग का काल कहलाता है। देखो, मैं यज्ञमान को अपना उद्देश्य अपनी विचारधारा प्रगट करते हुए, हे यज्ञमान! तू ऐसे काल में तू याग कर रहा है। जो यह वाममार्ग का काल कहलाता है। जहां वाममार्ग उसे कहते हैं जो उल्टे मार्ग पर गमन कर रहा है। जहां सुरा सुन्दरी और मानो द्रव्य की लोलुपतता में मानव ललाहित हो रहा है। वह द्रव्य चाहता है। और द्रव्य और सुरा में परिणत होना चाहता है। राष्ट्र और प्रजा दोनों एक ही माने जाते हैं नाना प्रकार की रूढ़िवाद में देखो, राजा अपने में परिणत हो रहा है। हे राजा! यदि तू अपने राष्ट्र को उन्नत बनाना चाहता है तो तू याज्ञिक बन और अपने राष्ट्र से नाना प्रकार की रूढ़ियों को नष्ट करने वाला बन क्योंकि देखो, धर्म कर्तव्यवाद को कहते हैं। तेरे राष्ट्र में कर्तव्यवाद होना चाहिए। जैसे विद्यालयों में आचार्य अपने कर्तव्य का पालन करता है, इसी प्रकार देखो, राजा भी अपने इस मानो देखो, राष्ट्र को कोई भी राजा का राष्ट्र हो उसको अपना विश्वविद्यालय स्वीकार करे। और कर्तव्य

का पालन करता हुआ धर्मां भूतं ब्रह्मे वह धर्म को अपनाये। और वह मानो देखो, वह रुढिवाद को नष्ट करने वाला हो, तो यह मैं वर्तमान काल में यह दृष्टिपात कर रहा हूँ, क्या जहां भी रूढ़िवाद पनप रहा है, ईश्वर के नाम पर जो नाना प्रकार की रूढ़ियां बन गई हैं, मैं देखो, अमृतं वह धर्म नही हैं देखो, वह रूढ़ि कहलाती है। धर्म एक होता है धर्म केवल एक है जो मानव की इन्द्रियों में समाहित है, जो कर्तव्यवाद में समाहित रहता है और रूढ़ियां अनेक रहती हैं, रूढ़ियों में देखो, त्रुटियां है, ईश्वर के नाम पर रूढ़ि हैं, एक रूढ़ि दूसरे के रक्त की पिपासी बनी हुई है इसीलिए देखो, राष्ट्र में समाज में देखो, ये उग्रवाद छा रहा है, उग्रवाद का एक ही परिणाम है कि देखो, वह अपने में ईश्वर के नाम पर जो धर्मो को क्या जो रूढ़ियों का विभाजन हो रहा है, उन रूढ़ियों को मानने वालों में मानो देखो, उग्रवाद छा गया है। वह अपने में बलवती कर्तव्यवाद न रह करके वह केवल देखो, अधिकार की पुकार करता रहता है। अरे मानव! तू कर्तव्य का पालन कर, अधिकार तुझे स्वतः प्राप्त हो जाएगा। यदि तू कर्तव्य कर नही पाएगा ओर अधिकार की पुकार करत रहेगा तो रक्तभरी क्रान्ति स्वतः प्रवेश हो जाएगी। और यह रक्तमयी जगत बन जाएगा। तो मैं इस वाक्य इसीलिए मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव मैं राजा को कहता हूँ हे राजन! ...शेष अनुपलब्ध

२ १७ ०३ १९९२

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहां परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणागान गाया जाता है क्योंकि यह परमपिता परमात्मा महिमावादी हैं और अनन्तमयी हैं और उसका ज्ञान और विज्ञान भी अनन्तता में सदैव निहित रहा है तो आज का हमारा वेदमन्त्र यह उद्गीत गा रहा था कि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी है, और जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है, उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वे परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं। क्योंकि प्रत्येक मानव इस संसार के ऊपर नाना प्रकार के विचार-विनिमय करता रहा है, और यह नवीनता नही सृष्टि के प्रारम्भ से ही उड़ाने उड़ता रहा है। तो नाना रूपों से मानो देखो, परमपिता परमात्मा को अपने में उसको समर्पित करता रहा है। तो विचार आता रहा है कि ये परमपिता परमात्मा हमारे में मनं ब्रह्वा कृतं मानो देखो, हम उसे यह जो अपने में दृष्टिपात करते रहते हैं। तो परमात्मा अनन्तमयी जगत हमारे मन मस्तिष्कों में समाहित हो जाता है। और उसके ऊपर गम्भीरता से अपने में विचार-विनिमय करने लगते हैं। मैंने बेटा! तुम्हें कई कालो में, नाना प्रकार के विचार व्यक्त करते हुए ये कहा था प्रत्येक मानव की एक ही आकांक्षा होती है। क्या मेरी मृत्यु नही होनी चाहिए। प्रत्येक मानव मृत्युंजय बनना चाहता है, और उसके मन मस्तिष्कों में ये सदैव चिन्तन चलता रहता है। क्या मैं मृत्यु के पार हो जाऊं। जितना भी मानव योगाभ्यास करता है नाना प्रकार का पठन-पाठन करता है, और उस पठन-पाठन में यह भिन्न-भिन्न प्रकार को विज्ञान में अपने में प्रायः अध्ययन करने में तत्पर रहा है, और उस सर्वत्र विचारो में एक ही मन्तव्य रहता है, कि मैं मृत्युंजय बन जाऊं। मेरी मृत्यु नही आनी चाहिए। नाना प्रकार के द्रव्यपति बनने की इच्छा रहती है, और भी नाना प्रकार की प्रतिष्ठा में प्रतिष्ठित होना चाहता है, और वह यह चाहता है कि मेरी मनोनीतता मेरी विचित्र हो और एक ही विचार होता है। उसमें भी क्या मेरी मृत्यु नही आनी चाहिए। मैं मृत्युंजय बन जाऊं। नाना प्रकार के विज्ञानवेत्ता अपने में उड़ाने उड़ते रहे हैं, परन्तु ऐसी विचित्र उड़ाने उड़ते रहे हैं कि लोक-लोकान्तरों की यात्रा में भी प्रायः वह सफलता को प्राप्त हुए है, और साधना में परिणत होते रहें हैं और यहां तक साधना की कि वह चन्द्रमा और पृथ्वी के मध्य में जहाँ एक दूसरे की आकर्षण शक्ति का समन्वय होता है, वहाँ भी जाने का वह प्रयास करता रहा और वहाँ अपनी साधना के केन्द्र भी उसने निर्माणित किए हैं परन्तु उसके मन मस्तिष्क में एक ही वाक् रहता है कि मैं अमृतं मृत्युंजम् ब्रह्मा मेरी मृत्यु नही होनी चाहिए। तो प्रत्येक मानव के हृदय में एक ही आकांक्षा लगी हुई है, क्या मैं मृत्युंजय बन जाऊं मेरी मृत्यु न हो जाएं, अब विचार आता है कि वेद का मन्त्र यह कहता है कि मृत्युंजयम् भवितं ब्रह्मा वर्णसुतं ब्रह्मे मृत्युः वेद का वाक् ये प्रश्न करता है, कि हे मानव! तू मृत्युंजय तो बनना चाहता है, परन्तु मृत्यु किसे कहते हैं, यह भी किसी काल में तूने अपने में अध्ययन किया है अथवा नही परन्तु देखो, जब मानव यह विचारने लगा क्या मैं मृत्युंजय बन जाऊं, ये मृत्यु है क्या? यह तो बेटा! देखो, किसी ने नाना प्रकार का अपना विचार दिया।

मुझे वह काल स्मरण आता रहता है एक समय बेटा! देखो, महर्षि श्वेतकेतु ने एक सभा का आयोजन किया, तो बेटा! देखो, महात्मा जमदग्नि के आश्रम में हुई महात्मा जमदग्नि आश्रम में बेटा! देखो, उन्होंने, ऋषि मुनियों ने एक प्रश्न किया, कि अव्रतं मृत्युंजां भूते वर्णसुता मानो देखो, उनका एक ही मन्तव्य ऋषि-मुनियों के समीप नियुक्त किया, कि वह मृत्यु है? क्या तो बेटा! देखो, उनमें महर्षि प्रवाहण, महर्षि दालभ्य, महर्षि शिलक,

महर्षि रोहिणीकेतु, देवर्षि नारद, चाक्राणी गार्गी, महात्मा दिग्ध, महात्मा अर्द्धभाग, और महर्षि रोहिणीकेतु, और भी नाना ऋषिवर, ब्रह्मचारी और ब्रह्मवेत्ता, महर्षि पिप्लाद विद्यमान थे। तो ये प्रसंग उनके समीप आया कि मृत्युंजम् ब्रह्मा जब ऋषि-मुनि एकत्रित हो गएं, तो महर्षि जमदग्नि ने और पारेत्वर ऋषि ने एक प्रश्न किया और यह कहा कि हे ब्रह्मवेत्ताओं! हमारे यहां एक नियमावली है, कि जब ऋषि-मुनि एकत्रित होते हैं, उनका सम्मलेन होता है, और वह समकालीन विद्यमान हो करके अपने विचारों को व्यक्त करते हैं। और नाना प्रकार की जो मनो में मानो ग्रन्थियाँ लगी हुई होती हैं वह उनका स्पष्टीकरण करना उनका कर्तव्य रहा है तो हम यह चाहते हैं कि हमारा एक ही प्रसंग है, कि हम मृत्यु को नही चाहते, मृत्युंजय बनना चाहते हैं। आप हमें मृत्यु से पार ले चलिए। तो बेटा! देखो, मृत्युंजं भवितां भू वर्णां जब मृत्यु से पार होना चाहते हैं, मृत्युजम् भवा मृत्यु अपर्णां ब्रह्मा तो बेटा! देखो, नाना ऋषियों में ये एक प्रसंग आया, कि मृत्यु है क्या? तो बेटा! देखो, महात्मा अर्द्धभागं ब्रहे और अर्द्धभाग ने कहा ऋषि-मुनि इस प्रसंग का तुम समाधान करो तो कोई ब्रह्मवेत्ता का प्रसंग उद्गीत गाने का प्रसंग नही हुआ परन्तु देखो, कोई भी उद्गीत गाने के लिए तत्पर जब नही हुआ तो चाक्राणी गार्गी उपस्थित हुई और उसने कहा हे ब्रह्मवेत्ताओं! यदि तुम्हारी आज्ञा तो मैं अपने वाक् को प्रारम्भ करूं। तो महात्मा अर्द्धभाग ने कहा कि अवश्य कीजिए। तो उन्होंने कहा कि मेरे विचार में, अब तक यह आया है क्या शरीर और आत्मा के दोनों के विच्छेद का नाम मृत्यु कहा जाता है। तो मुनिवरों! देखो, उसमें देवर्षि नारद मुनि बोले कि हे दिव्या! यह वाक् तो तुम्हारा यथार्थ है, क्या शरीर और आत्मा का दोनों का विच्छेद होना। परन्तु उससे मृत्यु शब्द नही बनता, यहां मृत्यु का प्रसंग है यहां शरीर और आत्मा के त्यागने का प्रसंग नही है तो मुनिवरों! देखो, वह इतना उद्गीत गा करके, जितना उसने अब तक जाना उतना उन्होंने उच्चारण किया। क्योकि ऋषियों का जो हृदय होता है वह निष्पक्ष होता है, और वह मानो अपने में निरभिमानी होता है वह अपने में शान्त विद्यमान हो गईं और इतनें में महर्षि पिप्लाद मुनि महाराज उपस्थित हुए, तो पिप्लाद जी ने यह कहा कि भई! मेरे विचार में तो य३ आता है कि मृत्यु अपने में कोई मृत्यु नही होती उन्होंने कहा ये मृत्यु क्या है? तो ऋषि कहता है मृत्युंभा ज्ञानं ब्रहे क्या संसार में जो यह है अज्ञान का नाम मृत्यु है संसार में अज्ञान को त्यागा मानव संसार में मृत्यु से पार हो जाता है, जहाँ वह ज्ञान के प्रकाश में रत्त हो जाता है, तो वह मृत्युंजयी अपने में मानो देखो, मृत्यु को त्याग देता और प्रकाश में चला जाता है। जीवन उसे प्राप्त हो जाता है, तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि पिप्लाद मुनि ने यह कहा क्या संसार में मेरे विचार में मैं अपना विचार व्यक्त कर रहा हूँ, कि मृत्यु कोई मृत्यु नही होती नारद मुनि ने महात्मा अर्द्धभाग ने इसका समर्थन किया, और उन्होंने कहा यथार्थ है तो मेरे प्यारे! ये विचार-विनिमय होने लगा, कि अज्ञान क्या है? और अन्धकार क्या है? तो मुनिवरों! देखो, ज्ञान का होना ही जानना ही प्रकाश है, किसी वस्तु को जानने का नाम प्रकाश कहा जाता है। और वह जानाति जननं ब्रह्मा वर्णसुते देवाः क्या प्रत्येक वस्तु के उसके मूल को जानना उसके गुणों का अपने में गुणाधानम् करने का नाम ज्ञान माना गया है। तो इसीलिए बेटा! देखो, हमें ज्ञानी बनना चाहिए, इससे पूर्व काल में मेरे प्यारे! मेरे पुत्र महानन्द जी ने वर्णन किया क्या राजा के राष्ट्र में उन्होंने चर्चा करते हुए कहा था, क्या राजा को ब्रह्मज्ञानी होना चाहिए, और ब्रह्म ज्ञानी ही मानो देखो, अपने राष्ट्र को उन्नत कर सकता है, और नाना प्रकार के रूढ़िवाद को समाप्त कर सकता है। तो इसीलिए देखो, जानना और रूढ़िवाद के अन्धकार को नष्ट करने का नाम ही देखो, प्रकाश कहा जाता है। वेदां भूतं ब्रह्मा तो मेरे प्यारे! देखो, जब मानव जितेन्द्रिय बन जाता है, और जितेन्द्रिय बन करके वह अध्ययनशील होता है तो ये नाना प्रकार की अग्नि ही अपने में चयन करता है। और अग्नि का चयन करता हुआ कहता है कि प्रकाशां भूतं ब्रह्मणे लोकां वाचमसुता महर्षि पिप्लाद ने कहा क्या हे ऋषि-मुनियों तुमने देखो, सबसे प्रथम तुमने देखो, महात्मा देखो, सत्यकाम और महर्षि गौतम का संवाद सभी को स्मरण

आता रहता है। उन्होंने बेटा! देखो, अपने सम्पर्क में आने के पश्चात मुनिवरों! देखो, महात्मा गौतम ने यही कहा था क्या जाओ, तुम ज्ञानी बनो, और ज्ञानी तुम जब बनोगे। जब तुम मानो निरभिमानी और सेवक बनोगे, तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने जब तीन दिवस और तीन रात्रि हो गएं, आचार्य के कुल में अध्ययन करते हुए, तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने प्रत्येक इन्द्रियों का जैसा गुरु ने उसे व्यवधान कराया और निर्णायक अपने विचार दिए, और उन्होंने कहा कि मैं इन्द्रियों के ऊपर अध्ययन करो मुनिवरों! देखो, प्रत्येक इन्द्रियं के ऊपर उन्होंने अध्ययन किया और अध्ययन करने के पश्चात जब उनका मन और मस्तिष्क अध्ययन में मानो देखो, जितेन्द्रिय प्रत्येक इन्द्रियों का ज्ञान होने के पश्चात, उसके ऊपर अन्वेषण होने लगा। तो मुनिवरों! देखो, वह अपने में जितेन्द्रिय बन गएं, और तीन दिवस के पश्चात उन्होंने कहा-प्रभु! मुझे अब आज्ञा दीजिए, जो आप मुझे आज्ञा देंगें जो इस क्रियाकलाप को अवश्य कर पाऊंगा। उन्होंने कहा हे सत्यकाम! जाओ, तुम मानो यह गऊए हैं ये चार सौ गऊए जब तक एक सहस्त्र नही हो जाएं, जब तक मेरे आश्रम में तुम्हारा आना, तुम प्रवेश नही करोगे मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा बहुत प्रियतम प्रभु! मैं क्या करूंगा इनके उद्गीत गाता हुआ, उन्होंने कहा इनके घृत और इनके दुग्ध के द्वारा मानो तुम याज्ञिक बनो। और याज्ञिक बन करके तुम मानो देखो, ब्रह्मणे ब्रहा श्वंधनम और उस पश्चात तुम अग्न्याध्यान करो, और प्रकाश का जान करते हुए इनकी सेवा, आज्ञा का पालन करना है। तो मुनिवरों! देखो, महात्मा सत्यकाम ने इसी वाक् को ले करके आचार्य की चार सौ गऊओं को ले करके देखो, उन्होंने प्रस्थान किया और यह मुनिवरों! देखो, जहाँ वह गऊ जाती, वहीं वह ब्रह्मचारी उनके पीछे गमन करने लगा। तो मेरे प्यारे! देखो, उनका क्रियाकलाप था, कि प्रातःकालीन गऊओं के घृत और देखो, अमृत दुग्ध के द्वारा समिधाओं को प्रदीप्त करता हुआ वह नित्य प्रति मानो देखो, याग करता था अग्नयाधान किया समिधाओं के द्वारा और वह कहते हैं कि हे प्राणवर्धक! हे यज्ञमयी देवत्वां! हे महादेवा! हे महादेव! मैं तेरे समीप आया हूँ, तू मेरा कल्याण कर। तो बेटा! देखो, वह जब प्रातःकालीन मेरे प्यारे! सूर्य उदय के साथ ही जब याग का प्रारम्भ करता उद्बुद्ध स्वाहा अग्नि का वह उदगीत गाने लगा। तो मेरे प्यारे! देखो, इसके अन्तर्हृदय में मन मस्तिष्क में बेटा! देखो, एक प्रकाश उद्बुद्ध होने लगा, जिस प्रकाश को ले करके उसके मन मस्तिष्क में एक मानो देखो, नवीन प्रकार की तरंगें उत्पन्न होने लगीं।

मेरे पुत्रों! मुझे कुछ ऐसा स्मरण आ रहा है महात्मा सत्यकाम मेरे प्यारे! देखो, सत्यकाम को लगभग देखो, अमृतम् बारह वर्ष का उनका अनुष्ठान था, बारह वर्ष के पश्चात मेरे प्यारे! वह चौ सौ गऊएं उन्होंने और भी अनुष्ठान किए, जब देखो, एक सहस्त्र जब गऊएं हो गयीं, तो एक समय बेटा! हिमालय की वृत्तियों में विद्यमान थे, और विद्यमान हो करके, बेटा! वह प्रातःकालीन याग कर रहे थे, तो याग के पश्चात कहते हैं, कि एक वृषभ ने कहा एक मानो वृख ने कहा कि हे ब्रह्मचारी! हे सत्यकाम! हम एक सहस्त्र हो गएं है तुम हमें गुरु के आश्रम को ले चलो। मेरे प्यारे! देखो, सत्यकमान ने कहा बहुत प्रिय। तो वृषभ कहता है कि मैं तुम्हें चार कलाओं का ज्ञान करा देता हूँ। सबसे प्रथम उन्होंने चार कलाओं का ज्ञान कराया। उन्होंने कहा प्राचीदिग, दक्षिणीदिक और देखो, उदीचिदिक यह चार प्रकार का उन्होंने ज्ञान कराया। उन्हें कहा हे ब्रह्मचार मानो देखो, प्राचीदिक में देखो, सूर्य उदय होते हैं और वह प्रकाश का द्यौतक है प्रातःकालीन मानो देखो, अन्धकार को नष्ट करता हुआ वह प्रकाश का द्यौतक बन करके आता है, देखो, प्राचीदिक में अग्नि का वास है वह अग्नि में ही परमपिता परमात्मा जो अग्निमयी स्वरूप है। वह अग्निमयी स्वरूप मानो देखो, प्रकाश का द्यौतक है, और वह मानो द्यौ में रत्त रहने वाला है। हे ब्रह्मचारी! तुम मानो देखो, सबसे प्रथम कला का नाम प्राचीदिक कहा जाता है, प्राची दिक का अभिप्रायः यह है कि सूर्य में जो प्रातःकालीन जो मानो देखो, अग्नि का पुंज उत्पन्न होता है। वह किरणों के द्वारा इसी प्रकार प्राचीदिक में परमात्मा अग्निमयी स्वरूप माना गया है तो मानो देखो, वह प्राची दिक है, वह अपने में वर्णनं ब्रह्मा व्रतं देवतव को अपने में

धारण करता रहता है। जो प्रातः कालीन मानो देखो, ध्यानावस्थित होते हैं, और वह मन मस्तिष्क को एकाग्र करते हुए, प्राचीदिक अग्नि का ध्यान करते हैं, जो पूर्व दिशा में जिसका प्रकाश आता उस प्रकाश को जो अपने में धारण करके बेटा! उनका एक अमृतं एक अमृत को वह प्राप्त करते रहते हैं। तो प्राची दिक कला सबसे प्रथम कला का उन्होंने ज्ञान कराया प्राची कहते हैं। पूर्व दिशा को जिस पूरब में मानो देखो, वह सूर्य नही मानो देखो, मानो अपनी आभा को प्राप्त करता हुआ, अपने निर्तंग करने लगता है और वह मन में देखो, मस्तिष्क में उस अग्नि का ध्यानावस्थित करता हुआ, बेटा! प्रकाश में रत्त हो जाता है। वह अग्नि मानो देखो, काष्ठों में रहने वाली अग्नि है, वही अग्नि ब्रह्मा बन करके मानव के अन्तर्हृदय में प्रदीप्त होती रहती है। जब ब्रह्मचारी के हृदय में जब अग्नि को जागरूक किया जाता है तो उस अग्नि का स्वरूप भिन्न हो जाता है, उसका जो गार्हपथ्य नाम की अग्नि से मानो वर्णन किया जाता है। वही अग्नि जब गृहपथ्य मानो गृहस्वामी और गृहस्वामिनी के गृह में प्रदीप्त होती है, तो वही अग्नि मानो गृह पथ्य नाम की अग्नि बन जाती है और वही अग्नि जब विद्यालयों में पनपती रहती है वही अग्नि वानप्रस्थ के हृदय में मानो प्रविष्ट होती रहती है। तो वानप्रस्थ विद्यालयों में अध्ययन कराता रहता है, इसी प्रकार वेदां भूतं वही अग्नि जब वैश्वानर नाम की अग्नि बन करके चलती है। तो गृहपथ्य और गार्हपथ्य गृहपथ्य वैश्वानर देखो, आह्वनीय अग्नि जब प्रवेश हो करके बेटा! देखो, वह ब्रह्माग्नि वह ब्रह्म में मानव को परिणत करा देती है तो विचार आता है बेटा! यहां अग्नि के भिन्न-भिन्न प्रकार के स्वरूप माने गएं हैं, जब ब्रह्मचारी के हृदय में अग्नि प्रदीप्त होती है, तो वह ब्रह्मचारी मानो देखो, अध्ययन करता है, तो और अपने में मानो अध्ययन करता हुआ, मानो देखो, उसे जानने के लिए तत्पर हो जाता है। प्रत्येक वस्तु को जानता है। हे ब्रह्मचारी! यदि तू ब्रह्मचर्य को तूने जान लिया है, और ब्रह्म में निष्ठ हो गया है तो तू सर्वत्र विज्ञान का पुंज बन गया है। और ज्ञान का द्यौतक बन गया है तो इस प्रकार तू मानो देखो, सबसे प्रथम अग्नि का नाम गार्हपथ्य नाम की अग्नि है, गार्हपथ्य नाम की अग्नि में कौन तपता है? ब्रह्मचारी तपता है। जब प्रातःकालीन जब वह अपने में मानो नृत्त करने लगता है प्रातःकालीन गृह को त्याग देता है।

मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहता है भगवान कृष्ण का जीवन, जब महर्षि वर्णी केतु अपने आचार्य के कुल में जब वह अध्ययन करते थे तो प्रातःकालीन वह जब वह अन्तरिक्ष में तारा मण्डलों की छाया रहती, उस समय वह संदीपन ऋषि के आश्रम में अध्ययन करते थे। तो उसी काल में अपने आसन को त्यागना, त्याग करके अपनी शारीरिक क्रियाओं से निवृत्त हो करके, जब निवृत्त हो करके, बेटा! देखो, वह अपने में शान्त मुद्रा में मन और मस्तिष्क का दोनों का एकाग्र करने का प्रयास करते, मन और प्राण को दोनों को एक सूत्र में लाने का प्रयास करते, तो बेटा! वह योगाभ्यास करते रहते जिससे वह प्राण का निदान करना, और प्राण को ये दृष्टिपात करना की ये प्राण मानो देखो, अपान में, अपान में प्रविष्ट होने से क्या होता है और देखो, प्राण और अपान को जब व्यान में प्रविष्ट कर दिया जाता है, तो उसका क्या प्रभाव और क्या प्रतिक्रिया होती है, और जब उसी प्राण को सामान्य प्राण में, जब प्रविष्ट समन्वय कर दिया जाता है, तो उसका क्या प्रभाव होता है, और जब यही उदान में प्रवेश हो जाता है, तो उसका क्या प्रभाव होता है। तो मेरे प्यारे! इन प्राणों का निदान करने से मानो देखो, अपने में देखो, व्यवधान करने लगता है तो मुझे ऐसा स्मरण है क्या वह भगवान कृष्ण इस प्रकार जब अपने प्रातःकालीन बाल्यकाल में इस प्रकार का अपना क्रियाकलाप बनाते और क्रियाकलाप बना करके मानो देखो, उसके ऊपर अध्ययन करना तो वह गार्हपथ्य नाम की अग्नि है जो आचार्य के चरणों में विद्यमान हो करके अपने में प्रश्न और उत्तरावलियों में वह एक होते हैं। और वह यह उच्चारण करने लगे कि हे प्रभु! अमृतं मं ब्रहे देवत्वां मैं अमृत को पान करना चाहता हूँ मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा ब्रह्मचारी तुम मानो देखो, अग्नि का ध्यान करो और ब्रह्माग्नि को

अपने में जागरूक करो परन्तु वह ज्ञान रूपी अग्नि है जो ब्रह्माग्नि बन करके मेरे प्यारे! देखो, उसमें निहित होती रहती है तुम देखो, संदीपन ऋषि ने कहा हे ब्रह्मचारी! हमारे जो पूर्वज हुए हैं आचार्यजन उन्होंने देखो, इसी अग्नि को गार्हपथ्य नाम की अग्नि का चयन करते हुए उन्होंने अपने जन्म-जन्मान्तरों के संस्कारों को उद्बुद्ध करने का प्रयास किया है क्योकि मानव का जो यह प्राणों का समूह है। और मन का जो क्षेत्र बना हुआ है यही तो मानो देखो, चित्त के संस्कारों का यह चित्त का क्षेत्र माना गया है जो बाह्य जगत और आन्तरिक जगत दोनों से इसका समन्वय रहता है बाह्य जगत मानो देखो, यह संसार कहलाता है बाह्य जगत में भी कई प्रकार की श्रेणियां हैं कहीं मानो देखो, वह सतोगुणी बन जाता है कहीं रजोगुणी है तो कहीं तमोगुणी प्रवृत्ति वाला बन जाता है परन्तु यह सब बाह्य जगत है और जब यह आन्तरिक जगत में प्रवेश करता है तो बेटा! मन मस्तिष्क को एकाग्र करता हुआ और देखो, मनस्तव की आभा में रत्त हो जाता है और वह हृदय में जो हृदय में जो संस्कार चित्त के मण्डल में समाहित हो रहे हैं उन संस्कारों को उद्बुद्ध करना चाहता है परन्तु देखो, बाह्य जगत को जब अन्तर्जगत में ले जाता है तो मानो देखो, वह अव्रुत दुष्कर्मों का उसमें क्षय होना प्रारम्भ हो जाता है तो मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार के ब्रह्मचारी जब अपने में साधना करता है क्योंकि एक अक्षर बोधी बना हुआ है एक मानो साधना में परिणते होने वाला है तो मानो देखो, उसका कर्म और वचन और दोनों एक ही सूत्र में सूत्रित हो गएं हैं मेरे पुत्रों! देखो, जब एक सूत्र में सूत्रित हो जाते हैं तो अपने क्रियाकलापों में वह महान और पवित्र बनने का प्रयास करता है यदि मानव एक अक्षरों का बोधि बोधी है वह अक्षरों को अपने में उद्बुद्ध कर रहा है। परन्तु यदि उसके अनुसार कर्म नही कर रहा है, तो मुनिवरों! देखो, अपंग बन रहा है। वह अपंग कहलाता है, जैसे राजा के राष्ट्र में मानो देखो, एक धर्म है और एक ही कर्म है राजा का राष्ट्र भी बिना कर्म के अन्ध कहलाता है। और मुनिवरों! देखो, उसके कर्म के साथ में ज्ञान है, और ज्ञान के साथ में कर्म है, तो बेटा! देखो, वह अपने मानवीयतव को ऊर्ध्वा में गमन करता रहेगा, राजा मृत्यु से पार हो जाएगा। तो इसी प्रकार ब्रह्मचारी भी अपने से मृत्युंजय मृत्यु से पार हो जाते हैं। जब गार्हपथ्य नाम की अग्नि का पूजन करते हैं वह अग्नि जब मानो देखो, कहीं वह अग्नि हमारे अन्तर्हृदयों में देखो, कहीं वह नेत्रों की ज्योति बन करके मानो ज्योतिवान है। उसी अग्नि के माध्यम से शब्दों का समन्वय दिशाओं से हो जाता हैं वह कहीं दिशाओं में अपने को समाधान करता हुआ मुनिवरों! देखो, उसी में रत्त रहता है, और इसी प्रकार वह मृत्युंजम् भवा तम ब्रह्मे देवत्वां तो मुनिवरों! देखो, वह उस अग्नि का ध्यान करता हुआ, अपने में देखो, ज्ञान रूपी अग्नि को जो हृदय में प्रदीप्त हो रही है। जिसमें मानो सर्वत्र इन्द्रियाँ विलीन रहती है, सर्वत्र इन्द्रियों माला बन जाती है, और उस माला को मानो धारण करने वाला एक मानो देखो, सजातीय ब्रह्मचारी कहलाता है। मेरे पुत्रों! देखो, जब वह अपने में धारयामि बनते रहे तो वह अमृतियों में प्राप्त हो करके मेरे प्यारे! देखो, आचार्य से नाना प्रकार के प्रश्न और उत्तरावली में लग जाते हैं, और वह जब यह उत्तर देता देता अपने में मौन हो जाते, जब तक मानो ब्रह्मचारी अपने में सान्त्वना को प्राप्त नही होता मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण आता रहा है जब मुनिवरों! देखो, भगवान कृष्ण एक समय प्रातःकालीन बेटा! संदीपन के आश्रम में जब नैतिकता के लिए ऋषि ने जब पर सब ब्रह्मचारियों का उपस्थित किया, तो उन्होंने ये प्रश्न किया कि हे महाराज! हे आचार्यजन! हे पूज्यपाद! आप नित्यप्रति नैतिक शिक्षा में हमें ले जाते हैं हम सदैव यह जानना चाहते रहते हैं कि हे प्रभु! प्राचीदिक किसे कहते हैं? उन्होंने कहा प्राचीदिक कहते हैं परमात्मा का जो स्वरूप है वह मानो देखो, प्रकाश में रहता है, जैसे मानो दो पक्ष है, एक माह में, एक उत्तरायण है तो एक दक्षिणायन कहलाता है, मानो उत्तरायण में प्रकाश है, और दक्षिणायन में मानो देखो, अन्धकार माना गया है। तो मानो देखो, इसी प्रकार दोनों की रतता में रत्त रहने वाले नामोकरण अपने में अवृत कहलाता है। तो इसके ऊपर तुम्हारा विचार होना चाहिए। भगवान कृष्ण बोले कि हे

प्रभु! चलो, यह भी वाक् मैंने जान लिया है परन्तु मैं यह जानना चाहता हूँ, कि-प्रभु! यह प्राचीदिक है यह क्या है? उन्होंने कहा प्राचीदिक का अभिप्रायः यह जो पराविद्या को जानने वाला है। जो परा विद्या को जान करके आचार्य ब्रह्मचारी को पराविद्या दे करके, सबसे प्रथम उसके मानवीय जीवन को सजातीय बना देता है, जब आचार्य इसके मानवीय जीवन को इन्द्रियों में ब्रह्मज्ञान की प्रतिष्ठा करा देता है, तो मानो देखो, वह अपने में, अपने वर्णों को तत्पर ले जाता है ब्रह्मचारी देखो, अपने में महान बन जाता है। मेरे प्यारे! देखो, उस समय उन्होंने जब ये शान्त होने लगे तो पुनः ब्रह्मचारी ने कहा प्रभु! यह प्राचीदिक क्या है? उन्होंने कहा यह प्राचीदिक मानो देखो, अग्नि की दशा है। और अग्नि मानो देखो, काष्ठों में जो द्यौ में प्रकाश देती है, और द्यौ से मानव के मन मस्तिष्क में रत्त होती है और वही अग्नि मानो देखो, प्रकाश में रत्त हो करके, दिशाओं को जानने वाला बनता है, वह दिशाओं को जैसे एक प्राचीदिक है, वह एक दशा भी है अग्नि भी है वह अग्रणीय बना करके मानव को प्रकाश देती है, जिससे मानव को एक मार्ग प्राप्त होता है। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि इसका नाम प्राची दिक कहा जाता है। ब्रह्मचारी ने कहा कि-प्रभु! ये प्राचीदिक क्या है? उन्होंने कहा प्राचीदिक वह है मानो यह जो ज्ञान का पुंज कहलाता है ब्रह्मचारी जब प्रातःकालीन अध्ययन करता है, वह पूर्वामुख हो करके ही जब वह अध्ययन करता है, तो उसकी स्मरण शक्ति में जागरूकता आ जाती है। और स्मरण शक्ति बलवती हो जाती है, तो इसीलिए प्राची दिक को दिशा को ले करके जब वह अध्ययन करता है, और दिशा का देखो, अपने में समन्वय करता रहता है तो वह ज्ञान के पुंज में प्रवेश हो जाता है तो इसीलिए उसका नाम प्राचीदिक कहा जाता है। उन्होंने कहा-प्रभु! ये भी मैंने जान लिया। परन्तु हे आचार्य! यह प्राची दिक क्या है? उन्होंने कहा प्राची दिक् यह कि पूर्वां भूतां ब्रह्मा मानो देखो, वह परमात्मा प्रकाश का पुंज कहलाता है, इसीलिए ब्रह्माग्नि का नाम प्राची दिक कहा जाता है। जब ब्रह्माग्नि में आचार्य जन अपने को ले जाता है, ब्रह्मग्नि को जागरूक करता है, ब्रह्मग्नि क्या है? क्या ब्रह्म का प्रकाश को अपने में रत्त करना, प्रकाश का ज्ञान और विज्ञान को अपने में ध्यानावस्थित होना ही और उसकी मानो देखो, रचना के उपर विचार-विनिमय करने का नाम प्राची दिक कहा जाता। वह प्राची दिक में प्रवेश होने के पश्चात, उसके जीवन में अन्धकार नही आता है, वह अन्धकार से दूरी हो जाता है, और अन्धकार में प्रवेश न करना ही, मानो देखो, जीवन का प्रकाश माना गया है।

मेरे प्यारे! ऋषि ने अपना मन्तव्य जब प्रगट किया, तो उस समय भगवान कृष्ण ने यह कहा उनका बाल्यकाल था मानो देखो, ब्रह्मचर्य का जो काल होता है, वह बड़ा निर्मल होता है, और बड़ा निष्पन्न होता है, और आत्मीयता में होता है। तो उन्होंने कहा-प्रभु! मैं सदैव मेरे द्वारा यह प्रसंग बना हुआ रहता है, क्या मृत्युंजम् ब्रह्मा लोकां ब्रहे ये प्राचीदिक क्या है? भगवन! उन्होंने कहा प्राचीदिक कहते है। जो दोनों का मिलान करता है, मानो देखो, पूर्व दिशा पूर्वा मुख और पूर्वा ज्ञान, जब इन दोनों का समन्वय कर लेता है, दोनों का मानो परस्पर जब उसका मिलान हो जाता है जब मन प्राण का दोनों का समन्वय होने से, बेटा! वह योगेश्वर बन जाता है। वह योगेश्वर बन करके वह अपने में तत्पर रहता है। तो देखो, उस परमात्मा की प्राची दिक अग्नि को अपने में धारण करता हुआ अपने में देखो, गार्हपथ्य अग्नि का वह चयन करता है मेरे प्यारे! गार्हपथ्य अग्नि में ब्रह्मग्नि का वह समन्वय करने लगता है, तो इस प्रकार बेटा! जब उन्होंने निर्णायक अपने विचारों को दिया तो भगवान कृष्ण ने जब पुनः प्रश्न करने लगे, तो प्रभु! प्राचीदिक क्या है? तो उन्होंने कहा कि परमात्मा का नाम ही प्राचीदिक है वह परा है वह परा में रहने वाला हमारे अन्तर्हृदयों में प्रवेश होने वाला उसको हम ध्यानावस्थित करें। मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने ये कहा हे कृष्ण! तू अति प्रश्न मत कर देना अन्यथा देखो, तुम्हारा मन मस्तिष्क गिर जाएगा। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा-प्रभु! ये तो ब्रह्मचर्य का आभूषण है, ब्रह्मचारी का आभूषण है, प्रश्नों का करना, परन्तु जब

उसका अन्तरात्मा निर्णय पर नहीं देने को पंहुच सके तब तक वह प्रश्न करता ही रहेगा आचार्य जन! तो आचार्य ने कहा तो प्रश्न करते चले जाओ। उन्होंने कहा-प्रभु! मैं आगे प्रश्न नही करूंगा जब कोई प्रसंग आएगा तो मैं और उद्गीत गाऊंगा, मानो देखो, उन्होंने अग्नि का चयन करते हुए नाना प्रकार की अग्नियों का चयन किया, जो बेटा! विद्यालयों में आचार्य और ब्रह्मचारी के मध्य मंख जो अग्नि प्रदीप्त हो रही है। उसका नाम ही प्राची दिक कहा जाता है। मेरे प्यारे! आचार्य अपनी स्थली पर विद्यमान है, चरणों में ब्रह्मचारी है, और वह कहता है हे ब्रह्मचारी! तुम आओ, मृत्युंजय बनने का प्रयास करो। परन्तु देखो, मृत्युंजय वही बनता है, जो प्रकाश को जान लेता है जो प्रकाश को नही जानता वह अन्धकार को नष्ट कर सकता। जो अन्धकारं भूतं ब्रह्मा अज्ञानां भूते देवत्वां अज्ञान को त्यागना ही, मानो देखो, एक जीवन कहा जाता है। मुझे बड़े प्रिय यह वाक् लगें है, मैं अपने महानन्द जी के विचार का बडा समर्थन करता रहता हूँ। और यह उच्चारण करता रहता हूँ कि राजा का राष्ट्र भी उसी काल में ऊँचा बनता है जब राजा देखो, राजा अपनी अग्नि का चयन करने लगता है जो अग्नि प्रदीप्त हो करके राजा के राष्ट्र को मानो प्रकाश में ले जाती है वही अग्नि मुनिवरों! देखो, राष्ट्रवाद को ऊँचा बनाती है। जैसे विद्यालयों में आचार्य और आचार्य के अंग संग रहने वाले ब्रह्मचारी, मानो अपने में प्रकाश को पाते हैं। मेरे प्यारे! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जिस काल में विज्ञान पनपता है संसार में मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब महाराजा अश्वपति के यहां विज्ञान पनपा तो विज्ञान में नाना प्रकार के यन्त्रों का व्यवधान होना प्रारम्भ होना चाहिए विज्ञान का दुरूपयोग न हो करके, उसका सदुपयोग होना चाहिए और सदुपयोग में क्या-क्या मानो देखो, नाना प्रकार के यन्त्र ऐसे होने चाहिए, जो विद्यालयों में स्थिर रहने चाहिएं, और विद्यालयों में जो आचार्य विद्यालय में अध्ययन कराता है मानो उसकी जो प्रवृत्ति है, उसका अवधान होना चाहिए, और उसके मानो देखो, उसके शब्द, उसका चित्र उसकी अन्तर और बाह्य जगत की भावना भी उस चित्र में आनी चाहिए, जिससे मानो देखो, हिंसा और अहिंसा का मानव को यह प्रतीत हो जाएं, कि हिंसा है और यह अंहिसा है क्योंकि देखो, आचार्यों का मन मस्तिष्क जब एकाग्र नही होता और वह ब्रह्मचारियों को अध्ययन कहीं करा रहे है। तो मन की प्रवृत्ति कहीं और हैं, और उसका मानो आचरण कुछ और है जितेन्द्रिय नही हैं, तो मेरे प्यारे! देखो, उसको उच्चारण करते-करते मन की चंचल प्रवृत्ति बन जाती है तो वह चंचल प्रवृत्ति वत तरंगें बन करके आचार्य के आचार्य के उनके मन मस्तिष्क से वह ब्रह्मचारियों के हृदय में प्रविष्ट हो जाती है, और ब्रह्मचारी जब देखो, उसका अध्ययन करता है, तो उसके मन मस्तिष्क की जो तरंगें है, यदि वह शुद्ध तरंगें हैं तो शुद्धिकरण होगा, अशुद्ध तरंगें हैं, तो अशुद्धियां उसमें प्रविष्ट हो जाएगी देखो, महाराजा अश्वपति के यहां सुदेश नाम के जो वैज्ञानिक थे उन वैज्ञानिकों ने एक यन्त्र का निर्माण किया था जब देखो, एक विद्यालय में अध्ययन कराने वाली कन्याओं को ब्रह्मचारिणी अध्ययन करा रही थी। आचार्य जन तो उसके मन की प्रवृत्ति चंचल हो गई चंचल होने के कारण मेरे प्यारे! देखो, वह प्रवृत्ति उसके यन्त्रों में प्रवेश हो गई। जब यन्त्रो में प्रवेश हो गई, चंचल प्रवृत्ति की तरंगें देखो, भिन्न हैं, अशुद्ध देखो, भिन्न हैं दोनों प्रकार की प्रवृत्तियों में जब रत्त हो गयें। तो राजा ने कहा विद्यालय से इसको पृथक करो, विद्यालय से पृथक किया जाना चाहिए देखो, मन मस्तिष्क से ही देखो, जब ब्रह्मचारियों का मन मस्तिष्क उसके मन मस्तिष्क से समन्वय नही होगा और देखो, उसका संगतिकरण नही होगा, तो विद्या का अध्ययन नही की जाएगी, चंचलता अवश्य आयेगी देखो, आचार्य के हृदय में जब वह अध्ययन कराता है। स्वच्छ हृदय होना चाहिए। उसका आहार और व्यवहार भी पवित्र हो जिससे मानो देखो, उसका मन मस्तिष्क महान बन करके और ब्रह्मचारी उस विद्या को अध्ययन करके ब्रह्मचारी अपने में महान बन जाएं, और पवित्रता को प्राप्त हो करके बेटा! राष्ट्र का संगतिकरण राष्ट्र का मानो देखो, छात्रवत अपने में पवित्र बन जाएं और राजा देखो, अपने में बुद्धिमान ब्रह्मवेत्ता हो करके मन मस्तिष्कों को दृष्टिपात करके बेटा! उसका

निर्वाचन होना चाहिए तो मेरे प्यारे! देखो, ... अमृतं ब्रह्मा महानता को प्राप्त होना ही हमारा कर्तव्य है।

तो आओ, मेरे प्यारे! मैं तुम्हें उद्गीत गा रहा था उच्चारण कर रहा था क्या मुनिवरों! देखो, मन मस्तिष्क ऊर्ध्वा में गमन करना चाहिए तो वही ब्रह्मचारी सत्यकाम मेरे प्यारे! देखो, जब एक सहस्र गऊएं हो गई, तो सबसे प्रथम वृषभ ने कहा हे प्राचीदिक अग्नि का तुम चयन करो हे ब्रह्मचारी! तुम्हारा जो चयन है, वह प्राची दिक अग्नि में होना चाहिए, क्या अग्नि तुम्हारा अवधान है। तो मानो देखो, इससे मैं पहली कला का ज्ञान तुम्हें प्राचीदिक करा रहा हूँ। और देखो, इससे द्वितीय अग्नि का नाम द्वितीय मानो देखो, अमृतं द्वितीय कला का ज्ञान हमारे यहां देखो, वह जैसे दक्षिणी दिक है यह दक्षिणाय की चर्चा बेटा! मैं तुम्हें कल प्रगट कर सकूंगा क्योंकि दक्षिणाय का अर्थ ही कुछ और है, दक्षिणाय कहते हैं बेटा! देखो, इन्द्र की दशा है, जहाँ जितेन्द्रिय बन करके मेरे प्यारे! देखो, वह दक्षिणाय को प्राप्त करता हुआ वह नाना प्रकार की विद्युत कला में मानो तत्पर रहता है। विद्युत कला का समन्वय दक्षिणाय से रहता है, हमारे यहां बेटा! जब अमृतं देखो, ब्रह्मचारी अपने में शयन करता है, तो अपने मस्तिष्क मुनिवरों! वह उत्तरायण को देखो, दक्षिणायन करके अपने में शयन करता है, और शयन करता है इन्द्र की दशा को प्राप्त करता है। इन्द्र नाम के पर्यायवाची शब्द है, क्योंकि इन्द्र नाम राजा को जहां कहाँ कहा जाता है, वही इन्द्र मेरे प्यारे! इन्द्र हमारे यहां इन्द्रों ब्रह्मा देखो, इन्द्र नाम वायु को कहा गया है, इन्द्र नाम परमात्मा है और वायु का विशेषकर जो वायु देखो, वृत्तियों में रत्त रहने वाली है, जिसका ध्यानावस्थित हो करके, बेटा! वह मानो देखो, दक्षिणायन बनता रहता है, और दक्षिणायन के सूर्यों का भी अपने मे व्यवधान करता रहता है। जो बेटा! देखो, अन्नाद का स्वामी है वही मुनिवरों! देखो, इन्द्र वायु शचि बन करके मेघ मण्डलों को बेटा! छिन्न-भिन्न करके वृष्टि का द्यौतक कहलाता है। वही वृष्टि के मूल में विद्यमान होता है। तो मेरे प्यारे! देखो, उसमें गो के बछड़े को ले करके पृथ्वी के गर्भ में बीज की स्थापना करके कृषक अपने में प्रसन्न हो करके बेटा! देखो, अन्नाद की उत्पति करने वाला है। वह उसमें कितना सहायकता की आवश्यकता है, यही तो प्रभु! का जगत है संगतिकरण माना गया है। जो बेटा! देखो, दक्षिणाय दशा में विद्यमान रहता है, जिसकी चर्चाएं, मेरे प्यारे! देखो, कल प्रगट करूंगा, आज का विचार-विनिमय क्या, मानो देखो, प्राचीदिक बनना चाहिए, ब्रह्मचारी बन करके बेटा! जितेन्द्रिय बन करके, अपने में मानो अवधान करता हुआ, मानो देखो, याग करे और वह देखो, गऊ इत्यादियों का ध्यानावस्थित परिणत होता हुआ अपने में अपनेपन को अपने में धारण करता हुआ, ममतव को प्राप्त होता हुआ बेटा! सागर से पार होने का प्रयास करे।

तो आओ, मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें देखो, आध्यात्मिकवाद और भौतिकवाद की कुछ-कुछ चर्चाएं प्रगट कर रहा था, मानव को आध्यात्मिकवादी बन करके, अपनी आत्मा का उत्थान करना चाहिए, आत्मवेत्ता बन करके ही, मेरे प्यारे! देखो, राष्ट्र और समाज और मानवीयतम देखो, शिक्षा की प्रणाली देखो, पवित्र बना करती हैं। यह है बेटा! आज का वाक्, आज के वाक् उच्चारण करने का हमारा अभिप्रायः यह कि हम परमपिता परमात्मा का ध्यानावस्थित हो करके परमात्मा को सर्वांग स्वीकार करते हुए, वह कोई स्थली ऐसी न स्वीकार करें। जहाँ परमात्मा न हो परमात्मा सदैव सर्वत्रा में विद्यमान रहता है। तो हम उस परमात्मा की महिमा को जानते हुए इस सागर से पार होने का प्रयास करें।

तो आओ, मेरे प्यारे! आज हमारा यह विचार क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते बेटा! इस संसार सागर से पार होने का प्रयास करें। तो आओ, मुनिवरों! देखो, अपने में अपनेपन को धारण करते हुए प्रभु के विज्ञान और उसकी मानो देखो, विज्ञानमयी धारा को जानते हुए, इस सागर से पार होने का प्रयास करें। यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें

शेष चर्चाएं कल प्रगट कर सकूंगा आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन। ओ३म् देवाः आभ्यां मनु गायन्तवा आभ्यां मनाः ओ३म् यशश्चाहम् प्राची रथं माहं आपा रथं देवाः यम सर्वाम्। ओ३म् गतप्.....शेष अनुपलब्ध।

३ १८ ०३ १९९२

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहां परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। जो परमपिता परमात्मा हमारे अन्तर्हृदयों में विद्यमान रहता है, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का और उसकी अनन्तता ऊपर सदैव हम सभी अपने में विचार-विनिमय करते रहे हैं, और यह विचार-विनिमय करने का जो कर्म है, यह सृष्टि के प्रारम्भ से चला आ रहा है। प्रत्येक मानव अपने में चिन्तन करता रहा है, और परमपिता परमात्मा के इस अनूठे जगत को और इस जगत में जो ज्ञान और विज्ञान है। उसके ऊपर प्रायः अन्वेषण करता रहा है, यह क्रियाकलाप परम्परागतों से महान रूपों में गाता रहा है। कहीं अनुदात्त मंह गाता है कहीं जटा पाठ में गाता है कहीं जटा पाठ में गाता है तो कहीं घन पाठ में गाने लगता है, वह विसर्ग अनुदात्त में अपने में रत्त होने लगता है। तो ये नाना गान गाने लगता है तो हमारे रागों में उसी के स्वरूप देखो, मल्हार राग की अपने में प्राणों का समन्वय करता हुआ, देखो, गान गाता रहा है। कहीं ये प्राणों को गान में प्रवेश करता हुआ, ये चित्त के मण्डलों का दर्शन करने लगता है। तो बेटा! देखो, ये गान परम्परागतों से ही, मानो ये गतिशील रहा है, और गति करता रहा है, तो इसीलिए आज का हमारा वेदमन्त्र यह उद्गीत गाता रहा है, कि पर ब्रह्मा वर्णासुता प्रह्वा लोकाः कहीं ये मानो लोक-लोकान्तरों का गान गाने लगता है, और एक दूसरे लोक को गणना में लाने का उसको जानने में लग जाता है, इससे पूर्व काल में हमने तुम्हें वर्णन करते हुए कहा था कि जानां जन्म ब्र्ह्वे कृतं प्र्ह्वा क्या यह जो ज्ञान है, इसका नाम ज्ञान है। प्रत्येक वस्तु के गुणों का गुणाध्यानम करना और गुणों का धारण करना उसको अपनाने का नाम ज्ञान कहा जाता है। जैसे अग्नि में तेज है, और वह स्वयं अपने में तेजवान बनता है, और तेजोमयी अग्नि को जानने का प्रयास करता है, और उसके नाना प्रकार के स्वरूप को जानने के पश्चात वह ज्ञानी बनता है। मानो जैसे ब्रह्म का बखान करने वाला ब्रह्म का बखान करता हुआ वह आत्मा को उसमें स्वीकार करता है, और करता हुआ मुनिवरों! देखो, उस प्राण की प्रतिक्रिया में रत्त हो करके कहीं बेटा! देखो, प्राण को अपान में कहीं व्यान को अपान में और कही व्यान को समान में प्रेवश करता हुआ, उदान की महिमा का गुणगान गाता है मेरे प्यारे! देखो, भिन्न-भिन्न प्रकार की प्रतिभा में मानो परम्परागतों से अपने को ले जाता रहा है, और कहीं मानो देखो, विज्ञान की विचित्र उड़ाने उड़ता रहता है। मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब शिकाम केतु उद्दालक के यहां प्रायः अपने में देखो, अन्वेषण करते रहते हैं। शब्दों को विचारते रहते हैं, और शब्दों में चित्रों का दर्शन करते रहते और उनके क्रियाकलाप को वह प्रायः अपने में धारण करते रहे हैं। बेटा! मुझे वह काल स्मरण आता रहा है, नाना ऋषिवर उनके समीप जाते और उनसे नाना प्रकार के प्रश्नों को करते हुए वह उसका उद्गीत गाते और उद्गीत गाना वाणी से नही वह उद्गीत जब गाते तो क्रियाओं से गाते रहते थे। मानो देखो, यह जैसे उस प्रसंग है उसी के अनुरूप मानो देखो, यज्ञों में विज्ञान के माध्यम से या वह मानो देखो, अपने मनों के माध्यम से प्रायः वर्णन करते रहे हैं मेरे प्यारे! देखो, मुझे शिकामकेतु महाराज का जीवन प्रायः स्मरण आता रहा है, कि उनका जीवन कितना विज्ञान में रहा है और वह एक पत्नीय विज्ञान में रत्त रहे हैं, मानो द्यौ में अपने को ले जाना और द्यौ से ध्रुवा में प्रवेश करना और ध्रुवा से फिर ऊर्ध्वा में गमन करना मेरे प्यारे! यह प्रायः उनका विज्ञान है। और देखो, याग के माध्यम से याग करना और याग में जो तरंगों का प्रादुर्भाव होता रहा है, उन तरंगों के ऊपर वह विचार-विनिमय करते वह विज्ञान की धाराओं को जान करके तरंगों में तरंगित हो करके नाना प्रकार

के यन्त्रों का वह निर्माण करते रहे हैं। बेटा! देखो, आज मैं विज्ञान के युग में तो तुम्हें ले जाना नही चाहूँगा। केवल यह कि हमारे यहां परम्परागतों से ही, मानव नाना प्रकार का विचार-विनिमय करता रहा है। मानव की एक ही धारणा रही है, कि हमारा जीवन स्वर्ग में कैसे बने? हमारा गृह स्वर्ग में बने राजा कहता है, कि मेरा राष्ट्र कैसे स्वर्गगामी बने मेरे प्यारे! देखो, स्वर्ग के लिए प्रत्येक मानव अपने में कामनाबद्ध रहा है, और कामना करता रहा है। मेरी प्यारी माताएं यह चाहती हैं कि मेरा गृह कैसे पवित्र बनेगा? और मेरे बाल्य बालिका मानो कैसे महान एक दूसरे सूत्र में सूत्रित होंगें तो प्रायः बेटा! देखो, स्वर्ग की कामना करते हुए आचार्यों ने अपना-अपना मन्तव्य दिया। मुझे वह काल स्मरण है बेटा! गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज के यहां बेटा! एक समय कुछ ऋषि-मुनियों का समूह उनके द्वार पर पंहुचा, जिस समूह में बेटा! महर्षि प्रवाहण महर्षि शिलभ महर्षि दालभ्य, महर्षि पणपेतु ऋषि महाराज, महर्षि विभाण्डक और महर्षि केतु ब्रह्मचारी और कहीं मानो देखो, ब्रह्मचारी कवन्धि और ब्रह्मचारी सुकेता ब्रह्मचारी रोहिणी केतु और भी नाना ऋषि पारेत्वर ऋषि महाराज मेरे प्यारे! वरुण इत्यादियों का एक आगमन मानो देखो, वह महर्षि के द्वार पर पंहुचा। जब गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ऐसे विचित्र अपने में पुरूष कहलाए गएं। क्या वह मुनिवरों! देखो, एक सौ पांच वर्ष तक वह गाड़ी के नीचे अपने जीवन को व्यतीत कर रहे थे। किन्तु एक सौ पांच वर्ष हो गएं थे, साधना करते रहते साधना उसे कहा जाता है, एक दूसरे से मिलान का अपने में तारतम्य बना लेते हैं। जैसे प्राण को अपान में प्रवेश करना, क्योंकि आचार्य जब मुनिवरों! देखो, मुझे स्मरण आता रहा है, जब गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज से यह प्रश्न करते क्या महाराज विद्यालय में आचार्य कैसा होना चाहिए? तो वह यह कहा करते थे कि वह तपस्वी होना चाहिए और तपस्या किसे कहते हैं? वह कहते हैं कि प्राण के द्वारा साधना है, मानो देखो, प्राण को अपान में अपान को व्यान में और व्यान को समान में समान को उदान में जो प्रवेश करना जानता है, वह विद्यालयों में ब्रह्मचारियों के प्रति अध्ययन करता हुआ, जब विद्यालय को सम्पूर्णता को लाने का प्रयास करता है, तो विद्यालय में विकृतियां नही आती विद्यालय में ब्रह्मचारी उदण्ड नही होते क्योंकि वह अपने में देखो, महान और मस्तिष्क का अध्ययन करने वाले आचार्य जन ही मानो देखो, उसका निर्वाचन करते रहे हैं। आज मैं बेटा! इस सम्बन्ध में विचार-विनिमय नही परन्तु वेद का ऋषि यह कहता है, क्या विद्यालयों में जब भी आचार्य जन हो वह मनो वैज्ञानिक मानो देखो, प्राण की आभा को जानने वाले और वह देखो, प्राणों की प्रतिभा से ही मन में प्रतिष्ठित हो जाएं। तो ऐसा बेटा! देखो, महर्षि गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज अपना वर्णन करते रहे हैं, तो विचार-विनिमय क्या मुनिवरों! जब नाना ऋषिवर उनके समीप पंहुचे, तो वह विराजमान हो गएं, विराजमान हो गएं ऋषि ने उनका बड़ा स्वागत किया, और उन्होंने कहा कहो भगवन! आज मेरा कैसा अहोभाग्य है, जो मानो तुम जैसे महान पुरूषों का दर्शन हुआ है। मुनिवरों! देखो, सब ऋषि-मुनियों ने कहा-प्रभु! हमारे उत्कट इच्छा हुई कि गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज का दर्शनार्थ देखो, आयें क्योंकि दर्शनों से मानव के उनकी जो मनोवृत्ति की जो तरंगें हैं, प्राण का जो संचय किया हुआ मानो देखो, उसमें जब वह हमारे मनों से हमारे प्राण से उसका समन्वय होगा। तो मानो तरंगों में तरंगित हो करके हम तरंगेवादी हो जाते हैं तो जब ऋषि-मुनियों ने इस प्रकार का उद्गीत गाया। तो मेरे प्यारे! गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने कहा तो मानो वह गाड़ीवान थे, प्रत्येक ऋषि की अपनी उपदेश मंजरी प्रारम्भ होने लगी, मेरे प्यारे! गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज से कहा-प्रभु! हम तो यह जानने के लिए आए हैं, कि यह प्रकाश क्या है? जिस प्रकाश के लिए मानव अपने में परम्परागतों से ही, मानो अपने में प्रकाश को पुकारता रहता है। परन्तु प्रकाश में वह रत्त रहा है, परन्तु उसी प्रकाश के लिए हम सदैव तत्पर रहे हैं। मेरे प्यारे! देखो, गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज से कहा कि तुम और भी जो प्रश्न करना चाहते हो जितना मैं जानता हूँगा, उतना तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर दूंगा तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि प्रवाहण जी ने कहा हे प्रभु! देखो, यह दक्षिणाय

उत्तरायण क्या है? मेरे प्यारे! देखो, इतनें में देखो, महर्षि सोमकेतु मुनि महाराज उपस्थित हुए और सोमकेतु ने कहा-प्रभु! मैं मेरा नामोकरण तो देखो, श्र्वेतकेतु था, परन्तु देखो, मुझे सोमकेतु कहने लगे सोम इसीलिए कि बारह वर्षों के मैंने जो अनुष्ठान किए हैं, मैं सोम को पान करना चाहता हूँ। परन्तु देखो, मुझे सोम की आभा प्राप्त हुई देखो, मैंने अनुष्ठान किए हैं। मैं कहीं तो प्राण को देखो, एकाग्रता में स्वीकार करता हूँ। कहीं सोम मानो देखो, मन और प्राण का दोनों का समन्वय करना उसको सोम कहता रहता हूँ। परन्तु देखो, मैं सोम की प्रतिभा को अब तक नही जा सका हूँ। मेरे प्यारे! देखो, गाड़ीवान रेवक ने कहा कि तुम्हारे आचार्य ने गुरु जनों तुम्हें क्या निर्णय दिया है, उन्होंने कहा कि उसका निर्णय तो मानो देखो, मेरा निर्णायक नही हैं उस पर विश्वास तो करता हूँ। परन्तु देखो, क्रिया में निर्णायक नही होता, उन्होंने यह कहा कि यह जो सोम है यह मानो देखो, सूर्य से प्राप्त होता है, जैसे सूर्य को मानो देखो, वह द्यौ से प्राप्त होती है, और द्यौ से ही मानो देखो, वह विद्युत को बिखेर देता है, और यह संसार प्रकाशमान होता है, तो जैसे विद्युत है, वह अपने अन्तर्हृदय में जो अन्तर शरीरों में जो विद्यमान है। उसको एकत्रित करके उसका ध्यानावस्थित होने का नाम सोम कहा जाता है। परन्तु वह उच्चारण विशुद्ध है। और जब क्रिया में लाता हूँ तो मुझे दृष्टिपात होता है। तो मेरे प्यारे! देखो, मुझे गाड़ीवान ने कहा क्या ब्रह्मणे वार्णसुति क्या ब्राह्मण ब्रह्मचर्यतव को तुम प्राप्त हो जाओ। उन्होंने कहा-प्रभु! यह मैंने दृष्टिपात किया है। परन्तु देखो, जैसे ही वह मौन हुए, इतने में देखो, महर्षि विभाण्डक ने कहा हे प्रभु! मैं सोम को कैसे और कैसे जानूं। उन्होंने कहा ब्रह्मे वर्णसुतं ब्रह्मा चरी सुतं जब तक ब्रह्मचरीष्यामि नही बनोगे, जब तक तुम मानो अपने में मानो सौम्यता को नही प्राप्त हो सकते। जब तक तुम वर्चोसि नही बनोगे, क्योंकि वर्चोसि बना करके जैसे यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में देवताओं का जब हूत करता है। तो वह वर्चस बनाता है, और वर्चस बनाता है, उत्तरायण मन के माध्यम से मन और प्राण के माध्यम से जब वर्चस बनाता है। अपनी देवी से कहता है कि हे दिव्या आओ, हम वर्चोसि बने तो यह दोनों जब बन जाते हैं जब हूत करते हैं और देवतओं का आह्वान करते हैं। तो उनका यज्ञ सफलता को प्राप्त हो जाता है, और वही याग मानो देखो, बाह्य जगत को सजातीय बनाता है, और वही याग आन्तरिक जगत को सजातीय बना देता है, मेरे प्यारे! देखो, गाड़ीवान ने महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज से प्रश्न का मानो यथोचित उत्तर दिया, तो वह अपने में सन्तुष्ट हो गएं। तो विचार आता है, बेटा! सोम की चर्चाएं हमारे वैदिक साहित्य में प्रायः प्राप्त होती रहती हैं। मेरे प्यारे! देखो, सोम की विवेचना करते हुए अपने में सौम्य बनना ही अपने में एक विचित्रतव माना जाता है। परन्तु देखो, इसके पश्चात उन्होंने कहा कि मैं तो इस पर अच्छी प्रकार नही जानता, क्योंकि ऋषि-मुनियों में एक ही विशेषता रहती है, जो तपा हुआ महान होता है, क्या वह जिस वाक्यों को जिसको नही जानते मानो देखो, उसको कहते हैं कि इसको अच्छी प्रकार नही जानता चलों किसी और ऋषि के द्वार पर गमन करते हैं, और वहाँ इसका उत्तर हमें प्राप्त होगा, तो गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज और भी नाना ऋषियों का चलो उन्होंने कहा चलो आज शिकामकेतु उद्दालक के यहां गमन करते हैं। क्योंकि उद्दालक को एक सौ वर्ष हो गएं हैं याग करते-करते और वह याग में मानो विज्ञान की तरंगों में तरंगित हो रहे हैं। उनके द्वार पर गमन करेंगें वह इसका उत्तर भली भांति दे सकेंगें। तो मेरे प्यारे! देखो, नाना ऋषियों का एक समूह भ्रमण करते हुए बेटा! देखो, उद्दालक गोत्र में पंहुचा और उद्दालक गोत्र के शिकामकेतु उद्दालक मुनि महाराज उनकी पत्नी रम्भेश्वरी दोनों विद्यमान थे, और प्रातः कालीन याग में दोनों परिणत थे, याग कर रहे थे, उच्चारण कर रहे थे, वर्चस्तं ब्रह्मा वर्चसुतं ब्रह्मे वर्णां स्वाहा अग्नं ब्रह्मणा कृतं ब्रहो कृति देवाः। मेरे पुत्रों! इस प्रकार वह वेदमन्त्रों का उद्गीत गाते हुए प्रातःकालीन मानो देखो, उनके विद्यालय में ब्रह्मचारी विद्यमान हैं, और वह रम्भेश्वरी और देखो, ऋषिवर अपने में उद्गीत गाते हुए, मानो देखो, प्रातःकालीन याग कर रहे हैं। कामधेनु गऊ के घृत से गो दुग्ध से मानो देखो, जब

याग किया जाता है नाना प्रकार के चरू और साकल्य को ला करके जब वह याग करते रहे, तो मानो देखो, अग्ने ब्रह्मणा व्रतं अग्नि को प्रदीप्त करके अग्नि के हृदय में से जो मानो तरंगों का प्रादुर्भाव होता रहा। उन तरंगों को वह जानते रहे उन्हीं तरंगों को बेटा! वह यन्त्रों का वह प्रायः निर्माण करते रहते थे, नाना प्रकार की तरंगों को जानना जान करके मेरे प्यारे! देखो, उसको यन्त्रों का क्रियात्मकता में यन्त्रों का निर्माण करते रहते थे।

तो आओ, मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहता है, उनका जीवन बड़ा विचित्र रहा है, तो शिकामकेतु उद्दालक मुनि एक समय अपनी देवी से बोले हे देवी! हम मानो देखो, याग तो करते हैं, परन्तु याग का फल क्या है? तो उन्होंने कहा कि यज्ञं ब्रह्मा कृतं मानो देखो, उससे यन्त्रों का निर्माण होना चाहिए। बेटा! देखो, क्योंकि अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके जो यह शब्द है, यह गमन करता रहता है, और यह मानो देखो, ब्रह्माण्ड की परिक्रमा बन जाता है, और ब्रह्माण्ड एक परमात्मा का बनाया हुआ चरू है, और यह बड़ा विचित्रतव में परिणत हो रहा है। तो विचार आता रहता है कि वह दोनों याग करते और उन तरंगों के ऊपर अपने में नियन्त्रण करते हुए अनुसन्धान करने लगे तो बेटा! मुझे ऐसा स्मरण आता रहता है कि उन्होंने इस प्रकार के यन्त्रों का निर्माण किया, जिसमें मानो देखो, उसमें उनके पूर्वज उनके पूर्वजों के दर्शन होते रहे, और प्रत्येक शब्द अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके, वह द्यौ में प्रवेश होता रहता और द्यौ से मानो देखो, उसको जानता रहता विज्ञानवेत्ता तो वह जानी तो उस शब्द को जानने का प्रयास किया। शिकामकेतु उद्दालक के यहां नाना ब्रह्मचारी अपने में अध्ययन करते रहे, अध्ययन करते हुए मानो देखो, ब्रह्मा व्रतप्रहे व्रतं मानो वेदो का उद्गीत गाते वेदमन्त्रों की प्रतिभा में वह प्रतिष्ठित होते हुए, और वह मुनिवरों! देखो, मुनिवरों! उनकों यन्त्रों को जान करके उनको निर्माण करने की प्रतिभा अथवा वह बड़ा निपुणता उन्हें प्राप्त हो गई। वह नाना यन्त्रों का निर्माण करते रहे हैं, और यन्त्र मेरे प्यारे वह उस यन्त्र में इस प्रकार जिसमें देखो, अपने पूर्वजों के चित्र उनके क्रियाकलाप उनके शब्द सब मानो देखो, यन्त्र में प्रायः दृष्टिपात होते रहे हैं, और वह मुनिवरों! देखो, यन्त्र उनके पिता, महापिता, पड़पिता मुनिवरों! देखो, सौवें महापिता तक के उन्हें यन्त्रों में दर्शन होने लगे। जब वह दर्शन होने लगे तो मुनिवरों! देखो, वही अपने में विज्ञान सफलता को प्राप्त होता है। जब विज्ञान में बेटा! अपने पूर्वजों के क्रियाकलाप मानो देखो, वह सर्वत्र दृष्टिपात होने लगे अग्नि की धाराएं गारवृत्तिका अग्नि कहलाती है, उस अग्नि के ऊपर शब्द विद्यमान हो करके बेटा! वह द्यौ में प्रवेश कर जाता है, और द्यौ से मानो देखो, वह लोकों की यात्रा करा देता है, ऐसे ही यन्त्रों का उन्होंने निर्माण किया तो आज बेटा! मैं विज्ञान के युग में तुम्हें नही ले जा रहा हूँ। केवल विचार-विनिमय क्या इसके गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज से ऋषि-मुनियों का जो समूह था वह देखो, वह महर्षि उद्दालक गोत्र में पंहुचा शिकामकेतु उद्दालक बेटा! उनकी पत्नी ने बेटा! ऋषियों का अतिथि किया अतिथि का अभिप्रायः यह है कि जो बिना समय के जो भी अपने गृह में प्रवेश करता है, उसका नाम अतिथि कहा जाता है। उन्होंने बेटा! देखो, नाना प्रकार के पदार्थों को पान कराया और पान कराके उन्होंने नतमस्तिष्क हो करके कहा कहो भगवन! आज मेरा यह कैसा अहोभाग्य है, जो ऋषि-मुनियों का आगमन मेरे द्वार पर हुआ मानो मैं कितना सौभाग्यशाली हूँ, हे प्रभु! मेरे सुयोग्य क्रियाकलाप उद्गीत गाईए। तो मेरे प्यारे! देखो, उसमें गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने कहा गाड़ीवान रेवक ने कहा कि हे प्रभु! हम इसीलिए तुम्हारे यहां सोम को जानना चाहते हैं, यह सोम क्या है? और हम विज्ञान के माध्यम से भी और आध्यात्मिकवाद के स्वरूप में भी जानना चाहते हैं। तो शिकामकेतु उद्दालक ने कहा कि सोम तो परमात्मा को कहते हैं। सोम वह परमात्मा को कहते हैं। जो संसार का रचयिता है रचने वाला है वह सोम है उन्होने कहा उसका स्वरूप सोम का यह है क्या जो हमारे शरीर को क्रिया दे रहा है, अथवा क्रियाशील बना रहा है, उसका नाम आत्मा है। आत्मा को देखो, पंच महाभूतों के लोकों को जानने का नाम ही मानो देखो, सोम कहा गया है वह

भी सोम कहलाता है एक सोम वह कहलाता है, जो साधक अपने मे साधना कर रहा है, वह नाना प्रकार की वनस्पतियों को एकत्रित करके और वह उनका अपने में तपा करके सोम रस बनाता है, और सोम रस का जैसे वह पान करता है, तो मानो उसको कामना सिद्ध होती चली जाती है। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा सोम के बहुत प्रकार के देखो, अभिप्रायः देखो, वाचसुति माने जाते हैं। जिस प्रकार वाचं ब्रह्मा वृतं मानो देखो, जिससे सोमं ब्रह्मा सोम कहते हैं। जहाँ मन और प्राण का दोनों का समन्वय हो जाता है और समन्वय हो करके मानो देखो, परमात्मा का वर्चस का पान करता है। मानो देखो, वह सोम का पान करता है। मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया तो वह ब्रह्मचारी और ऋषि ने अपने में सन्तुष्ट हो गएं और सन्तुष्ट होते हुए कहा कि-प्रभु! हम भिन्न-भिन्न प्रकार के सोमों को तो जानना नही चाहते हैं। हम उस सोम को जानना चाहते हैं। जहाँ देखो, स्वर्ग की प्राप्ति हो जाएं उन्होंने कहा स्वर्ग उसे कहते हैं जहाँ मन प्रसन्न रहने वाला हो जहाँ मन प्रसन्न रहे मन वहाँ प्रसन्न रहेगा जहाँ प्राण स्वस्थ रहेगा और प्राण की सूचारू रूप से गमन करती रहेगी उसे किसी प्रकार का रूग्ण नही होगा तो मानो देखो, उसका नाम स्वर्ग कहा जाता है। जहाँ हर प्रकार की प्रसन्नता रहती है। वह मन कर्म, वचन में सब में प्रसन्नता रहने का नाम मानो देखो, स्वर्ग कहा गया है उन्होंने कहा कि-प्रभु! द्रव्य के ऊर्ध्वा भाग में कोई मानो क्रियाकलाप है। उन्होंने कहा देखो, उसको हमारे यहां निष्क्रिया होना देखो, स्वर्ग को जानना और जिन कारणों से बेटा! उसको जान करके जब देखो, साधक अग्रणीय बनता है, और प्राण के स्वरूप में प्रवेश कर जाता है तो मानो देखो, उसको एक विज्ञान की पगडण्डी प्राप्त होती है। लोक-लोकान्तरों में जाने वाले मानो देखो, उसे मार्ग प्राप्त होते हैं और उसके पश्चात जब उसको भी जान लेता है, परमात्मा के ब्रह्माण्ड में वह इतना तल्लीन हो जाता है। कि देखो, अपने को अपने में और अपने को मानो ब्रह्माण्ड में रत्त करता हुआ जब ब्रह्माण्ड के लिए एक दूसरे के तारतम्य को जानता हुआ, अपने आन्तरिक जगत में समेट लेता है। तो मानो देखो, चित्त में संस्कारों का विहिन हो जाना ही मानो देखो, उनका अक्षय होना ही एक देखो, साधक को मोक्ष की पगडण्डी प्राप्त होने लगती है। तो मानो देखो, विशेष सोम कहा गया है। जिसको पाने के पश्चात मेरे प्यारे! देखो, मानव अपने में सौम्य बन जाता है, और वहाँ देखो, स्वर्ग को त्याग करके वह आत्मा के क्षेत्र में प्रवेश करके आत्मा मं ब्रहे परमात्मा के क्षेत्र में प्रवेश करने लगता है।

तो आओ, मेरे प्यारे! देखो, जब शिकामकेतु उद्दालक ने अपना इस प्रकार निर्णयात्मक विचार दिया, उन्होंने कहा-प्रभु! विज्ञान में देखो, इसमें क्या विशेषता है, विज्ञान क्या कहता है, उन्होंने कहा यह विज्ञान ही तो है यह मानो देखो, हमारे यहां दो प्रकार का विज्ञान परम्परागतों से मानवीय मस्तिष्को में नृत्त करता रहा है। एक वह विज्ञान है जो भौतिक विज्ञान है, और दूसरा विज्ञान आध्यात्मिकवाद कहलाता है यहां देखो, भौतिक विज्ञान जब तरंगों को जानता हुआ, मानो देखो, नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण करता है। देखो, शब्द को यन्त्रों में लाता है, तरंगों को तरंगित करता रहता है, कहीं मानो देखो, माता के गर्भस्थल में शिशु का निर्माण होता है। उसमें जो देवतव आता है अथवा पंच महाभूत अपने में तरंगों में तरंगित करते हुए मानो देखो, शिशु को शरीर देते हैं। पंच महाभूतों का जो ब्रह्माण्ड है, यह बाह्य जगत कहलाता है, और उसके आन्तरिक जगत में जो तरंगें होती है, उसका नाम देखो, आन्तरिक जगत कहा जाता है। मानो देखो, जो मन, बुद्धि, चित, अहंकार का वह जगत माना गया है, तो मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार जब ऋषि ने अपना मन्तव्य दिया उन्होंने कहा देखो, यह सर्वत्र मानो देखो, अपने में अपनेपन को जानने का नाम एक विशिष्ट जगत माना गया है। तो मेरे प्यारे! देखो, इसी प्रकार मानव कहीं उत्तरायण में स्वर्ग को स्वीकार करता है। कहीं दक्षिणायन में कर रहा है, तो दक्षिणायान में ही है उत्पति का जो जगत है। वह दक्षिणायन में माना गया है। मेरे प्यारे! देखो, जब सूर्य उत्तरायण से दक्षिणायन को गमन करता है,

तो उस उत्पति के मूल में तमोगुण छाया मान हो जाता है। और जब वह मुनिवरों! देखो, उत्तरायण में जाता है दक्षिणायनन में जा करके वह वही स्थिर हो जाता है, उसको मुनिवरों! देखो, रजोगुण, तमोगुण की मात्रा प्राप्त हो जाती है, और वही मुनिवरों! देखो, जब उत्तरायण में गमन करता है उत्तरायण में जा करके शान्त हो जाता है। तो बेटा! उसका नाम स्वर्ग कहा जाता है। वही तो मानो देखो, उत्तरायण नाम ही ज्ञान का है, और दक्षिणायन नाम ही मुनिवरों! देखो, अज्ञान को माना गया है। हमारे यहां बेटा! मुनिवरों! देखो, तुम्हें स्मरण होगा जब मुनिवरों! देखो, महाभारत की मुझे स्मरण शक्ति आती है, तो विचार आता है बेटा! देखो, पितामह भीष्म देखो, जब मृत्यु शैय्या पर अथवा बाणों की शैय्या पर विद्यमान हैं, तो विद्यमान हो करके तो बेटा! देखो, वह प्रभु का दर्शन कर रहे है, और वह उनसे कहा गया एक समय व्यास जी ने कहा कि-प्रभु! अपने शरीर को नही त्याग रहे हो रक्तपात हो रहा है, आप को कष्ट हो रहा है, आप नारकिक बनते जा रहे हैं। तो उन्होंने कहा मैं नारकिक नही हूँ, मैं नारकिक तो इसी जगत में भोगना चाहता हूँ, परन्तु देखो, जब तक अपने शरीर को नही त्यागूंगा आत्मा के पृथक नही कर सकता इन पंच महाभूतों को जब तक मेरा देखो, मेरा जीवन उत्तरायण को नही चला जाएं। मानो नही त्यागूंगा। मेरे प्यारे! देखो, व्यास जी ने कहा कि-प्रभु! आपका दक्षिणायन उत्तरायण का क्या अभिप्रायः है? उन्होनें कहा दक्षिणायन का अभिप्रायः अन्धकार है, और देखो, उत्तरायण का नाम ही प्रकाश माना गया है। देखो, एक माह के दो पक्ष होते हैं, एक शुक्ल पक्ष है, तो एक कृष्ण पक्ष कहा जाता है, वह मानो देखो, कृष्ण पक्ष अन्धकार को कहते हैं, और देखो, शुक्ल को कहते हैं प्रकाश इसी प्रकार उत्तरायण को प्रकाश कहते हैं। उन्होंने पुनः यह प्रश्न किया कि महाराज! उत्तरायण किसे कहते हैं, और दक्षिणायनन किसे कहते हैं। उन्होंने कहा दक्षिणायनन कहते हैं। जो अमावस्य से पूर्व देखो, पूर्णिमा से ले करके जो काल व्यतीत होता है, उसको दक्षिणाय कहते हैं, मानो देखो, वह दक्षिणाय कहलाता है, और जो मानो देखो, अमावस्य से ले करके जो पूर्णिमा तक का समय व्यतीत होता है। उसे उत्तरायण कहते हैं, और वही मानो देखो, शुक्ल पक्ष माना गया है। इसी प्रकार अमृतं देखो, यह तो लोक की परिभाषा है इसी प्रकार दक्षिणायन कहते हैं, जब सूर्य दक्षिण को गमन करता है, छह माह तक और छह माह तक वह उत्तरायण में जाता है। तो उत्तरायण का नाम ही देखो, वह प्रकाश है, दक्षिणायन का नाम ही हमारे यहां देखो, जैसे अमावस्य की रात्रि होती है, तो मेरे प्यारे! देखो, व्यास जी ने पुनः कहा क्या आप तो ब्रह्मवेत्ता है क्या? महाराज आप तो ब्रह्मवेत्ता है मैं यह और जानना चाहता हूँ कि उत्तरायण किसे कहते हैं? दक्षिणायन किसे कहते हैं? उन्होंने कहा दक्षिणायन से पितर यागी बनता है, मानव जब पितर याग की कामना होती है पति पत्नी में क्या मैं पुत्र याग करूं तो पुत्र याग मानो देखो, दक्षिणायन कहलाता है और जब मानव की यह इच्छा होती है अपने जीवन को प्रकाश में ले जाऊं प्रकाश में ले जाऊं तो तपोवन में ले जाऊं तो उसका नाम हमारे यहां उत्तरायण कहा जाता है। मेरे प्यारे! देखो, वह तमोगुण अमृतियों में उत्पन्न होता है। तमोगुण में सन्तान को जन्म देता है, परन्तु तमोगुण के गर्भ में एक कामना होती है, सत्यवाद की और उसमें रजोगुण की पुट लगी हुई होती है। तो वह मेरे प्यारे! देखो, उसको दक्षिणायन कहते हैं। उसको हमारे यहां अन्नं ब्रीहि कृतं देवत्वां भूतं ब्रहे वह देवताओं का लोक ही मानो देखो, पुत्र याग उसे कहते हैं, एक मानो देखो, देव यान होता है, उसे दूसरे रूप में देवयान और पितर यान कहते हैं। पितर यान उसे कहा जाता है, जो मेरे प्यारे! देखो, ज्ञानी बन करके जैसे आचार्य अपने विद्यालय से ब्रह्मचारियों को शिक्षा देता है, और वह कहता है आओ, हे ब्रह्मचारी! मेरे समीप आ जाओ, तुम्हें मैं मृत्यु से पार होने के लिए मैं तुम्हें उपदेश देना चाहता हूँ। वह मृत्यु से पार होने का उपदेश देते हुए, और वह कहते हैं कि इन्द्रियों में तुम्हारे ज्ञान और विज्ञान समाहित है। इसको जानने का नाम ही मृत्यु से पार होना है जैसे नेत्रों में देखो, अग्नि का व्यवधान दृष्टिपात आता है। वह नेत्र मानो देखो, अग्नि का स्वरूप बनाना ही ब्रह्मचारियों तुम्हें मृत्यु

से पार होना है। श्रोत्रों में शब्दों का व्यवधान हो रहा है। उन शब्दों का अन्तरिक्ष बनाना ही मानो देखो, मैं तुम्हें उत्तरायण में जाना है। ज्ञानी बनना है, तो इस प्रकार आचार्य कहता है कि चक्षु में शुन्धामि, प्राणां में शुन्धामि, श्रोत्रों में शुन्धामि सब मानो देखो, तुम्हारे जीवन से उत्पन्न हो जाएगी। तो इस प्रकार बेटा! देखो, जब वह अपना उपदेश देता है तो आचार्य व ब्रह्मचारी दोनों मानो देखो, उत्तरायण की चर्चा कर रहे हैं, उत्तरायण में जाना चाहतें तो मेरे प्यारे! देखो, महात्मा भीष्म ने कहा भीष्म ने कहा हे रावं भूतं मानो देखो, कृतं मानं ब्रहे मानो देखो, मानव का कर्तव्य है कि उत्तरायण में जाने का प्रयास करे मैं भी अपने को उत्तरायण में शरीर को त्यागना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, उसके पश्चात अपना उपदेश मंजरी उनकी प्रारम्भ रही परन्तु जब यह जान लिया उन्होंने पुनः कहा- प्रभु! मैं उत्तरायण और दक्षिणायन को पुनः से जानना चाहता हूँ उन्होंने कहा देखो, यहां ज्ञान का क्षय होने लगता है और अज्ञान में जब चला जाता है उसका नाम दक्षिणायन कहलाता है और उत्तरायण उसे कहते हैं जो मानो देखो, ज्ञान की वृत्तियों में चला जाता है ज्ञान को जानता हुआ जानते-जानते वह मानो देखो, आत्मा के स्वरूप को जानता हुआ पंच महाभूतों का जानता हुआ मेरे प्यारे! देखो, भीष्म यह कहते हैं भीष्म ने कहा कि यह जो विज्ञानवेत्ता हैं विज्ञानवेत्ता देखो, तीन प्रकार के परमाणुओं को ले करके विज्ञान में रत्त होता है सबसे प्रथम मानो जो परमाणु है वह गुरूतव तरलतव है तेजोमयी है यह तीन प्रकार के परमाणु हैं और तीनों प्रकार के परमाणुओं का वह मानो उनका संगतिकरण करता रहता है और उनका संगतिकरण करता हुआ मेरे प्यारे! नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण करता है लोक-लोकान्तरों की यात्रा में वह सफलता को प्राप्त होता है वह मानो तीन परमाणु हैं तेजोमयी तरलतव और देखो, गुरूतव यह परमाणुओं को गति देने वाली वायु हैं और मुनिवरों! देखो, जहाँ वह भ्रमण करता है उसका नाम अन्तरिक्ष है यह पंच महा लोक कहा जाता है पंच महाभूतों का लोक है और इनमें आत्मा विद्यमान रहता है आत्मा जब मानो देखो, उनकी संरक्षणता को जान करके बाह्य जगत में मानो प्राण और मन को देखो, यह प्रकृति का पंच महाभूतों का मानो सूक्ष्मतम तन्तु कहा जाता है और यह जो प्राण है यह ब्रह्म के स्वरूप का सूक्ष्म तन्तु कहा जाता है जब दोनों का मिलान होना प्रारम्भ हो जाता है दोनों का जब मिलान हो जाता है आत्मा का क्षेत्र भिन्न बन जाता है ब्रह्म का क्षेत्र भिन्न बन जाता है और भिन्न-भिन्न बन करके मुनिवरों! देखो, अपने में मानो देखो, आत्मा के स्वरूप में प्रवेश कर जाता है पंच महाभूतों के लोक को त्याग करके बेटा! आत्मा जाता है तो उत्तराण में जाता है उत्तरायण कोई दिशा नही मानी गई है यहां यहां केवल ज्ञान और विज्ञान को जानना ही मेरे प्यारे! देखो, जिसका नाम विज्ञान है चाहे वह गुरूतव में है चाहे तरलतव में है मेरे प्यारे! जितना भी यह ब्रह्माण्ड में चित्त बना हुआ है चाहे वह सूर्य मण्डल के स्वरूप में हैं चाहे वह चन्द्रमा के पिण्ड के रूप में हैं चाहे वह वनस्पति के रूप में हैं चाहे वह ध्रुव पिण्ड बना हुआ है चाहे वह नक्षत्रों के रूप में मानो देखो, जैसे मूल नक्षत्र है रोहिणी केतु है सोम मण्डल है जैसे अरूणधती है वशिष्ठ मण्डल है नाना प्रकार के जो मण्डलों का एक पिण्ड बना हुआ है यह पिण्डों में सबमें गुरूतव है तरलतव है तेजोमयी है मानो देखो, इनके तीनों परमाणुओं को संगठित करने वाला वह ब्रह्म की सत्ता है और ब्रह्म की सत्ता ही मुनिवरों! देखो, नाना प्रकार के पिण्डों को गति दे करके वही आकाश में सौर मण्डलां के रूप में परिणत होती रही है और वही मुनिवरों! देखो, आगे चल करके आकाश गंगा हैं और वही आकाश गंगाओं का पिण्ड बन करके नाना आकाश गंगाओं का पिण्ड बन करके निहांरका के रूप में हैं और वही नाना निहारिका के रूप में मानो देखो, वह अमृतं ब्रह्मा वर्णसुतप्रह्वे वही मेरे प्यारे! मेरे प्यारे! अवन्तिका के रूप में परिणत होती रही है जो इस प्रकार के विज्ञान को जानता है और एकोकी गमन करता हुआ ब्रह्म को रचनाकार स्वीकार करता है और वह आत्मा जानना जानाति जननं ब्रह्मा ब्रह्मे व्रतं वही ज्ञान के माध्यम से बेटा! देखो, आत्मवेत्ता जब आत्मा का ज्ञान प्राप्त कर लेता है तो आत्मा का विज्ञान है

तो मेरे प्यारे! जब आत्म ज्ञान हो जाता है जब यह मानव शरीर को त्यागता है तो बेटा! पंच महाभूतों को त्याग करके तो यह बेटा! उत्तरायण को प्राप्त हो जाता है तो मेरे पुत्रों! जब व्यास जी इन वाक्यों को पान करने लगे वह अपने में शान्त हो गएं उन्होंने कहा धन्य है प्रभु आपको उन्होंने कहा-प्रभु! आप पूर्व से उत्तरायण में क्यां नही पंहुचे उन्होंने कहा मेरा जीवन तो उत्तरायण में था परन्तु देखो, मैं अपने वचनों से बंधा हुआ और मैं देखो, अपने में अपने को नही जान पाया मानो देखो, अर्जुन के तीक्ष्ण बाणों ने मेरा जो दूषित जो रक्त शरीर से मानो देखो, दूरी हो गया अब मेरे में आत्मा का एक सूक्ष्म शरीर और देखो, एक स्थूल शरीर में प्रतिक्रिया वह न रहती पाप के अन्न को जो मैंने प्राप्त किया है उससे मानो मेरा जीवन केवल दक्षिणायन और अमृतियों में रहा अतः मैं उत्तरायण में नही जा सका मेरे प्यारे! देखो, यह वाक् महारानी द्रोपदी ने कहा था जब द्रोपदी मेरे प्यारे! गायत्री और छन्दों का पठन-पाठन कराती हुई वह मुझे नित्य प्रति देखो, अन्न का पान कराती थी जब युद्ध समाप्त होने के पश्चात में जब वह अन्न का पान कराती तो देखो, उससे वह जो अन्न पवित्र था गायत्री छन्दों से जो मथा हुआ जो अन्न था मुनिवरों! देखो, उससे तरंगें पवित्र हो गई और पवित्र हो करके शरीर का उपदेश देने लगे और वह उच्चारण करने लगे कि यह जो जगत है यह ब्रह्म का रचाया हुआ जगत है और ब्रह्माण्ड ही मानो देखो, ब्रह्माण्ड ब्रह्म में है और ब्रह्म ब्रह्माण्ड में है मेरे प्यारे! देखो, मानव उसकी आभा में रत्त हो रहा है जब बेटा! देखो, इस प्रकार का उपदेश दे रहे थे तो उस समय महारानी दोपदी ने यह कहा कि हे प्रभु! जब दुशासन मुझे सभा में लाए और वह मुझे नग्न करने के लिए उन्होंने अपना क्रियाकलाप बनाया वह तो मेरी संकल्प शक्ति इतनी प्रबल थी क्या मेरे वस्त्रों का हनन नही कर सके परन्तु मेरी संकल्प शक्ति की तरंगों ने देखो, उन्हे शान्त कर दिया था हे प्रभु! उस समय तुम्हारा यह ब्रह्म ज्ञान कहाँ गया था तो उस समय उन्होंने कहा-देवी! मैंने एक पुत्री दुर्योधन के पाप का अन्न मैंने ग्रहण किया था उससे मेरे विचार दक्षिणायान बने हुए थे मेरा उत्तरायण नही रहा था परन्तु उत्तरायण मुझसे गमन हो गया था अब तुम्हारे अन्न ने जो मैं पाता रहता हूँ उस मेरे जीवन को उत्तरायण में पंहुचा दिया है अब मैं उत्तरायण में देखो, ब्रह्म है और देखो, दक्षिणायनन में प्रकृति है प्रकृतिवान में जाने के पश्चात मानो प्रकृति का बन जाता है और जब वह उत्तरायण में अन्न की पवित्रता के द्वारा जब उत्तरायण में चला जाता है तो उत्तरायण मन, मस्तिष्क और आत्मा की धरोहर बन करके उसके भोगतव्य का एक स्वामीतव बनता है तो हे देवी! मैंने जीवन में मेरा जीवन देखो, उत्तरायण और दक्षिणायन में परिणात नही है मानो मैं उत्तरायण वह परिणत होता है तुम्हे स्मरण हो जाना चाहिए और जो भी मानव उत्तरायण में ज्ञान के पश्चात अपने शरीर को त्यागता है वह मानो देखो, मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण करता है या लोक-लोकान्तरों की प्रतिभा को जान करके वह पुनः मानो देखो, आध्यात्मिकवाद रूपी गृह में जन्म ले करके गृह स्वामी बन करके पंच महाभूतों के लोक में आत्मा का दृष्टा बनता है तो मेरे पुत्रों! देखो, यह भीष्म का एक वाक् कहा उन्होंने कहा है कि परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान भी दक्षिणाय है और देखो, प्रकृति वाद में प्रवेश होने का नाम ही वह तमोगुण है और वही दक्षिणायन कहलाता है तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने अन्त में कहा कि जो दक्षिणायन में है वह पितर यागी बनते हैं और जो उत्तरायण में है देवयागी बनते हैं जो देवता को प्राप्त होते हैं इसीलिए देवतं में हमारा जीवन है तो मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि ने कहा अमृतं ब्रह्मा देखो, भीष्म जी ने अपने वाक् प्रगट किए वह वास्तव में देखो, अपनी आभा में परिणात होते हुए तो मेरे प्यारे! देखो, आज का हमारा वेदमन्त्र भी क्या कह रहा था वेदमन्त्र यही तो कहता है कि बेटा! हमें अपने जीवन को अपने मानो देखो, अपने क्रियाकलापों को विचित्र बना लेना चाहिए। जिससे संसार में स्वर्ग तुम्हें दृष्टिपात आने लगे परमात्मा का जो जगत है यह बेटा! बड़ा अनूठा अनुपम है और वह अनन्तमयी है और मानव उसके जगत में नाना प्रकार का गान गाता है कहीं बेटा! यह मल्हार गान गाता है कहीं मानो यह मुनिवरों! देखो, दीपावली के राग को परिणात करने लगता

है मुझे स्मरण है क्या जब ऋषि जन देखो, जब प्राण और अपान को मानो देखो, एक सूत्र में ला करके गान गाते थे तो वह बेटा! देखो, उनको दीपों का साक्षात्कार हो जाता था और जब मुनिवरों! देखो, वह प्राण को शीतली प्राण में परिणत करते तो अपने में गान गाता है तो बेटा! देखो, मेघो से वृष्टि प्रारम्भ हो जाती है तो परिणाम क्या है कि नाना प्रकार के गान को गाना चाहता है क्रियाकलापों को देखो, अक्षय नही होता वह सदैव अपने रूप में बने रहते हैं तो बेटा! देखो, आज का विचार-विनिमय क्या मैं परमपिता परमात्मा के उस अनन्तमयी ...... कहता हे सत्यकाम हम एक सहस्र हो गएं हैं अब तुम गुरु के आश्रम को चलो मानो देखो, तुम्हें दो कलाओं का ज्ञान कराया जिसमें पूज्यपाद मैं तुम्हें प्राचीदिक कला का वर्णन कर रहा था आज मैं बेटा! देखो, मैं दक्षिण कला का वर्णन कर रहा था जो मानो देखो, हमारे यहां इन्द्र देखो, दक्षिणा कर रहा था वह बेटा! देखो, दक्षिण कला का वर्णन कर रहा था वह बेटा! देखो, जिसको हमारे यहां दक्षिणां भूतं ब्रह्मे कृतं असुतं देखो, मुनिवरों! देखो, उद्गीत गाता हुआ कहता है बेटा! देखो, दक्षिण कहते हैं जहाँ इन्द्र की प्रतिभा का वर्णन होता है वह बेटा! देखो, दक्षिण में इन्द्र रहता है और इन्द्र नाम जहाँ आत्मा को कहा जाता है वहाँ राजा नाम भी इन्द्र हैं वही बेटा! देखो, इन्द्र नाम वायु का है और शचि नाम विद्युत का है जब बेटा! इन्द्र और विद्युत एक सूत्र में बन जाते हैं एक समूह बन जाते हैं तो बेटा! वहाँ अमृतं देखो, मेघों को छिन्न-भिन्न कर देते हैं वह जो वत्रासुर इन्द्र का दोनां का संग्राम होता है और संग्राम हो करके बेटा! धीमी-धीमी वृष्टि प्रारम्भ हो जाती हैं वह पृथ्वी के गर्भ में जब वह वृष्टि जाती है तो नाना प्रकार के व्यंजनां को जन्म देती हैं वह नाना प्रकार के व्यंजनों वाली बनती है तो मुनिवरों! देखो, दक्षिणी दिक वर्णो वह दक्षिणी दिक कहलाती है जहाँ बेटा! देखो, वह ब्रह्मा व्रतं गो के बछड़े को वृषभ कहा जाता है वह पृथ्वी की चमड़ी को उधेड़ करके बेटा! उसके मांस में उसके गर्भ में बीज की स्थापना करते हैं और स्थापना करके यह पृथ्वी बेटा! नाना प्रकार के खनिज पदार्थों को प्रदान कर देती है यही तो बेटा! देखो, प्रकृति कही जाती है मानो देखो, उसका स्वामी कौन है इन्द्र है और इन्द्र मानो देखो, इन्द्र नाम वायु का है और शचि नाम उनकी पत्नी जो मंगलं ब्रह्मे बेटा! वह विद्युत है और विद्युत का और इन्द्र का जब समन्वय होता है तो वह जो वत्रासुर है उनका विनाश होता है वत्रासुर मेघ मण्डलों को कहते हैं वह वृष्टि का स्वामी कहलाता है इसी प्रकार बेटा! देखो, इन्द्र नाम यहां वायु को माना गया है कहीं इन्द्र नाम बेटा! राजा का है जो एक सौ एक अश्वमेध याग करता है देखो, वह इन्द्र बनता है उसका संसार में कोई शत्रु नही होता है वह अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करता है और वह विजय प्राप्त करके वह एक मानो एक सौ अश्वमेध याग का नाम बेटा! भी इन्द्र है जहाँ-जहाँ देखो, इन्द्र बनते हैं धिराज बनते हैं इसी प्रकार मुनिवरों! देखो, इन्द्र नाम परमात्मा का है और इन्द्र नाम आत्मा का है जो शरीर में वास कर रहा है मेरे प्यारे! देखो, इन्द्र कहते हैं जो स्थिर रहने वाला हो इन्द्र कहते हैं जहाँ गति बनी रहे इन्द्र जब तक रहता है जब तक गतिवान रहता है शरीर और इन्द्र के चले जाने के पश्चात बेटा! गति शून्य हो जाती है तो इसी का अभिप्रायः देखो, इन्द्रं भवो प्रमाणां भवे अश्वनं हे इन्द्र! तू हमारे जीवन का जीवन दाता है और वे परमपिता परमात्मा का वाची कहलाया गया है तो आओ, मेरे प्यारे! मैं इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना तुम्हें देने नही आया हूँ। केवल विचार-विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, इन्द्रो भव प्रमाणां यह मानो देखो, दक्षिणायन में रमण करने वाला इन्द्र है जो विद्युत की शक्ति बेटा! देखो, हिमालय से मिलान करके मानो छिन्न-भिन्न कर देती है और मेघ मण्डलों को गति के रूप में परिणत करने वाली है तो बेटा! यह देवतव हो रहा है तो देवतव के ऊपर हमें विचार-विमनमय करते हुए इस संसार सागर से पार होने का प्रयास करना चाहिए तो आओ, मेरे प्यारे! मैं आज तुम्हें क्या उद्गीत गाने लगा हूँ आज का विचार-विनिमय यह कि हम परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते हुए अपने मानवीयतव को ऊँचा बनाते हुए बेटा! सागर से पार होने का प्रयास करें बेटा! देखो, जानाति जननं

ब्रह्मा लोकां वेद की आख्यिका कहती है कि जानने का नाम ज्ञान है और ज्ञान के उपयोग का नाम ही बेटा! देखो, विज्ञान है और ज्ञान और विज्ञान के दोनों के समन्वय करने का नाम बेटा! आध्यात्मिक विज्ञान कहा जाता है मेरे प्यारे! देखो, आध्यात्मिकवाद उसे कहते हैं जहाँ भौतिकवाद को जानता हुआ लोक-लोकान्तरों को जानता हुआ मानव जहाँ वह नाना प्रकार के यन्त्रों में रमण करने वाला लोक-लोकान्तरों में जो यात्री बन जाएं और यात्री बन जाने के पश्चात नाना प्रकार के यन्त्रों रूप बन जाएं बेटा! जहाँ भौतिक विज्ञान का समापन होता है वहाँ से मुनिवरों! देखो, आध्यात्मिकवाद का प्रारम्भ हुआ करता है तो आज का विचार-विनिमय यह कि हमें आध्यात्मिकवाद में प्रवेश करना चाहिए वह ब्रह्म ज्ञान है वह स्वर्ग और देखो, मोक्ष की उत्तम पगडण्डी है जिसको प्राप्त करने के पश्चात बेटा! वह ब्रह्म में परिणत हो करके दक्षिणाय में प्रवेश हो जाता है और अपने को अपने में ब्रह्म में ब्रह्म को अपने में स्वीकार करके बेटा! ब्रह्मवर्चोसि बन जाता है यह है बेटा! आज का वाक्

४ १९ ०३ १९९२

...यम सर्वां गृहितां परि तेनु यश्शचमां गायन्त्वा यम मया भविते नमः आत्मा मनश्चं प्राणन्भविता मनश्चमा रथा आपाति यम अभ्यां पवमानश्चमा आपां

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहां परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी है, और उसकी महिमा चंहु और मानो उसकी रमणता में रमण करती रहती है। वह विज्ञानमयी है, सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके, वर्तमान के काल तक नाना विज्ञानवेत्ता हुए हैं, परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नही हुआ, जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके। क्योंकि वह सीमा से रहित है, और सीमा में आने वाले नही हैं, इसीलिए वे परमपिता परमात्मा अनन्तयमी है, और उसकी अनन्तता का अभ्योदय होता रहता है, और वह सदैव नवीन बना रहता है। क्योंकि ज्ञान सदैव एक ही तुल्य रहता है, और नवीनतम रहता है, उसी में वृद्धपन नही आता। क्योंकि वृद्धं ब्रहा वर्णनं वह वृद्धपन उसमें आता है, जिसमें काया होती है। इसीलिए परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान जो है, वह एक रस रमण करने वाला है, और जो एक रस रहता है, उसमें वृद्धपन नही आता। जैसे मानव के शरीर में आत्मा विद्यमान होता है, परन्तु आत्मा में वृद्धपन नही आता, आत्मा एक रस रहता है। वह चेतना हैं। अव्रय है। तो मानो देखो, तो मानो देखो, इसीलिए जो चेतना है, जो अपने में चेतनत्व को धारण किए हुए रहती है, तो इसीलिए वृद्धपन नही आ पाता। क्योंकि एक रस रहने वाला है। मानो जैसे जिसका निर्माण होता है, उसमें वृद्धपन आता है, उसकी सीमा है, और जिसका निर्माण नही होता, उसकी कोई सीमा नही होती, और उसमें वृद्धपन नही होता। वह सदैव एक रस बना रहता है। तो इसीलिए मुनिवरों! आज का हमारा वेदमन्त्र कहता है, एका रसं कृतं मानो देखो, परमपिता परमात्मा का जो ज्ञान और विज्ञान है, यह भी एक रसतम रहता है। एक ही रस रमण करता रहता है। इसीलिए इसकी कोई सीमा नही हैं। वह सीमा से रहित है। उसका ज्ञान और विज्ञान भी सीमा से रहित है। तो वह सीमा में आने वाला नही है, क्योंकि उसका अनन्तमयी ज्ञान और विज्ञान है। प्रत्येक मानव सृष्टि के प्रारम्भ से मानो उसके ज्ञान और विज्ञान के ऊपर अन्वेषण करता रहा है, और विचारता रहा है, अपनेपन को ही धारयामि बनाता रहा है। तो मुनिवरों! आज इस सम्बन्ध में कोई विशेष चर्चा नहीं आज का हमारा वेदमन्त्र हमें कुछ उद्गीत गा रहा है। मेरे प्यारे महानन्द जी कुछ प्रेरणा आ रही है, उसी प्रेरणा के आधार पर अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए हम सदैव निहित रहे हैं। देखो, यह प्रेरणा आ रही है कि आज का जो दिवस है, वह पर्व का दिवस कहा जाता है, हमारे यहां वैदिक साहित्य में जितने भी पर्व हैं, उनका अपना मानो कोई रहस्यतम माना गया है। उसमें कोई न कोई न रहस्य, आन्तरिक में परोक्ष में परिणत रहता है। जिसका प्रत्यक्षतव दोनो ही अपने में बड़ा महत्वदायक माना गया है। आज मानो देखो, होलिका, अपने में मानो देखो, वृत्त कर रही है जैसा मुझे मेरे प्यारे महानन्द जी ने मुझे पूर्व काल में भी वर्णन कराया परन्तु देखो, यह सृष्टि के प्रारम्भ से क्या यह हमारे यहां, श्रेष्ठ पुरुषों की एक बडी उपलब्धि रही है क्योंकि जब कृषक मानो देखो, इस पृथ्वी के गर्भ में, अन्नाद मानो परिपक्वता के लिए आता है, तो उस समय प्रत्येक गृह में यागों का प्रत्येक नगरों में गृह का ब्रहे वह यागों का बड़ा चलन रहा है। और वह चलन इसीलिए रहा है, क्योंकि वायुमण्डल को हम प्रायः ऐसा बना देते हैं, जिसमें प्रदूषण न रहे, और उसमें पवित्रता आ जाएं, जिससे देखो, वह हमारा जो अन्नाद है, वह हमारे गृह में मानो वृणित हो करके आए,

और वह निरव्रय हो करके, हमारे गृह को पवित्र बनाएं। तो मानो देखो, प्रकृति को मग्न करने के लिए, अग्नि का अग्न्याध्यान प्रायः परम्परागतों से होता रहा है। उसमें मुनिवरों! देखो, कृषक जब सर्वत्रता में मानो देखो, जो यज्ञाग्नि है जब मुनिवरों! देखो, प्रत्येक नगरों में प्रत्येक अवृत्तियों में बेटा! देखो, यज्ञों का व्यवधान है, और मुनिवरों! देखो, उसको नवीन अन्न को उसमें मानो देखो, मुनिवरों! देखो, वह भस्म कर देना और उसको मुनिवरों! देखो, उसको कुछ पान किया जाता है, जिससे नवीन अन्न का अपना कोई वृत मानो देखो, कृत माना जाता है उससे परीक्षा का फल आता है, वह परीक्षा क्या कि अन्न परिपक्व हुआ, अथवा नही ये अन्न किस प्रकार है, तो इस प्रकार का भाव मुनिवरों! देखो, मानवीय मस्तिष्को में रहा है, इसी भाव के साथ एक मौलिक रहस्य ये भी विद्यमान रहा है कि परमात्मा से यह प्रार्थना करते है कि देवतओं से मानो हूत प्रदान करते हैं हे देवता जनों! हे अग्नि! तू हमारा वे परमपिता परमात्मा भी अग्निमयी स्वरूप माना गया है। मानो देखो, ये अग्नि अपने में देखो, सभी देवताओं को वह जब भोज्य प्रदान करती है तो कोई न कोई देवता अपने में रहस्यतम को लिए हुए हो और उसी रहस्य को ले करके, मेरे प्यारे! देखो, प्रकृतिवाद को ऊर्ध्वा में प्रदूषण से रहित करने के लिए, प्रत्येक कृषक अपने गृह में अपने नगरों में बेटा! उसका प्रयत्न करते रहे हैं। प्रदूषण को शान्त होने के लिए, सबसे उत्तम एक ही क्रियाकलाप है, देखो, हम अग्नि के माध्यम से उसके मुखारबिन्दु में देखो, नाना प्रकार का चरू प्रदान किया जाएं, क्योंकि पुष्ठ और मधु, मिष्ठ और पौष्टिक और सुगन्धित और मुनिवरों! देखो, रोगनाशक ये सर्वत्र गुणों वाला चरू बना करके, अग्नि में स्वाहाः कह करके, अपनी वाणी में से वेदों का उद्गीत गाते हुए, मेरे पुत्रों! देखो, ये क्रिया अपने में क्रियाकलाप करा रहा है यह सृष्टि के प्रारम्भ से ही मानो देखो, आर्यतव और देखो, वैदिक साहित्य से इसको सजातीय बनाया है। गायत्राणी छन्दों का पठन-पाठन होते हुए वेदमन्त्रों का उद्गीत गाया जाता है। तो इसके पिछले भाग में यह रहस्यतम रहता है कि हमारा जो अन्न है, वह हमारे गृह में आए, परन्तु देखो, प्रदूषण से रहित हो करके आए, जिससे मानो देखो, प्रकृति का कोई प्रकोप न हो, और प्रकृति को प्रसन्न करने के लिए सबसे प्रथम एक ही मार्ग है, कि हम अग्नि को देवताओं का मुख स्वीकार करके हम अग्नि के मुखारबिन्दु में नाना प्रकार का चरू प्रदान करके मानो वायुमण्डल में उन चरूओं को मानो देखो, वह चरू का सूक्ष्म रूप बन करके वह तरल के रूप में परिणत होता हुआ, मुनिवरों! देखो, एक दूसरे परमाणु में परमाणुता की आभा को प्राप्त कराता रहा है।

तो आओ, मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहां वैदिक साहित्य में प्रायः अपना कोई महत्व माना गया है। दो पर्व हमारे यहां बड़े महत्व दायक है, एक मानो होलिका और दूसरा मानो देखो, दीपावली, दीपावली के दिवस भी इसी प्रकार दीप याग होते रहते हैं। देखो, वह दीप यागों से वायुमण्डल मानो उससे छायामान हो जाता है और छायामान हो करके मानो देखो, वह उस समय कृषक अपनी देखो, पृथ्वी के गर्भ में बीज की स्थापना करता है, और इस दिवस मानो देखो, वह उसके गृह में आने का समय होता है। और चन्द्रमा से उपासना करके, हे चन्द्रवहा! तू मानो अपनी कान्ति से हमारे अन्न को पवित्र बना। तू वनस्पतियों का धिराज है, तू वनस्पतियों में रस को प्रदान करने वाला है। माता के गर्भस्थल में जब हम जैसे शिशु होते हैं, तो उस समय तू ही मानो देखो, रसों को प्रदान करता रहता है। अमृत देता रहता है। वही अमृतमयी कहा जाता है, तो इसीलिए हमारे यहां, ये जो पर्व है इनका अपना-अपना बड़ा विशेष महत्व माना जाता है। तो इस महत्वदायक को हम स्वीकार करें, और प्रातः सांयकाल मानो देखो, उसमें हूत करते हुए, अग्नि को देवता, देवताओं का भी देवता स्वीकार करके और मानो देखो, उसमें याग का प्रादुर्भाव, अपने में याग का अवृत करें, जिससे मानो देखो, अजामेध यागों में और अश्वमेध यागों में जिसका बड़ा महत्व आया है। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने अपनी लेखनियाँ बद्ध करते हुए, उन पर्वों का बड़ा वर्णन किया है, और इनका बड़ा महत्वदायक मानो रहस्यतम माना गया है, क्योंकि हमारे समक्ष नियुक्त किया

है साधारण रूपों में, यह वसन्तु ऋतु है मानो देखो, ऋतु के आधार पर प्रत्येक मानो देवता अपनी-अपनी छवि लिए होता है। यह मानो देखो, चन्द्रमा अपनी अमृतमयी छवि ले करके और यह अकृतियों में रत्त होता रहा है। अमृत को देता रहता है और दिशा को अपने में धारण करता रहता है। तो विचार आता रहता है, यह चन्द्रमा हमारा देवतव है, माता के गर्भस्थल में, जब मानो एक बिन्दु है, उस बिन्दु में शिशु है और वही शिशु मेरे प्यारे! माता के गर्भ में प्रवेश होते ही मानो देखो, चन्द्रमा अमृतमयी है, और सूर्य प्रकाशमयी है, और अग्नि उष्णा बनाने वाली है, और मुनिवरों! देखो, ओढ़न और आसन भी जल है और गुरूतव मेरे प्यारे! पिण्ड का द्यौतक है, यह पिण्ड रूप बना देता है। तो इस प्रकार मुनिवरों! देखो, माता के गर्भ में हम जैसे प्यारे पुत्रों! का निर्माण होता रहता है। निर्माणवेत्ता निर्माण करता है, परन्तु मेरी भोली माता उस निर्माणवेत्ता से वंचित है। तो इसीलिए हमें उसका अवधान करना चाहिए। तो विचार क्या इन पर्वों का अपना बड़ा महत्व माना गया है। हम अपने महत्व से मुनिवरों! देखो, दूरी न हों अपने स्थान पर एक स्थलियों पर अपने स्थान पर विद्यमान हो जाएं। तो विचार-विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, रूढ़िता को हम कहीं प्रहलादं गुरुं ब्रहे मुझे महानन्द जी ने वर्णन कराया कहीं देखो, हिरण्याकुश की भोजई से देखो, उसका समन्वय किया है। कहीं प्रहलाद से इसका समन्वय है। तो मेरे प्यारे! देखो, वह मुझे स्मरण आता रहता है उस काल की चर्चाएं वे काल बड़ा भव्य काल कहा जाता है। वह राष्ट्रीय पृतियां है। मेरे प्यारे! देखो, महाराजा जो महात्मा प्रहलाद थे, वह परमात्मा के बड़े निष्ठावान थे, और पिता उससे द्वितीय भाग में, जो देखो, नास्ति, जिसको नास्ति कहते हैं, वह उस विचारों में रत्त रहने वाला वह राजा का राष्ट्रीयता का, उसे अभिमान था। और यह कहता कि मैं ही मानो देखो, नास्ति, मैं ही परमात्मा के रूप में विद्यमान हूँ। वह ये कहा करते थे परन्तु देखो, महात्मा प्रहलाद ये कहा करते कि नही परमात्मा तो सर्वत्र है, वह सर्वज्ञ और वह कण-कण में ओत-प्रोत है। आप भगवान नही हो सकते। इस प्रकार उनको यातना देना, पिता ने प्रारम्भ किया। नाना प्रकार की यातनाएं क्या मानो देखो, उस समय एक नरसिंह नाम का एक मानो देखो, समूह संसार में, मानो राष्ट्रीय स्तर पर देखो, समूह कृत उग्र रूप को धारण करके समीप आया। और वह सदैव देखो, हिरण्याकुश के मानो देखो, सामान्यतव, उसका नेतृत्व करने वाले महात्मा प्रहलाद थे और वह उस समय कहते हैं कि परमात्मा का ध्यानावस्थित हो जाओ और देखो, उसकी नरसिंह समाज ने देखो, वह हिरण्याक्ष को नष्ट किया था। कोई मानो देखो, ब्रह्मणो व्रतं ब्रह्वा वह नरसिहं भगवान समाज का नाम ही मानो देखो, नरसिंह भगवान के नाम से समाहित था। और वह समाज मानो देखो, राष्ट्रीयता को ले करके और राज को यह उच्चारण करते कि राजा ये सुयोग्य नही है, मानो देखो, उसमें दूरी करो और हमारा नेतृतव करने वाला प्रहलाद है, ये राज्य का स्वामी बनेगा और मानो देखो, हमारा ये नेतृतव कर रहा है। तो वही मुनिवरों! देखो, एक नाद हुआ और सिंह ने ही मुनिवरों! देखो, नरसिंह जी से जिस समाज का नाम नरसिंह था, नरसिंह का अभिप्रायः यह है कि देखो, वह सिंह की भांति अपने नाद में रत्त रहने वाला समाज मेरे प्यारे! देखो, सात्विकता और चरित्रता की प्रतिभा होती है। और वह परमात्मा के आश्रित और धर्मज्ञ के मर्म को जानने वाले, ऐसा जो समाज है उसको मानो नरसिंह समाज कहा जाता है वही नरसिंह समाज था मुनिवरों! देखो, वह जिसको हिरण्याकुश को देखो, उन्होंने नष्ट किया, और नष्ट करके और देखो, प्रहलाद को अपना धिराज बनाया, ऐसा देखो, साहित्यिक विचारों में आता रहा है। बेटा! देखो, उनकी भोजाई से उसका समन्वय किया कि अग्नि में ले करके विद्यमान हो गई मानो देखो, ये प्रहलाद के जीवन से भी एक समन्वय रहता है, वही पूर्णिमा का दिवस है, ये दिवस मानो देखो, होलिका का पर्व, अपने स्थान में बड़ा ऊर्ध्वा में गमन करता रहा है। तो उसे सत्ता एक प्राप्त हुई कि देखो, जो अग्नि में दूसरों को ले करके वह विद्यमान होते, तो उसके प्राणों की रक्षा, देवता करते हैं, वह देखो, वह स्वतः भस्म हो जाता है। तो हिरण्याकुश की भोजाई, जो होलिका

थी, वह उसी अभिमान में मानो देखो, नष्ट हो गई। अग्नि में और प्रहलाद की रक्षा नरसिंह समाज ने की तो विचारने का अभिप्रायः यह है कि हमारे यहां राष्ट्रीयता में जब एक समाज का कोई निर्माण होता है। उसमें कोई न कोई रहस्य होते हैं। इसीलिए हमारे यहां होलिका का जो पर्व है, यह महाराज हिरण्याकुश ने भी पूर्व काल से रहा है। यह कृषक उनका क्या प्रत्येक मानव का जैसे व्यवहार रहा है, क्या हम मुनिवरों! देखो, एक होलिका के दिवस हम प्रत्येक गृह में देखो, याग करें और वह सुगन्ध हमारी वायुमण्डल में प्रसारित हो जाएं, और कहीं का प्रतीक जैसे मानो देखो, वह अमृतं वसन्त ऋतु और ग्रीष्म ऋतु का दोनों का समन्वय होता है। दोनों एक दूसरे में प्रीति करते रहते हैं, प्रत्येक प्राणी को अपने में प्रीति युक्त रहना चाहिए, और अपने समाज को अपनी मानवीयता को पवित्रता में ले जाना चाहिए, तो विचार-विनिमय क्या, मेरे प्यारे! देखो, यह राष्ट्रीय अपने में विचार बने क्योंकि राजा के राष्ट्रीय समाज ऐसा होना चाहिए, जैसे नरसिंह समाज था, महात्मा प्रहलाद था पिता ने उन्होंने बड़ी यातनांए दीं। और यातनाओं की पूर्णता को प्राप्त हो गएं, अन्त में देखो, सिंह समाज बना, और सिंह समाज का नेतृतव करने वाला प्रहलाद बना और वह परमात्मा का भक्त होने से, मानो देखो, उसको अवृत्तियों की उपाधियां प्रदान की, और वही देखो, हिरण्याकुश को नष्ट करके, और मुनिवरों! देखो, उन्होंने अयोध्या का, उसे राजा बनाया और राजा बना करके वह अपने में मानो देखो, समाज का नेतृतव करते थे धिराज बने मेरे प्यारे! देखो, विचार-विनिमय क्या है, हमारा इन वाक्यों का विचार यह है कि हम अपने मे मानो अपने पर्वों को अपने से दूरी न करें क्योंकि उनमें कोई रहस्य होता है यह राष्ट्रीयता का मानो एक द्यौतक है इसीलिए प्रेम पूर्वक हो करके चरित्र में ऊर्ध्वा में उड़ान उड़ते हुए, मानो देखो, अपने पर्वों को बनाते हुए अपने में मानो देखो, उसका व्यवधान होना चाहिए, वह पर्व अपनी-अपनी स्थलियों पर बड़े विचित्र रहे हैं, परन्तु देखो, मुझे मेरे प्यारे महानन्द जी ने ऐसा वर्णन किया है, क्या उन पर्वों में याग न रह करके अब केवल देखो, वह जीवों का विनाश होता है, उसको अग्नि में मानो देखो, याग न रहने से, कोई और ही रूप बन गया है। वह मानो देखो, वाममार्ग का रूप बना है। तो वाममार्ग का रूप नही बनाना चाहिए, उसको आर्यतव से गुथा हुआ एक समाज का समूह हमें स्वीकार करना चाहिए। जिससे हमारे पर्वों में, कोई न कोई रहस्यतम होने चाहिए। जिन रहस्यों को ले करके मानव, अपने में ऊर्ध्वा में उड़ाने उड़ता रहता है, और जीवन को महान और पवित्र बनाता रहे, तो आज मैं बेटा! तुम्हें विशेष चर्चा न देता हुआ केवल यह कि मुनिवरों! देखो, हमारे पर्वों का बड़ा रहस्य माना जाता है। कोई भी पर्व हो उसमें कोई रहस्य कोई विधाता और भोजाई से मानो देखो, मानो देखो, दोनों का समन्वय रहता है। किसी पर्व का माता और पिता से पुत्र से देखो, अपना समन्वय रहता है, तो इसी प्रकार कोई न कोई रहस्यतम विद्यमान होता है। कही शिक्षा से समन्वय रहता है तो उन रहस्यों को हमें विचारना चाहिए। हमारे यहां जब महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने शतपथ ब्राह्मण नाम की पोथी का वर्णन किया लेखनियाँ बद्ध की तो मानो प्रत्येक गृह स्वामी और गृहस्वामिनी के लिए दो प्रकार के यागों का व्यवधान किया है, अथवा उसमें वर्णन किया है। शतपथ ब्राह्मण में वर्णन किया कि एक अमावेष्टि और एक पूर्णोष्टि दो प्रकार के याग मानो देखो, दीपावली अमावेष्टि कहलाता है, और देखो, यह होलिका का यह पूर्णोष्टि कहलाता है, वह देखो, पूर्णोष्टि का अभिप्रायः यह क्या चन्द्रमा अपनी सम्पूर्ण कलाओं से युक्त है, और वह अपने प्रकाश में मानो देखो, रात्रि में अपने को निगलने वाला है इसी प्रकार यह ईश्वरीय पर्व यह पूर्णिमा का दिवस एक प्रह्वा ब्रहे हे मानव! तेरा जीवन यदि देखो, धन्य धान्य से या तेरा जीवन सब सम्पदा से परिपूर्ण हो जाएं। तो तू चन्द्रमा की भांति रहे, परन्तु प्रकाशमान रहे, परन्तु तेरे में अभिमान नही आना चाहिए। जिस समय तुझे अभिमान आ जाएगा, उसी समय तेरा जो द्रव्य है, वह जो तेरी वृती है, वह दूषित बनती चली जाएगी। परन्तु देखो, इसी प्रकार अमावेष्टि कहलाता है। अमावेष्टि के पिछले भाग में मानो देखो, एक रहस्य मानो देखो, वह की मानो वह

अमावस्य रात्रि का दिवस होता है। जहाँ चन्द्रमा की एक भी कला मानो कला कृतियों में नही आती है, प्रकाश का एक अंकुर भी नही रहता है। तो उस समय जब तक यह प्रार्थना करता है और वह अमावेष्टि याग करके कहता है क्या हे प्रभु! मुझे पार ले चल। मेरे जीवन में यह अज्ञान न बना रहे, मेरे जीवन यह अन्धकार न बना रहे। मैं अन्धकार से प्रकाश में जाना चाहता हूँ। हे प्रभु! यदि प्रकाश मुझे आ जाएं तो मुझे अभिमान न हो और यदि मेरे जीवन में अन्कार आ जाएं तो इतना मैं इतना देखो, भिन्न न हो जाऊं, जिससे मेरे जीवन की मृत्यु हो जाएं और मैं अज्ञान में प्रवेश कर जाऊं। ऐसा मेरे जीवन में न हो, परन्तु मेरा जीवन ऐसा ज्ञान में हो कि जिससे अमावस्य को भी मैं मानो पूर्णिमा को परिवर्तित कर सकूं। पूर्णेष्टि को भी मानो देखो, मैं निरभिमानी बना करके मानो देखो, एक रत्त में विचार सकूं। ऐसा प्रायः मेरा जीवन होना चाहिए, तो बेटा! याचक यह प्रार्थना करता है तो दो प्रकार के यागों का वैदिक साहित्य में बड़ा वर्णन आता रहा है एक अमावेष्टि एक मानो देखो, अमृते पूर्णेष्टि दो प्रकार के यागों का वर्णन है, और इनमें दोनों में याग होने चाहिएं जो अन्धकार को भी प्रकाश में लाओ और प्रकाश को भी मानो देखो, सामान्य बनाने के लिए तत्पर हो जाओ। तो इस प्रकार मुनिवरों! देखो, मानव के यह पर्व हैं इन्हीं पर्वों के गर्भ में कोई न कोई रहस्य इस प्रकार का विद्यमान है, कि जो वायुमण्डल को पवित्र बनाता है। परन्तु उसमें याग होने चाहिएं। हमारे यहां इन यागों का अपना बड़ा महत्व माना गया है। सृष्टि के प्रारम्भ से ऋषि-मुनि इसके ऊपर अन्वेषण करते रहे हैं, और प्रत्येक वेदमन्त्रों में ज्ञान और विज्ञान को अपने में धारयामि बनाते रहे हैं। तो विचार-विनिमय क्या बेटा! मैं विशेष चर्चा न देता हुआ आज तुम्हें मैं देखो, उसी क्षेत्र में ले जाने के लिए आया हूँ। जहाँ बेटा! मैं देखो, सत्यकाम की चर्चाएं कर रहा था, वैदिक साहित्य में नाना प्रकार की आख्यिकाएं आती रहती हैं। जहाँ पर्वों का अपना बड़ा महत्व है, वहाँ अपनी कलाओं का भी बड़ा महत्व माना जाता हैं। मेरे प्यारे! देखो, सत्यकाम ने जब दो कलाओं का वर्णन अपने में ग्रहण कर लिया, तो तीसरी कला का नामोकरण मुनिवरों! देखो, प्रतीचि दिक माना गया मानो देखो, प्रतीचि दिशा को प्रतीचि दिक कहते हैं जो उनको बेटा! उन्होंने अपना महत्व दिया उन्होंने कहा वृषभ कहता है हे सत्यकाम! हम मानो एक सहस्र हो गएं हैं, और हमें गुरु के आश्रम में ले चलो, आचार्य कुल में हमारा वास होना चाहिए। तो इस प्रकार मुनिवरों! देखो, अपने में जब सत्यकाम चलने को तत्पर होता है, उस समय वृषभ कहता है कि मैं तीसरी कला का तुम्हें ज्ञान कराता हूँ। मेरे प्यारे! तीसरी कला प्रतीची दिक है मानो देखो, प्रतीची दिक कहते हैं वह जो पूर्व और देखो, दक्षिणाय और पश्चिम में मानो देखो, जो वरुण का वास रहता है। वरूणां ब्रह्मा वरणां ब्रहे कृतं क्योंकि देखो, अन्नाद को जो स्वामी है, वह वरुण कहलाता है, माता वसुन्धरा के गर्भस्थल में, जब देखो, उसके प्रभां वृत्ति हो जाती है, तो उस समय उसके गर्भ से नाना प्रकार के अन्नाद का जन्म होता है, ये हमारे यहां माता का नाम पृथ्वी को वसुन्धरा के रूप में वर्णित किया गया है, क्योंकि वसुन्धरा कहते हैं जिसके गर्भस्थल में बेटा! हम सब वशीभूत रहते हैं, हमारे यहां वैदिक साहित्य में वसुन्धरा नाम माता का है, वसुन्धरा नाम पृथ्वी का है, और वसुन्धरा परमपिता परमात्मा को कहा जाता है। मेरे प्यारे! माता को इसीलिए वसुन्धरा कहते हैं, क्या उसके गर्भस्थल में बेटा! निर्माण होता है, और वह उसी में वशीभूत रहते हैं, हे माँ वसुन्धरा! तू हमारा कल्याण करने वाली है। मेरे प्यारे! माता के गर्भस्थल में शिशु पनप रहा है, परन्तु माता उसे अपने में धारण कर रही है, तो उसे इसीलिए कि माता को वसुन्धरा के रूप में वर्णित किया गया है। मेरे प्यारे! देखो, वसुन्धरं ब्रह्मा वाचन्नं ब्रह्मे देवाः तो मुनिवरों! देखो, देवता जन, उसके अंग संग रहने से देवतव को धारण करते रहते हैं।

तो विचार आता है बेटा! माता का नाम वसुन्धरा कहा जाता है जिसके गर्भस्थल में बेटा! हम सब वशीभूत रहते हैं, उसी के गर्भ में नाना प्रकार की प्रतिभा को पान करते रहते हैं, परन्तु माता कौन-सी वसुन्धरा होती है? जो

वसुन्धरा मुनिवरों! ज्ञान और विज्ञान में रत्त रहने वाली, मुझे स्मरण आता रहता है, माता मल्दाल्सा का जीवन, माता मलदाल्सा मेरे प्यारे! देखो, अपने में यह विचारती थी जब वह बाल्यकाल में अध्ययन करती थी क्या मैं गृह में प्रवेश यदि मैं चली गई गृह में मैं जाऊंगी तो मैं अपने अनुकूल सन्तान को जन्म देना चाहूँगी। मैं अपने में तपस्या को मैं सन्तान को जन्म दूं, तो जब मुनिवरों! देखो, माता मलदाल्सा मुनिवरों! देखो, ब्रह्मणे देखो, अव्रतम् मनु वंश में जब इसका संस्कार हुआ, मनु वंश में संस्कार होने से, मेरे प्यारे! जब गृह में प्रवेश हो गया तो राजा से उसने यही कहा था कि हे राजन! पांच वर्ष तक मेरी शिक्षा ब्रह्मचारी को होनी चाहिए। पांच वर्ष के पश्चात आपकी देखो, राजा की रक्षा हो परन्तु पांच वर्ष तक मेरी व्यवधान में रहना चाहिए। राजा ने ये स्वीकार कर लिया, बेटा! जब माता मलदाल्सा के गर्भ में आत्मा का प्रवेश होता तो वह मुनिवरों! देखो, आचार्य के कुल में जो प्राणायाम करती थी, तो प्राण को जैसा मैंने पूर्व काल में वर्णन किया है क्या प्राण को अपान में अपान को व्यान में और व्यान को समान में और समान में मुनिवरों! देखो, वह उदान में प्रवेश करके मुनिवरों! देखो, वह उसका निदान अब माता वह प्राणायाम करने वाली होती है। जो प्राण के माध्यम से अपनी आत्मा को मुनिवरों! देखो, अपने गर्भस्थल में उस आत्मा से वार्त्ता प्रगट कर सके, जो आत्मा उसके गर्भ में विद्यमान है। हे माता! तेरा विज्ञान बड़ा विचित्र माना गया है वैदिक साहित्य में, जब तू प्रवेश हो जाती है, तो मानो उस समय तुझे प्रतीत होता है, कि वेदमन्त्र क्या कहता है? वेदमन्त्र कहता है मातां भूतं ब्रह्मे गर्भश्चतं ब्रह्वे वासन्नमं शिशु वर्णनं ब्रह्वे व्रतं देवां कतमां भूतं वर्णा लोकाः मेरे प्यारे! वेद का मन्त्र कहता है हे माता! जिस समय वेद का मन्त्र यह कहता है तेरा क्या जिस समय तेरे गर्भस्थल में हम जैसे शिशु होते हैं, तो उस समय मानो तू अपने अर्न्तध्यान हो करके प्राणों के माध्यम से मानो देखो, प्राण को उदान में, प्रवेश करके और उदान को व्यान में इसी प्रकार जब करती है जब तू एकाग्र करने का प्रयास करती है, तो अपने प्राणों के माध्यम से तू गर्भ की आत्मा को दृष्टिपात करती है और उससे कहती है कतमोसि हे आत्मा! तू मेरे यहां मानो देखो, अपने क्रियाकलापों को जान लेती है, माता, तो मेरे प्यारे! देखो, जो वायु देने वाली हो और माता वही वसुन्धरा कहलाती है जो अपने गर्भ में वसु बना करके अपने में बसा करके उसे महान बना देती है। तो मेरे प्यारे! देखो, कहीं प्राण को अपान में और अपान को व्यान में, और व्यान को समान में और समान में उदान में प्रवेश करके चित्त के मण्डलों में प्रवेश हो जाती है तो मेरे प्यारे! देखो, जब माता इस प्रकार का व्यवधान करके बाल्य को ब्रह्म विद्या देती है, और ब्रह्म का ध्यानावस्थित हो जाती है। तो माता के गर्भस्थल में वह ब्रह्मचारी ब्रह्मवेत्ता बन जाता है और ब्रह्म का बखान करने लगता है और माता अपने में बड़ी प्रसन्न होती है तो बेटा! उस माता वह माता बड़ी सौभाग्यशाली होती है। जिस माता के गर्भ से मानो देखो, ब्रह्मवेत्ता हो जाएं ब्रह्म निष्ठावादी का जन्म हो जाएं तो माता का जीवन सफल हो गया, तो मेरे प्यारे! देखो, मातं ब्रह्मे इसी प्रकार तू प्राचीदिक तू वरुण बना, और वरण कर देखो, वरण का अभिप्रायः देखो, एक मानव वरता है, जैसे मुनिवरों! देखो, संस्कार होता है। और मुनिवरों! देखो, पति को पत्नी वरती है और पति को देखो, वराह व्रतं मानो एक दूसरे में वर लेते हैं, जैसे पाण्डितव को यज्ञमान यज्ञशाला में निर्वाचन करता है, उसे वरता है, इसी प्रकार जैसे भक्त भगवान को वरता है, उसको अपना वरुण बनाता है, और वही उसका वरणीय कहलाता है। इसमें बेटा! वह रत्त हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, प्राचीदिक वरुण मानो देखो, वह वरुण है। हे माता! तू उसको अपना वरुण बना और वरुण बना करके मुनिवरों! देखो, प्रतीचि देखो, वह अन्न का स्वामी है, वह अन्नाद का स्वामी माना गया है। जब मुनिवरों! देखो, कृषक के अन्नाद में मुनिवरों! देखो, बलवती होती है, तो विचार आता रहता है, बेटा! देखो, प्राचीदिक प्रति अमृतं मानो देखो, उसको वरुण बना करके अपने में धारण करना चाहिए। तो मेरे पुत्रों! देखो, विचार आता है कि वह वरुण है, और वरुण कहते हैं बेटा! जल को भी वरुण कहते हैं परमात्मा

का नाम भी वरुण है और वरुण नाम मुनिवरों! देखो, आत्मा का है, जहाँ यह पंच महाभूत उसे अपना वरणीय बनाते हैं। तो पंच महाभूत मेरे प्यारे! उसके सन्निधान मात्र से अपने में क्रियाकलापों में तत्पर रहते हैं। इसी प्रकार जैसे यज्ञशाला में ब्रह्मा का वरण होता है, तो यज्ञमान उसे अपना वर लेता है। वरण बनाता है, वरण बना करके मेरे प्यारे! देखो, याग अपने में पूर्णता को प्राप्त हो जाता है। इसी प्रकार परमात्मा अपना वरणीय है, क्योंकि परमात्मा के सन्निधान मात्र से यह जगत चल रहा है, तो वह वरणीय है उसको वरना चाहिए प्रत्येक मानव को परमपिता परमात्मा को अपना वरण बना करके अपने में उसको वरणं ब्रह्मा वरुण बना करके बेटा! गमन करना चाहिए। जिससे देखो, वह अपने में पवित्रता को धारण कर सके। तो विचार आता रहता है बेटा! वह वरणीय है आत्मां भूतं ब्रह्मा देखो, आत्मा पंच महाभूत ही तो उस आत्मा को अपना वरणीय बनाते हैं। तो विचार-विनिमय क्या कि माता का नाम वसुन्धरा कहलाता है। वह वसु है, अपने में बसा रही है। हम जैसे पुत्रों! को बसा रही है। बेटा! जब परमपिता परमात्मा निर्माण करता है माता के गर्भस्थल में निर्माण करता है, मेरे प्यारे! देखो, बहतर करोड़ बहतर लाख दस हजार दौ सौ दो नाड़ियों का निर्माण होता है, और वह निर्माण करने वाला चैतन्य देव है, और जब वह निर्माण करता है, परन्तु मेरी भोली माता नही जानती कौन निर्माण कर रहा है बेटा! कहीं बुद्धि का निर्माण करता है, मानो आन्तरिक जगत का जब निर्माण करता है तो बेटा! नाड़ियों के समूह का जब निर्माण उसके साथ-साथ ही देखो, वह मन की वृत्तियों का निर्माण करता है, और मन की द्वितीय प्रवृत्ति का नाम मानो देखो, बुद्धि है, जो बुद्धि है, मेधा है, ऋतम्भरा और प्रज्ञावी कहलाती है। प्रज्ञावी में जा करके देखो, जब वह बुद्धि से दृष्टिपात करता है, और मेधा से उसे जान लेता है, और ऋतम्भरा में मौन हो जाता है, और प्रज्ञा में बेटा! परमात्मा का वह दर्शन कर लेता है। तो मेरे प्यारे! देखो, इसी प्रकार देखो, यह अमृतं कहलाता है यह मन की दशा है, क्योंकि बुद्धि का उसका मन का दूसरा रूप बुद्धि है, और तीसरा मानो देखो, चित्त कहा गया है, जहाँ नाना प्रकार के संस्कारों का समूह रहता है। मुझे बेटा! देखो, उद्दालक ऋषियों की चर्चाएं स्मरण आती रही हैं, और देखो, अंगिरस ऋषियों ने तो मौन रह-रह करके बेटा! देखो, चित्त के मण्डल को जानने का प्रयास किया है, और चित्त के मण्डलों को जान करके बेटा! एक श्वेता अंगिरस कहलाते थे। उन्होंने बेटा! इतना महान तप किया है, और तप करने से बेटा! वह पिचासी वर्ष तक वह मौन रहे, और मौन रह करके मेरे प्यारे! देखो, अपने में चिन्तन करते हुए, अपने संस्कारों को उद्बुद्ध करते रहे। वह जो संस्कारों का समूह इतना विशाल है, उन्होंने बेटा! देखो, पिचासी वर्षों में वायु का सेवन करते वनस्पतियों का सेवन करते। मेरे प्यारे! कहीं जल का पान करते और वह तपस्या में परिणत रहे परन्तु देखो, वह पिचासी वर्ष तक वह मौन रहे, परन्तु मौन रह करके वह लगभग देखो, एक लाख पिचासी हजार जन्मों की मुनिवरों! प्रतिभा को जान पाए मेरे प्यारे! देखो, जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार हमारे अन्तःकरण में विद्यमान होते हैं, और वही अन्तःकरण मानो देखो, जब तक इस आत्मा के चित्त के मण्डल में जब तक संस्कार विद्यमान रहते हैं जब तक मुनिवरों! देखो, मानव का आवागमन बना रहता है। जब ही तक बेटा! माता के गर्भ में आना जाना है और यानियों को प्राप्त करना है, और जब तक चित्त का मण्डल मेरे प्यारे! संस्कारों से विहिन हो जाता है। उसी को मेरे पुत्रों देखो, मोक्ष की पगडण्डी माना गया है। तो विचार आता रहता है कि मोक्षां भूतं ब्रह्मा जब संस्कारों से विहिन हुआ तो मोक्ष बन गया, तो बेटा! देखो, वह कल्प-कल्पान्तरों तक बेटा! देखो, अपने प्रभु के राष्ट्र में रहता है। प्रभु के आनन्द में आनन्दित रहने वाला वह आत्मा है।

तो विचार आता है बेटा! आत्मा के साथ में पंच महाभूतों का जो मिलन है, पंच महाभूतों का जो सूक्ष्म रूप है बुद्धि से भी सूक्ष्म वह चित्त कहलाता है, और चित्त के पश्चात बेटा! देखो, अहंकार आता है। अहंकार कहते है। जो पिण्डों का निर्माण करता है यदि अहंकार नही होगा तो पिण्डों का निर्माण नही होगा, एक पिण्ड नही बेटा!

मानव का पिण्ड है, प्राणी मात्र का पिण्ड बना हुआ है। लोक-लोकान्तरों के पिण्ड बने हुए है, जो बेटा! लोक-लोकान्तरों के रूप में विद्यमान हैं, नाना प्रकार के नक्षत्र बने हुए हैं। जैसे यह पृथ्वी मण्डल है, और पृथ्वी के अंग संग रहने वाला मेरे प्यारे! देखो, वह शुक्र कहलाता है, शुक्र इसके अंग संग रहने वाला बुद्ध कहलाता है, और बुद्ध के अंग संग रहने वाला मेरे प्यारे! देखो, मंगल रहता है, और मंगल मण्डल के अंग संग रहने वाला अरूणधती रहता है, और अरूणधती के अंग संग रहने वाला देखो, यह वशिष्ठ मण्डल कहलाता है। जो वशिष्ठ मण्डल के ऊर्ध्वा भाग में मेरे प्यारे! देखो, स्वाति नक्षत्र है और स्वाति नक्षत्र के अंग संग रहने वाला बेटा! देखो, वह वर्णकृत मण्डल कहलाता है। उसमें बेटा! विशेष चर्चा न देता हुआ केवल यह क्या मुनिवरों! देखो, प्रभु ही तो निर्माण करने वाला माता के गर्भस्थल में बेटा! देखो, उनका समूह है। उनका जगत है, लघु मस्तिष्क को निर्माण करता है, रेणकेतु मस्तिष्क का निर्माण करता है। तो प्रभु! तो मेरे प्यारे! देखो, यह अनन्तमयी जगत है। इस मानव शरीर का तो उसी में बेटा! जब तपों में परिणत हो जाता है। तप करने लगता है, तो यह सर्वत्र जगत उसके समीप आना प्रारम्भ हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना न देता हुआ केवल विचार-विनिमय यह कि आज बेटा! हम हे माता! वसुन्धरा तू कल्याण करने वाली है, वसुन्धरा के गर्भ में हम जैसे शिशुओं का तू अपने गर्भ में तू ध्यानावस्थित हो करके और अपने देखो, महान से महान बालक को जन्म देने वाली है। ब्रह्मवेत्ता बना करके मानो तू अपने को सौभाग्यशाली बना मेरे प्यारे! देखो, यहां माताओं का बड़ा अपना महत्व माना गया है। इसमें तप की आवश्यकता है, मुझे स्मरण आता रहता है मैंने कई समय बेटा! महात्मा दुर्वासा की चर्चाएं प्रगट की थी महात्मा दुर्वासा जिस विद्या को जानते थे, क्या वह मन्त्रों का उद्गीत गाते जब माता के गर्भ माता की अवधारणा अवतीत हो जाते थे, तो उस समय महर्षि दुर्वासा एक वेदमन्त्र देते थे और वेदमन्त्रों होता जिस देवता को देवता माता बनानी चाहती है, उस देव का कोई मन्त्र होना चाहिए। उस मन्त्र का जपन जापन होना चाहिए। जिसका मानो मन मस्तिष्क एकाग्र हो करके जब माता उसके विचार-विनिमय करती, तो वही देवता बनने देखो, बालक का जन्म होता, जैसे बेटा! मैंने महाभारत के काल में तुम्हें चर्चा प्रगट करते हुए कहा था कि माता कुन्ती दुर्वासा के सहयोग से मानो देखो, जिस देवता की उपासना करती थी, उसी देवता मानो सन्तान को जन्म दिया धर्म के लिए देखो, वह धर्म का वेदमन्त्र उद्गीत गाती। तो वह धर्म का जन्म हुआ, देखो, वायु का सेवन करने की विधि आई तो वेदमन्त्र का उद्गीत गाने लगी, तो भीम का जन्म हुआ और देखो, इन्द्र अंगों में देवाः इन्द्रा जो इन्द्र है, जो इन्द्र देवतव को धारण करने वाला है उसकी उपासना करके विज्ञानमयी देखो, उन्होंने जन्म लिया, तो मेरे प्यारे! देखो, माता अपने में बड़ी विचित्र कहलाती है। यदि माता बन जाएं और वह वसुन्धरा बन करके हे वसुन्धरा! तू हमारा कल्याण करने वाली वसुन्धरं कहलाती है। तू मानो देखो, अपने गर्भ से एक महान पुत्रों! को जन्म देने वाली बन और तू वैज्ञानिक बन, तू मानो देव पर्व वाली बन। जिससे देवता तेरी प्रसन्नता करते रहे। और देवता तेरे अंग संग रहने वाले हों, मानो उन देवताओं को तू जान करके इस सागर से पार होने का प्रयास कर। तो मेरे पुत्रों! देखो, आज मैं इस सम्बन्ध मे विशेष चर्चा नही केवल यह क्या हमें वरण बना लेना चाहिए। वरणां ब्रह्मा लोकां मेरे प्यारे! देखो, प्रति वर्णो यह वर्ण है जो देखो, इस वर्ण को जानता है, प्रतीचि दिक को जानता है, मेरे प्यारे! देखो, वह दिशाओं का स्वामी बन जाता है, और अन्नाद का मुनिवरों! देखो, अन्नाद बन जाता है।

तो विचार-विनिमय उच्चारण करने का हमारा अभिप्रायः यह क्या हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस संसार सागर से पार होने का प्रयास करें। बेटा! परमात्मा इस रहस्यतम देखो, साहित्य वेद के मन्त्रों में ज्ञान विज्ञान की सूक्ष्मता नही हैं, वह सदैव नवीन रहता है, वह वृद्धपन को प्राप्त नही होता। इसीलिए बेटा! उसको नवीन ही नवीन वाक्यों को उद्गीत गाता हुआ जैसे समुद्र में रमण करने

वाला मेरे प्यारे! देखो, उसमें जब रत्त होता है, तो जितना भी उसकी गहराई में परिणत हो जाता है। उसे अन्तिम छोर में चला जाता है। तो ऊर्ध्वा में रत्नों को वह लाता रहता है, इसी प्रकार परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान मानो देखो, इसमें निहित रहता है। तो विचार आता है हे माता! वसुन्धरा तू वसुन्धरा है, हमें अपने में धारण करने वाली है। तो माता जब प्राणों को जानने लगेगी प्राण को अपान में अपान को व्यान में व्यान को समान में समान को उदान में जब इन प्राणों के रहस्यों को जानने लगेगी, तो माता बेटा! महानता में परिणत होती रहेगी। राजा कर्तव्य है कि राजा के राष्ट्र में इस प्रकार की विद्याएं होनी चाहिए। विद्यालयों में जब इस प्रकार के वेदमन्त्रों के आचार्य होंगें, तो ब्रह्मचारिणयां-ब्रह्मचारी दोनों ही पवित्रता को प्राप्त होते रहेंगें, जैसा महर्षि याश्काचार्य ने मानो देखो, अपने उद्गीत में आया है। आचार्यों के लिए संकेत किया है, उन्होंने कहा है कि आचार्य जनों तुम अपने आचार को पवित्र बना करके और मानो इस वेदमन्त्रों का विद्यार्थीयों को वेदों का उद्गीत गाओ, और वेदमन्त्रों का जब वह ब्रह्मचारी उद्गीत गायेंगें, तो तुम्हारा विद्यालय महान बनेगा, तुम्हारा विद्यालय जिससे विद्यालय मानो शिक्षा का केन्द्र बन करके और क्रियाकलापों का केन्द्र बन करके तुम्हारा नामोकरण देव लोक में भी मानो देखो, तुम्हारे नामों का यशोगान होने लगेगा। तो मेरे प्यारे! देखो, देवपुरी उसी को कहा जाता है, तो आज का विचार-विनिमय क्या है मेरे प्यारे! देखो, हमारे आदि में तुम्हें सूक्ष्म सी वार्त्ताएं प्रगट की हैं, तो प्राचीदिक का अभिप्रायः यह है क्या हम वरण बनायें अपना वरणीय परमात्मा को स्वीकार करें, और देवताओं का अपना वरण बनायें। और देवतओं का वरण बना करके देवता का नेतृतव करने वाला हो, जो हूत को प्रदान करने वाला हो, मेरे प्यारे! देखो, इसी प्रकार यह प्रतीचिदिक अन्न का स्वामी है, अन्नाद को देने वाला है, तो हमे प्राची दिक को जानना चाहिए। मानो देखो, उसका अक्षरों का बोधि होना उसको जानना उसको जानना और जान करके क्रिया में लाने का नाम बेटा! देखो, ज्ञान विज्ञान में परिणत होना है।

तो आओ, मेरे प्यारे! देखो, आज का विचार क्या है आज मैं तुम्हें यह विचार दे रहा था कि परमपिता परमात्मा का ज्ञान सदैव नवीन बना रहता है, ज्ञान में मानो देखो, नवीतम नही आता है। वह सदैव एक रस रहने वाला रसता को विचारना चाहिए। तो मेरे प्यारे! देखो, आज का विचार यह है कि हमारा जो पर्व है यह पर्वों का महत्व बड़ा अपने में वशिष्ठ माना गया है, इसके ऊपर विचारना इसमें कोई न कोई साहित्यिक चर्चाएं विद्यमान रहती है। और उसके गर्भ में मानो ज्ञान रहता है, परमात्मा का एक मानो देखो, समवृत्ति रहती उसको विचारने के लिए मानव को समय प्राप्त होता है। वह इन पर्वों को विचारता रहे और पर्व ही देखो, मानव को देखो, नाना प्रकार की चेतना देते हैं, वह इस चेतना में सदैव तत्पर रहे, तो प्रत्येक गृह में त्रेता का काल द्वापर का काल सतोयुग के कालों में राजा महाराजा यह प्रेरणा देते कि प्रत्येक गृह में सुगन्धि होनी चाहिए। प्रत्येक गृह में देखो, प्रदूषण नही रहना चाहिए। राष्ट्र में देखो, प्रत्येक गृह में याग हो जिन यागों से हमारा जीवन शून्य हो जाएं। और देखो, यह माता वसुन्धरा अपने अन्नाद को देखो, प्राप्त कराती हुई, अपने में देखो, एक-एक माता पुत्र का समन्वय होता है। इसी प्रकार प्रजा और देखो, माता का समन्वय होता है। दोनों एक दूसरे में पिता पुत्र की भांति मानो देखो, अपने में उसकी पुकार करते चले जाएं तो बेटा! यह उसका अभिप्रायः है कि हमारे यहां अमावस्य और देखो, अमावेष्टि और पूर्णोष्टि दो प्रकार के यागों का बड़ा महत्व माना गया है, यह चर्चाएं तो बेटा! बड़ी विशिष्ठ मानी गई हैं। मैंने तुम्हें संक्षिप्त परिचय दिया है। एक प्राची दिक की चर्चाएं की हैं, क्या हमे वरुण बनाना चाहिए। परमपिता परमात्मा को और माता को वसुन्धरा के रूप में स्वीकार करते हुए माता अपने में बसाने वाली है, और माता के गर्भस्थल में निर्माण होता है। वह निर्माणवेत्ता चैतन्य है। वह सर्वत्र लोक-लोकान्तरों का भी निर्माण करने वाला है, तो यह है बेटा! आज का वाक् कोई मानव यह कहे कि हम नास्तिक है मानो देखो, नास्ति का अभिप्रायः क्या वह मानव को

इतना अधूरेपन में रहता है कि वह मेरे पुत्रों! देखो, इतना संकीर्ण रहता है सूक्ष्मतम में रहता है क्या वह एक दूसरे प्राणी की भाषा में ही मानो उसे कठिनाई होती है उनकी भाषा भी नही जानता वह परमात्मा की प्रतिभा को तो क्या जानेगा तो विचार यह कि तू अभिमान करे कि परमात्मा के राष्ट्र में अभिमान नही किया जाता। परमात्मा निरभिमानी है, इसीलिए मानव को निरभिमानी रहना चाहिए परमात्मा अकाय है इसीलिए देखो, काया पर अभिमान न करके निकाय के ऊपर विचार-विनिमय करना चाहिए। परमात्मा ज्ञानी है, इसीलिए ज्ञान में रत्त रह करके अपने जीवन को व्यतीत करना चाहिए। तो मेरे प्यारे! यह आज का वाक् अब हमारा सम्पन्न होने जा रहा है। समय मिलगा मैं तुम्हें शेष चर्चांए कल प्रगट करूंगा।

५ २२ ०८ १९९२

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, हमारे परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी है और उसका ज्ञान और विज्ञान सदैव अनन्तमयी माना गया है जिसके ऊपर ऋषि-मुनि परम्परागतों से अन्वेषण करते रहे हैं और अनुसन्धान करते रहे हैं। कि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी ज्योतियों का स्वामी कहा जाता है तो उस परमपिता परमात्मा की आराधना और उसकी महिमा का सदैव हम निहारते रहें और उसके अमूल्य जगत को हम सदैव पराविद्या में हम दृष्टिपात करने वाले बनें। क्योंकि हमारे यहां दो प्रकार की विद्याओं का परम्परागतों से बेटा! उल्लेखनीय विचार मिलते रहे हैं, एक विद्या है, तो दूसरी पराविद्या है। तो वह जो पराविद्या है उसको जानना हमारा कर्तव्य माना गया है, और एक विद्या है। जिसको हम सदैव दृष्टिपात करते रहते हैं, और एक पराविद्या कहलाती है। जो उस परमपिता परमात्मा के सम्बन्ध में और उसी के ऊपर हम सदैव विचार-विनिमय करते रहें कि वे परमपिता परमात्मा विभु है। और हम उसके सम्बन्ध में प्रायः पराविद्या में वह विचार आता रहता है। जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से ही, अपने में गम्भीर मुद्राओं में अपने को ले जाता है। जहां एक-एक कण-कण में ब्रह्म को दृष्टिपात करता है, और अणु और विभु के ऊपर विचार-विनिमय करता रहता है। तो मेरे प्यारे! वह पराविद्या कहलाती है, और एक विद्या होती है। जो संसार के सम्बन्ध में और संसार में भी मानो देखो, जिसको दृष्टिपात करके हमें ज्ञान होता है, और ज्ञान में हमें सदैव रमण करते रहे हैं तो विचार आता रहता है कि हम परमपिता परमात्मा के उस ज्ञान और विज्ञान में जाने का हम प्रायस करें, या हमारे मानो हृदयों में शान्ति की प्रायः स्थापना होती है। और हमें एक ऐसा मार्ग प्राप्त होता है। जिस मार्ग में हमे उतेजित नही होना होता, परन्तु उसमें परम शान्ति की प्राप्ति होती है।

तो आओ बेटा! इसमें हमें मन व्रतो व्रतं देवत्वां ब्रह्मणे मानो देखो, उस ब्रह्म की आभा में मानव को रत्त रहना चाहिए। आज बेटा! मैं तुम्हें एक ऐसे क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ, जहां मानव पराविद्या में कितना रत्त होता है, और राजाओं का साम्राज्य भी पराविद्या में परिणत होता रहा है। मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब भगवान मनु के यहां नाना प्रकार के राज्य सभाओं की चर्चाएं होती रही हैं और मनु वंश में ऐसे ऐसे राजा हुए जिन जिस राजाओं के यहां मानो देखो, परम शान्ति की प्राप्ति होती रही है, और जहां मानो देखो, मृत्यु की विडम्बना नही होती, अन्धकार अज्ञान का नही होता, वहां सदैव प्रकाश की प्रतिभा, प्रायः मानव के जीवन में सदैव, अपने में धारयामि बनी रहती है। प्रत्येक मानव ये चाहता रहता है कि मैं मृत्युंजय बन जाऊं, और मैं अन्धकार में न चला जाऊं, प्रत्येक मानव ये परम्परागतों से विचारता रहा है, राजा भी ये चाहता है कि मेरी प्रजा में परम शान्ति हो और मैं भी परम शान्ति युक्त बनूं। प्रत्येक मानव के हृदय में ये आशंका लगी रहती है, कि मेरी मृत्यु न हो जाएं। परन्तु वह पुनः मृत्युंजय बनना चाहता है। मेरे प्यारे! देखो, इसके ऊपर आओ, आज हम सूक्ष्म सा कुछ विचार-विनिमय करें क्या मानव के हृदय में और प्रत्येक प्राणी मात्र के हृदय में ये विडम्बना रहती है, क्या मैं अन्धकार में न जा करके प्रकाश में रत्त हो जाऊ, और मैं प्रकाशक बन जाऊं। तो बेटा! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जिस काल में बेटा! देखो, मनु वंश में एक राजा हुए हैं, और उस राजा का नाम मधुवेतु एक राजा मधुकेतवेतु मनु कहलाते थे। और मुधकेतु राजा अपने मन में बडे मन मस्तिष्क आत्मा की मानो देखो, उनमें विवेकता उनके हृदय में ओत-प्रोत रहती थी परन्तु जैसे राजा का क्रियाकलाप होता है, इसी प्रकार प्रजा का भी वही क्रियाकलाप होता

है। समाज में गृह में रहने वाला प्राणी मात्र मानो उसी प्रतिक्रिया में रत्त रहता है तो मुनिवरों! मुझे वह स्मरण आता रहा है। तो राजा के राष्ट्र में बेटा! विवेकी महात्मा रहते हैं, जो राजा ब्रह्मज्ञानी होता है। तो उसके राष्ट्र में मानो देखो, महापुरूष भी विवेकी होते हैं। बेटा! जब राजा में रूढ़िवाद राजा में स्वार्थ की परता हो जाती है, स्वार्थ बलवती हो जाता है। तो उस राजा के राष्ट्र में मानो प्रजा में अशान्ति हो जाती है, और वह स्वार्थपरता की प्रतिभा में रत्त हो जाता है। इसीलिए मुझे वह काल आज पुनः से स्मरण आ रहा है, जहां राजा अपने राष्ट्र में मानो देखो, भ्रमण करते रहते थे, और प्रजा में अपने में स्वयं निर्मोही बनने का वह प्रयास करते रहते थे, तो राजा जब न्याय करता है। तो वह निर्मोही होता है, कोई भी हो वह निर्मोही होता है, उसके लिए प्रजा और देखो, दोनों अपने पुत्र एक ही तुल्य होते हैं और यदि उसमें पक्षपात आ जाता है। तो वह न्यायालय नही कहलाता, इसी प्रकार देखो, भगवान मनु के यहां राजा के यहां न्याय होता निष्पक्षं भवितां भूतं ब्रह्मणा व्रातेः मेरे प्यारे! देखो, इसमें किसी प्रकार की विडम्बना नही होती, तो राजा अपने अमृते तो मुनिवरों! देखो, राजा के एक राजकुमार जिसका नाम वरतु कहलाता था। तो वरतु मानो देखो, वह ब्रह्मचारी एक समय मानो देखो, वरतु अपने उसने अपने नामोकरण के आगे और पिछले विभाग में कुछ उपाधियां थी, और वरतु निर्मोही उनका नामोकरण था तो बेटा! वह एक समय भ्रमण करते हुए भयंकर वन में पंहुचे और वन में जा करके वह रात्रि समय एक महापुरूष के यहां उन्होंने निवास किया और निवास करने के पश्चात जब विश्राम किया तो मुनिवरों! देखो, राजा कौटिल्य ऋषि था तो कौटिल्य ऋषि ने कहा हे राजकुमार! तुम्हें रात्रि समय समाप्त हो गया है, रात्रि चली गई है। तुम कौन हो? तुम्हारा परिचय क्या है? तो उन्होंने कहा कि मेरा परिचय मेरा नाम निर्मोही है। उन्होंने कहा वरतु निर्मोही मेरा नामोकरण है। उन्होंने कहा तुम्हारे पिता का नामोकरण उनका नाम भी निर्मोही है। उन्होंने कहा तुम्हारा राज्य उन्होंने कहा राज का नाम भी निर्मोही है। उन्होंने पुनः प्रश्न किया कि तुम्हारे नगर का क्या नामोकरण है निर्मोही, तो उस समय कोटिल्य ऋषि ने कहा हे राजकुमार! निर्मोही तो वह होता है जिसके किसी से मोह नही होता, मोह के बिना मानो तुम पालन नही करता है, उस समय राजकुमार ने कहा कि नही प्रभु! देखो, निर्मोही मानो देखो, वह होता है जो मोह नही करता प्रीति करता है। कर्तव्य का पालन करता है, और जो कर्तव्यवादी प्राणी होते हैं, वह मोही निर्मोही कहलाते हैं, परन्तु जिनके द्वारा कर्तव्य नही होता और वह अपने मेरे और तुम्हारे में अन्तर्द्वन्द्व में सभी वृत्तियां हो जाती है। तो वह न्यायालय में न्याय नही कर सकता, गृह में शुद्धिकरण नही कर सकता, और वह सदैव पक्षपात से युक्त होता है, तो वह मानो देखो, अपने में अपनेपन को प्राप्त होता रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो, जब उन्होंने ऐसा कहा उन्होंने कहा तो हे राजन! हे राजकुमार! मैं तुम्हारे पिता से प्रभु! यह आप परीक्षा कीजिए मेरे प्यारे! देखो, कोटिल्य ऋषि महाराज ने वहां से गमन किया और भ्रमण करते हुए मनु वंश के जो राजा राज करते थे, वह उनके द्वार पर पंहुचे, तो राजा ने दृष्टिपात किया आज बिना सूचना के एक ब्रह्मवेत्ता ऋषि का मुझे दर्शन हो रहा है। तो मेरे प्यारे! उन्होंने राजस्थली को त्याग दिया उन्होंने कहा आईए ऋषिवर! तुम राजाओं के राजा हो, महापुरूष हो, परन्तु आप बिना सूचना के आपका आगमन हुआ इस कारण को मैं जानना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि विद्यमान हो गएं और ऋषि के चरणों की वन्दना करते हुए राजा ने कहा भगवन! आप मुझे कहो आप बिना सूचना के इस ब्रह्मवेत्ता का आगमन होना, एक राज सभा में यह आश्चर्य से युक्त है। उन्होंने कहा हे राजन! मैं तुम्हारे कुछ कार्य वश आया हूँ। उन्होंने कहा भगवन! मैं प्रार्थी हूँ। उन्होंने कहा तो तुम्हारा एक राजकुमार है, और वह राजकुमार मेरे आश्रम में मानो देखो, एक व्याघ ने देखो, सिंह ने आ करके उस राजकुमार के दो भाग कर दिए हैं, और मेरी इच्छा यह है कि वह मृतक शरीर को मैंने सुरक्षित किया है, उस सिंहराज से मैंने उसकी रक्षा की है, और वह मृत्यु को प्राप्त हो गया है। मेरी इच्छा यह है कि आप अपने यहां मानो उसका दाह संस्कार

करें राजा ने जब राजा से यह कहा कि दाह किया जाएं, उसको गृह में लाया जाएं। तो मेरे प्यारे! देखो, उस समय राजा ने कहा कि हे भगवन! आपको यह प्रतीत है कि आप किससे वार्त्ता प्रगट कर रहे हैं, उन्होंने कहा मैं एक राजकुमार के पिता से वार्त्ता प्रगट कर रहा हूँ। उन्होंने कहा कि नहीं राजकुमार का पिता नही हूँ, मैं तो एक वह तो संकल्प है। परन्तु मैं एक राजा हूँ, राजा से वार्त्ता प्रगट कर रहे हो, और राजा के राष्ट्र में जितना प्राणी मात्र रहता है। वह राजा के लिए सब एक ही तुल्य होता है। क्या उस राजा के राष्ट्र में हिंसक रहो, चाहे अहिंसक रहो परन्तु सब प्राणी मानो देखो, प्रभु की सृष्टि से आंकने वाला राजा होता है। तो हम उसको अंकित करते रहते है। तो हमारे लिए सब एक ही तुल्य है, हे ऋषिवर! आपको यह प्रतीत है आप तो ब्रह्मवेत्ता हैं। मुझे आपके ब्रह्म ज्ञान का प्रतीत है कि आप कितने ब्रह्मवेत्ता है परन्तु हे ब्रह्मवेत्ता! आपको यह तो प्रतीत है कि यह जो शरीर है यह पंच महाभूतों का पिण्ड है, और पंच महाभूतों का पिण्ड होने से वह मानो देखो, आत्मा उसमें विद्यमान रहती है। आत्मा जब तक इस शरीर में विद्यमान है, जब तक यह चेतनित बना रहता है। जैसे अग्नि में जब तक तेज है, जब तक वह अग्नि के स्वरूप को वह अपने में धारण करता रहता है, और जब अग्नि का देखो, दाह उससे चला जाता है। तो वह मानो देखो, पृथ्वी की रज रह जाते हैं। वह पृथ्वी की रज में रजित हो जाता है। इसी प्रकार जब यह आत्मा इस शरीर से निकस जाता है। तो हे प्रभु! यह शरीर शव रह जाता है, और शव रहने से वह शरीर मानो देखो, किसी का भोज बन करके रहता है, और वह भोज मानो देखो, सिंहराज का है, वह सिंह का भोजन है। हे प्रभु! देखो, आत्मा नष्ट नही होता जब हम ऋषि-मुनियों के या वैदिक साहित्य में प्रवेश करते हैं। तो यह प्रतीत होता है कि क्या अग्नि के परमाणु अग्नि में समर्पित हो जाते हैं। जल, जल में प्रवेश हो जाते हैं। गुरूतव पृथ्वी में प्रवेश हो जाता है। गुरूतव तत्त्व में रत्त हो गया। हे प्रभु! यह तरलतव आपो आपो में प्रवेश हो जाता है, और यह प्राण वायु में प्रवेश कर जाते हैं, और अवकाश मानो अन्तरिक्ष में चला जाता है, और आत्मा अपने चित्त के मण्डलों को ले करके यह आत्मा शरीर को त्याग देता है। तो हे प्रभु! मैं यह जानना चाहता हूँ कि संसार में भगवन! मृत्यु जिसे आप मृतक कहते हैं। वह शव है, वह है, क्या मैं उसको शव स्वीकार नही करता हूँ। उसका जो अपना मौलिक स्वरूप है। वह अपने मूल्यवाद तत्त्वों में रत्त हो गया है, और वह पार्थिव तत्त्व गुरूतव रह गया है परन्तु वह गुरूतव में प्रवेश हो जाएगा हे प्रभु! मैं यह जानना चाहता हूँ, क्या वह जो शरीर है, वह तो सिंह का भोजन बन गया है। आप सिंह को उदर की पूर्ति करने दीजिए। क्योंकि राजा के राष्ट्र में जितना भी प्राणी मात्र है। वह प्राणी मात्र देखो, राजा प्रजा का स्वामी होता है, और राजा का स्वामी परमपिता परमात्मा होता है, और परमपिता परमात्मा अहिंसा में निहित रहने वाला है। इसीलिए राजा को अहिंसा परमोधर्म का पालन करते हुए, प्रत्येक प्राणी प्राणी से स्नहे ही वार्त्ता होनी चाहिए, और स्नेह से स्नेह की युक्तता होनी चाहिए। यहां देखो, गान गाने वाला जब साम गान गाता है, जब वह गान गाने लगता है, तो वह प्रत्येक प्राणी को प्रभु का गान प्रभु का अहिंसामयी विचार वह उसका ज्ञान वह शरीर को प्रिय होता है, क्योंकि आत्मा के लिए सभी ज्ञान प्रिय होते हैं। परन्तु देखो, इसीलिए वह रूढ़ि नही वह केवल मानो एक प्रतिभाषितता मानी जाती है। जब मुनिवरों! देखो, राजा ने ऋषि कौटिल्य मुनि को इस प्रकार का उपदेश इस प्रकार की वार्त्ता प्रगट करने लगे तो वह बड़े आश्चर्य युक्त हो गएं। उन्होंने कहा राजन! आप ऐसा नही करेंगें उन्होंने कहा कि मेरे लिए सिंहराज और एक पुत्र मेरा जिसे तुम पुत्र कहते हो, वह एक ही तुल्य है। क्योंकि मानव में प्राणी प्राणी में किसी प्रकार का दोषारोपण नही होता, प्राणीमात्र जो है। जब परमपिता परमात्मा ने सृष्टि का सृजन किया तो एक दूसरा प्राणी मानो देखो, प्राणी का सहयोगी कहलाता है। प्राणी, प्राणी का सहयोगी बन करके एक दूसरे का आहार बन करके यह मानो देखो, सृष्टि का चक्र चल रहा है। यह चक्र चलता ही रहेगा प्रभु परन्तु देखो, जहां तक रक्षा का सम्बन्ध है। मानव को अपनी

आत्मा की रक्षा करनी चाहिए। क्योंकि आत्मा इस शरीर में भासता रहता है, और आत्मा ही मानो देखो, एक चेतना का पुंज कहलाया गया है। इसीलिए आत्मवेत्ता कहते हैं, कि आत्मा को जानो परन्तु देखो, यह जो शरीर है। यह तो जाना नही जाता परन्तु देखो, इसके जानने जब इसको देखो, आत्मा को मानव जान लेता है, तो आत्मवेत्ता बन जाता है, और परम आत्मा को प्राप्त हो जाता है। वह उसका वर्णन नही कर सकता। इसीलिए यह जो शरीर है, यह पंच महाभूतों का पिण्ड है, और यह पिण्ड मानो देखो, अपने-अपने अवयवों में रत्त हो जाता है। तो इसीलिए देखो, मैं मृतकता को स्वीकार नही करता हूँ, ऋषिवर! तो मेरे प्यारे! देखो, कोटिल्य राजा ने कहा प्रभु! आप यहां मेरे स्वागत को स्वीकार कीजिए। मेरे यहां एक यहां की मानो देखो, राष्ट्र का अतिथि स्वीकार कीजिए। जिससे मेरा राष्ट्र मानो सुशोभित हो जाएं, और मैं अपने में धन्यवाद का पात्र बन सकूं। उन्होंने कहा कि मुझे कोई क्षुधा नही हैं। मेरे प्यारे! देखो, राजा को त्याग करके उन्होंने कहा कि देखो, पिता को इतना मोह नही होता, चलो माता के द्वार पर चलते हैं, और वह माता के द्वार पर पंहुचे तो माता ने भी इसी प्रकार ऋषि का स्वागत किया और स्वागत करने के पश्चात उन्होंने कहा आओ भगवन! विराजो। वह विराजमान हो गएं, मेरे प्यारे! देवी ने कहा माता ने कहा कहो ऋषिवर! कैसे आगमन हुआ है? उन्होंने कहा कि हे माता! अमृतं राजन्नम् ब्रहे तुम तो राज माता हो परन्तु देखो, मेरी इच्छा यह है कि तुम्हारे एक पुत्र है, और वह पुत्र मेरे आश्रम में उसका शव है, और वह सिंहराज ने उसके दो भाग कर दिए हैं, और मैं उसकी रक्षा करता हुआ आया हूँ, मेरी इच्छा यह है कि उसका दाह संस्कार किया जाएं, विधिवत उन्होंने कहा-देवी! बोली कि प्रभु! हम दाह किसका करें हम दाह किसका करें कौन-सी वस्तु हैं? हम किसका दाह करेंगें। परन्तु जब इस शरीर से आत्मा चला जाता है। तो आत्मा तो अपने चित्त के मण्डल को ले करके चला जाता है। तो उसका दाह नही होगा, क्योंकि वह तो एक चेतना है और चेतना का दाह नही हुआ करता है, परन्तु रहा यह कि शरीर में जब सृष्टि के पिता ने इसका सृजन किया तो इसमें मानो देखो, प्राण का गति का पुंज बनाया, वायु को तेज का जो पुंज बनाया, अग्नि का जो पुंज बनाया, अग्नि को और मानो देखो, जो उन्होंने आपो का वृत बनाया तो वह पिपाद बन गया, और वह पिपाद भिन्न-भिन्न प्रकार के रूपों में रत्त होता रहता है। उसी पिपाद से माता के गर्भस्थल एक बिन्दु से एक मानो देखो, एक मानो देखो, शिशु का निर्माण होता है। देवताजन ही मानो देखो, वह आत्मा के होते हुए मानो वह उसमें वास करते रहते हैं, और आत्मवेत्ता इसके ऊपर चिन्तन मनन करते रहे हैं। तो परन्तु देखो, जब हम वायु के और जब हम आपो के द्वार पर जाते हैं, तो आपो कोई मानो देखो, ओढ़न और आसन बना रहता है। और बन जाने से आपो एक ज्योति के रूप में रत्त रहता है। मेरे प्यारे! देखो, उसका भी दाह नही होता, और यह गुरूतव पृथ्वी का गुण है, और यह गुरूतव मानो इस संसार का पिण्डाकार बना देता है। आज जब मैं लोक-लोकान्तरों की यात्रा में प्रवेश करती हूँ ऋषिवर! तो मानो देखो, मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि जब मैं योगाभ्यास में और मैं इन लोक-लोकान्तरों की उड़ाने उड़ने लगती हूँ, तो यह जो पिण्ड मुझे दृष्टिपात आ रहे हैं। मानो यह पिण्ड एक माला की भांति हैं जैसे एक माला में एक धागा है, और धागा में पिरोऐ हुए मानो देखो, वह मनके हैं। तो इसी प्रकार मुझे एक ही सूत्र में यह मनके दृष्टिपात आ रहे हैं। मानो जब मैं यह विचारती रहती हूँ, क्या मानो जब मैं वेद के वांगमय में प्रवेश करती हूँ, और प्रभु की सृष्टि को विचार-विनिमय करती हूँ। तो मानो देखो, मेरा ध्यानावस्थित गुरूतव के ऊपर जाता है, और यह गुरूतव माता के गर्भ स्थल में भी पिण्डों का निर्माण करने वाला है। कहीं पुत्री का निर्माण है। तो कहीं पुत्र का पिण्ड बन रहा है। कहीं पुत्री का पिण्ड है। कहीं मानो देखो, प्रत्येक प्राणी के गर्भस्थल में पिण्डों का निर्माण हो रहा है। जब मैं बाह्य जगत में परमात्मा के ब्रह्माण्ड में प्रवेश करती हूँ। तो मानो कहीं पृथ्वी के पिण्ड दृष्टिपात आते हैं। कहीं मानो यह पृथ्वियां नाना प्रकार के पिण्डों आकार वाली यह पृथ्वी की एक सूत्र में परिक्रमा करते रहते हैं,

कहीं मानो देखो, यह सूर्य भी मुझे पिण्ड के रूप में दृष्टिपात आते रहते हैं। यह संसार एक पिण्डमयी बना हुआ है। परन्तु मानो जब मैं लोक-लोकान्तरों की निहारिका में आकाश गंगा में प्रवेश करती हूँ तो वहां भी मुझे मानो यह संसार पिण्ड के रूप में दृष्टिपात आता है। इसीलिए हमारे यहां मानो देखो, पिण्डाकार यह जगत माना गया है। इसी की रचना भी पिण्डाकार के रूप में ही स्वीकार की जाती है। तो यह भी मानो देखो, मैं गुरूतव का भी मैं दाह नही कर सकती, मैं दाह किसका करूं? मानो गुरूतव पृथ्वी का गुण है। पृथ्वी ज्यों की त्यों है, और यह मानो जितना भी तरल पदार्थ है, यह भी दाह करने योग्य नही हैं। तो क्योंकि यह जल का गुण है, और देखो, जल इस संसार में विद्यमान है जिसे आपो कहते हैं। हे प्रभु! देखो, जितना भी मानो देखो, यह जकड़ा हुआ संसार एक दूसरे में कटिबद्ध हो रहा है। यह मानो देखो, एक पिण्डाकार मानो इसी में अग्नि इसमें विद्यमान रहती है। जो लोक-लोकान्तरों को अपने तेजोमयी भ्रमण करा रही है, मानो देखो, प्राण शक्ति को ले करके वह गमन कराती रहती है, प्राण देखो, उसका भी दाह नही होता, हे प्रभु! अन्तरिक्ष में मानो गमन करने वाले उसका भी दाह नही होता। तो हे प्रभु! मैं कौन-सी वस्तु का दाह करूं। जिसको मानो देखो, विधिवत तुम उच्चारण कर रहे हो, मैं दाह करने में किसका दाह करूं, वह तो सिंहराज का भोजन है, और सिंहराज देखो, अपने उदर की पूर्ति कर ले, और देखो, उदर की पूर्ति करके उसका सूक्ष्म हो जाएगा। उसके उदर का दाह हो जाएगा, क्योंकि उसका इच्छा है, मेरे उदर की पूर्ति हो जाएगी। मेरे प्यारे! देखो, जब माता ने इस प्रकार ऋषि कोटिल्य को वाक् उच्चारण किए तो कोटिल्य मुनि ने बेटा! आश्चर्य में चकित हो गएं। उसने कहा मैं कहां देखो, क्या उद्गीत गाऊं। और मैं कैसे मानो देखो, आगे कुछ शब्द बोलूं उन्होंने कहा हे पुत्री! देखो, मानो तुम्हारा ब्रह्मणे उन्होंने कहा प्रभु! मैं तो निर्मोही हूँ, मैंने तो अपने कर्तव्य का पालन किया है। वह वास्तव में देखो, यदि चला गया है सिंह का भोजन हो गया है, तो वह शरीर का ही भोजन हो गया परन्तु आत्मा किसी का भोजन नही होता है। आत्मा स्वतः अपने में अपने में मानो देखो, चेतन है, और वह चैतन्य चेतन का भोजन नही बना करता है। क्योंकि जड़, जड़ का भोजन बना करता है। क्योंकि भोजन भी जड़ है, और वह जड़ ही मानो देखो, क्षुधा में पीड़ित हो रहे हैं। केवल आत्मा का सन्निधान मात्र है। केवल वह क्रियाकलाप चल रहा है। मेरे प्यारे! देखो, कोटिल्य मुनि बड़े आश्चर्य में चकित हो गएं मेरे प्यारे! देखो, उन्होनें कहा चलो माता को भी स्नेह नही होता, पत्नी को स्नेह होता है, मैं पत्नी के द्वार पर चलूं वह पत्नी के द्वार पर पंहुचे, पत्नी ने उसी प्रकार स्वागत किया, उन्होंने कहा आईए ऋषिवर! आप तो ब्रह्मवेत्ता है। हमारा बड़ा अहोभाग्य है, जो आप जैसे महापुरूषों का दर्शन हुआ, उन्होंने कहा कहो भगवन! अमृतं ब्रह्मे वर्णाः स्वस्ता उन्होंने कहा-देवी! तुम्हारा कोई पति है उन्होंने कहा उच्चारण कीजिए भगवन! उन्होंने कहा तुम्हारे पति का शव मेरे आश्रम में निहित है। आज सिंहराज ने दो भाग कर दिए हैं मैं उसकी सुरक्षा करके आया हूँ, मेरी इच्छा यह है कि उसका दाह किया जाएं, उसमें आत्मा नही रहा है। मेरे प्यारे! देवी ने कहा प्रभु! जब उसमें आत्मा नही रहा तो मैं उसका दाह करके क्या करूंगी, वह तो सिंहराज का भोज बन गया है। सिंहराज को अपने उदर की पूर्ति करने दीजिए भगवन! हे भगवन! मैं किसका दाह करूं। क्योंकि दाह तो केवल आत्मा का ही होता है आत्मा के आत्मा से मिलान होता है और वह उसका दाह है वह उसका मानो देखो, क्रिया वस्तुत कहलाया जाता है। हे भगवन! आत्मा की क्रिया में क्रियाशील रहना ही यही मानो देखो, आत्म ज्ञान कहलाता है। मेरे प्यारे! उन्होने कहा प्रभु! यह मैं पति नहीं मेरा तो पति वह प्रभु है। जब प्रभु को मैं अपना पति स्वीकार कर लेती हूँ, तो यह संसार का जो पति है, यह गौण हो जाता है। हे प्रभु! देखो, अमृतं ब्रह्मा देवत्वां वही तो अमृत है। वही तो मेरा पिता अमृत है, वही मेरा पिता स्वामी है। जिसने मेरा निर्माण किया है। यदि मेरे हृदय से अग्नि मन्द हो जाएं तो यह संसार का पति मुझे अग्नि नही प्रदान कर सकेगा मानो वैद्यराजों के द्वारा जाएगा वैद्यराजों से वायु देखो, वह

औषधियों के द्वारा प्राण शक्ति का प्रयत्न करता है। वह आए न आए वह तो मानो देखो, उसकी वैद्यराज की चिकित्सा के ऊपर है, परन्तु पति नही दे सकता है, जिसे मैं संसार का पति स्वीकार कर लूं। तो हे प्रभु! यदि वायु चला जाएं, तो वायु नही देगा, परन्तु देखो, मैं देखो, किसका दाह करूं भगवन! अमृतं ब्रह्मा देवत्वां वह तो अमृत है, यह आत्मा चला गया है। चित्त के संस्कारों को ले करके चला गया है। मानो देखो, मुझे स्मरण है हे प्रभु! हे कोटिल्य आपको प्रतीत है कि मैं किसकी कन्या हूँ। मैं राजं श्वेतकेतु ऋषि की कन्या हूँ, और श्वेत केतु जो ऋषि थे वह कैसे थे वह मानो देखो, जब उन्होंने अपने शरीर को त्यागा तो त्यागते समय देखो, उसमें आत्मा के बल से और प्राण को अमृत करते हुए मानो देखो, चित्त के मण्डल में एक सौ चौरासी मानो देखो, चौरासी वर्ष का उनका यह अनुभव रहा है, क्या उन्होंने मानो देखो, जन्म-जन्मान्तरों के जो संस्कार है। वह विद्यमान हैं और वह संस्कार भोगने के योग्य है। हे प्रभु! वह भोगा जाएगा, इसीलिए मैं मोह नही करती। क्योंकि मोह करूंगी तो संस्कार बनेंगें। तो संस्कार बनेंगे तो मैं मानो देखो, संस्कारित हो जाऊंगी। चित्त में संस्कार उत्पन्न होंगें, और उतना मुझे संसार में शरीरों को धारण करना होगा और मेरा जो आने का कर्तव्य था कि मैं चलूं संसार में पंच महाभूतों के लोक को प्राप्त करती हुई, मैं मोक्ष की पगडण्डी को प्राप्त करना है मुझे परमानन्द को प्राप्त करना है। मैं उस पद से दुरी चली जाऊंगी तो हे प्रभु! देखो, मैं अपने में संस्कारों को जन्म देना चाहती हूँ, मेरे महापिता ने भी इसी प्रकार मानो प्रयत्न किया है। पिता ने भी प्रयत्न किया है। उन्होंने अपने अन्तःकरण में संस्कारों से विहिन होने का प्रयास किया है। इसी प्रकार मेरी भी यह प्रबल इच्छा बन चुकी है कि मैं ऐसे क्रियाकलाप को ऐसे कर्तव्य में मैं लग्न हो जाऊं। जिससे मेरे अन्तःकरण में संस्कारों की उपलब्धि न हो और संस्कारों की उपलब्धि होगी तो जन्म-जन्मान्तरों की आभा में मैं उन संस्कारों को भोगतव्य में प्राप्त करूंगी। हे ऋषिवर! मेरी इच्छा यह है कि यह संसार क्या है? यह संसार केवल देखो, अमृतं ब्रह्मा है यह अमृत है व्रते यह देवत्वां मानो देखो, यह संसार एक दूसरे का भोजन है, एक दूसरे के भोजनतव में एक दूसरा प्राणी उसे प्राणतव का भक्षण कर रहा है, देखो, प्राण रहित को प्राप्त करके अपने प्राणों का प्राणों की रक्षा कर रहा है। देव तुम्हें प्रतीत है कि जब आत्मा इस प्राण देखो, आत्मा शरीर से निकस गया है पंच प्राण चले गयें हैं, उस समय मानो देखो, उस आहार को करता हुआ मानो देखो, वह स्थूल से स्थूल की को प्राप्त करता रहता है। मेरे पुत्रों! मैं बहुत दुरी चला गया हूँ यह बड़ा गम्भीर रहस्य है मैं एक मानो देखो, मनु राजा के राज में चला गया हूँ जहां बेटा! इस प्रकार की क्रियाकलाप होते रहें हैं मेरे प्यारे! देखो, ऋषि कोटिलय बड़े अचुत्य बन गएं उन्होंने कहा अब मैं क्या करूं मानो देखो, मुझे मैं ही एक अमृतं मैं अशान्त हो गया हूँ, मैं कहीं-कहीं मुझे संतोष भी प्राप्त हो गया है। परन्तु देखो, कोटिल्य मुनि ने विचारा कि पत्नी को भी इतना स्नेह नही होता चलो भोजाई के द्वार चलते हैं। वह भोजाई के द्वार पर पंहुचें, मेरे प्यारे! देखो, वह भोजं ब्रह्मणा व्रतं देवत्वं उन्होंने उनका स्वागत किया उन्हें कहा आईए ऋषिवर! विराजिए। वह ऋषिवर विराजमान हो गएं। उन्होंने कहा कहो ऋषिवर आप मेरे अतिथिपने को स्वीकार कीजिए। आप मेरे अतिथि है। तो मुझे उपदेश दीजिए और कुछ मानो मुझे जल पान कीजिए उन्होंने कहा मुझे जल पान की इच्छा नही हैं और क्या है मुझे कुछ उच्चारण करना है। उन्होंने कहा कहो कि तुम्हारा कोई विधाता है, वह विधाता मेरे आश्रम में पंहुचा है। सिंहराज ने भयंकर वन में उसके दो भाग कर दिए हैं, और दो भाग करने से ब्रह्मणां ब्रहा हे देवत्वं हे पुत्री! उसके दो भाग कर दिए हैं उसका दाह किया जाएं, विधिवत से दाह करें, और देखो, वह बोली हे देव! आपं ब्रह्मे आप मुझे देखो, संसार में इस आत्मा का न तो कोई माता होता है, और न पिता होता है, और न विधाता होता है। यह ऋण बन्धी संसार होता है। यह आत्मा तो मानो अखण्ड रहने वाली एक अमूल्य ज्योति है, जो ज्योति शरीर को ज्योतिवान बनाएं रहती है। जिसको मोह ममता से वह रहित होती है, इसीलिए आत्मा जब वह चित्त के मण्डल के जाता है। तो

मानो देखो, अपने संस्कारों को करके इसको त्याग देता है। शरीर को और यह प्राणों की आभा में वायुमण्डल में गमन करता रहता है, और गमन करता हुआ मानो देखो, आत्मां भूतं ब्रह्मणे यह आत्मा मानो देखो, अखण्ड रहने वाली ज्योति है, और यह आत्मा ही मानो देखो, अवृत कहलाती है। आत्मा न किसी का विधाता है, और न आत्मा किसी की भोजई होती है। यह आत्मा तो मानो देखो, शरीर की नाना प्रकार की उपाधियों से यह अलंकृत किया हुआ जगत है। हे देव! यह मानो देखो, एक दूसरे की आभा से अलंकृत हो रहा है। मेरे प्यारे! देखो, वह कोटिल्य बड़े आश्चर्य में हुए उन्होंने कहा प्रभु! मैं यह चाहती रहती हूँ कि मैं संसार में आई हूँ, तो मैं अपनी आत्मा आत्म ब्रह्मणे देखो, मैं आत्मा हूँ मैं आत्म तत्त्व हूँ और मैं चेतना में बद्ध रहने वाला हूँ। परन्तु देखो, मुझे मोह से कोई भी सम्बन्ध नही है, जब उन्होंने इस प्रकार उद्गीत गाया तो राजा मुनिवरों! देखो, वह राजर्षि बड़े आश्चर्य में चकित हो गएं, वह ब्रह्मर्षि भी थे राजर्षि भी थे मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने सब कुटुम्ब को त्याग दिया त्याग करके उन्होंने विचारा कि यह प्रजा तो है। तो उन्होंने बेटा! देखो, प्रजा उसके राष्ट्र की प्रजा को एकत्रित किया, क्या कोटिल्य मुनि ने आह्वान किया है, आओ, सब एकत्रित हो जाओ जैसे ही उन्होंने घोषणा की उसी घोषणा के आधार पर मानो देखो, प्रजा एकत्रित हो गई जब प्रजा एकत्रित हो गई, तो प्रजा के मध्य में एक मानो अश्वांग लग गया उनका एक मचान लग गया। ऊँचा एक मचान लग गया, उस पर एक ऋषि उस पर विराजमान हो गएं, और विराजमान हो जाने के पश्चात प्रजा ने नतमस्तिष्क हो करके कहा कहो ऋषिवर हम प्रजाओं को कैसे एकत्रित किया ऋषि तो राजाओं का भी राजा कहलाता है। आप तो हमारे महाराजा है, हे भगवन! आप ने कैसे कोशिश की महर्षि कोटिल्य बोले कि भई! मेरी इच्छा यह है कि मैं आपसे कुछ प्रार्थी बनना चाहता हूँ, उन्होंने कहा प्रार्थी नही अपना आदेश दीजिए। उन्होंने कहा तो भगवन! मेरे आश्रम में यह जो तुम्हारा वर्तमान का राजा है। इस राजा का एक पुत्र है, वह मानो भ्रमण करने गया तो उन्होंने सिंहराज ने उसके दो भाग कर दिए हैं, और वह सिंहराज से मैंने शव की रक्षा की है उसमें आत्मा नही है प्राण चला गया है। मन नही रहा है, केवल देखो, उसमें अवृत्ति प्राण रह गया है। हे भगवन! मेरी इच्छा यह है क्या उसका विधिवत साकल्य के द्वारा चरू के द्वारा वेदमन्त्रों का उद्गीत गा करके स्वाहा कह करके उसका दाह कर दिया जाएं। जैसे राष्ट्रीय पुरूषों का होता है, या साधारण पुरूषों का होता है। वह सिंहराज देखो, उसका भोजन नही बनाएं, मेरे प्यारे! देखो, प्रजा ने कहा भगवन! और कुछ उच्चारण करना हो ऋषि ने कहा नहीं मुझे कोई वाक् उच्चारण करना है मुझे कोई स्वार्थ नही है। केवल मेरी इच्छा यह है कि कुमार का दाह होना चाहिए, और जब दाह हो जाएगा तो मानो मेरी यात्रा सफल हो जाएगी।

मेरे प्यारे! देखो, एक श्वेतकेतु ने कहा क्या हे ऋषिवर! आप कौन-सी यात्रा को ले करके अपने आश्रम को त्यागा है। उन्होंने कहा मैंने यह यात्रा इसीलिए की है कि मैं इस शव को ले करके इसका दाह कराना चाहता हूँ। उन्होंने कहा यह यात्रा नही होती ऋषिवर! इसको यात्रा नही होती है, यह तो ऐसा है क्योंकि इसका दाह करने के लिए उसका मानो दाह नही कर सकता कोई भी मानव शरीरों का दाह क्योंकि जिसका दाह करना चाहता है। वह उसके शरीर में विद्यमान रहती है, वही वस्तु जिस वस्तुओं का करेगा वह तो जड़ देवता कहलाते हैं, जैसे अग्नि है, जड़ देवता है जैसे जल है वह जड़ देवता है पृथ्वी है वह जड़ देवता है इसी प्रकार मानो वायु जड़ देवता है और अन्तरिक्ष भी जड़ देवता है, और देवता देवता की रक्षा कैसे करेगा? क्योंकि देखो, इस मानव के शरीर में आत्मा चेतन रहता है, और आत्मा उसका चला गया है। परन्तु देखो, हम उसका दाह क्या करें? अब ऋषि का तो ब्रह्माण्ड बेटा! अव्रत हो गया उसका ब्रह्माण्ड देखो, मस्तिष्क के तन्तु मानो देखो, अव्रत कम्पन्न करने लगे, उन्होंने कहा कि मैं तो ऐसा हो गया कि मेरी मृत्यु नही हो जाएं। यह मेरा शरीर न चला जाएं। मानो देखो, मैं इन विचारों को कहां तक एकत्रित करता रहूँगा। मानो देखो, कोटिल्य ऋषि से वह प्रजा के एक ऋषितव ने कहा कि हे ऋषिवर! तुम्हें

यह प्रतीत है कि हम दाह करने के किसी का सुयोग्य नही होते, मानो देखो, उन्होंने कहा कि जो पितर याग करते हैं। उन्होंने कहा यह एक मानव समाज में बन्धन में लाने के लिए मानव ने देखो, पितर याग मातृ याग और देखो, उन्होंने आचार्य देवो भव बनाया है। जिसने देखो, संसार की मर्यादा और संसार मानो देखो, मर्यादा में हो करके अपने विशुद्ध क्रियाकलाप करता है। यह इसीलिए नही कि दाह यह अन्तिम विचार है, क्योंकि यह दाह हम किसी का दाह नही कर सकते। मेरे प्यारे! देखो, कोटिल्य ऋषि ने कहा क्या हे प्रजाओं! तुम देखो, उसकी रक्षां भूतं ब्रह्मा उन्होंने कहा कि कोई किसी का रक्षक है, परमपिता परमात्मा सबका रक्षक होता है, वह देव कहलाता है। परन्तु देखो, अग्नि देता है, वायु देता है, और उसमें विद्यमान रहता है। परन्तु देखो, बिना उसके वायु अपने प्राणों का विभाजन नही कर सकती, क्योंकि जब आत्मा के सन्निधान में जाते हैं। परमात्मा वहां विद्यमान होता है तो उन तत्त्वों का विभाजन हो जाता है, और यह क्योंकि प्राण एक ही वायु विद्यमान है, उस वायु के दस भाग बनते हैं। प्राण, अपान, उदान के रूप में जैसे प्राण, अपान, उदान, समान, व्यान, नाग, देवदत, धनंजय, कुरु और कृकल मानो देखो, इस प्रकार दस भाग वायु के बन जाते हैं, उनको प्राण कहते हैं। उनको कोई रूद्र कहता है, रूद्र इसीलिए क्योंकि वह रूलाने वाले हैं। वह नही रहेंगें तो देखो, रूलाते रहेंगें वह रूलाते रहेंगें इसी प्रकार वह प्राण कहलाते हैं। क्योंकि उससे सत्ता प्रारम्भ होती है उससे मानव की शक्ति का संचार होता है। मानो देखो, आत्मा उसमें गृह में स्थिर हो जाता है। आत्मा के सन्निधान मात्र से वायु मानो देखो, प्राण चरेवेति, चरेवेति गति करने लगते हैं मेरे पुत्रों! देखो, जब उन्होंने इस प्रकार प्रजा ने कहा तो ऋषि बड़ा आश्चर्य में हो गया मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने कहा ब्रह्मणे ब्रहा हम दाह करने का हमे कोई अधिकार नही है, क्योंकि दाह तो स्वतः हुआ है, यह दाह हो जाता है। जब शरीर में से आत्मा चला गया तो प्राण चले गएं और देखो, उसमें से अग्नि दाह हो गया है। देवता अपने-अपने स्थान को वास कर गएं हैं। वह केवल देखो, एक देवता का भाव रह गया है। पृथ्वी का उसमें अपने में मिश्रित कर लेता है। तो हे कोटिल्य ऋषि! यही तो ब्रह्म ज्ञानियों का एक उपदेश है, और यह उपदेश यही कहता है कि संसार में दाह प्रवणातं देवत्वां ब्रह्म ज्ञान है और ब्रह्म ज्ञान जो है वह संसार में जीवन रहता है ब्रह्म ज्ञान की मृत्यु नही होती इसीलिए जो उसको मृत्यु का प्रसंग जो आपने लिया है। व्यर्थ ही ले लिया कोटिल्य मुनि बेटा! अपने में मौन हो गएं और कोटिल्य ने कहा कि प्रभु आप हे प्रजाओं! मैं तो आप यात्रा करने क्या चला हूँ, मैं तो ब्रह्म ज्ञान में ब्रह्मज्ञानियों की सभा में चला गया हूँ, मुझे एक से एक ब्रह्म ज्ञानी प्राप्त हो गया है। मैं अपने को मानो देखो, धन्य स्वीकार करता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, वह धन्यवाद देते हुए और वहां से उन्होंने गमन किया और भ्रमण करते हुए बेटा! अपने आश्रम में पंहुचे, कोटिल्य मुनि जैसे ही आश्रम में पंहुचे तो ब्रह्मचारी ने देखो, ऋषि के चरणों को स्पर्श किया, उन्होंने कहा कहिए भगवन! ऋषिवर! तुमने क्या अनुभव किया उन्होंने कहा हे ब्रह्मचारी! मैं अनुभव क्या कर रहा हूँ। मैं तो ब्रह्मवेत्ताओं की सभा में चला गया, राजा के यहां चला गया तो राजसभा में नही गया मैं ब्रह्मवेत्ताओं की सभा में चला गया एक ब्रह्म ज्ञानी विवेकी राजा के द्वार पर चला गया, माता के द्वार पर गया तो ममता का यहां मानो एक अब्रहो नही था केवल एक देवतव का मुझे दर्शन हो रहा था। जब मैं मानो देखो, भोजई के द्वारा गया तो वहां देवी का दर्शन ब्रह्म ज्ञान तत्त्व का दर्शन मुझे प्राप्त हुआ, जब मैं पत्नी के द्वार पर पंहुचा, जिसे पत्नी स्वीकार कर रहा था। उसने अपने प्रभु को अपना पति स्वीकार कर लिया था। वह मानो देखो, मुझे लक्ष्मी विष्णु के तुल्य मुझे दृष्टिपात आने लगी, तो मेरे प्यारे! देखो, महात्मा कोटिल्य मुनि ने जब यह कहा तो उन्होंने कहा कि प्रभु मेरा जीवन इस गृह में मेरा जीवन मेरा सफल हो गया है आज जब मानो देखो, मैं विवेकी अमृतं ब्रह्मा मैं अमृत को प्राप्त करता रहता हूँ, मेरे प्यारे! देखो, वह उन्होंने बारह वर्ष की तपस्या का ब्रह्मचारी ने अपने में देखो, पर संयम किया, बारह वर्ष तक वह इन्द्रियों पर जय करते हुए मेरे प्यारे! देखो, कोटिल्य मुनि के

आश्रम में सेवा करते रहे उसके पश्चात वह राज सभा में पंहुचे। मेरे प्यारे! देखो, राजन्नं ब्रहा कृतं देवाः बारह वर्ष तपस्या करने के पश्चात उसके पुत्र हुआ और राजा ने कहा हे ब्रह्मचारी! आओ तुम राष्ट्र को अपनाओ, और मैं अब देखो, भयंकर वन में ब्रह्मज्ञानी बनने के लिए ब्रह्म की जिज्ञासा के लिए मैं अपनी मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण करना चाहता हूँ। मेरे पुत्रों! देखो, वह भगवान मनु वंश में देखो, राजा ने अपने पुत्र को राज दे करके और वह भयंकर वन को चले गएं। तो मेरे प्यारे! देखो, आज हमारे वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः क्या कि मानव को संसार में निर्मोही रहना चाहिए, और देखो, राजा का पुत्र हो और एक प्रजा दोनों उसके एक तुल्य होते हैं। जो इस प्रकार का राजा होता है, तो उस राजा के राष्ट्र में अहिंसा परमोधर्म की प्रतिभा होती है, और उस राजा के राष्ट्र में मानो देखो, कोई उसका शत्रु नही होता है, और कोई मानो देखो, उसको घनिष्ट मित्र नही होता, अपने-अपने कर्तव्य का पालन करते रहते हैं, और कर्तव्यवाद ही मुनिवरों! देखो, धर्म है और वही शाश्वत धर्म कहा जाता है, और जो कर्तव्यवाद को भी धर्म नही कहने लगता है, तो मानो देखो, वह उसको कर्तव्यवाद को ही नही जानता तो यह है बेटा! आज का वाक् आज के वाक् उच्चारण करने का हमारा अभिप्रायः क्या है कि आज बेटा! मैं बहुत परम्परा के साहित्य में चला गया हूँ, आज मैं उस साहित्य में चला गया जहां भगवान मनु का जिस काल में देखो, राज पृथ्वी पर, ब्रह्माण्ड में मानो देखो, राष्ट्र की प्रतिभा का जन्म होता रहा, तो मेरे प्यारे! राजा जहां अपने में न्याय करता है। तो वह न्याय करता हुआ मानो देखो, अपना राज और अपना पुत्र एक ही तुल्य होता है। इसी प्रकार देखो, जब प्रजा और राजा इस प्रकार बन जाते हैं शेष अनुपलब्ध ....।

६ उद्गागाता का स्वरूप २३ ०८ १९९२

जीते रहो, देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भांति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। यह भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहां परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस महामना परमपिता परमात्मा जो यज्ञोमयी स्वरूप हैं उनकी महिमा का गान गाता रहता है। प्रत्येक वेदमन्त्र उसकी उभय और महानता का प्रायः वर्णन करता रहता है। इसलिए हमारा यह कर्त्तव्य है कि हम सब उस परमपिता परमात्मा कि महिमा अथवा उसके गुणों का सदैव तत्पर रहें। क्योंकि जिस आत्मा से उस महान चैतन्य देव का समन्य रहता है। हमारे वैदिक साहित्य जहां यागों का बडा व्यवधान किया गया है, वहीं वैदिक साहित्य में आत्म याग और भौतिक दोनों का समन्वय करने का प्रयास किया गया है। हमारे ऋषि मुनियों की बडी विचित्र देन रही है और उन्होंने यह कहा है कि यज्ञ ब्रह्मा आत्माम् भूतप्रह्वाः क्या तुम इस भौतिक याग में परिणित होते तुम आध्यात्मिकवाद में प्रवेश हो जाओ। क्यों उस महान ऐसी पगडण्डी का पथ दर्शक मानव बन जाता है जिस पगडण्डी को प्राप्त करने के पश्चात मानवीयत्व अपने में आनन्द और सुखद का अनुभव करता रहता है। आत्माम् भूतम् आत्मा पञ्च महाभूतों का स्वामीत्व, और गति देने से इसीलिए हम अन्तरात्मा को परमात्मा से मिलान और उसकी प्रतिभा में सदैव रत्त रहते हैं। ऐसा हमारा वेद का साहित्य और वेद का मन्त्रार्थ हमें सदैव उद्गीत गाता रहता है।

आओ मेरे प्यारे! मैं आध्यात्मिकवाद की चर्चाएं नहीं केवल यह कि हमारा भौतिक याग हमें क्या कह रहा हैं? हमें ऐसी प्रेरणा प्रायः प्राप्त होती रहती हैं जिन प्रेरणाओं को प्राप्त करता हुआ, मानव प्रेरित होता हुआ ऐसा आनन्द में, आभा में प्राप्त होता रहा है। जिससे उसका आनन्दमयी जीवन बन सके। तो मेरे प्यारे! देखो, आज का हमारा वेद मन्त्र क्या कह रहा है क्या वह यज्ञोमयी वह परमपिता परमात्मा जो याग उसका आयतन है, उसका गृह है, और वह उसका सदन माना गया है। मानो गृह इसीलिए कि उसमें वह वास कर रहा है और सदन भी इसीलिए कि उसी में उस रत्त रहता है और वह यज्ञोमयी स्वरूप कहलाता है। तो हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा का सदैव गुणगान गाते रहें और देखो, भौतिक और आध्यात्मिकवाद को दोनों को एक दूसरे में समन्वय करना चाहिए।

आओ मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें एक ऋषि के आसन पर ले जाना चाहता हूं। जहां याग के सम्बन्ध में नाना प्रकार के यागों का चयन प्रायः वैदिक साहित्य में किया है जैसे अग्निष्टोम याग है, देवी याग है, विष्णु याग, ब्रह्म याग और भी नाना जैसे वाचावृत्ति याग कहा जाता है। और भी नाना प्रकार के यागों का कर्मकाण्ड प्रायः वैदिक साहित्य में निहित रहता है। महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने यागों का बडा वर्णन किया है। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने यागों का बडा वर्णन किया है। याज्ञवल्य्ः मुनि महाराज ने यागों का बड़ा जीवन का बहुत सा भाग उन्होंने यागों के विचार विनिमय करने में तत्पर किया है। उन्होंने कहा है कि याज्ञिक प्रत्येक मानव को बनना चाहिए। और याग का अभिप्रायः है कि जितना भी मन, कर्म, वचन एकाग्र करके जितनी भी महानता की उपलब्धियां होती हैं उन सर्वत्र का नां याग के रूप में वर्णन किया गया है। इसीलिए आचार्यों ने कहा है क्या प्रत्येक मानव को याग में परणित रहना चाहिए और याज्ञिक रहना चाहिए। तो मुनिवरों! हम यागाम् भूतम् ब्रह्मणा लोकाम् वास्तव में देखो, अपने में याज्ञिक बने और सुक्रियाकलापों में सदैव तत्पर हो जाएं और और सुक्रियाकलापों को अपने विचारों को ले जाएं क्योंकि जहां हम विद्यमान हो वहीं हमारे सुविचार हैं मानो इसी प्रकार महापुरुषों के पर्व और महापुरुषों के जन्म दिवस भी प्रायः देखो मानवीय मस्तिष्कों में नृत करते रहे है।

उनका भी तारतम्य एक ही रहा है। महापुरुषों का एक ही वचन रहा है कि जहां तुम विराजमान हो वहां अपने नैतिकता की वार्ता प्रारम्भ करो और ईश्वरवाद की चर्चाएं करों जिससे तुम्हारा मन, कर्म और वचन एक ही आत्मा में रत्त होता हुआ उसी का मानो यशोगान गाने वाला हो। तो इस प्रकार मुनिवरों! देखो हमारे यहां वैदिक साहित्य में प्रायः वेद मन्त्रार्थ में इस प्रकार कि चर्चाएं होती रही हैं।

महर्षि अर्द्धभाग का कथानक

आओ मुनिवरों! देखो, आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा ने देता हुआ मैंने तुम्हें कई कालों में याज्ञवल्क्य और ब्रह्मचारियों की उदगीत चर्चाएं की हैं परन्तु देखो, जहां इस प्रकार की चर्चाएं हैं वहां अश्वपति के यहां के यागों की भी चर्चाएं होती रही हैं। बेटा! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब मुनिवरों! महात्मा अर्द्धभाग अपने में मानो देखो, विचित्रता में परिणत होते रहे। उनका एक कथानक, उनका विचार मुझे स्मरण आ रहा है। एक समय बेटा! पण अकाल पड़ गया। जब पण अकाल पड़ गया तो देखो, उनकी पत्नी स्वाहा धर्म देवी मुनिवरों! देखो, प्राणों को त्यागने लगी। महात्मा अर्द्धभाग ने कहा देवी तुम प्राणों को न त्यागो। उन्होंने कहा प्रभु आपने मेरी रक्षा का दायित्व लिया था और अन्न के बिना मेरा प्राण जा रहा है। पण अकाल पड़ गया है। अन्न नही मुझे प्राप्त हो रहा है तो इसीलिए प्रभु! मैं अपने प्राणों को तिलांजलि दे रही हूं। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा देवी मैं तुम्हारे लिए अन्नाद अवश्य, अन्न के लिए यहां से प्रस्थान कर रहा हूं।

मेरे प्यारे! मुझे ऐसा स्मरण आ रहा है क्या गाडीवान मानो देखो, अम्रतम् ब्रह्मा व्रतम् देवत्वाम् देखो, व अर्द्धभाग ने वहां से भ्रमण किया। तो कहीं मुनिवरों! देखो, हाथीवान उड़द का पान कर रहा था, वह माह का पान कर रहा था। मेरे प्यारे! देखो, महात्मा अर्द्धभाग ने कहा भिक्षाम् देहि उन्होंने बेटा! देखो अपने उड़दों में से, माह में से उन्हें माह प्रदान कर दिया। उन्होंने कहा लीजिए प्रभु!। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा ऋषिवर जल लाऊं। उन्होंने कहा कि तुम शूद्र हो तो मुनिवरों! हाथीवान को यह शंका बन गई कि मुझे ऐसा महर्षि ने क्यों कहा है जबकि मेरे उड़दों में, माह में, मैं शूद्र नही बना हूं और जल लाने मैं शूद्र बन गया हूं। मेरे प्यारे! कहा प्रभु! आपने मुझे शूद्र का प्रयोग क्यों किया है? जबकि मेरे झूठे उड़द आपने ग्रहण कर लिए हैं, मैंने भिक्षा में दे दिए हैं। उन्होंने कहा कि हे हाथीवान! इस समय पण अकाल पड़ गया है। और देखो, जहां प्राणों की रक्षा का प्रसंग होता है और देखो, जल प्रयाप्त है। इसीलिए देखो, जो जिस क्रियाकलाप को मैं स्वतः कर सकता हूं उसका मैं पराधीन, आधीन क्यों बनने का प्रयास करूं। मैं पराधीन नहीं बनूंगा। इसीलिए मैंने तुम्हे शूद्र कहा, तुम मुझे अपने आधीन, अपने में मानो पराधीन बनाना चाहते हो। इसीलिए जो मानव पराधीन बनाना चाहता है सब वस्तु होते हुए भी तो वह शूद्र संज्ञा को उसको प्रदान किया गया है। वह शूद्र कहलाता है। तो इसीलिए मैंने तुम्हें शूद्र संज्ञा दी है। जिसको मैं जल बहुतायात में है। मैं जल को ला सकता हूं इसीलिए मैं तुम्हारी मुझे आकृतियों की आवश्यकता नही हैं।

मेरे प्यारे! देखो, महान अमृतम् जल का यह उपदेश दे करके हाथीवान को, वहां से उन्होंने प्रस्थान किया और भ्रमण करते अपने गृह में आ पंहुचें। उन्होंने अपनी पत्नी को वह उड़दों का, माह का उन्होंने पान कराया। उसके प्राणों की रक्षा हो गयी। उन्होंने कहा देवी कल मुझे एक निमन्त्रण आ रहा है। महाराजा अश्वपति के यहां एक वृष्टियाग हो रहा है वृष्टि को शान्त करने का परन्तु मैं उस याग में जाऊंगा और दक्षिणाम ब्रह्मे मुझे जो दक्षिणा प्राप्त होगी वह अन्नाद के रूप में होगी। तो मेरे प्यारे! देखो, महाराज अर्द्धभाग ने अपनी देवी की रक्षा की।

महाराज अश्वपति के वृष्टि याग में आगमन

मुनिवरों! देखो, अगला दिवस आया। दिवस आते ही देखो, महात्मा अर्द्धभाग ने वहां से गमन किया और आसन को ग्रहण करते ही मुनिवरों! देखो, उस समय राजा ने, यज्ञमान ने कहा हे यज्ञनम् ब्रह्वेः हे अमृतम् यज्ञमान

ने कहा हे उद्गीत गाने वाले यह आसन तो उद्गाता का है, जो उद्गीत गाता है। वेदमन्त्रों का गान गाने वाला है इसीलिए तुमने इस आसन को ग्रहण किया है। यह मानो देखो, यह बुद्धिमान का आसन है और यदि तुमने किसी ने प्रश्न कर दिया तो तुम उसका उत्तर दे सकोगे? उन्होंने कहा मैं अवश्य दे सकूंगा, जितना में जानता हूंगा। मैं जानने के अनुसार इसका उत्तर दूंगा। तो उन्होंने कहा आसन कहते हैं देखो, विराजमान होने को और आसनम् भूतम् उपनम् ब्रहे अव्रतम्। मानो देखो, परमात्मा के निकट जो विद्यमान होता है उसको उपनीत कहते हैं, उसको आसन कहते हैं। मैं इस आसन पर विद्यमान हूं। क्योंकि यज्ञ जो है यह मानो देखो, विष्णु है। यज्ञ वाजपेयी है। याग रुद्र है। मैं इसके समीप आया हूं और मैं इसका उद्गाता बनना चाहता हूं। उद्गाता उसके कहते हैं जो उद्गीत गाता है। क्योंकि वेदों का गान गाने वाला जब जटा पाठ, धन पाठ में गान गाता है। और वह जब मानो माला पाठ में गाता है तो वह स्वर संगम अपने को बना लेता है और वह स्वर संगम में ओत प्रोत हो जाता है। तो मेरे प्यारे! उन्होंने कहा बहुत प्रिय। तो राजा ने कहा, यज्ञमान ने हे प्रभु! आप उद्गाता किसे कहते हैं? उन्होंने कहा उद्गाता वह है जो तालु और देखो, रसना के दोनों के रसों का मिलान करता है उसका नाम उद्गाता है। वह उद्गीत गा रहा है। वह मानो देखो, वेद मन्त्रों में ध्वनित हो रहा है। उन्होंने जब यह उतर दिय। उन्होंने कहा क्या हे ऋषिवर! इस यज्ञशाला में तुम उद्गाता हो परन्तु यह जो संसार रूपी यज्ञशाला है इस यज्ञशाला का उद्गाता कौन है? उन्होंने कहा इस यज्ञशाला का उद्गाता सूर्य कहलाता है वह मानो सूर्य अपनी किरणों से अन्धकार को निगल करके देखो, वह प्रकाश में लाता है और प्रकाश में जो लाता है उसी का नाम उद्गीत गाने वाला है वही जो नवीन चेतना को चेतनित् अन्नम् ब्रहे देखो, चेतना देता रहता है वही तो उद्गाता कहलाता है हे प्रभु! मैं मंगलम् देखो, इस संसार का, इस पृथ्वी का जो उद्गीत गाने वाला है वह सूर्य कहलाता है। उन्होंने जब यह स्वीकार कर लिया तो उन्होंने कहा कि हे अर्द्धभाग ऋषिवर! इस मानो रात्रि का उद्गाता कौन ह? उन्होंने कहा रात्रि का उद्गाता चन्द्रमा है। मानो देखो, रात्रि रूपी यज्ञशाला है जहां अमृतम् ब्रह्मा वर्णास्सुते और रात्रि के श्रृंङ्गार को अपने में ग्रहण करने वाला जैसे मुनिवरों! देखो, और देखो, होताजनों का अज्ञान समाप्त करने वाला ब्रह्मा होता है इसी प्रकार देखो, यह जो चन्द्रमा है वह अमृत को देने वाला है। अमृतमयी बना देता है और रात्रि को अन्धकार को अपने में धारण करके और मानो यह संसार को अमृत देता है, तो यज्ञ भी हमें अमृत देता है। प्रदूषण को समाप्त करता है। सुगन्ध देता है। पुष्टिकारक बनाता है और देखो, मिष्ठ हमें मधुरपन देता है और इसी प्रकार सुगन्धि में ओत प्रोत करा देता है।

मेरे प्यारे! देखो, जब इन्होंने इस प्रकार उद्गीत गाया तो उन्होंने कहा हे ऋषिवर! मैं जानना चाहता हूं कि यह जो मानव शरीर रूपी यज्ञशाला है इसका उद्गगाता कौन है, इसमें उद्गीत कौन गा रहा है? तो उस समय अर्द्धभाग ने कहा कि महाराज इस शरीर में रहने वाला जो चैतन्य आत्मा है और आत्मा मानो देखो, वह सन्निधान मात्र से ही उसमें क्रियाकलाप हो रहा है। ये प्राणम् ब्रह्मे प्राणम् ब्रहा ऋतम् देवत्वाम् यह जो प्राण है मानो यह सन्निधान मात्र से ही गति कर रहा है और वह मानम् ब्रहे वायु चरेवेति चरम प्रह्वा वह चरेवेति शब्द आता है। वेद भी हमारे यहां चरेवेति को कहते हैं क्योंकि यह जो गति करता है। मानो देखो, सुषुप्ति में चला जाता है परन्तु देखो, यह आत्माम् भूतम् आत्माम् प्राण आत्मा के सन्निधान से गमन करता रहता है तो इसीलिए यह इसका उद्गाता है। यह उद्गीत गाता है। और वही प्राणम्मे पाहि, अपानम्मे पाहि, मानो उदानानम् में पाहि, समानाम्मे पाहि, अमृतम् बेटा! देखो, जिज्ञासु इन प्राणों में प्रभु को दृष्टिपात करता है, इसको पान करना चाहता है। प्राण के द्वारा ही पान करना चाहता है। मेरे प्यारे! मुझे एक वाक् स्मरण आ रहा है। महात्मा अर्द्धभाग ने जब यह कहा कि प्रभु मैं इस यज्ञशाला का उद्गाता बना हूं और यज्ञम् ब्रह्मा देवत्वाम् इस यज्ञशाला का उद्गीत गाने वाला वेदज्ञ कहलाता है। मेरे

प्यारे! देखो, जब उन्होंने यज्ञमान ने यह प्रश्न कर लिया तो यज्ञमान अपने में मौन हो गया कि यह महान बुद्धिमान है।

यज्ञमान देवी की जिज्ञासा

मेरे प्यारे! देखो, यज्ञमान की देवी ने यह प्रश्न किया क्या हे ऋषिवर! यह मैंने स्वीकार कर लिया है परन्तु देखो, यज्ञमान भी स्वीकार कर गए हैं परन्तु देखो, राजा का राष्ट्र में उद्गाता कौन कहलाता है? उन्होंने कहा राजा का चरित्र ही, राजा की महानता की मानो देखो उसका, राष्ट्र का उद्गीत कहलाता है। वही उद्गीत गाया जाता है। उन्होंने कहा देखो, जब पुनरुक्तियों में याग करते हैं तो उसका उद्गाता कौन है? उन्होंने कहा उसका उद्गाता जब पुनरुक्तियों में एक वेदमन्त्र का उद्गीत गाता है तो उसका पुनरुक्त, उसका देवता ही मानो देखो, उसका उद्गीत कहलाता है। जैसे साधना करने वाला अपने नतमस्तिष्कों में देखो, मस्तिष्क में स्वर संगम अथवा ध्वनि हो रही है उस ध्वनि को जो श्रवण करता है, उसी को अपने में धारण करता रहता है। तो इस प्रकार अपने में ध्वनित हो करके और वह उद्गाता बन करके देखो, जटा पाठ, घन पाठ, माला पाठ, विसर्ग पाठ, उदात्त और अनुदात्त में गान गाता रहता है। तो मेरे प्यारे देखो, ऋषिवर इतना उच्चारण जब उन्होंने किया तो देवी ने पुनः प्रश्न किया। क्या हे प्रभु! ब्रहे मानो देखो एक कात्यायन है और कात्यायन का गृह है। उसमें कात्यायन की पत्नी और कात्यायन है मानो देखो, इस गृह याग में कौन उद्गाता है? उन्होंने कहा कि गृह स्वामी और गृहस्वामिनी, गृहस्वामिनी मानो देखो, याग की उद्गाता है जब मानो देखो, वह अपने बाल्य को लोरियों का पान कराती, देखो, उसे शिक्षा देती है और वह वेदमन्त्रों का उद्गीत गा करके वह गृह को ऊंचा बना देती है। और बाल्य बालिका देखो, उसी शिक्षा को पा करके वह उद्गीत गाने वाले मानो देखो उद्गाता के स्वर संगम में वह रत्त हो जाते हैं और गृह स्वर्ग बन जाता है इसी प्रकार स्वर्गश्चतम् ब्रह्मा लोकाम् ब्रहे मानो देखो उसका जो स्वामीत्व है वह अपने में ग्रहण करने वाला है। जैसे आचार्य अपने में उद्गाता है वह ब्रह्मचारियों को देखो, उद्गाता बन करके जब वह गान गाता है, आचरणीय बनता है, चरी को चर लेता है और ब्रह्मवर्चोसी बन करके ब्रह्मचारियों को महान बना देता है। तो इसी प्रकार यह एक दूसरे में ओत प्रोत होने वाला जगत है यह अपने में ही मानो देखो, निहित हो रहा है।

मेरे प्यारे! देखो, आज मैं विशेष चर्चा तुम्हे प्रगट करने नही आया हूं। केवल विचार विनिमय क्या मुनिवरो! देखो, महात्मा अर्द्धभाग ने सबका उत्तर दिया। उन्होंने कहा कि महाराज हमारे यहां दो प्रकार के याग होते रहते हैं। तो देवी कहती है कि एक आध्यात्मिक याग है, एक भौतिक याग है। आप भौतिक याग के तो उद्गाता हैं परन्तु आध्यात्मिकवाद का उद्गाता कौन है? उन्होंने कहा कि जब प्राण को अपान से मिलान करता है साधक और साधक जब मिलान करता है प्राण को अपान में, अपान को व्यान में, व्यान को समान में, समान को उदान में प्रवेश करता हुआ चित्त के मण्डलों के संस्कारों को मानो साक्षात करने का साधना से प्रयास करता है तो आन्तरिक जगत् जो चित्त मण्डल है वह चित्त मण्डल में जो आध्यात्मिक याग की जो तरंगें उत्पन्न हो रही है। ज्ञान रूपी तरंगें उन तरंगों का उद्गीत गाने वाला मानो देखो, वही प्राणत्व कहलाता है। तो मुनिवरों! देखो, वह साधक अपने में साधना करता हुआ अपने आध्यात्मिकवाद को सजातीय बनाता है। जब इस प्रकार मुनिवरों! देखो ऋषि ने अपना मन्तव्य दिया तो देवी अपने में मौन हो गयी और नतमस्तिष्क हो करके बोली धन्य है प्रभु! मेरे प्यारे! उन्होंने कहा याग प्रारम्घ करो।

निर्वाचन और याग

मुनिवरों! देखो, हमारे यहां निर्वाचन का एक ही स्रोत माना गया है। क्या यज्ञनम् ब्रह्मा वभवत्रे देवत्वाम् ब्रह्मे लोकाः क्योंकि वह निर्वाचन कहते हैं जो बुद्धिमान हो और बुद्धिमान का जो निर्वाचन होता है। वही तो मानो

पुरोहित कहलाता है जो पराविद्या को देने वाला है और पराविद्या में मानो परमपिता परमात्मा की महिमा का यशोगान गाता रहता है। तो आओ, मेरे प्यारे! देखो, महात्मा अर्द्धभाग अपने में याज्ञिक बन करके, याग प्रारम्भ होने लगा। वह उद्गीत गाने वाला उद्गाता बन करके, मानो देखो, जटा पाठ में गान गाता है, घन पाठ में गान गाता है और माला पाठ में जो गाता है वह बेटा! अपने में याग को सम्पूरण कर रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने इस ब्रह्माण्ड को अपने में मापने का प्रयास किया, याग के द्वारा ही मापा जाता है। मानो देखो, सूर्य प्रकाश देता है, ऊर्ज्वा देता है इसीलिए वह उद्गाता कहलाता है किरणों के द्वारा अन्धकार को प्रकाश में परिवर्तित कर देता है। रात्रि को सोम में परिवर्तित कर देता है वह चन्द्रमा है। वह गौतम कहा जाता है। परन्तु देखो, इसी प्रकार एक दूसरे का पूरक यह जगत बन जाता है।

याग की सफलता

आओ, मेरे प्यारे! आज हमारे वाक उच्चारण करने का अभिप्रायः क्या कि हमारे यहाम दो प्रकार का याग परम्परागतों से ऋषि मुनियों के मस्तिष्कों में सदैव नृत करता रहा है। एक भौतिक याग है तो एक आध्यात्मिक याग है। आध्यात्मिक याग वेत्ता मुनिवरों! परमात्मा के मिलान करते हैं। भौतिक याग वेता इस संसार को लोक को ऊंचा बनाते हैं। वह लोकप्रिय बन करके पुरोहिताम् भूतम् ब्रह्मणा लोकाम् ब्रहेः वह पुरोहित बन करके बेटा! देखो, पुरोहितता को प्राप्त करके संसार को पराविद्या देते हैं अपराविद्या देते हैं व्यवहार में मानो समाज को कटिबद्ध कर देते हैं तो इस प्रकार मुनिवरों! महात्मा अर्द्धभाग उद्गाता बने और वह बहुत समय तक याग प्रारम्भ रहा परन्तु दक्षिणाम् ब्रह्मा अन्नादम् भूतम् वह अन्न को ले करके याग के समाप्त होने के पश्चात महाराज अश्वपति बडे प्रसन्न हुए क्योंकि याग का जो सम्बन्ध है वह तपे हुए प्राणियों से रहता है। जितना याग में तपा हुआ प्राणी होता है, तपा हुआ उद्गीत गाने वाला होता है। और मुनिवरों! देखो, हमारे यहां विशेषामृता मैं विशेष चर्चा न देता हुआ केवल अपने विचारों को अब मैं विराम देने जा रहा हुं। अब मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगें।

पूज्य महानन्द जी ओ३म् देवाम् भू वरुण स्वन्धनाः वाचन्नमाः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल, अभी अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे जैसे गागर में सागर को भरण कर देता है इसी प्रकार उन्होंने अपने सूक्ष्म से शब्दों में और हमे ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे हम महाराजा अश्वपति की यज्ञशाला में विद्यमान हों और उनमें से उपदेश और उनके आचरणीय विचारों को हम अपने में श्रवण कर रहे हैं। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अभी अभी अपेन विचारो को व्यक्त कर रहे थे। परन्तु जहां यागों का सम्बन्ध है याग अपने में अद्वितीय क्रियाकलाप है। वह अद्वितीय कहलाता है और उसका मानो देखो, कोई मूल्यन नहीं होता। वह अपने में मानो देखो, पूर्णता को प्राप्त होता रहा है।

राजा और प्रजा

आज जहां हमारी यह वाणी जा रही है वहां एक देखो, साम गानम् ब्रहे इस प्रकार का तो नहीं परन्तु एक याग सम्पन्न हुआ है। और मैं केवल मेरा जो अन्तर्हृदय रहता है वह यज्ञमान के साथ रहता है हे यज्ञमान! क्योंकि यह वाममार्ग का काल है। यह जो वर्तमान काल है यह वाम मार्ग काल इसे मैं कहता रहता हूं। जहां राजा और प्रजा, दोनो सुरा और सुन्दरी और द्रव्य की लोलुपता में लगे हुए हैं। इसी प्रकार अमृतम् देखो, यह जो समाज है, यह अपठितों का समाज है। इसमें मानो देखो, राजा भी अपठित है तो प्रजा भी अपठित है। अपठित का अभिप्रायः यह यह है कि जो परमात्मा की नियमावली है उसको जो अपने राष्ट्र में धारयामि नही बना सकता वह मानो राजा अपठित कहलाता है। और प्रजा जिसकी पुकार नही करती राजा जो करनी चाहिए, वह प्रजा जब पुकार नही करती तो वह प्रजा भी अपठित कहलाती है। मैं वर्तमान के काल को ऐसा कहा करता हूं। आज का राष्ट्र यह कहा

करता है कि देखो, हम धर्म निरपेक्ष हैं, परन्तु राष्ट्र का अभिप्रायः क्या है? राष्ट्र उसे कहते है जो धर्म को अपने राष्ट्र में स्थापित कर सके। जो परमात्मा को दिया हुआ ज्ञान है, परमात्मा का दिया हुआ विज्ञान है उस विज्ञान को जो समाज में क्रियात्मक में वह क्रियात्मक दे सके वह राजा महान कहलाता है, वह राजा प्रजा का स्वामी कहलाता है। परन्तु प्रजा उसके अनुसार बरतने लगे तो वही मानो देखो प्रजा राजा दोनों एक दूसरे के जीवन के उपयोगी तो वही मानो देखो, प्रजा राजा दोनों एक दूसरे के लिए उपयोगी कहलाते हैं। तो विचार आता रहता हे कि मैं इस वाम मार्ग इसीलिए कहता हूं कि आधुनिक काल राजा भी यही चाहता है कि मैं द्रव्यपति बन जाऊं, परन्तु कर्तव्य के ऊपर विचार नही रहा है। रहा यह कि धर्मज्ञं इसके मूल में क्या है? इसके मूल में मानव का रुढिवाद है और रुढिवाद उसे कहते हैं जो ईश्वर के नाम पर नाना प्रकार के सम्प्रदायों का जन्म हो जाता है। नाना प्रकार की रुढियां बन जाती हैं और रुढियां ही देखो इसके विनाश का कारण बनती हैं। मैंने कई काल में पूज्यपाद गुरुदेव से यह कहा कि राजा को ब्रह्मवेत्ता होना चाहिए और उनका पुरोहित भी ब्रह्मवेत्ता होना चाहिए जिससे प्रजा को एकत्रित करके वह मानवीयता का और विज्ञानता को दे करके और धर्मज्ञम ब्रह्मा देखो, कर्त्तव्यवाद में लगा सके। ऐसा राजा प्रजा का स्वामी बने और देखो, उसके द्वारा मध्यस्था होनी चाहिए। मैंने कई कालों में वर्णन किया कि राजा रावण के काल में भी इसी प्रकार के सम्प्रदायों का जन्म हुआ। ईश्वर के नाम पर नाना प्रकार की रुढियां बन गई थी। उस समय मानो देखो जब रुढियां बन गई तो देखो अपने अप्रतम् ब्रह्मा रुढियों को राम ने नष्ट किया था। उन रुढियों को इसी प्रकार जब तक रुढिवाद समाप्त नही होगा। ईश्वर के नाम पर कोई मोहम्मद के मानने वाला है और भी नाना प्रकार के सम्प्रदाय हैं। जब तक यह सम्प्रदाय रहेंगें देखो इस राष्ट्र में शान्ति की स्थापना नहीं होगी जब तक कर्त्तव्य और धर्म नही आ सकेगा। कर्त्तव्य ही धर्म है। कर्त्तव्य को लाना ही मानवीयता कहलाया जाता है।

अशान्ति का मूल कारण

जब तक सर्वधर्मों का एक मानो देखो, उद्घोष होता रहेगा तो मैंने कई काल में कहा है हे भोले! तू जो सर्व धर्म कह रहा है, धर्म तो एक वचन है मानो देखो यह बहुवचन नहीं है। एक वचन का प्रतिपादन करते रहो जिससे तुम्हारा धर्मज्ञम ब्रह्मा। धर्म एक होता है, रुढियां अनेक होती हैं। नाना रुढियों को विनाश करते हुए तुम कर्तव्यवाद के ऊपर अपने जीवन को ले जाते चले जाओ। आधुनिक काल में इसका, अशान्ति का एक मूल कारण यह है कि विज्ञान का दुरुपयोग है। विज्ञान का जिस भी काल में दुरुपयोग हुआ है उसी काल में रक्तभरी क्रान्ति आई है। मैंने कई कालों में वर्णन करते हुए कहा है कि जब मेरी पुत्रियों का अश्लील चित्र मानो देखो, चित्रावलियों पर चित्र आने लगते हैं उस समय छात्र और छात्राएं सब उसको ग्रहण करते हैं। मानो देखो ब्रह्मचर्यों का ब्रह्मचर्य दूषित हो जाता है। और जब ब्रह्मचर्य दूषित हो जाता है तो उस समय देखो, वह आलस्य और प्रमाद आ जाता है उसमें। और जब आलस्य और प्रमाद आ जाता है, आलस्य प्रमाद के आने पर देखो, वह कर्तव्यवादी नही रहता, देखो वह अपनी पुकार करने लगता है अधिकार की। और जब से सृष्टि का प्रारम्भ हुआ है कोई भी मानव ऐसा नही हुआ जो कर्तव्यों का मानो देखो वह जो अपने कर्तव्य न करता हुआ अधिकार चाहता है। परन्तु यदि कर्तव्य नही कर रहा है अधिकार की कोई भी आज तक पूर्ति नही कर सकता और जब अधिकार देता ही रहता है वह अधिकार देखो, अअधिकार को भी अधिकार स्वीकार कर लेता है तो वह राजा अपने में मौन हो जाता है। अन्त में देखो, आपने में रक्तभरी क्रान्ति में परिवर्तित हो जाता है वह समाज।

मैं आज विशेष चर्चा न देता हुआ केवल यह क्या रक्तभरी क्रान्तियों में देखो, समूहदम् का बहुत समय हो गया है। रक्त भरियों में रत्त होने वाला यह जगत बन रहा है और ईश्वर के नाम पर जो रुढियां हैं ईश्वर के नाम

पर जो रुढियां हैं उन रुढियों में देखो, अधिकार की पुकार विशेष होने लगती है। कर्तव्यवाद में देखो, उसकी निष्ठा नही रहती। इसीलिए मैं यह कहता रहता हूं क्या हे राजन्! यदि तेरे राष्ट्र में देखो, समाज होना चाहिए और जितने यह रुढियों के आचार्य हैं उनको एकत्रित करके उनके मूल में जो सिद्धान्त हैं, उनको ले करके उनका एक ब्रह्मवेत्ता राजा उनका अपनी मध्यस्थता में उनका निराकरण करा सके। और जब तक यह निराकरण नहीं होगा कोई भी राजा मानो देखो, पृथ्वी पर शान्ति नही ला सकेगा। राष्ट्र में, प्रजा में शान्ति की स्थापना नहीं हो सकेगी। मैं यह पुनः से देखो, अपने वाक्यों को देखो, विचार देता हुआ मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहता रहता हूं हे पूज्यपाद! यह जो संसार है यह बडा विडम्बनित हो रहा है। आधुनिक काल को मानो देखो, मैं यजनम् ब्रह्मा कृतम् देखो, इसको वाम मार्ग कहता रहता हूं। जहां सुगन्ध को मानव अपने में ग्रहण न करके दुर्गन्ध में वह प्रसन्न रहना चाह रहा है। नेत्रों में दृष्टि दूषित होती जा रही है। इसी प्रकार श्वांसों में जो देखो प्रदूषण बलवती होता चला जा रहा है और बलवती होने का काम देखो समय आ रहा है यदि यह काल इसी प्रकार चलता रहा और देखो, आगे आने वाला जो समय है कुछ समय में देखो, श्वास लेने मात्र से मानव की मृत्यु हो सकती है। तो आज मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नहीं।

मैं अपने यज्ञमान को, हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे और तेरी मानवीयता सदैव मानवता में परिणत होती रहे। और मेरा तो सदैव देखो, इस प्रकार के क्रियाकलाप करने वाला यज्ञमान के साथ मेरा अन्तरात्मा रहता है और अन्तरात्मा यह कहता रहता है हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। तू अपने में अखण्डता को प्राप्त होता हुआ अपने मनोनीत हृदय को पवित्र बनाता चल। जो त्रुटियां हैं उनको भी तू त्यागने का प्रयास कर, ऐसा मेरा एक मन्तव्य रहता है। तो इसके साथ मैं अपने विचारों को विराम दे रहा हूं।

पूज्यपाद गुरुदेव मेरे प्यारे ऋषिवर! अभी अभी मेरे प्यारे महानन्द जी ने यह समाज और राष्ट्र और विज्ञान के ऊपर उन्होंने अपना सूक्ष्म विचार दिया। इनके विचारों में एक दाह है, एक विडम्बना है जिस विडम्बना के ऊपर बुद्धिमानों को विचार विनिमय करने का प्रायः एक अवसर प्राप्त होता रहता है। तो आज मैं देखो, इस सम्बन्ध में, आज के विचारों का जो अभिप्रायः है वह यह क्या प्रत्येक मानव को अपने मैं देखो, बुद्धिमता, ज्ञान और विज्ञान को ले करके अपने जीवन को ऊंचा बनाना और प्रदूषण यागों के द्वारा समाप्त हो सकता है। यह राष्ट्र अपने में विज्ञान में इसको अपने में विचारेगा। समय आयेगा जब यह समाज महान भी बनेगा। यह तो कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष आता ही रहता है। एक माह में दो पक्ष आते रहते हैं इसी प्रकार मानो समाज में भी दो पक्ष आते रहते हैं। कहीं कृष्ण पक्ष है, कहीं शुक्ल पक्ष है, तो इस प्रकार का यह प्रायः जगत चलता रहता है।

आज का यह सूक्ष्म विचार क्या कह रहा है। मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने सुन्दर विचार दिए और देखो, आज के विचारों का अभिप्रायः यह क्या मानव को एक तो किसी के आश्रित नहीं होना चाहिए और ज्ञान और विज्ञान में रत्त रह करके याग में परिणत रहना चाहिए। यह आज का वाक् अब हमारा सम्पन्न होने जा रहा है। समय मिलेगा, तो शेष चर्चाएं कल प्रगट करेंगें। ओ३म् देवाः आभ्याम्रथभमाहम्प्राचीः रथभ्याम् आपाहाम। ओ३म् यशश्चाहम् ग्राणान्त्वा यमऽआपाहाम्। अच्छा भगवन! दिनांक २३ अगस्त १९९२, ग्राम काकड़ा, गाजियाबाद।

७ २७ ०८ १९९२

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहां परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गएं हैं, और जितना भी जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है। उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वे परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं। इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा अथवा उसके गुणों का गुणवादन करते रहते हैं, और उसकी आराधना में हम अपने को ले जाने का प्रयास करते रहे हैं। परम्परागतों से मानव के जीवन में नाना प्रकार की प्रतिभाओं का जन्म होता रहा है। परन्तु इस अन्तरात्मा की एक ही प्रेरणा है, जब भी आत्मवेत्ता अपनी स्थलियों पर विद्यमान हुए हैं, उन्होंने आत्म प्रेरणा को ले करके और उस महान ज्ञान से प्रेरित हो करके उन्होंने मानो नाना प्रकार की पूजा में अपने को ले जाने का प्रयास किया है। सबसे प्रथम ऋषि-मुनियों ने यह विचारा कि यह पूजा क्या है? हमारे यहां वेदमन्त्रों में नाना प्रकार के विचार-विनिमय होता रहा है, और उन वेदमन्त्रों में पूजा की बड़ी महान पद्धति मानवीय जीवन के समक्ष आती रही है, और जो मानव उसके ऊपर अन्वेषण करता रहा है, और तपस्या में परिणत रहा है। तो वह पूजा के इस वास्तविक स्वरूप को जानने का उन्होंने प्रयास किया।

एक समय बेटा! मुझे स्मरण आता रहता है महर्षि जालवी के यहां नाना जिज्ञासु विद्यमान थे और उनके मध्य में एक ही प्रसंग था एक वेदमन्त्र उन्हें न्यौदा में से स्मरण आ रहा था और वेदमन्त्र कहा रहा था पूजां भवि प्रमाणां ब्रहे व्रतं देवत्वां पितरश्चं ब्रह्वा पूजं ब्रह्वे अग्नं रथाः तो वेद का मन्त्र यह कहता है कि क्या हम पूजन करना चाहते हैं, प्रत्येक मानव पूजा में रत्त रहता है। वह किसी न किसी स्वरूप में मानो पूजा करता रहता है। कोई पितर पूजा कर रहा है, कोई मानो न्यौदा में पूजा कर रहा है। कोई नाना प्रकार के देवालयों में विराजमान हो करके अपने देव की आराधना अथवा उसकी पूजा करता रहा है, परन्तु पूजा करने के पश्चात भी मानव के समीप एक प्रसंग बना रहता है कि पूजा हम किसे कहते हैं? वेदमन्त्र यह प्रश्न करता है कि पूजा किसे कहा जाता है? मानो एक वेदमन्त्र बहुत पुरातन ऋषि-मुनियों को स्मरण आया जो बेटा! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि के यहां नाना वैज्ञानिक वेत्ता विद्यमान थे, जिसमें मुनिवरों! देखो, महर्षि प्रवाहण और ब्रह्मचारी कवन्धि और शिलभ और पणपेतु इत्यादि ऋषि-मुनियों का एक समूह विद्यमान था यह अपने में जिज्ञासु भी थे और यह ब्रह्मवेत्ता भी थे और विज्ञानवेत्ता भी थे तो मानो देखो, विज्ञान और ब्रह्मवेत्ता एक दूसरे के पूरक कहलाए जाते थे तो इनकी नाना प्रकार का प्रसंग यह उत्पन्न हुआ क्या पूजां भवि वर्णनं ब्रहा क्या वैज्ञानिक रूपों से पूजा किसे कहें? क्योंकि वास्तव में यह साधारण शब्द है, माता कहती है कि मैं अपने वर्णनं मानो अपने तेज की पूजा करना चाहती हूँ, पितर कहता है कि पितरों की पूजा करना चाहता हूँ। परन्तु शिवं ब्रन्तं कहते हैं कि मैं शिव की पूजा करना चाहता हूँ, विष्णुवादी कहते हैं क्या मैं विष्णु की पूजा करना चाहता हूँ। एक समय मेरे प्यारे महानन्द जी ने नाना प्रकार के सम्प्रदायों की चर्चाएं की परन्तु आज मैं सम्प्रदायों की चर्चाएं न करते हुए केवल यह कि एक दूसरा मानव एक दूसरे की पूजा पद्धति में जाना चाहता है। परन्तु वैज्ञानिकों का जब समूह विद्यमान होता है, और दार्शनिकता में यह विचारता है कि पूजा किसे कहते हैं? मेरे प्यारे! देखो, पूजा का एक ही स्वरूप बनता है। किसी वस्तु है और जैसी वह वस्तु है जिसका जिस उपयोग में वह लानी है, उसका उपयोग करने का नाम उसकी पूजा कही जाती है। जैसे एक मानव

अग्नि की पूजा करना चाहता है, क्या अग्नि की पूजा का अभिप्रायः यह कि अनुसन्धान करने वाला हो और अग्नि को वेदमन्त्र कहता है, देवत्वं ब्रह्माग्नि मानो यह जो अग्नि है यह अग्नि देवताओं का मुख है, और देवताजनों में मानो जो हूत करने वाला अग्नि के मुखारबिन्दु के मुखारबिन्दु में नाना प्रकार का चरू या साकल्य उसमें प्रदान करता रहता है। तो अग्नि उसे प्रदान करके देवताओं को प्रदान कर देती है। तो वह मानो उसकी पूजा बनती है, पूजा का अभिप्रायः यह कि अग्नि का पूजन करना और देवताओं का मुख स्वीकार करके मानो देखो, उसमें चरू का प्रदान करना है। तो वही उसकी पूजा का अभिप्रायः गृतं देखो, देव पूजा बनती है।

तो मुनिवरों! देखो, उसी प्रकार मुझे स्मरण आ रहा है एक राष्ट्रवेत्ता यह चाहता है कि मानो मैं एक विजय याग करना चाहता हूँ, और मैं इस संसार से विजय हो जाऊं ऐसी मानो उसकी भावना रहती है, दो प्रकार के विजय होता है एक विजय वह बनता है जो अपनी आत्मा के अनूकुल अपने को बनाने का प्रयास करता है, और आत्मा से जो प्रेरणा प्राप्त होती है। उसके अनुकूल मानो वह क्रियाकलाप को करता हुआ आत्म पूजन कहलाता है। तो वह आत्मा का पूजन कर रहा है एक जो गुरु और शिष्य दोनों एक दूसरे की स्थली पर विद्यमान हो करके जब गुरु से अपनी जिज्ञासा प्रगट करते हैं, तो और गुरु उसका यथोचित उसका उत्तर देता है। तो उत्तर दे करके मानो देखो, वह आचार्य के वाक्यों को स्वीकार करने वाला वह मानो देखो, आचार्य की पूजा कर रहा है। तो वह पूजा का अर्थ यह क्या एक मानो देखो, आत्मीय जो क्रियाकलाप है, अथवा आत्मीय जो कर्म है, उस क्रियाकलाप को उस प्रेरणा को स्वीकार करते हुए हम अपने में पूजन करना चाहते हैं। तो वही वास्तव में उसकी पूजा कही जाती है। जैसे माता मंगलं ब्रहे व्रत देवाः हम माता की पूजा करना चाहते हैं। तो माता की पूजा का अभिप्रायः क्या है, क्या माता की आज्ञा का पालन करने वालें बने और माता का पूजन यही है कि मानो देखो, जब उसका यथोचित हम उसका आदरणीय स्वीकार करके उसका जो ऋण है। उससे अवऋण होने का प्रयास करें और माता मानो कहीं-कहीं पुत्र के लिए ऋणी होती है। जैसे माता अपने गर्भ के पुत्र को जन्म दे करके और यदि वह ऊर्ध्वा में नही बना सकती तो वह माता पुत्र की ऋणी कहलाती है मानो देखो, वह एक उपयोगां पूजां भूतं ब्रह्मा लोकां मानो देखो, वह पूजा का रूप नही बन पाता है वह केवल एक अपवाद बन करके रहता है तो विचार आता रहता है वैदिक साहित्य यह कहता है कि हम मानो देखो, माता का पूजन करने वालें बनें और पूजा का अभिप्रायः यह है कि जब उसका यथोचित मानो उसका हमे स्वागत करना यथोचित मानो उसको स्वीकार करना है। तो वह उसकी पूजा बनती है। तो मुनिवरों! देखो, जैसे ही हम परमपिता परमात्मा की पूजा करना चाहते हैं, परमात्मा को अपना आराध्य स्वीकार करते हैं, तो आचार्यों ने यह कहा कि परमात्मा की जो पूंजी है, अथवा उसका यह जो ब्रह्माण्ड है यह ब्रह्माण्ड के ऊपर यथोचित हम चिन्तन करें और उसको मानो चिन्तन के पश्चात जो परिणाम हों उस परिणाम को हम स्वीकार करें, और उसी परिणाम के अनुसार अपने जीवन को बनायें, तो मानो देखो, उसकी पूजा बनती है। परमात्मा पूजन करना हमारा सदैव कर्तव्य कहलाता है। परमात्मा की पूजा का अभिप्रायः केवल यही है कि उसका जो बनाया हुआ यह ब्रह्माण्ड है, अथवा एक-एक तरंग है एक-एक परमाणु है उसकी परमाणु से हमारा ध्यानावस्थित हो जाएं, और अपने ज्ञान और विज्ञान के द्वारा मानो उसकी प्रतिभा को अपने में धारण करने वाले बनें, तो वह उसकी पूजा कही जाती है।

तो आओ मुनिवरों! देखो, मैं उच्चारण कर रहा था मुनिवरों! देखो, हम एक राष्ट्रवेत्ता बन करके राजा बन करके हम अश्वमेध याग करते हैं, और अश्वमेध क्या उसे विजय याग भी कहते हैं। मानो देखो, दूसरा एक विजय याग कहा जाता है, जिससे मानव दूसरों पर देखो, विजय करने वाला बनें मैंने पूर्व काल में कहा है कि एक तो विजय वह बनता है, जो अपनी इन्द्रियों पर इन्द्रियों पर जितेन्द्रिय बन जाता है। इन्द्रियों पर सयंम करता हुआ

इन्द्रियों पर साकल्य बनाता हुआ और वह हृदय रूपी यज्ञशाला में जब अपने में विजय याग करता है। तो वह याज्ञिक बन करके मेरे पुत्रों! देखो, वह अपने में संसार को अपने में विजेता को अपने में घोषित करता है। एक वह जो बाह्य जगत में राजा देखो, याग करता है, और वह मानो देखो, विजय याग करता है और विजय याग करता हुआ वह मानो देखो, अपनी प्रेरणां भूतं अपने में संकल्प बनाता है। मुझे स्मरण आता रहता है एक समय बेटा! देखो, समुद्र के तट पर विद्यमान हो करके मुनिवरों! देखो, भगवान राम लक्ष्मण और मुनिवरों! देखो, जामवन्त इत्यादि देखो, सब विराजमान हो करके और वह अपने में विचार-विनिमय करने लगे तो मेरे प्यारे! देखो, महाराजा जामवन्त ने यह कहा क्या यदि तुम रावण को विजय करना चाहते हो तो तुम मानो देखो, यहां एक याग करो। तुम रूद्र याग का पूजन करो और रूद्र याग से मानव को तुम सफलता को प्राप्त हो जाओगे वह शिव का पूजन करो। वह मेरे प्यारे देखो, भगवान राम ने कहा हे जामवन्त! तुम ऐसा क्यों कहा है? या मैं यहां देखो, रूद्र याग करूं। उन्होंने कहा भगवन! रूद्र कहते हैं जो रूलाने वाला है, जैसे मानो देखो, मानव के शरीर से जब यह प्राण चला जाता है तो इसके अंग संग रहने वाले वह रूधन करते हैं। वह रूला देते हैं। प्राणों के चले जाते हैं इस शरीर से मानो देखो, वह ऐसा रूद्र याग करो जिससे वह प्राण न जाएं और मानो देखो, उससे रूद्रं ब्रह्मे हम रूधन न करें हम सदैव प्राणों का पूजन करते रहें। एक मानो देखो, यह कि शिवं ब्रह्मा शिव कहते हैं, परमपिता परमात्मा को जो मानो देखो, शिवं ब्रह्मण व्रते जो सर्वत्र रचयिता है। मानो जो सर्वत्र संसार को अनुशासन में लाने वाला है। हम उसकी आराधना करें। हम उसकी सृष्टि को निहारते हुए हम मानो याग में परिणत हो जाएं। एक वह याग कहा जाता है। जैसे हम राजा को विजय करना चाहते हैं। तो हम मानो जो शक्ति शाली राजा है। जैसे हमारे यहां हिमालय का राजा शिव है। हम शिव की पूजा करें। पूजा का अभिप्रायः यह है कि हम उसको अपने अनुकूल बनायें। हम उसकी आज्ञा का पालन करें, और वह पालन उसका नाम ही उसकी पूजा है। मानो देखो, उसके अनुसार चलेंगें तो हमारी विजय होगी। मेरे प्यारे! देखो, भगवान राम ने यह वाक् जामवन्त का स्वीकार किया स्वीकार करते हुए उन्होंने कहा कहो ब्रह्मणे ब्रह्मा व्रतं देवाः क्या यह तो आप जानते हैं कि जामवन्त ने कहा यह यथार्थ है। उन्होंने कहा भगवन! बहुत प्रिय है। उन्होंने कहा तो सम्भवं ब्रह्मा लोकां क्या हम मानो देखो, क्यों याग करें तो उस समय मानो देखो, वह महाराजा विभिषण ने कहा कि याग इसीलिए सर्व श्रेष्ठ कहलाता है, कि इससे मनोभावना मानव की पवित्र बनती है, और पवित्र बन करके और जिसको हम विजय करना चाहते हैं मानो अपने सुविचारों को हम न्याय और अन्याय को दोनों को एक स्थली में नियुक्त करते हुए मानो हम दूसरों को नष्ट करना नही चाहते है। क्योंकि वेदमन्त्र यह कहता है कि दुष्टं ब्रह्मा कृतं देवत्वां देवो ब्रहा माना किसी के प्रति हमारी याज्ञिक पुरूषों की दुर्भावना हो जाती है, मानो याग उसे भी ऐसा ही दण्ड देता है, जैसा कि देखो, वह याग के जो शत्रु होते हैं, उनको दिया जाता है। इस प्रकार की भावना हमारे अन्तर्हृदयों में नही होनी चाहिएं। परन्तु यह है कि जो उनके संग साथी हैं उनको हम प्रसन्न करें और प्रसन्न करके उनका उपयोग करें जिससे हमारा न्याय और देखो, हमारा धर्म मानवीयता के आसनतव पर हम रमण करने वाले हों। तो मेरे प्यारे! देखो, मुझे ऐसा स्मरण है क्या राम ने उसी प्रकार उन्होंने जैसे सबने अपनी अनुमति दी तो उन्होंने कहा हनुमान से कहा कहो हनुमान जी तुम्हारा क्या विचार है, तो महाराजा हनुमान क्योंकि यह सूर्य विद्या के मर्मज्ञ कहलाते थे, सूर्य विद्या को वह जानते थे मुझे ऐसा स्मरण आता रहता है कि वह अपने कण्ठ में सूर्य विद्या को धारण करते रहे हैं, और वह विद्याएं मानो अपने में बड़ी विचित्रता में परिणत रही हैं। तो मुनिवरों! देखो, वह अपने कण्ठ से बोले कि प्रभु मैंने सूर्य सिद्धान्त को जाना है, और सूर्य सिद्धान्त के ऊपर मेरा बड़ा अनुसन्धान होता रहा है, और मैंने सूर्य विद्या के ऊपर नाना प्रकार के यन्त्रों का भी निर्माण किया है। मानो देखो, अपने एक मानो एक पादुका नामक यन्त्र का मैंने एक निर्माण किया

था और वह निर्माण महाराजा रेवती ऋषि के यहां विराजमान हो करके मानो मैंने उस विद्या का अध्ययन किया है, और उसमें मैनें यह जाना है कि आचार्यों की कृपा से कि मैं एक पादुका जानता हूँ। पादुकां वृत्तिका यन्त्र है जिसमें विराजमान हो करके जो यन्त्र सूर्य की किरणों के आश्रित हो करके गमन करता है, और गमन करके मैं मानो देखो, यहां से उस पादुका यन्त्रों में विराजमान हो करके मानो कुछ लोकों में भ्रमण कर आता हूँ।

तो मेरे प्यारे! देखो, समुद्र के देखो, वह समुद्र को जब लांघने के लिए चला तो उस यन्त्र को अपने में प्रयोग किया और यन्त्र में विद्यमान हो करके और वह मानो समुद्रों से पार हो जाता हूँ और द्वितीय राष्ट्रों में लोकों में भी रमण कर जाता हूँ, मानो सूर्य की जो ऊर्ज्वा है वह ऊर्ज्वा के आश्रित हो करके मानव अपने में गमन करता रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो, महाराजा हनुमान ने यह कहा कि मैंने सूक्ष्म विद्या का अध्ययन किया है तो अध्ययन करने से उन्होंने एक वाक् और कहा कि मैंने सूर्य की किरणों में एक यन्त्र का मैंने व्यवधान किया है। जो यन्त्र मानो देखो, उसमें मानो देखो, सूर्य की ऊर्ज्वा किरणों के साथ में मानो वह सूर्य की परिक्रमा कर रहा है। और उसका जो आयु है, यन्त्र का वह लगभग देखो, एक लाख पांच सौ इक्कसठ वर्षों आयु मैंने प्रदान कर दी है, परमाणुओं के द्वारा। तो वह मानो देखो, सूर्य की परिक्रमा करता रहता है। तो इतने समय तक परिक्रमा करेगा तो मानो देखो, जब एक समय उसके पश्चात जब देखो, यन्त्रों से जल प्लावन आयेगा और जल प्लावन का मिलान मानो देखो, जब चन्द्रमा से मिलान होगा समुद्र की तरंगों का तो वही मानो देखो, उससे पूर्णिमा के दिवस एक मानो पूर्णोष्टि में एक ग्रहण होगा, ग्रहण का अभिप्रायः ये वह पृथ्वी की और सूर्य की छाया में जब ये चन्द्रमा आ जाएगा, तो लाखों वर्ष के पश्चात उसकी प्रतिभा नष्ट हो जाएगी। तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने उस प्रकार अपना मन्तव्य दिया उन्होंने कहा प्रभु! अपना याग करना चाहिए। परन्तु याग के विचार अपनी आत्मीयता का प्रायः दर्शन होना चाहिए, और जब आत्मयीयता का दर्शन होगा तो तुम्हारा याग सम्पन्न हो जाएगा। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा बहुत प्रियतम यह वाक् देखो, उन्होंने स्वीकार कर लिए और स्वीकार करके मुनिवरों! देखो, याचना में उन्होंने अपने व्धान बनाया।

मुझे बेटा! वह काल स्मरण आता रहता है उन्होंने बेटा! देखो, महर्षि मृचिका ऋषि और देखो, कापेय और वृत्तिका मुनि को और लोमश मुनि को निमन्त्रण दिया कागभुषुण्ड जी को उन्होंने निमन्त्रण करते हुए वह मुनिवरों! देखो, यज्ञशाला में विराजमान हो गएं। मानो समुद्र के तट पर मानो देखो, उन्होंने कहा प्रभु! हम अजामेध याग करना चाहते है। हे प्रभु! देखो, हम विजय याग करना चाहते हैं। जिससे रावण को दुष्कर्म नष्ट हो जाएं, और दुष्कर्म जब ही नष्ट होंगें जब उसका प्राणान्त होगा भगवन!। हम याग करना चाहते हैं विजय याग मेरे प्यारे! देखो, महर्षि कागभुषुण्ड जी ने कहा क्या भगवन! अवश्य कीजिए क्योंकि यह तो तुम्हारा याग तो तुम्हारा कर्तव्य है परन्तु देखो, दुर्भावना तुम्हारे अन्तःकरण में आयेगी तो यज्ञ का उससे मानो द्वितीय रूप बन जाएगा उन्होंनें कहा कि दुर्भावना नही हमारी इच्छा यह है कि मानो समाज है, प्राणी मात्र है, वह सब मानो एक ही सूत्र के मनके हैं और वह सूत्र में सूत्रित हो जाऐ जैसे नाना प्रकार के जो मनके हैं वह मनके एक ही सूत्र में पिरोने से माला बनती है, इसी प्रकार हम सब प्राणी क्या देखो, प्रत्येक राष्ट्र एक सूत्र में सूत्रित होना चाहते हैं। हम सूत्र को धारण करते हुए सूत्र में सूत्रित हो करके अपने को पवित्र बनाना चाहते हैं। मेरे प्यारे! राम के वचनों को पान करते हुए सब बड़े प्रसन्न हुए महर्षि लोमश मुनि महाराज ने यह कहा हे राम! यह समुद्र का तट है, और समुद्र के तट पर यह विचार भावना तुम्हारी तरंगें मानो देखो, तरंगित हो करके भ्रमण करेंगी, अब यदि तुम्हें याग करना है। तो रावण के जो आचार्य जो गुरु रहें है। वह महाराजा शिव रहे हैं, और ब्रह्मा भी रहें है, उन दोनों को तुम्हें प्रसन्न करना होगा। जब तक तुम उनको प्रसन्न नही करोगे जब तक तुम्हारा याग सम्पन्न नही होगा। तो मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण आ

रहा है तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने कहा बहुत प्रिय भगवन! हम कैसें करें? हम उन्हें प्रश्न कैसे कर सकते हैं? उन्होंने कहा जा करके तुम जा करके के द्वार पर जाओ देखो, वह महाराजा शिव को अपने में उनके आधीन स्वतः बन जाओ। और उनसे नम्रता और बुद्धि युक्त ज्ञान युक्त हो करके, तुम अपनी वार्त्ता को प्रगट करो। अपना जो देखो, मानो हृदयों में जो नाना प्रकार का वृत छाया हुआ, मानव समाज का वह उनके लिए तुम नियुक्त करो। उन्होंने कहा बहुत प्रिय भगवन!।

तो मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहता है महाराज हनुमान ने कहा कि मैं देखो, उनके जो पुत्र हैं हमने दोनों ने विज्ञान की देखो, सम्पन्नता शिक्षा पाने में विज्ञान में सम्पन्नता को हम प्राप्त हुए हैं। हमने नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण किया है और हम मानो देखो, दोनों सहपाठी रहें और मानो देखो, महाराजा हनुमान और देखो, यह सर्वत्र एक समूह देखो, वहां से समुद्र के तट से भ्रमण करता है, और भ्रमण करते हुए मुनिवरों! देखो, अपने वाहनों में विद्यमान हो करके, वह महाराज शिव के द्वार पर पंहुचे, तो जब शिव के द्वार पर पंहुचे तो मुनिवरों! देखो, महाराजा शिव को सूचित किया गया क्या देखो, भगवान राम और देखो, और भी देखो, महर्षि लोमश और देखो, कागभुषुण्ड जी और भी देखो, नाना जामवन्त इत्यादि हनुमान जी देखो, सब तुम्हारे समीप आना चाहते हैं। उन्होंने आज्ञा दी कि स्वतः अमृतं ब्रह्मे मानो इसके लिए आसन लग गया और मानो देखो, महाराजा शिव विद्यमान हो गएं और विद्यमान हो करके माता पार्वती भी विद्यमान है, तो उस समय महाराजा गणेश और कार्तिकेय यह भी विद्यमान हो गएं। मेरे प्यारे! देखो, वह उनके वैज्ञानिकों की सभा में देखो, पारेत्वर ऋषि और करवेत्वर मानो ब्रह्मवेत्ता अपने में वह शिव के द्वारा नाना प्रकार में ब्रह्म में निष्ट होने वाले विचारों को बनाते रहते थे मानो वह भी विद्यमान हो गएं और विद्यमान हो करके विचार-विनिमय होने लगा मेरे प्यारे! देखो, महाराजा शिव ने कहा कहो भगवन! अमृतं ब्रह्मे हे राम! तुम्हारा आगमन कैसे हुआ? उन्होंने कहा प्रभु! हम इसीलिए आपके प्रार्थी बन करके आए हैं, उन्होंने कहा क्या प्रार्थी है? उन्होंने कहा कि प्रभु! समुद्र तट पर एक याग करना चाहते हैं, और याग में आपको सम्मिलित करना चाहते हैं, जिससे भगवन! हमारा आत्मीय बल बलिष्ठ हो जाएं, और हम मानो देखो, मृत्युंजय बन जाएं, और हम मानो देखो, विजेता को प्राप्त हों। मेरे प्यारे! देखो, महाराजा शिव ने कहा तो किसकी पूजा करना चाहते हो, उन्होंने कहा प्रभु! हम पूजा करना चाहते हैं। पूजा तो महानता की होती है मानो दूरिता की पूजा नही होती पूजा केवल दूरिता को नष्ट करने के लिए और देखो, मानवता को लाने के लिए देखो, वह याग किए जाते हैं। हे प्रभु! जिससे प्रदूषण समाप्त हो जाएं, और विचारों में महानता आ जाएं, इस कारण देखो, हम एक याग करना चाहते हैं, और वह शिवं ब्रह्मा पूजनं ब्रह्मे हम मानो देखो, उस परमात्मा की पूजा करना चाहते हैं। जो हमारा सर्वत्र का पूजक है और जो सभी को और सुबुद्धि देने वाला है, सभी में जो मानो विज्ञान जिससे यह संसार रचाया है, जिससे इस संसार में मानो देखो, हम अपने में ही रत्त होना चाहते हैं। मेरे प्यारे! महाराज शिव ने कहा राम! बहुत प्रियतम परन्तु देखो, तुम याग करना चाहते हो याग तुम्हारा जब ही सम्पन्न होगा? जब कि तुम्हारे विचार मानो देखो, माला की भांति होंगें, जैसे माला में मनके होते हैं, और मनके सूत्र में पिरोऐ हुए होते हैं। यदि तुम विजय याग करना चाहते हो, तो सर्वत्र को एक माला मनके स्वीकार करना होगा, और जो माला का मनका भ्रष्ट हो गया है, उस माला के मनके को मानो सूत्र में से समाप्त करने का प्रयास करना होगा माला जब ही विशुद्ध बनती है, तो मेरे प्यारे! देखो, ये राम ने स्वीकार किया उन्होंने कहा बहुत प्रियतम मेरे प्यारे! देखो, महाराज जामवन्त ने कहा कि तुम्हारी आयु बड़ी प्रबल है, और तुम वेद के मर्म के जानने वाले हो। तो मानो देखो, अपने में वेदज्ञ कहलाते हो, तुम्हारा इस सम्बन्ध में क्या विचार है। महाराजा जामवन्त ने कहा प्रभु! राष्ट्रीयता तो उसी को कहते हैं जो राष्ट्रीयता देखो, जो परमात्मा का नियम है। उस नियम को जो नियम से पथ भ्रष्ट हो गया है, उसको

पथ को प्रजा को लाने के लिए राष्ट्र का निर्माण होता है, और यदि राजा बन करके प्रजा को मानो देखो, उस पथ पर नही ला सकता है। उस मानो देखो, अपने में नही ला सकता है, तो वह राजा नही कहलाता है इसीलिए मेरा विचार है कि वह उस पथ पर लाने के लिए हमें वास्तव में अपने विचारों को महान बनाना होगा, और वेदज्ञ बनना होगा प्रकाश में लाना होगा तो मेरे पुत्रों! जब यह वाक् उन्होंने प्रगट किया तो वह अपने में बड़े प्रसन्न युक्त हो गएं, और प्रसन्न युक्त हो करके उन्होंने कहा गणेश जी से कहा कहो गणेश जी तुम्हें विज्ञान को बहुत जाना है। मेरे प्यारे! गणेश जी उपस्थित हो करके बोले कि प्रभु मेरे सहपाठी हनुमान जी यही विद्यमान हैं, हम दोनों ने एक ही आचार्य से देखो, ब्रह्म विद्या और देखो, यह जो पदार्थ विद्या है इसको जाना है जिसको वैज्ञानिक विद्या कहा जाता है। हमने बहुत से यन्त्रों का निर्माण किया जो सूर्य की किरणों के साथ गमन करते हैं कोई चन्द्रमा की यात्रा कर रहा है कोई मंगल की परिक्रमा कर रहा है, परन्तु देखो, हमने बहुत से यन्त्रों को जाना है। और वह यन्त्रों को जानने का अभिप्रायः यह कि प्रभु का जो परमाणुवाद है, उसको रचाया हुआ है, उस परमाणुवाद का उपयोग करना ही मानो देखो, उसी को निहारना है, और सृष्टि को निहार करके विज्ञान का सदुपयोग करना यह मानो कर्तव्यवादी बन जाएगा और जब विज्ञान अपने में देखो, अपने में वैज्ञानिक कर्तव्यहीनता में विज्ञान को ले आते हैं। तो वह दुष्कर बन जाता है। वह दुष्कर देखो, ब्रह्मवर्चोसि का विनाश करने वाला बनता है। तो मेरे विचार में यह तो इस प्रकार के क्रियाकलाप किए जाएं तो मेरे प्यारे! देखो, वह अपने में बड़े प्रसन्न हुए और प्रसन्न हो करके महाराजा शिव ने आज्ञा दी जाओ तुम याग करो समुद्र के तट पर याग करो परन्तु हम तुम्हारे सहयोगी रहेंगें और मानो देखो, दूरिता को नष्ट करने का प्रयास करो। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि-मुनियों ने एक ही अपने अन्तर्हृदय से उनकी प्रशंसा की और यह कहा कि प्रभु! धन्य है। आपका विज्ञान देखो, बहुत अद्विितीय कहलाता है। महाराज शिव के यहां ऐसे-ऐसे यन्त्र विद्यमान थे जो मार्कण्डेय जी की सहायता से उन्होंने यन्त्रों को जाना परन्तु देखो, वह चन्द्रमा और पृथ्वी के मध्य में उनके ऐसे स्थान से जहां विद्यमान हो करके चन्द्रमा की यात्रा और देखो, बुद्ध और बुद्ध की यात्रा में वह सफलता को प्राप्त होते रहे। इस प्रकार के यन्त्र उन्हें विराजमान हो करके देखो, वह ऐसा स्थान है एक स्थली पर जहां देखो, चन्द्रमा की भी सीमा अव्रत होती है, और बुद्ध की होती है, और मंगल की भी होती है, और देखो, वही शुक्र की होती है वहां से देखो, यन्त्र विद्यमान हो करके सर्वत्र लोकों में वैज्ञानिक भ्रमण करते रहे हैं। तो इस प्रकार मित्रों देखो, मार्कण्डेय ऋषि महाराज के अद्वितिय विचार विज्ञान में बड़े महानता में परिणत होते रहे हैं। जो महाराजा शिव के द्वारा मानो अन्वेषण करते रहे हैं। तो आज मैं बेटा! उन ऋषि-मुनियों के विचारों में न जाता हुआ केवल यह क्या मुनिवरों! देखो, महाराजा शिव ने कहा चलो समुद्र के तट पर याग करेंगें तो बेटा! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है महर्षि लोमश और कागभुषुण्ड और जामवन्त इत्यादि वहां से गमन करते हैं, और महाराज शिव से कहा क्या प्रभु! आप याग का मानो उसका प्रारम्भ करेंगें क्योंकि याग का प्रारम्भ तो आपके द्वारा होना है। मुनिवरों! उन्होंने कहा बहुत प्रियतम। तो मुनिवरों! देखो, वह वहां से भ्रमण करते हुए, समुद्र के तट पा आ गएं तो बेटा! मुझे स्मरण है। उन्होंने बेटा! वह विजय याग का उन्होंने घोषित किया। और विजय याग में कौन ऐसा प्राणी है उन्होंने कहा जो विजय याग करा सकता है। जिससे हम विजयी हो जाएं। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा देखो, विद्वानों की, महापुरूषों की एक सूची बनाई। परन्तु उसमें सबसे प्रथम महर्षि विभाण्डक मुनि को चुनौती प्रदान की द्वितीय उन्होंने वशिष्ठ मुनि को चुनौती और तृतीय लोमश और देखो, वह और भी श्रृंगी इत्यादियों को उन्होंने निमन्त्रित किया, और यह कहा कि याग को पूर्ण कराया जाएं। तो मेरे प्यारे! देखो, शेष चर्चा तो किसी काल में ही प्रगट करूंगा परन्तु ये कि इन सब ऋषि-मुनियों ने विद्यमान हो करके, उन्होंने बेटा! देखो, शिव याग का पूजन किया। और शिव याग उसे कहते हैं जो जिसे रूद्र और शिवं ब्रह्मा देवत्वां वैदिक साहित्य में बेटा! शिव नाम के राजा भी

हैं। शिव परमात्मा को भी कहते हैं। शिव नाम आत्मा का भी है, परन्तु देखो, शिव नाम प्राणों को कहा गया है जिससे हमारा प्राण न हनन हो जाएं हम ऐसे मानो भावना से और ऐसी साकल्य के द्वारा देखो, अग्नि में हूत करें वह देवताओं का मुख है, और देवताओं के मुख में जब मानो हूत करेंगें, तो वही मानो देवता हमारे अन्तर्हृदयों में, क्रियाकलाप कर रहें हैं तो वही मानो देखो, आत्मा का लोक बना हुआ है, उसी में वह आत्मा का गृह है, आत्मा उसी पंच महाभूतों में क्रियाकलाप कर रहा है। तो मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहता है वहा मुनिवरों! देखो, यज्ञशाला का निर्माण किया गया यज्ञशाला में देखो, हमारे यहां ब्रह्म का निमन्त्रण किया उस समय बेटा! देखो, ब्रह्मा एक उपाधि से अलंकृत की हुई मानो देखो, वृत्तियां मानी जाती हैं। उन्हीं उपाधियों से देखो, ब्रह्मा देखो, निमन्त्रण के कथनानुसार आ करके बेटा! देखो, याग का व्यवधान किया, और याग की रचना की मेरे प्यारे! देखो, महाराजा शिव ने यह कहा कि तुम ऐसा याग कर्म कर गएं हो पूर्व काल में जब तुमने रावण को देखो, ब्रह्मा नियुक्त किया है। उस याग को देखो, तुमने किया है, वह तुमने बहुत प्रिय किया, परन्तु अब शिव याग कर रहे हो, तो मेरे प्यार देखो, उन्होंने इस प्रकार का उद्धृत करके इस प्रकार अपना वाक् प्रगट किए, तो वह मेरे प्यारे! देखो, वह याग सम्पन्न हुआ। वह तीन माह, तीन दिवस तक याग प्रारम्भ रहा बेटा! याग के मानो विचार-विनिमय होता रहा, राजा महाराज आते रहे निमन्त्रित देखो, ऋषि-मुनियों का आगमन होता रहा, और उन्होंने बेटा! देखो, विजय याग किया जिस विजय याग का परिणाम होता है कि हम अपने को विजय करें, और जो हमारा शत्रु है धर्म और मर्यादा का शत्रु है वह भी हमारा देखो, उसके सुविचार बनें और विचार नहीं बनेंगें, तो हम उससे विजेता को प्राप्त होंगें। मानो इस प्रकार उन्होंने अपना व्यवधान बन करके, मेरे प्यारे! देखो, मानो समुद्र के तट पर एक याग किया था। भगवान राम ने दो याग किए थे। समुद्र के तट पर एक याग में तो देखो, रावण को निमन्त्रित किया था और द्वितीय याग में ब्रह्मा इत्यादियों से विभाण्डक इत्यादियों से उन्होंने याग किया था। वह याग बेटा! मुझे भी स्मरण आता रहा है। उस याग में मानो देखो, समुद्रां भूतं ब्रहे व्रतं देखो, जलं ब्रह्वा कृतं वह पूजा का याग चल रहा था। तो पूजा का अभिप्रायः यह है कि हम विजय करना चाहते हैं तो हम उन राजाओं को अपने अनुकूल बनायें समुद्र पर रमण करना चाहते हैं, तो समुद्र पर रमण करने वाले यन्त्रों का निर्माण करें और निर्माण करके मानो देखो, उसी प्रकार जल तत्त्व को उसमें रत्त करते हुए मानो उसमें रमण कर जाएं। तो बेटा! देखो, वह जल की पूजा कही जाती है। अग्नि की पूजा का अभिप्रायः ये है कि अग्नि देवताओं का मुख है अग्नि के मुख में नाना प्रकार का साकल्य प्रदान करें और उसका वह प्रसारण करके मुनिवरों! देखो, मानव को प्रदान करते रहेंगें। ये है बेटा! आज का वाक्, आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः हमारा ये क्या मुनिवरों! देखो, याग करने से पूर्व हमारे विचार बनने चाहिए हमारे विचारों में यह मन, मस्तिष्क और विचार एक ही धारा में परिणत हो जाएंगें देखो, तुम्हारा याग सम्पन्न हो जाएगा यदि तुम्हारा मस्तिष्क कहीं रहेगा मन कहीं रहेगा और विचार कहीं रहेगा तुम्हारे याग में सफलता इतनी नही आ सकेगी जितना तुम सफलता को चाहते, मानो देखो, याग की सफलता जब ही है जब याग में विद्यमान हो करके मन, मस्तिष्क और विचार एक ही तुलना में आ जाएं तो उसे आत्मा का जो सम्बन्ध है, वह चेतना से रहता है, और चेतना से सम्बन्ध रह करके यह जो संसार है, यह जिन तत्त्वों से संसार की रचना होती है। वह रचना मानो उसके अनुकूल बन जाती है और हमारे शरीर में जो पंच महाभौतिक मानो देवतवं क्रियाकलाप कर रहे हैं जो देवता बन करके वास कर रहे हैं वह जो आत्मा का जो लोक है वह पंच महावृत्तियों में रत्त रहने वाला है वह महानता को प्राप्त होता रहेगा तो यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट कर सकूंगा आज का वाक् क्या है क्या हम बेटा! देखो, पूजा के सम्बन्ध में तो कल ही अपना विचार दे सकेंगें आज का अभिप्रायः यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा

का गुणगान गाते हुए इस संसार सागर से पार होने का प्रयास करें जिससे बेटा! हमारा याग अपने में सम्पन्नता को प्राप्त हों हम आध्यात्मिक और भौतिकवाद दोनों को ऊर्ध्वा में ले जाएं परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए मानो उसकी सृष्टि को निहारते रहें यह है बेटा! आज का वाक् अब समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा ओ३म् देवाः आभ्यां रथं माहं प्राची रथं आभ्यां दधि वाचन्नमाः। ओ३म् देवाहं रथं प्राची रेव ब्रहा। ओ३म् रथं मन्था वाचन्न नमाः ग्राहणां त्वाहम्।

८ २८ ०८ १९९२

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहां वैदिक साहित्य में नाना प्रकार के ज्ञान और विज्ञान का प्रायः वर्णन होता रहता है। क्योंकि प्रत्येक वेदमन्त्र ये कहता है कि मनं ब्रह्मा देवत्वां मनाः क्या हमारा हम अपने में नम्रता को धारण करें, क्योंकि परमपिता परमात्मा का जो ज्ञान और विज्ञान है। वह बड़ा नितान्तर माना गया है। जो अपने में उसका अनुसन्धान अथवा अन्वेषण करते हैं, तो अनन्तमयी वह ब्रह्माण्ड प्रायः हमारे समीप आना प्रारम्भ हो जाता है, और विज्ञान के वांगमय में प्रवेश होते हैं। तो वहां भी एक विज्ञान दूसरे विज्ञान में गुथा है। एक तरंगें दूसरी तरंगों में गुथी हुई है, और ब्रह्म ज्ञान में जाने के पश्चात मानो सर्वत्र विज्ञान उसमें लुप्त हो जाता है।

तो विचार आता है कि हम अपने में उस महानता का दर्शन करने के लिए सदैव तत्पर रहें, जिसका हमें दर्शन करने से हमें मिलन होत है और उसका मिलन होने के पश्चात हमें प्रसन्नता की उपलब्धि होती है। इसी प्रकार मानव को अपनी अन्तरात्मा में उस परमात्मा की अनुभूति अथवा उसका ज्ञान और विज्ञान का मानव को अनुभव होना चाहिए। जिससे मानव का अन्तरात्मा चित्त प्रसन्नता में प्रवेश हो करके और हम एक आनन्द की अपने में अनुभूति कर सकें। तो मुनिवरों! देखो, आज का हमारा वेदमन्त्र यह कहता है कि चक्षुम्मे पाहि, प्राणम्में पाहि, श्रोत्रोम्मे, पाहि त्वचाम्मे पाहि, अमृतं देवत्वं ब्रहे कृताः मानं ब्रतं ब्रतेः तो वेद का मन्त्र कहता है कि जब आचार्यों के समीप ब्रह्मचारी विद्यमान होता है। पठन-पाठन की पद्धति को अपनाता है। तो वह कहता है कि प्राणम्मे पाहि परमात्मा को जिज्ञासु कहता है कि मैं परमात्मा को प्राणों में पान करना चाहता हूँ। चक्षुम्मे पाहि मैं चक्षु में उसे दृष्टिपात करना चाहता हूँ। परन्तु देखो, प्रत्येक इन्द्रियों के रूपों में उस प्रभु का दर्शन चाहता हूँ। तो मैं जब मानो मुझे नही प्राप्त होता है, यह संसार का ज्ञान और विज्ञान मुझे दृष्टिपात होता है। तो मैं अपने में समाहित हो जाता हूँ, तो जिज्ञासु कहता है कि मैं अपने में समाहित हो जाता है, तो अपनां भूतं आत्मम्मे पाहि वर्णसुतं देवाः क्या वे परमपिता परमात्मा आत्मा में ही मानो दृष्टिपात होता रहता है, और जब मानो सर्वत्र ब्रह्माण्ड को जान करके और उसके ज्ञान और विज्ञान में मानो लुप्त हो जाता है। तो वे परमपिता परमात्मा को जानने के पश्चात वह अवर्चनीय बन जाता है। वह वचन से नियम से उसको जाना नही जाता है। वह मानो देखो, अपने में अर्वचनीय बन जाता है। उसका वर्णन नही किया जाता है। तो मानो देखो, सृष्टि के प्रारम्भ से वर्तमान के काल तक जितना भी अनुसन्धान करता रहा है। वह इन्द्रियों तक मानो इस संसार को जाना है इन्द्रियों तक मानो देखो, प्रकृति मण्डल को जाना है। लोक-लोकान्तरों में जाना है, और देखो, नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों में जो क्रियाकलाप हो रहा है, अथवा परमाणुवाद में जो क्रियाकलाप हो रहा है। जो अग्नि के माध्यम से हमें प्राप्त होता है वह सब अपने में देखो, इन्द्रियों का विषय है, और इन्द्रियों का विषय होने से इसी में बेटा! सर्वत्र ज्ञान और विज्ञान निहित रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो, इसीलिए आचार्यजन कहते हैं। प्राणंम्में पाहि यह जो प्राण है वह गति है मानो वह गति केवल सन्निधान मात्र से ही गति हो रही है, और गति में जो ज्ञान और विज्ञान निहित रहता है। उसको जानना हमारा कर्तव्य है। तो मेरे प्यारे! देखो, वेद का ऋषि यह कहता है। प्राणम्में पाहि मानो देखो, हम सर्वत्रता में उसको पान करना चाहते हैं। तो मेरे प्यारे! मुनिवरों! देखो, वह इस प्रकार पान नही किया जाता है। तो विचारवेत्ता यह कहते हैं कि वह याग में ऋषि जैसे आचार्यों का ये कथन रहा है, भारद्वाज मुनि जैसों का भी कथन रहा है क्या जितना भी इन्द्रियों का विषय, सब प्रकृतिवाद कहलाता है। परन्तु वह परमात्मा का अनन्य विषय है। वह आत्मा से आत्मां

भूतं ब्रह्मा यह आत्मा भूतों का धारण करने वाला है और यह आत्मा ही मानो परमात्मा का दर्शन करता है। तो इसीलिए हम आत्म ब्रह्मे आत्मवेत्ता बनें, और आत्मवेत्ता जब बन सकते हैं जब हम नम्र बनेंगें, अमृतं दया कृतं नमाः हम सब वस्तुओं को जान करके, जब नमः हो जाएंगें, हमें अभिमान नही होगा, यदि हमें अभिमान हो गया, तो हम परमात्मा को प्राप्त नही कर सकते। क्योंकि परमात्मा निरभिमानी है, इसीलिए ब्रह्म ज्ञान मानो देखो, निरभिमानता में निहित रहता है। यदि ज्ञान और विवेक में यदि अभिमान हो गया तो ज्ञान और विवेक नही उत्पन्न हुआ है, इसीलिए हमारे आचार्यों ने अभिमान नही होना चाहिए, परमात्मा निरभिमानी है। इसीलिए परमात्मा को पाने के लिए हमें निरभिमानी बनना होगा और परमपिता परमात्मा अकाय है इसीलिए मानो देखो, अकायता की चेतना के ऊपर विचार-विनिमय करना होगा। हम परमपिता परमात्मा को प्राप्त कर सकेंगें।

तो आओ मेरे प्यारे! मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करना नही चाहता हूँ, विचार-विनिमय केवल हमारा यह क्या हम मुनिवरों! देखो, अपने में नम्र बन करके प्रभु का उस महान ज्ञान और विज्ञान वाला अपना पान करना चाहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है मुझे वह काल स्मरण है मैं कई समय से यागों की चर्चाएं कर रहा हूँ, हमारे ऋषि-मुनियों ने यागों को देखो, आध्यात्मिकवाद से कटिबद्ध किया भौतिकवाद को आध्यात्मिकवाद में और आध्यात्मिकवाद को भौतिकवाद में परिणत कर दिया है। तो मानो देखो, यह याग अपने में अद्वितीय क्रियाकलाप कहलाता है। बाह्य जगत में वायुमण्डल का शोषण करता है। प्रदूषण को निगल जाता है, अथवा नष्ट करता है और देखो, उसमें बाह्य जगत को आन्तरिक जगत में ले जाते हैं तो प्रत्येक इन्द्रियों में सुगन्ध उत्पन्न होने लगती है, और वही सुगन्धि मानो एकत्रित हो करके, हृदय रूपी जो यज्ञशाला में प्रायः देखो, ज्ञान रूपी अग्नि प्रदीप्त हो रही है। वह अग्नि मानो अपने में व्रत कर रही है, तो यह आज का वेदमन्त्र हमारा क्या कह रहा है। मेरी प्यारी माताएं अपने में मानो देखो, व्याकुल है पितर जन भी व्याकुल रहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, यहां आज का हमारा वेद का मन्त्र यह हमें व्याख्यान दे रहा है। वहां वेद का मन्त्र यह कहता है मृत्युं वर्णनं ब्रह्मा यमाः हे यम! तुम मानो देखो, यम को जानने का प्रयास कर, यम कहते हैं, जो मृत्यु से विजय हो जाता है। मानो देखो, जो मृत्यु से विजय हो जाता है। वही यम कहलाता है। वह यमाचार्य कहलाता है। यम कहते हैं यमाचार्य मानो जो मृत्यु को विजय कर लेता है। वह यमाचार्य कहलाता है। तो इसीलिए देखो, ब्रह्मज्ञानी भी मृत्यु से पार हो जाता है। वह मृत्यु भी उसके समीप नही आती परन्तु आचार्य जनों ने अपने में व्याख्यान देते हुए कहा कि माता अपने में व्याकुल हो रही है, पितर अपने में व्याकुल हो रहा है। क्या अमृतं ब्रह्मा आत्मां ब्रहो तो मेरे प्यारे! देखो, जब शिक्षा प्रणाली हमारे समीप आती है। तो शिक्षा प्रणाली यही कहती है कि हे माता! तू व्याकुल क्यों हो रही है? तो माता से माता यह उत्तर देती है कि मेरा संसार में मानो मानो देखो, अमृतं ब्रह्मे मैं एक बहुधा में जाने वाली थी, एको बहुधा में न जा करके मैं केवल्य बन गई। मानो देखो, यम को प्राप्त होने वाला मेरा व्रत चला गया है। तो मेरे प्यारे! देखो, वह आचार्य कहता है निर्णय देने वाले अपने में दार्शनिक कहते हैं कि हे माता! जिस पुत्र के लिए तू व्याकुल हो रही है। मानो वह आत्मा तेरा पुत्र है, या शरीर तेरा पुत्र है? तो मुनिवरों! देखो, माता उत्तर नही दे पाती, यदि माता आत्मा को अपना पुत्र कहती है। तो आत्मा किसी का पुत्र पुत्रियां नष्ट नही होती देखो वह पुत्र पुत्रियां किसी का अमृत नही होता, वह तो केवल एक चेतना है। उसका विनाश नही होता है। वह मृत्यु को प्राप्त नही होती है। परन्तु यदि शरीर को वह अपना पुत्र कहती है तो शरीर तो ज्यों का त्यों निहित है परन्तु देखो, वह शव ही मानो पंच महाभूतों का एक अभ्यस्त बना हुआ है। एक पिण्ड है मानो देखो, वह पिण्ड भी पिण्ड का निर्माण करने वाला वल चैतन्य है और वह निर्माणकर्त्ता है और वह निर्माण करता हुआ निमितता को प्राप्त होता रहता है। तो इसीलिए मानवतव भी उसी का पुत्र पुत्री नही होता वह भी तो पंच महाभूतों का समूह है पंच महाभूतों

के परमाणुओं का समूह है, परन्तु देखो, वह किसी का पुत्र पुत्री नही होता, आत्मा भी किसी का नही होता तो दार्शनिक कहते हैं। तो माता इतनी व्याकुल क्यों होती है? वह कहती है निर्णायं ब्रह्मा कृतं देवत्वां वेद की आख्यिका कहती है कि जिस वस्तु का मिलन होता है, परन्तु मिलन होने से विच्छेद होता है वह विच्छेद का दुखद होता है, और विच्छेद के मानो उसके मूल में कोई न कोई मानो हमारी प्रवृत्तियां विद्यमान रहती है। वह मानो देखो, उन प्रवृत्तियों को हमें नष्ट करना है। जब हम मृत्यु से पार हो सकेंगें और यदि हमने उन प्रवृत्तियों को नष्ट नही किया तो हमारी प्रवृत्ति उसी प्रकार बनी रहेगी, और अपने में वृत्तियों को धारण नही कर सकेगें। तो विचार आता रहता है आचार्य जनों ने कहा हे माता! तू व्याकुल न हो क्योंकि तेरा जो संकल्प था उसी में तेरा पुत्र है, तेरी पुत्रियां हैं, और यह जगत ही मानो देखो, संकल्प में निहित रहता है यदि संकल्पां भूतं ब्रहे यह संकल्प ही एक जगत है प्रभु का संकल्प है, और प्रभु का यह सृष्टि जो चक्र है यह प्रभु का संकल्प है, तो समय आयेगा संकल्प का विच्छेद हो जाएगा। तो मानो देखो, यह प्रकृति अपने स्वरूप में दृष्टिपात नही आयेगी। यह मानो देखो, एक-एक सूक्ष्म परमाणु के रूप में और परमाणु में भी जगत विद्यमान होता है। परन्तु जगत उस परमाणु में भी ब्रह्माण्ड है और वह ब्रह्माण्ड की उपलब्धियां भी परमाणु के साथ ही होती रहती हैं। तो विचार आता रहता है कि वैज्ञानिकों ने ब्रह्मवेत्ताओं ने अपनी देखो, अपनी-अपनी आभाएं उन्हें प्रगट की हैं। आज मैं बेटा! विशेष चर्चा न देता हुआ केवल यह कि देखो, यमां ब्रह्मा हे यम! तू अपने में मानो जैसे बालक नाचिकेता यमाचार्य के द्वार पर जब जाता है, तो वह यही प्रश्न करता है, यमां ब्रह्मणे देवत्वां आत्मां भूतं ब्रह्मा मानो देखो, मुझे आत्मा का ज्ञान कराओ। हे यम! तुमने मृत्यु को विजय किया तुम ज्ञान में परिणत हो गएं हो तो मुनिवरों! देखो, ज्ञान और विज्ञान में रत्त रहना यह प्रायः हमारा कर्तव्य कहलाता है। जब प्रत्येक मानव बेटा! देखो, ज्ञान में और विज्ञान में रत्त हो जाता है, और विवेक की जब उसमें पुट लग जाती है, तो मुनिवरों! देखो, वह अपनी आत्मा के आत्मा का दर्शन करने लगता है।

तो आओ मेरे प्यारे! मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करना नही चाहता हूँ, विचार-विनिमय केवल यह कि हम मुनिवरों! देखो, हम उन वाक्यों में व्याख्यानों में प्रवेश होना चाहते हैं। तो बेटा! देखो, समुद्र के तट पर किसी काल में बेटा! देखो, भगवान राम ने भी याग किया था और वह याग देखो, महर्षि लोमश मुनि की अध्यक्षता में और देखो, कागभुषुण्ड जी की अध्यक्षता में किया तो मेरे प्यारे! देखो, उस समय कागभुषुण्ड जी उस याग के उद्गाता बने थे अहा, देखो, उद्गाता क्या अध्वर्यु बने, और अध्वर्यु क्या मुनिवरों! देखो, उद्गीत गाने वाले बने दोनों ही रूपों में मानो उसका उपमान होता है। इसी प्रकार मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मतव को प्राप्त होने वाले महर्षि लोमश बड़े तपश्चर में रमण करने वाले मेरे प्यारे! देखो, महर्षि लोमश मुनि महाराज जब अपने वाक्यों को प्रगट करते थे तो ऋषि-मुनि बेटा! देखो, उनके वाक्यों को श्रवण करते हुए, अपने मनोनीत मन मस्तिष्क में उनके आंगन में प्रवेश होता रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो, जब याग का प्रारम्भ हुआ तो वह बेटा! देखो, याग जब प्रारम्भ होने लगा, तो मुनिवरों! देखो, राम यज्ञमान बन करके याग का प्रारम्भ हुआ मेरे प्यारे! देखो, उसमें महाराजा शिव और भी नाना राजा महाराजा एकत्रित हुए क्योंकि वह जो अजामेध याग है। उन्हें अपनी अजा को प्राप्त होना है। अजा नाम मेरे प्यारे! देखो, बुद्धि को कहा जाता है, अजा नाम मुनिवरों! देखो, जिससे हम विजय होना चाहते हैं। प्रकृति से अपने को विजय करना चाहते हैं। तो वह देखो, अजा नाम प्रकृति का है, और प्रकृति से जो अपने को विजय होना चाहता है। अपने में ब्रह्म ज्ञान में प्रकाश में रत्त रहना चाहता है। मेरे प्यारे! देखो, लोमश ऋषि महाराज से एक महर्षि अवधूत ऋषि महाराज ने यह कहा कि क्या हे भगवन! यह तुम क्या कर रहे हो उन्होंने कहा मैं अजामेध याग कर रहा हूँ। उन्होंने कहा अजा किसे कहते हैं। उन्होंने कहा अजा नाम बुद्धि को कहा गया है, मानो देखो, अजा कहते हैं जो मृत्यु से पार हो जाता है। इसीलिए देखो, अजा अमृतं मानो देखो, हम अजा नही चाहते,

हम परास्त नही होना चाहते, मानो देखो, हम सदैव अपने में प्रकाश में रत्त रहना चाहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इन वाक्यों को श्रवण किया तो उन्होंने कहा प्रभु! आप कौन है। उन्होंने कहा मैं ब्रह्मतव को प्राप्त हो गया हूँ। यज्ञशाला में उन्होंने कहा ब्रह्मा तो वह कहलाता है जो मानो देखो, प्रकृति को अंगों और उपांगों से जानने वाला है। महर्षि लोमश मुनि ने कहा कि मैं जानता तो नही हूँ, परन्तु उसके सम्बन्ध में जो तुम प्रश्न करोगे मैं उसका उत्तर यथोचित दे सकता हूँ। तो उन्होंने कहा तो भगवन! ब्राह्मण मानो यज्ञ का ब्रह्मा कौन होता है? उन्होंने कहा एक यज्ञ का ब्रह्मा तो वह होता है तो यह परमात्मा का जो जगत है, यह एक प्रकार की यज्ञशाला है उसको यह संचालन कर रहा है वह मानो ब्रह्मा कहलाता है। वे परमपिता परमात्मा ब्रह्मा है जो मानो देखो, संसार का संचालन करने वाला है। पालना के मूल में भी विद्यमान रहता है। वेदज्ञ ज्ञान को भी प्रकाश में लाने वाला है। वह मुनिवरों! देखो, ब्रह्मा कहलाता है। उन्होंने कहा कि एक ब्रह्मा वह कहलाता है, जो मानो देखो, उत्पति के मूल में विद्यमान है। जैसे माता के जीवन में तीनों गुण व्याप्त रहते हैं, वह तमोगुण में उत्पति के मूल में लग जाती है। इसी प्रकार परमात्मा तमोगुणी अप्रतं देखो, ब्रह्मा बन करके माता के गर्भस्थल में विश्वकर्मा बन करके मानो देखो, निर्माण करता रहता है। वह निर्माण और उसी में समाहित देखो, वह ब्रह्मा कहलाता है। एक ब्रह्मा वह होता है जो वेद के मर्म को जानने वाला है, वेद के मर्म को जानने वाला वेदज्ञ क्या कहता है वेद नाम प्रकाश है और वह जो प्रकाश में रत्त रहना जानता है, सदैव वेद के व्याख्यान में लगा रहता है। वेद के उस विचारों में लगा रहता है एक वह ब्रह्मा कहलाता है। जो चतुष मानो देखो, वेद के काण्डों को जानने वाला है वेद में मानो देखो, त्रि विद्या कहलाती है, ज्ञान और कर्म और उपासना में जो सदैव निपुण कहलाता है। वह एक ब्रह्मा वह कहलाता है। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा एक ब्रह्मा वह है जो ब्रह्म ज्ञान में अपने को ले जाता है। क्या मैं ब्रह्म में निहित हूँ, और ब्रह्म मेरे में निहित है। जो इस प्रकार मानो देखो, ब्रह्म को और अपने में दोनों में अन्तर्द्वन्द्व नही पर रहा है। वह केवल ब्रह्म को ही दर्शाता रहता है, ब्रह्म में ही निहित रहता है। तो इसीलिए जैसे ब्रह्मा वह कहलाता है। एक ब्रह्मा वह कहलाता है, आत्मा में ब्रह्म का याग करने वाला है। ब्रह्म का याग देखो, याग आत्मा में करने वाला याग का अभिप्राय है, एक दूसरे में समाहित होना एक ब्रह्म वह कहलात है मेरे प्यारे! देखो, जब मेरे प्यारे! देखो, जब उन्होंने इस प्रकार ब्रह्मा की उपाधियों का लोमश जी ने वर्णन किया। तो ऋषि अपने में मौन हो गएं, उन्होंने कहा प्रभु! आपके इसमें जितने शब्द है। वह सब यौगिक हैं। मैं इसके ऊपर कोई टिप्पणी नही कर पाऊंगा। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा ब्रह्मणे व्रतं यज्ञं ब्रह्वा कृतं देवाः मेरे पुत्रों! देखो, याग का प्रारम्भ किया जब याग का प्रारम्भ किया याग का प्रारम्भ हुआ तो प्रारम्भ होने के पश्चात जब दैनिक याग हुआ, तो मुनिवरों! देखो, उपव्याख्यानों में ऋषि लग गएं। मेरे ब्रणे देखो, वह अमृतं देखो, महाराजा जामवन्त उपस्थित हुए और जामवन्त ने कहा प्रभु! जिस याग को आप करने जा रहे हैं, उस याग का क्या नामोकरण है। उन्होंने कहा उस याग का नाम हमारे यहां देखो, उस याग का अजा ब्रह्मा देवत्वां देखो, अजा के लिए हम याग करते हैं। उन्होंने कहा अजा किसे कहते हैं, उन्होंने कहा जो विजय न होने वाली प्रवृत्ति हो उसका नाम अजामेध है। उन्होंने कहा मेधां भूतं ब्रह्मा मेरे प्यारे! देखो, अजं ब्रह्मे जैसे अश्वमेध याग का अभिप्रायः है अश्व नाम राजा का है, और प्रजां भूतं मैं मानो देखो, प्रजां भूतं ब्रहे वह राजा ही अपने में राजा है। मेध ही प्रजा है। जो इस प्रकार मानो देखो, प्रजा के हितार्थ और प्रजा के अमृतों में याग करता है वह अश्वमेधी है। अजामेधी वह है। जो मन मस्तिष्क को एकाग्र करता हुआ मन, मस्तिष्क के एकाग्र होने पर जो विचार बनते हैं, और विचारों का भी मानो साकल्य बना करके जो आत्मा में याग करता है। देखो, याग करने वाला आत्मा में संसार में देखो, विजेता कहलाता है। वह अजामेध कहलाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार देखो, उन्होंने याग का इन विचारों से देखो, याग का प्रारम्भ किया प्रारम्भ करने के पश्चात जब उन्होंने और

भी प्रश्न किए तो बेटा! यागां भूतं याग के सम्बन्ध में उनके कुछ उपव्याख्यान बड़े विचित्र और पवित्रता में परिणत होने लगें। तो मेरे पुत्रों! देखो, लोमश मुनि का वह याग बहुत समय तक चलता रहा, परन्तु देखो, यागां भूतं त्रि वर्णनं ब्रहे वह त्रि विद्या वाला जो ज्ञान है उसको अपने में धारण करना चाहिए। जो मृत्यु से पार होना चाहिए। हे मृत्यु! तू संसार को रूलाने वाली है, परन्तु देखो, तू तुझे जानता है। तू मानो उससे दूरी चली जाती है। जो मृत्यु को जानने वाला परन्तु उससे दूरी चली जाती है। अन्यथा तू संसार को निगलती चली जा रही है। यह सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके नाना ऋषि-मुनि सब तेरे ही आंगन में प्रवेश कर गएं हैं। परन्तु जो तुझे जानता है। तू उससे मानो दूरी चली जाती है। तो इसीलिए मृत्यु को जानता है, वह उस मृत्यु से दूरी हो जाता है। वह मृत्यु से मानो देखो, अजा को प्राप्त हो जाता है।

तो आओ मेरे प्यारे आज मैं विशेष चर्चा नही देता हुआ केवल तुम्हें इस आभा में ले जाना चाहता हूँ कि हमें अपने जीवन में मानो विचार करने चाहिए और जैसे मुनिवरों! देखो, भगवान राम ने देखो, शिव याग किया था अजामेध याग को ले करके भगवान राम ने देखो, शिव की पूजा की, शिव नाम यहां परमात्मा को कहा जाता है। जिसकी हमें पूजा करनी है पूजा का अभिप्रायः मैंने इससे पूर्व काल में वर्णन करते हुए कहा कि पूजा कहते हैं, यथोचित उसका स्वागत करना अथवा उसका उपभोग करने का नाम ही उसकी पूजा है। तो राजा का जब महाराजा शिव का पूजन करते हैं, तो शिव नाम परमपिता परमात्मा को उद्गीत गाते हुए वे परमपिता परमात्मा क्या राजा जब अपने में शिवम कहलाता है। वह शिव मंगलं ब्रह्मा व्रतं देवाः मेरे प्यारे! देखो, हम उसका पूजन करें। जिससे हम अजा को प्राप्त हो जाएं। यदि एक राजा दूसरे से संग्राम करना चाहता है, उसकी दूरिता को नष्ट करना चाहता है। तो मानो देखो, वह द्वितीय राजाओं का सहयोग लेता है, और सहयोग ले करके मुनिवरों! वह उससे वह अपने में क्रियाकलाप करता हुआ देखो, अजामेध करता है। तो इस प्रकार देखो, अजामेध याग का अपने में बड़ा महत्व माना गया है। विशेष चर्चा न देता हुआ केवल यह कि आज का हमारा वेदमन्त्र कहता है त्रि वर्णनं ब्रह्मा त्रि भागों में यह संसार निहित हो रहा है। मेरे प्यारे! देखो, संसार का जब विचारवेत्ताओं की रचनाओं पर विचार किया तो परमपिता परमात्मा रचयिता है, और मुनिवरों! देखो, उपभोग करने वाला जीवात्मा है, और बनने वाली यह प्रकृति कहलाती है। त्रि वर्धा यह जगत बन गया मेरे प्यारे! देखो, संसार में जब मानव ने यह विचारा कि हम शिक्षा में उतीर्ण हो जाएं, शिक्षा का जो पक्ष है। वह भी त्रि वर्धा कहलाया गया है। ओ३म् की तीन मात्रा हैं। अ, उ और म इसी प्रकार बेटा! देखो, वेद में तीन प्रकार की विद्या का वर्णन आता रहता है। मानो ज्ञान, कर्म और उपासना जिसके द्वारा मुनिवरों! देखो, मानव याग करता है। इसी प्रकार देखो, ज्ञान, कर्म और उपासना क्योंकि याग का अभिप्रायः यह है कि बुद्धि युक्त हम क्रियाकलाप करते चले जाएं। हम प्रथम ज्ञान होना चाहिए क्या हमें पितरों की सेवा करनी है। पितरों का हमें ज्ञान होना चाहिए, कि कितने पितर होते हैं? तो पितरों का अभिप्रायः यह कि माता पितर है, और पितर भी पितर है, आचार्य पितर है और यह देवताजन जो हमारे शरीर में क्रियाकलाप कर रहे हैं। यह हमारे पितर है मानो देखो, यह हमारे पितर याग करना है, याग का अभिप्रायः यह है कि पितरों को जानना है, और उनमें जो ज्ञान विज्ञान निहित है। उसको ज्ञान युक्त जान करके मानो उसका उपभोग करना है। उनको मानो देखो, एक दूसरे में निहित होता हुआ दृष्टिपात करेंगें तो वह मुनिवरों! देखो, पितर याग बनता है। विचार वेत्ताओं ने अपने में मानो देखो, त्रि वर्धा का बड़ा वर्णन किया है। तीन प्रकार के मण्डल कहलाते हैं, मेरे प्यारे! देखो, त्रि वर्धा में सबसे प्रथम भूः भुवः और स्वः यह तीन व्याहृतियां बनती हैं, और इसके पश्चात गायत्राणी बनती है। तो मुनिवरों! देखो, त्रि वर्धा कहलाया गया है। हमारे यहां देखो, तीन प्रकार के परमाणु होते हैं जो ज्ञान के वांगमय में प्रवेश करते हैं तो तीन प्रकार के विज्ञान में बेटा! देखो, त्रि वर्धा आता है। उसमें देखो, तेजोमयी

तरलतव और मुनिवरों! देखो, वह अमृतं ब्रह्मे व्रतं देवा गुरूतव यह तीन प्रकार के परमाणुओं के ऊपर सर्वत्र विज्ञान निहित रहता है। विज्ञानवेत्ताओं ने बेटा! इन वाक्यों को स्वीकार किया तो यह संसार मुनिवरों! देखो, त्रि वर्धा कहलाता है। हमारे यहां जितने भी विज्ञानवेत्ता हैं। चाहें वह देखो, लोक-लोकान्तरों की उड़ाने उड़ने वाले हो, चाहे वह किसी भी रूप में जाने वाले हों, इसी प्रकार वह मानो देखो, अपने में त्रि वर्धा का वर्णन करते हैं तीन प्रकार के परमाणु मंगल मण्डल का विज्ञानवेत्ता भी तीन प्रकार के वैज्ञानिकों को अपने में परमाणुओं को एकत्रित करता है। मानो देखो, वशिष्ठ मण्डल का वैज्ञानिक भी उसी प्रकार से अपने में अवधान करता है। तो मेरे प्यारे! देखो, मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नही केवल यह संसार त्रि वर्धा माना गया है। तीन प्रकार की विद्याओं में परिणत है, ज्ञान कर्म और उपासना बेटा! देखो, हम जब ज्ञानी देखो, याग किसे कहते हैं? जब हम याग के द्वारा अपने क्रियाकलाप करेंगें ज्ञान का कर्म से समन्वय रहता है। हमें ज्ञान होना चाहिए। ज्ञान के पश्चात कर्म होना चाहिए और जब ज्ञान और कर्म हमारे दोनों सिद्ध हो जाते हैं। तो हमें उपासना करनी चाहिए। उपासना कहते हैं मानो परमात्मा के समीप विद्यमान हो करके हम जब देखो, अपने में विदित हो जाते हैं। तो उसको उपासना कहा जाता है। उपासना का अभिप्रायः यह क्या हम मानो देखो, ज्ञान और कर्म दोनों हमारे प्रबल हों, तो हम मानो देखो, उपासना में उसका उपभोग कर सकते हैं। अथवा उसको उपयोग में ला सकते हैं। अथवा वह मानो देखो, उसको उपयोग में जानने का नाम ही उपासना कही जाती है।

तो आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नही आया हूँ कि विचार विनिमय केवल हमारा वेद का वाक् क्या कहता है त्रि वर्धनं ब्रह्मा लोकां त्रि वारासुते देवत्वां मानो देखो, त्रि वर्धा को जानने वाले बनें मेरे पुत्रों! देखो, जब यज्ञनं ब्रह्मा देखो, माता के जब गर्भस्थल में जब शिशु हम जैसा विद्यमान होता है तो वहां भी त्रि वर्धा में वह शिशु विद्यमान रहता है। मानो देखो, उसका ओढ़न भी जल है बिछौना भी जल है और पांशे भी जल बनें हुए हैं, मानो देखो, जल में ही वह निहित रह करके अपने जीवन को प्राप्त कर रहा है। देवताओं की सहायता प्राप्त हो रही है। तो वह माता का गर्भाशय भी त्रि वर्धा कहलाया गया है। मेरे प्यारे! देखो, त्रि वर्णनं अप्रतं देवा अश्वानं ब्रह्मे लोकां यह त्रि वर्धा एक जगत है। इसको जानना हमारा बहुत अनिवार्य हमें जानना चाहिए। ज्ञान युक्त हो करके अपने में अपने प्रभु को जान करके सागर से पार हो जाना चाहिए मेरे प्यारे! देखो, तीन आत्मा के शरीर कहलाते हैं। स्थूल, सूक्ष्म और कारण और यह ही तीनों को जब उपाधियां नष्ट हो जाती है। तो मोक्ष की पगडण्डी को यह आत्मा प्राप्त कर लेता है। तो मेरे प्यारे! देखो, विचार आता रहता है क्या हम मुनिवरों! देखो, यह जो परमात्मा का जगत है, यह त्रि वर्धा कहलाया गया है। तीन ही प्रकार के देखो, वर्ण व्यवस्थाओ में देखो, अपने को निहित कर दिया है। तो इसीलिए बेटा! आज मैं त्रि वर्धा के ऊपर विशेष विचार नहीं दूंगा केवल अ उ और म मेरे प्यारे! देखो, परमात्मा का सर्वोपरि मानो देखो, नामोकरण है अ और उ और म देखो, उ कहते हैं आत्मा को तीन गुणों वाला आत्मा मानो देखो, उ की उपाधि में निहित रहता है, और यह संसार जितना भी मैं में निहित रहता है यह मेरा पुत्र है। यह मेरी पुत्रियां हैं। यह मेरा स्वामी है, मानो यह मेरी स्वामिनी है वह मैं में लगा रहता है तो बेटा! देखो, मैं इस संसार में परिणत कर देती है और उ तीन गुणों वाला बना देती है, और जब हम मोक्ष के आंगन में चले जाते हैं। तो मेरे प्यारे देखो, ओ३म् हम परमात्मा से मिलन करते हैं तो विचार आता रहता है आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ केवल आज मैं तुम्हें वेदज्ञ की वार्त्ता प्रगट करने चला हूँ आज का वेद का मन्त्र यह कहता है कि क्या हम मुनिवरों! देखो, उस परमपिता परमात्मा को जो ज्ञान और विज्ञान में निहित रहने वाला है। उसको जानते हुए हमें इस सागर से पार होना चाहिए, और देखो, नाना प्रकार के काम, क्रोध, लोभ, मोह इत्यादि देखो, जो हमारे द्वारा व्यसन लगे हुए हैं। इनको त्याग करके और हम केवल देखो, उस परमात्मा की वार्त्ता में

परमात्मा के जगत में निहित हो जाएं। यह है बेटा! आज का वाक्, आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह है कि हमारे यहां याग भी इसीलिए किए जाते हैं यागों का प्रकरण भी आचार्यों ने इसीलिए क्या प्रत्येक मानव सु क्रियाकलाप का नाम याग है, बेटा! मानो देखो, नाना प्रकार के याग हैं देखो, आध्यात्मिक और भौतिक याग में मानव परम्परागतों से लगा हुआ है। इसीलिए देखो, हम आत्मिक याग करें आत्मा से जो प्रेरणा उत्पन्न होती है उस प्रेरणा को स्वीकार करते हुए हम अपने में प्रेरित हो करके परमात्मा की प्रतिभा में निहित हो जाएं। यह है बेटा! आज का वाक् आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह कि हम परमपिता परमात्मा की महती अथवा उसके ज्ञान और विज्ञान को जानने वाले बनें तो महर्षि लोमश मुनि महाराज ने देखो, जब याग प्रारम्भ करने से पूर्व उन्होंने त्रि वर्धा की विवेचना प्रगट की और त्रि वर्धा में देखो, उन्होंने ले जाने का प्रयास किया उन्होंने उसके पश्चात याग का प्रारम्भ किया जब हम त्रि वर्धा को जान लेते हैं तो अजा बन जाते हैं मानो हम किसी से विजय नही होते जब मृत्यु को हम मृत्यु को हम अपने में विजय कर लेते हैं तो बेटा! हम परमात्मा को प्राप्त हो करके चेतनित हो करके अपने में निहित हो जाते हैं। तो यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट कर सकूंगा। आज का समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन आज का हमारा वेद का मन्त्र क्या कहता है कि क्या हम परमपिता परमात्मा के उस महान देखो, अमूल्यवान अमृत को प्राप्त करने वाले बनें जिससे अमृत को पान करके हम अमरावती को प्राप्त हो जाएं हम नाना प्रकार की ममता से रहित हो जाते हैं हम मानो देखो, मृत्यु हमारे निकट न आए ऐसा हम देखो, ज्ञान को अपने में धारण करें यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट कर सकूंगा। आज का वाक् समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन होगा ओ३म् देवाः आभ्यां मनु रथं आप्यां दधि ओ३म् रथं मम् प्रजां आप्यां मनाः वाचन्नमाः रथं आभ्यां देवाः यम सर्वां। ओ३म रथं मनाः ग्राहणां त्वा यमं वायाहा म्। अच्छा भगवन्! आज्ञा। श्री हरी राम गुप्ता, जयदेव पार्क।

९ २९ ०८ १९९२

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहां परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गएं हैं और उसका ज्ञान और विज्ञान भी अनन्तता में प्रायः ऋणियों में रत्त आता रहा है। उसका ज्ञान और विज्ञान भी अनन्त है। इसीलिए हमारे यहां परम्परागतों से ही, मानवीय मस्तिष्कों में नाना प्रकार का विचार-विनिमय होता रहा है, और उसके ज्ञान और विज्ञान के ऊपर नाना प्रकार के अन्वेषण होता रहा है। क्योंकि हमारे ऋषि-मुनि एकान्त स्थलियों में विद्यमान हो करके एक-एक वेदमन्त्र के ऊपर का उनका अन्वेषण चलता रहा है। कहीं उनका प्रकाश के ऊपर विचार-विनिमय होता रहा है। कहीं अन्धकार के ऊपर वह गम्भीर मनन में चले गएं हैं। कहीं मृत्यु के ऊपर उनका बड़ा गम्भीर चिन्तन रहा है। तो कहीं मुनिवरों! देखो, उनका जीवन और अपने में अपनेपन को ही धारण करते रहे हैं। विचार-विनिमय यह कि प्रत्येक वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान के ऊपर विचार-विनिमय करता रहा है, और मानव उसके ऊपर अन्वेषण और मानो अपने में चिन्तन करता रहा है। आज हम उस परमपिता परमात्मा की महती और अथवा उसके ज्ञान और विज्ञान के ऊपर हम सदैव अपने में चिन्तन करने वालें बनें। क्योंकि चिन्तन एक ऐसी मानव के द्वारा वृत्तियां हैं, जब अपने का अपनेपन में धारयामि बनने लगता हैं, तो इस ब्रह्माण्ड के नाना प्रकार के अवव्यों में वह परिणत हो जाता है, और वेद के वांगमय में चिन्तन और मनन करता हुआ सागर से पार होने का प्रयास करता रहा है।

तो आओ मुनिवरों! मानव देखो, कहीं प्रकाश के लिए अपने में रत्त होता रहा है, मुझे स्मरण आता रहता है गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज इस प्रकार के जानने के लिए एक सौ पांच वर्ष तक गाड़ी के नीचे व्यतीत किया और वह मानो प्रकाश ही प्रकाश में रत्त रहने के लिए सदैव तत्पर रहें। क्योंकि जीवन में रात्रि नही हुआ करती है, जब मानव प्रकाश में रत्त हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, सूर्य के चले जाने पर चन्द्रमा के अस्त होने पर मानो देखो, रात्रि नही कही जाती है। एक वेद का मन्त्र कहता है अज्ञानां भवितं ब्रह्मा वर्णतं देव श्वताः वेद का वाक् कहता है क्या सूर्य के अस्त होने पर चन्द्रमा के अस्त होने पर भी मानव का प्रकाश बना रहता है। मानव देखो, अन्धकार तो अमृत वृत्ति है, वेद का वाक् अमृति कह करके शान्त होना चाहता है। परन्तु जब विचारकों के द्वारा यह शब्द जाते हैं, तो यह यौगिक बन जाते हैं, और यौगिक शब्दों में यह आया है कि अन्धकार अज्ञान को कहते हैं। रात्रि का नाम अन्धकार नही कहा जाता क्योंकि रात्रि तो एक शब्द है, एक रात्रि एक कृतियां हैं मानो देखो, वह चन्द्रमा और नाना प्रकार की निहारिकाओं को दृष्टिपात करने का वह समय कहा जाता है। परन्तु देखो, अज्ञान का नाम ही अन्धकार और रात्रि कहा जाता है, परन्तु इस रात्रि से समन्वय नही है अज्ञान को अज्ञानं ब्रहे रात्रि कहा जाता है। तो इसीलिए आचार्यों ने कहा गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने ऋषि-मुनियों के मध्य में यह कहा क्या मानव को जीवन में महानता को धारण करना है। तो अज्ञान को त्याग करके प्रकाश के लिए गमन करो, और प्रकाश उसे कहते हैं जो मानो अपने अन्तरात्मा के अनुकूल अन्तरात्मा की प्रेरणा के आधार पर, अपने क्रियाकलापों में जो तत्पर रहता है। मानो वह सदैव प्रकाश में रत्त रहने वाला है, और जहां अन्तरात्मा किसी वृणियों को स्वीकार नही करता है, उसको स्वीकार नही करना चाहिए। क्योंकि हमारे यहां एक यौगिक शब्द कहा जाता है, दो प्रकार के शब्दों की विचारधाराएं, प्रायः परम्परागतों से ही, चली आ रही हैं। एक रूढ़ि शब्द होता है, तो एक शब्द होता है,

जिसे हम यौगिक कहा जाता हैं जैसे पालना का शब्द है। ये यौगिक शब्द कहा जाता है। परन्तु रूढ़ि उसे कहते हैं जहां एकोकीकरण में मानव निहित रहता है। तो इसीलिए हमें यौगिक बनने के लिए यौगिक शब्दों का प्रतिपदान करना होगा, अथवा उनको अपने में धारयामि बनना होगा। जैसे माता का जो शब्द है, ये यौगिक शब्द कहा जाता है। परन्तु माता कहते हैं जो पालना करने वाली है, और यहां मुनिवरों! देखो, पालना के शब्द में एक योगी शब्द आता है। हमारे यहां परमपिता परमात्मा को भी माता के रूप में वर्णित किया गया है, और पृथ्वी का नाम भी वसुन्धरा के रूप में वर्णित किया जाता है। परन्तु यह नाना प्रकार का खाद्य और खनिज पदार्थों को प्रदान करने वाला है। इसीलिए इसे हमारे यहां यौगिक शब्दों में प्रतिपादित किया गया है तो यौगिक शब्द मुनिवरों! अपने में धारण करना चाहिए, विचार आता रहता है कि जहां मुनिवरों! देखो, परमपिता परमात्मा का नामोकरण आता है। वह प्रमां ब्रह्मे कृतं देवत्वां पालनां ब्रह्मे विष्णु वह पालना के शब्द में विष्णु आता है। मेरे प्यारे! देखो, आज मैं विशेष चर्चा न प्रगट करता हुआ, केवल वेद का मन्त्र ये कहता है क्या हम मुनिवरों! देखो, परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और देव की महिमा का गुणगान गाते रहें आओ, देखो, आज मैं तुम्हें देखो, शब्दों की झड़ी लगाना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! मुझे वह काल स्मरण आता रहा है, जब राजा जनक के यहां नाना प्रकार का याग होता रहा है। हमारे यहां नाना प्रकार के यागों में एक याग जिसे जिसे हमारे यहां ब्रह्मयाग कहा जाता है। जहां ब्रह्म विचारक पुरूष विद्यमान होते हैं, प्राणी अपने में, मानो देखो, वह ब्रह्म का चिन्तन करता है, और ब्रह्म के ऊपर विचार-विनिमय करता है। मेरे प्यारे! देखो, वह ब्रह्म चिन्तन और ब्रह्मयाग कहा जाता है। हमारे यहां एक देव याग कहा जाता है। जहां देवताओं की पूजा होती है, देवताओं की पूजा का अभिप्रायः ये है कि देवताओं को उनका देखो, यथोचित हम अपने गुणों में जो धारण करते हैं। वह उनकी पूजा का अभिप्रायः अथवा पूजा की प्रतिभा बन जाती है।

तो विचार आता है बेटा! देखो, हम एक ब्रह्मयाग होता है, जहां ब्रह्म के ऊपर मानव अपने में चिन्तन करता रहता है, मेरे प्यारे! मुझे बहुत पुरातन काल में मैंने अपनी विवेचना देते हुए कहा हम अपने पूज्यपाद गुरुओं से भी यह प्रश्न करते रहे हैं। आचार्य के चरणों में भी विद्यमान हो करके भी अपने में अपनेपन को दृष्टिपात करते रहें हैं। मेरे प्यारे! राजा जनक की सभा में चाक्राणी गार्गी विद्यमान है, जब चाक्राणी ने जब ऋषि से यह प्रश्न किया याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का ऊर्ध्वा में आसन है। तो मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहां ऋषि-मुनियों की बड़ी पवित्र एक देन रही है कि वह अपने में कितने नम्र रहे हैं। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा नम्र है, निरभिमानी है, तो मानव भी यदि उसके समीप जाता है, तो निरभिमानी और विवेकी बन करके मानो देखो, वह चिन्तन और चेतना के ऊपर विचार-विनिमय प्रारम्भ करता है। बेटा! मुझे स्मरण आता रहा है राजा जनक ने एक समय ब्रह्मवादियों को एकत्रित किया और ब्रह्मवेत्ताओं को एकत्रित करके उन्होंने यह घोषणा कर दी कि मेरे यहां एक सहस्र गऊएं हैं, और उनके सिंगों पर स्वर्ण मथा हुआ है, परन्तु जो तुममें ब्रह्मवेत्ता हो वह गऊओं को अपने आश्रम में जा सकता है। मेरे प्यारे! देखो, वह गऊएं अपने आसन पर विद्यमान हैं। मुनिवरों! देखो, सभा शून्य है महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ब्रह्मचारी यज्ञदता और कवन्धि मेरे प्यारे! देखो, यह सब उनके द्वारा अध्ययन करने वाले ब्रह्मचारी थे। वह ब्रह्मचारी यज्ञदत को ले करके राजा जनक की सभा में उनका पर्दापण हुआ, एक आसन लगा हुआ है और आसन के निचले भाग में जो लेखनी से बद्ध हो रहा है। क्या जो तुममें ब्रह्मवेत्ता हो, वह इन गऊओं को अपने आश्रम में ले जा सकता है। मेरे प्यारे! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज उस समय ब्रह्म की निष्ठा में मानो पारायणता को प्राप्त होते रहें है। तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने ब्रह्मचारी से कहा हे ब्रह्मचारी! इन गऊओं को अपने आश्रम में ले जाओ, मेरे पुत्रों! देखो, ब्रह्मचारी उन गऊओं को अपने आश्रम के लिए गमन करते हैं। तो ब्रह्मवेत्ताओं में देखो, एक

दूसरा एक दूसरे को दृष्टिपात करने लगा और यह उच्चारण करने लगा क्या यह याज्ञवल्क्य मुनि महाराज क्या हममें सबसे ब्रह्मवेत्ता है, जो इन गऊओं को अपने आश्रम में ले जा रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो, वह एक दूसरा अपने में चिन्तन तो कर रहा है। परन्तु वाक् उच्चारण नही कर रहा है। मेरे प्यारे! देखो, जब गऊएं ले गएं ब्रह्मचारी तो उस समय ब्रह्मवेत्ताओं का किसी का साहस यह नही हुआ कि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से कोई प्रश्न कर सकें। परन्तु एक चाक्राणी गार्गी उपस्थित हुई क्योंकि वह ब्रह्मवादिनी थी ब्रह्म का चिन्तन करने वाली थी, और वह मुनिवरों! देखो, नाना प्रकार की विद्याओं में पारायण थी महर्षि दुर्वासा मुनि महाराज और भी नाना प्रकार के ऋषि-मुनियों का देखो, उन्हें संग था, तो मुनिवरों! देखो, ब्रह्मणं ब्रह्म कृतं देवाः चाक्राणी गार्गी उपस्थित हुई और उन्होंने ब्रह्मवेत्ताओं से कहा हे ब्रह्मवेत्ताओं! यदि तुम अमृते यदि तुम्हारी आज्ञा हो तो मैं इस ऋषि से कुछ प्रश्न कर सकती हूँ। उन्होंने कह बहुत प्रिय। आप प्रश्न कीजिए। मेरे प्यारे! देखो, चाक्राणी नत मस्तिष्क हो करके बोली हे ब्रह्मवेत्ता! हे याज्ञवल्क्य मुनि महाराज! मैं आपसे कुछ जानना चाहती हूँ, उन्होंने कहा-देवी! वह तुम प्रश्न करो और यदि मैं जानता हूँगा तो तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर अवश्य दूंगा। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा भगवन! क्या आप ब्रह्मवेत्ता हैं। उन्होंने कहा मैं ब्रह्मवेत्ता नही हूँ, परन्तु जो तुम बारी-बारी प्रश्न करोगे उसका मैं उत्तर देने में समर्थ रहूँगा तो दे सकूंगा। अन्यथा अपने में नतमस्तिष्क हो जाऊंगा, मेरे प्यारे! देखो, चाक्राणी उनके वाक्यों से बड़ी प्रभावित हुई, और उन्होंने कहा तो हे प्रभु! हम यह जानना चाहते हैं क्या यह जो देखो, एक मेरे भुज में एक मानो कमान है, और कमान के ऊपर एक तरकश कशा हुआ है, और वह लक्ष्य पा जाना चाहता है। तो उसका लक्ष्य क्या होना चाहिए? तो मेरे प्यारे! देखो, उस समय जब उन्होंने यह प्रश्न किया तो याज्ञवल्क्य मुनि बोले कि हे देवी! तुम्हारे प्राण रूपी कमान पर मन रूपी तरकश कसा हुआ है, और उसका जो लक्ष्य है, वह ब्रह्म कहलाता है। तुम ब्रह्मवेत्ता बनना चाहती हो, तो ब्रह्म ही उसका लक्ष्य है क्योंकि प्रसंग ही इस प्रकार का है। तुम्हारा ब्रह्मवेत्ताओं की सभा में इस प्रकार का देखो, प्रसंग आता रहता है तो चाक्राणी गार्गी ने कहा प्रभु! यथार्थतं ब्रह्मे क्या तुम मानो देखो, जब प्राण के ऊपर अनुसन्धान करता है, मानव तो प्राण की प्रतिष्ठा में प्रतिष्ठत हो जाता है। मानो देखो, यह हमारे शरीर में जो पंच महाभूत हैं, पंचीकरण जो प्राण कहलाता है। यह मानो देखो, हमें यौगिक रूप में परिणत कर देता है। जब माता इन प्राणों को जानने लगती है तो माता अपने गर्भ के शिशु से वार्त्ता प्रगट करने लगती है। देखो, मुझे स्मरण आता रहता है हे चाक्राणी! एक समय हम मगध राष्ट्र में पंहुचे और मगध राष्ट्र में मानो देखो, एक श्वेतकेतु ऋषि के द्वार पर पंहुचे उनके यहां वहां से भ्रमण करता हुए मनु वंश में पंहुचें और मनु वंश में मानो देखो, चा ब्रहे अमृतं देवं ब्रह्मा देवं ब्रह्रे कात्यानं ब्रहे मानो देखो, वहां देखो, कात्यायनी विद्यमान थी। तो कात्यायनी से हमने यह प्रश्न किया क्या तुम प्राणों के सम्बन्ध में क्या जानती हो, तो उन्होंने कहा कि प्राण, अपान, उदान व्यान नाग ब्रहे कृतं मानो देखो, उदान के रूप में परिणत होने वाला प्राण है। उन्होंने कहा कि सबसे प्रथम प्राण को अपान में अपान को व्यान में और व्यान को समान में और समान को देखो, उदान में देखो, जब प्रवेश कर दिया जाता है, तो मानो देखो, माता मेरे गर्भस्थल में जो शिशु है, मैं उस आत्मा से वार्त्ता प्रगट करने लगती हूँ। प्रायः यह विद्याएं ऋषि-मुनियों के प्रायः मस्तिष्कों में नृत्त करती रहती हैं। मेरे प्यारे! देखो, माताओं के जीवन में एक प्रायः पवित्र विद्या है। जो मानो उत्पन्न करने की मानो एक विद्याएं विद्यमान रही हैं। मेरे प्यारे! देखो, यदि माता यह चाहती है कि इस विद्या को धारण करके पुत्रां पुत्रं ब्रह्मा लोकं ब्रहे मानो माता यह चाहती है कि मेरी आयु वाला पुत्र मेरे गर्भ से जन्म लेने वाला बने, तो मानो देखो, उसी प्रकार का वह मन्त्र उच्चारण करने लगती हैं। जैसे महर्षि दुर्वासा मुनि को भी प्रायः इस विद्या का भान होता रहता था तो मुनिवरों! प्रायः देखो, मुझे स्मरण है माता मल्दाल्सा के गर्भ में जब शिशु आता था तो मेरे प्यारे! देखो, अपनी आत्मा में अमृतं प्राण को अपान में अपान को व्यान में व्यान को

समान में और समान को उदान में प्रवेश करके मानो देखो, प्राणो के मध्य में जो जलं ब्रह्मा अमृत बह रहा है। उसमें रमण करने वाला जो शिशु है, उससे वह वार्त्ता प्रगट करती है और वह मानो देखो, उसे नाना प्रकार की ब्रह्म विद्या को प्राप्त करा देती है। तो विचार आता है बेटा! यह विद्या हमारे यहां वैदिक काल में प्रायः यह विद्या का प्रसार हमने बेटा! श्रवण किया है तो विचार आता रहता है मुनिवरों! देखो, माता अपने में वेद के मर्म को जानने वाली बने, जिससे वह अपने गर्भ के ऊर्ध्वा में सन्तान को जन्म दे सके और वह अपनी आयु के लिए दीर्घ आयु के बाल्य को जन्म दे सके देखो, जिससे उसका विच्छेद न हो जाएं। तो मेरे पुत्रों! देखो, वैदिक साहित्य में नाना प्रकार के इस प्रकार के मन्त्रार्थ आते रहते हैं। तो विचार आता रहता है मैं आज इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नहीं मैं माता मल्दाल्सा की चर्चा कर रहा था माता मलदाल्सा मुनिवरों! देखो, जब अपने गर्भ में अपने शिशु से वार्त्ता प्रगट करती है, तो ब्रह्म का उपदेश देती है। गर्भस्थल में देखो, बेटा! देखो, ब्रह्म का उपदेश दे करके ईंगला पिंगला सुषुम्ना नाड़ियों के ऊपर उसका अधिपथ्य हो जाता है, और नाड़ियों के द्वारा दोनों ईंगला, पिंगला, सुषुम्ना नाड़ी का समन्वय पुरातत नाम की नाड़ी से होता हुआ, वह पंचम नाड़ियां में प्रवेश करता है, और पंचम नाड़ी से होता हुआ नाभि केन्द्र से नाभि केन्द्र का समन्वय होता है। बेटा! जहां से देखो, वह तरंगें वाणी केतु व्रत नाड़ियां उसमें प्रवेश हो जाती है। तो आज बेटा! आज मैं तुम्हें शारीरिक विज्ञान के वांगमय में नही ले जा रहा हूँ केवल विचार विनिमय ये कि माता मल्दाल्सा इस प्रकार की विद्या को जानती रही है। इसी प्रकार कात्यायनी भी इसी प्रकार की विद्या को अपने में धारयामि बनाती रही है। तो महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा हे देवी! ये जो प्राणों का समूह है प्राण को देखो, जो अपान में मिलान करना जानता है, अपान को समान और व्यान को व्यान में प्रवेश होना जानता है। तो उदान में इनका दर्शन करता है क्योंकि उदान चित्त के मण्डलों का समूह कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है, ब्रह्मा के पुत्र अथर्वा एक समय मानो देखो, अपने में चिन्तन कर रहे थे और अपने अन्तःकरण में मानो देखो, उदान प्राण के द्वारा जिनमें मुनिवरों! देखो, ब्रह्माण्डं ब्रह्वे जन्म-जन्मान्तरों के संस्कारों का समूह रहता है। तो मुनिवरों! देखो, वह संस्कारों का समूह रहते हुए, वह अपने में चिन्तन और मनन करते थे। वह मानो देखो, मौन रह करके वायु का सेवन करते हुए पत्र पुष्पों का पान करते हुए, बेटा! देखो, वर्षों तपस्या करते रहे और उसके पश्चात जो अन्त उदान प्राण के माध्यम से जो अन्तःकरण में जो संस्कार विद्यमान होते हैं। जन्म-जन्मान्तरों के उन संस्कारों को जानने के लिए तत्पर रहते, मेरे प्यारे! महर्षि ब्रह्मा के पुत्र अथर्वा ने कहा है कि मानो देखो, चित्त संस्कारों से विहिन होने का नाम ही मोक्ष कहा जाता है। हमारे यहां मोक्ष के नाना प्रकार के प्रसंग आते रहें हैं। परन्तु मोक्ष कहते हैं जहां चित्त में देखो, जन्म-जन्मान्तरों के संस्कारों से विहित चित्त का मण्डल हो जाता है। कोई संस्कार चित्त में नही रह पाते तो वह मानो देखा मनस्तव प्राणतव एक सूत्र में सूत्रित हो करके बेटा! देखो, कारण लिंग में प्रवेश करके ज्ञान और प्रयत्न दोनों एक ही सूत्र में आने का नाम ही बेटा! मोक्ष कहा जाता है। आज बेटा! मैं मोक्ष की चर्चा नही कर रहा हूँ, केवल यह तो प्रसंगवश आ गया है विचार-विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, महर्षि ने यह कहा कि क्या हे चाक्राणी तुम्हारे मनों में यह विचार आ गया होगा क्या हम अपने में मानो देखो, अपनें प्राणों की वृत्तियां को जाने और प्राणों को एकाग्र करते हुए मानो देखो, प्राण को अपान में प्रवेश करते हुए परमाणुवाद के ऊपर अन्वेषण करते रहें और देखो, उसी को व्यान में प्रवेश करते हुए देखो, उदान में चले जाएं और उदान को समान में जब प्रवेश करते हैं। तो चित्रों का दर्शन हो जाता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, इस सम्बन्ध में आज तुम्हें मैं विशेष चर्चा प्रगट करना नही चाहते हैं। विचार-विनिमय केवल हमारा यह कि हम परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते हुए हे चाक्राणी! मानो देखो, यह इसी प्रकार मानो देखो, जब साधना में साधक प्रवेश होता है, तो प्राण रूपी मानो देखो, प्राण रूपी कमान पर मन रूपी तरकश को जब

स्थित कर देते हैं। तो दोनों का मिलान कर देते हैं तो वह साधना का स्वरूप बन जाता है, और उसी के ऊपर मानव अपनी साधना में प्रवेश होता रहता है, और साधक बन करके मुनिवरों! देखो, अग्रणीय विचारों को बनाता है।

तो आओ मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करना नही चाहता हूँ, चाक्राणी गार्गी बेटा! इन वाक्यों को पान करती हुई अपने में शान्त हो गई और उसने कहा हे ब्रह्मवेत्ताओं! यह ब्रह्मवेत्ता तुममें मानो सबसे गम्भीर चिन्तन करने वाला है और यह ब्रह्म में अपनी निष्ठा को लिए हुए रहता है। मेरे प्यारे! देखो, चाक्राणी गार्गी ने जब यह वाक् स्वीकार कर लिया, तो उन्होंने कहा प्रभु! मैं आपसे कुछ प्रश्न करना चाहती हूँ, उन्होंने कहा-देवी! तुम प्रश्न करो यदि मैं तुम्हारे प्रश्नों को जानता हूँगा। तो उत्तर देता चला जाऊंगा चाक्राणी गार्गी बड़ी प्रसन्न हुई और प्रसन्न हो करके बोली कि प्रभु आपको धन्य है। आपके निरभिमानी शब्दों को पान करके मेरा अन्तरात्मा बड़ा प्रसन्न हो रहा है। हे प्रभु! यह ब्रह्मवेत्ताओं का समूह है, और एक ब्रह्मवेत्ता जब इतना नम्र बन जाता है। तो द्वितीय मानो नम्र स्वतः ही बन जाता है। तो मेरे प्यारे! उन्होंने कहा प्रभु! आज मैं आपसे कुछ प्रश्न करना चाहती हूँ। उन्होंने कहा-देवी! उद्गीत गाओ, उन्होंने कहा तो हे प्रभु! मैं यह जानना चाहती हूँ। क्या यह जो मुझे संसार दृष्टिपात आ रहा है यह कितने प्रकार का जगत है। मेरे प्यारे! देखो, महर्षि याज्ञवलक्य मुनि बोले कि हे देवी! यह जो संसार है, यह चार प्रकार की सृष्टियों में विभक्त हो रहा है। चार प्रकार की आभाओं में मानो विभक्त हो रहा है। उन्होंने कहा सबसे प्रथम मानो स्थावर सृष्टि और द्वितीय अण्डज सृष्टि है, और तृतीय जंगम सृष्टि कहालाती है और चतुर्थ में मानो उदभिज सृष्टि कहलाती है। यह चार प्रकार की सृष्टि कहलाती है। सबसे मानो स्थिर रहने वाली जगत जिनमें नाना प्रकार की वनस्पतियां वृक्ष इत्यादि यह सब स्थावर सृष्टि कहलाती हैं, और दूसरी सृष्टि का नाम अण्डज है। मानो देखो, उस अण्डज के नाना प्रकार के भेदन माने गएं हैं, अण्डज सृष्टि में मानो देखो, कितने प्रकार के प्राणी हैं कितने ही प्राणी मानो वास करते हैं जो पिण्ड से मानो वायु में गमन करने वाला यह एक अण्डे से जन्म लेता है, रेंगणे वाला प्राणी भी अण्डे से जन्म लेता है। मानो देखो, जो गृत रहने वाला प्राणी है। वह भी अण्डे से जन्म लेता है जैसे सर्प इत्यादि हैं वह सब अण्डज सृष्टि कहलाती है। मानो देखो, अण्डे से जन्म लेने वाला है, और पक्षी गणों में जो देखो, अन्तरिक्ष के उड़ान उड़ने वाला वह भी मानो देखो, अण्डज सृष्टि वाला कहलाता है। इसके अवान्तर भेदन माने गएं हैं। आज मैं उन भेदनों में न जाता हुआ देखो, स्थावर सृष्टि में स्थिर रहने वाली मानो यह सृष्टि कहलाती है। इसमें मानो देखो, जितना भी वृक्ष है, वह सर्वत्र मानो देखो, स्थावर सृष्टि में हैं, और स्थावर सृष्टि में नाना प्रकार की वनस्पतियां है। जो मानो देखो, प्रदूषण को निगलने वाली हैं, और देखो, वही देखो, मृतक बन करके अपने स्परूप में आ करके मानो साकल्य बन करके अग्नि में उनको भस्म किया जाता है। तो वह मानो प्रदूषण को निगल जाती है। इसी प्रकार मानो देखो, किसी वनस्पति का अग्नि तत्त्व प्रधान है। तो किसी में जल तत्त्व प्रधान है। किसी में मानो गुरूतव प्रधान है। यह मानो देखो, तीन प्रकार के क्या चारों प्रकार की आभा में रत्त रहने वाला यह मानो देखो, स्थावर सृष्टि कहलाती है। स्थावर सृष्टि जब मेरे पिता ने सृष्टि का प्रारम्भ किया तो प्रारम्भ करते ही जब यह सृष्टि की रचना हो गई तो मानो धीमे-धीमे यह संसार कुछ सान्त्वना को प्राप्त हुआ, तो इसमें सबसे प्रथम वनस्पति का जन्म हुआ, जल के सन्निधान मात्र से वनस्पति का जन्म हुआ और वनस्पतियों में नाना प्रकार के वृक्षों का जन्म हुआ, तो इसी प्रकार देखो, उसके पश्चात अण्डज सृष्टि का जन्म हुआ अण्डे से उत्पन्न होने वाले मानो एक अण्डज है। जो समुद्र के तट पर मानो देखो, अपने अण्डज दे करके मानो देखो, वह उसे अपने में सिंचने लगता है। बहुत दूरी से कोई नेत्रों से सींच रहा है। कोई मानो देखो, अपने नीचे दबा करके उसे सींच रहा है। मेरे पुत्रों! देखो, कितने अवान्तर भेदन माने गएं हैं। आज मैं जब सृष्टि को और

जब प्रभु की रचना के ऊपर विचार-विनिमय करता हूँ तो अन्तरात्मा गदगद हो जाता है। आज मैं यह कहा करता हूँ कि कितने प्रकार का प्रभु का यह जगत है, जिसके ऊपर मानव देखो, अपने में मानवीयता का अपने में अपनेपन को ही धारण करता रहता है। मेरे प्यारे! देखो, एक मानव कच्छ एक कच्छा प्राणी है, जो अण्डे से उत्पन्न होने वाला है। वह समुद्र के उस देखो, जलाशय में देखो, स्थिर करता है और वह अपने देखो, जहां ईंगला, पिंगला सुषम्ना का नेत्रों से समन्वय होता है। उसके प्रकाश से देखो, सींचने लगता है। मेरे प्यारे! देखो, यह प्रभु का कैसा अनूठा जगत है, कैसा अनूठा यह ब्रह्माण्ड है, जिसके ऊपर बेटा! विचार-विनिमय किया जाता है। बेटा! देखो, जैसे यह पृथ्वी मण्डल है, इस पर पार्थिव तत्त्व प्रधान है। तो मानो देखो, जैसे हमारे यहां अरूणधती मण्डल है, वहा भी जल तत्त्व प्रधान है, वशिष्ठ मण्डल में भी तत्त्व प्रधान है। मानो देखो, पृथ्वी तत्त्व प्रधान माना गया है, और देखो, जैसे हमारे यहां देखो, यह सूर्य अमृतं देखो, मण्डल मंगल है सूर्य में अग्नि तत्त्व प्रधान प्राणी रहते हैं, और यह मुनिवरों! देखो, अमृतं मंगल प्राणी में पृथ्वी तत्त्व प्राणी रहते हैं। कहीं बेटा! देखो, वायु तत्त्व प्राणी गमन करते रहते हैं। तो आज बेटा! मैं परमात्मा के उस महान रचना में नही जाना चाहता हूँ। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा-देवी! यह मानो देखो, दो प्रकार की सृष्टि हैं, और तृतीय सृष्टि का नाम जंगम कहलाता है। जंगम सृष्टि में मानो उसमें यह मानव प्राणी भी आता है। नाना प्राणियों का व्यवधान होता रहता है, मानो देखो, जैसे गऊ हैं और भी नाना प्रकार की जातीयता मानी जाती हैं। जैसे मानव जाति है। वह भी मानो जंगम से जन्म लेने वाली है, और भी नाना प्रकार की जातियों का इसमें निहित रहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, उसके पश्चात देखो, जलं ब्रह्मा वृतं समुद्रों में बेटा! नगरों के नगर प्राणियों के विद्यमान रहते हैं। जिसमें जल तत्त्व प्रधानता प्राणी रहते हैं। मेरे प्यारे! नगर के नगर विद्यमान हैं, जिसके ऊपर मानव विचार-विनिमय करता रहता है। मुनिवरों! देखो, वह स्वेदज सृष्टि कहलाती है, उसको हमारे यहां उद्भिज भी कहते हैं। जो मानो देखो, हमारे यहां देखो, एक जल है, और एक उष्णता का जहां मिलान हुआ वहीं प्राणियों का जन्म होना प्रारम्भ हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, जहां देखो, जंगम सृष्टि में अवान्तर भेद माने गएं हैं। यह देखो, जंगम सृष्टि मुनिवरों! देखो, चन्द्र मण्डल में भी पाई जाती है। यह मंगल में भी पाई जाती है, यह शुक्र और बुद्ध में प्राप्त होती रही है। मानो देखो, लोक-लोकान्तरों में सृष्टि का व्यवधान होता रहा है।

तो आओ मेरे प्यारे! मैं आज विशेष चर्चा प्रगट करने नही आया हूँ, विचार-विनिमय केवल यह क्या मानो देखो, ऋषि ने यह कहा कि हे देवी! हे चाक्राणी तुम जान गई होगी, ब्रह्म विचारक सब जानते हैं कि यह चारों प्रकार की जो सृष्टि है अपने में अपनेपन में दृष्टिपात आती रहती है। तो इनकी प्रतिष्ठा में तुम जाना चाहती हो मानो देखो, इनकी जो प्रतिष्ठा है वह प्रतिष्ठित होने वाला जगत है। अमृतं ब्रह्मा लोकां वाचसुतं देवत्वां मेरे प्यारे! देखो, इसके प्रतिष्ठा इस पृथ्वी में ओत-प्रोत हो जाती है। यह चारों प्रकार की जो सृष्टि है इनकी जो प्रतिष्ठा है, यह पृथ्वी में ओत-प्रोत हो जाती है और पृथ्वी मानो देखो, इसमें यह अपने में निगल जाती है और पृथ्वी से ही इसका मानो उद्बुद्ध हुआ करती है। तो मेरे प्यारे! देखो, जब यह वाक् चाक्राणी ने श्रवण किया उत्तर प्राप्त हो गया, वह अपने में शान्त हो गई उन्होंने कहा देव यह वाक् तो मेरे विचार में आ गया है। परन्तु मैं यह और जानना चाहती हूँ कि यह जो गुरूतव है, पृथ्वी का जो गुण है, यह पृथ्वी जो गुण है वह पृथ्वी कहां प्रतिष्ठित होती है? उन्होंने कहा यह जो पृथ्वी है, यह अपने में ही प्रतिष्ठित होती है यह जल में प्रतिष्ठित हो जाती है। इसीलिए जल अमृत कहलाता है। बिना जल के मानो देखो, पृथ्वी अपने में अपंग कहलाती है। जब मुनिवरों! देखो, वृष्टि प्रारम्भ होती है तो यह पृथ्वी नाना प्रकार के व्यंजनों वली बन जाती है, और नाना प्रकार के व्यंजनों वाली बन करके नाना प्रकार का खाद्यान्न क्या यह चारों प्रकार की सृष्टि का व्यवधान बन जाता है। मानो देखो, यह अपने में अपनेपन में निहित

हो जाती है। अपनेपन में ही दृष्टिपात आने लगती है, मानो देखो, यह आपो ही तो जल है जब मैं अपनी माता के द्वार पर जाता हूँ, और माता से यह प्रश्न करता हूँ हे माता! तेरे गर्भस्थल में जब हम विद्यमान थे तो मानो देखो, हमारा ओढ़न क्या था हमारा बिछौना क्या था? और हमारे पांशे क्या बने हुए था तो माता इसका उत्तर नही दे पाती परन्तु देखो, जब माता के गर्भस्थल में मानो यह जंगम सृष्टि होती है तो उसी समय मानो देखो, जल ही इसका आसन होता है, और जल ही ओढ़न होता है, और जल ही मानो देखो, ब्रह्मणे देखो, पांशे बने हुए होते है। वाह रे मेरे देव! तू कितना महान है, कितना रचयिता है और वह रचनाकार रचना कर रहा है, और देवताजन मानो देखो, उसकी प्रतिष्ठ को प्रतिष्ठित कर रहे हैं। मानो देखो, चन्द्रमा अमृत देता रहता है, मानो देखो, वह चन्द्रमा अमृत देता है। सूर्य प्रकाश देता है, और अग्नि उष्णा बनाती है, और मुनिवरों! देखो, गुरु वह पृथ्वी गुरूतव देती है, और देखो, आपोमयी मानो देखो, ओत-प्रोत हो करके और वह देवतव मानो देखो, वायु को प्राण दे रहा है। अन्तरिक्ष अवकाश दे रहा है, मेरे प्यारे! यह प्रभु ने कैसा अनुपम यह माता के गर्भस्थल में शिशु का निर्माण किया है। तो मेरे प्यारे! निर्माणवेत्ता प्रभु है, मेरी भोली माता नही जानती कौन निर्माण करने वाला है? जब मेरे प्यारे! देखो, जब सृष्टि के रचयिता ने मानव शरीर का रचनाकार ने रचना की तो बेटा! बहतर करोड़ बहतर लाख दस हजार दो सौ नाड़ियों का निर्माण किया मेरे प्यारे! देखो, कहीं बुद्धि में मन के विचारों का जन्म दिया है मन और मन का दूसरा नाम बुद्धि है बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञा कहलाती है, और मुनिवरों! देखो, चित्त मण्डल में जब प्रवेश हो जाते हैं, या आन्तरिक जगत बन जाता है। मुनिवरों! देखो, जहां आत्मा के प्रकाश में मन प्रकाशित होता रहता है। तो विचार आता रहता है तो बेटा! यह कैसा अनुपम जगत है, तो माता के गर्भस्थल में कहीं हृदय का निर्माण हो रहा है, कहीं मानो देखो, ईंगला, पिंगला, सुषुम्ना का निर्माण हो करके ब्रह्मरन्ध्र को बेटा! रस्सावदन दिया जा रहा है, मेरे पुत्रों! देखो, वह अमृतं ब्रह्मा तो माता उत्तर नही दे पाती, परन्तु ज्ञानी इसका उत्तर देता है। दार्शनिक देता है, और वेदां भूतं देखो, वैद्यराज देता है जो वनस्पिति विज्ञान को जानने वाला हो, तो मेरे पुत्रों! माता से जब यह प्रश्न किया जाता है माता मलदाल्सा से एक समय प्रवाहण ने यह प्रश्न किया था तो माता ने यथोचित मानो देखो, उसे उत्तर दिया एक समय मानो देखो, अर्जुन ने भी माता कुन्ती से यह प्रश्न किया था क्या माता मेरा ओढ़न क्या रहा है? तो उस समय मानो देखो, माता कुन्ती ने भली भांति उसका उत्तर दिया कि तुम्हारा ओढ़न जल है। तुम्हारा बिछौना जल है। पांशे भी तुम्हारी आपोमयी ज्योति कहलाई जाती है मेरे प्यारे! देखो, विचार आता रहता है क्या यह जो गुरूतव परमाणु हैं, यह जल से आश्रित रहता है। यह आपो के आश्रित रहता है जब मुनिवरों! देखो, विज्ञानवेत्ता इसके ऊपर अन्वेषण करते हैं तो तीन प्रकार के परमाणुओं के ऊपर अन्वेषण होता रहा है। मेरे प्यारे! देखो, तेजोमयी, तरलतव और गुरूतव यह तीन प्रकार के परमाणु इनके ऊपर अनुसन्धान होता हुआ यह नाना प्रकार के यन्त्रों में यन्त्रित होता हुआ विज्ञान अपने में विज्ञानता को प्राप्त होता रहा है। नाना प्रकार के देखो, विज्ञान कहीं उड़ान उड़ने वाले यन्त्रों में जो सूर्य की परिक्रमा करता है, कोई ध्रुव की परिक्रमा करने वाला विज्ञान का निर्माण करता है। कोई मानो समुद्रों में गमन करने वाले विज्ञान का निर्माण करता रहता है वह निर्माण मानो इन तीन प्रकार के परमाणुओं के ऊपर व्यवधन होता रहता है। परमाणुओं को गति देने वाला वायु है, और जहां भ्रमण करते हैं, उसका नाम अन्तरिक्ष है, और यह तीन प्रकार के परमाणु हैं जो बेटा! अपने में गतिवान होते रहते हैं। आज बेटा! मैं विज्ञान के वांगमय में नही जाना चाहता हूँ। आज केवल तुम्हें यह विचार देने के लिए आया हूँ कि हमारा जीवन बड़ा एक अनुपमता में परिणत रहा है अपने में मानो देखो, अपने में ध्यानावस्थित होता हुआ उसे मानो अपने में ही दृष्टिपात करता रहा है। जब महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने यह अपना उत्तर दिया तो देखो, चाक्राणी गार्गी बड़ी प्रसन्न हुई और प्रसन्न हो करके बोली कि प्रभु यह भी मैंने स्वीकार कर लिया कि

जब मैं आचार्य कुल में अध्ययन करती थी, तो आचार्य मुझे इस प्रकार की शिक्षा देते रहे हैं। परन्तु मैं जानना चाहती हूँ मानो देखो, यह आपो कहां ओत-प्रोत होता है, उन्होंने कहा अग्नि में प्रतिष्ठित हो जाता है। अग्नि इसे अपने में धारण कर लेती है मानो देखो, अग्नां भूतं ब्रह्मा अग्नं ब्रह्वे यह अग्नि ही तो तेजोमयी कहलाती है। यही तो देवताओं का मुख कहलाता है। जब यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में अग्नि की प्रार्थना करता है, और वह साथी बन करके कहता है अग्निहा अग्नि ब्रहे हे अग्नि! आ अब तू मेरे जीवन को प्रकाश में ले चल यज्ञमान देखो, अग्न्याधान करके अपने साकल्य के द्वारा उत्तिष्ठित होना चाहता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, यह अग्नि ही तेजोमयी कहलाती है। और अग्नि देवताओं का मुखां ब्रह्मा वर्णनं ब्रहे देवां ब्रहे तपा वेद का आचार्य कहता है कि यह अग्नि देवताओं का मुख है, और देवता ही मानो देखो, मुखारबिन्दु से ब्रह्मा अपने मुखारबिन्दु से नाना प्रकार की शक्ति को प्राप्त करके मानो देखो, उसे सृष्टि को अपने में धारयामि बनाते रहते हैं।

तो आओ मेरे प्यारे! मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा न देता हुआ आज मैं कोई व्याख्याता नही हूँ केवल तुम्हें परिचय देने के लिए आया हूँ, और वह परिचय केवल यह है कि अम्ब्रहा कृतं मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार उत्तर दिया तो चाक्राणी गार्गी बड़ी प्रसन्न हुई। उन्होंने कहा प्रभु! मैं व्याख्या नही केवल केवल उसका परिचय ही जानना चाहती हूँ। उन्होंने कहा प्रभु! यह अग्नि कहां प्रतिष्ठित रहती है? उन्होंने कहा अग्नि वायु में रहती है, वायु ही मानो देखो, अपने में धारयामि बना लेती है। जहां वायु होती है। वहीं अग्नि होती है जहां मानो देखो, अग्नि होती है वायु का व्यवधान होता रहता है। मानो एक दूसरे के पूरक कहलाते हैं। मानो देखो, यह जो वायु है, यही प्राण वर्धक है, इस मानो देखो, इस संसार में जितनी भी प्राण शक्ति है। चाहे वह मानव के द्वारा है, चाहे वह उद्भिज के द्वारा है चाहे वह मानो देखो, स्थावर सृष्टि में चाहे जंगम चाहे किसी भी सृष्टि में हो परन्तु देखो, जो प्राण शक्ति वह सब वायु से प्राप्त होता है, वायु प्राण वर्धक है और अग्नि के परमाणुओं को ले करके जब यह गमन करता है। तो यह उष्ण बन जाती है और यही मानो देखो, जब शीतल परमाणुओं को ले करके गमन करता है। तो वायु अपने में शीतल और यही प्राणों को देने वाली प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान, नाग, देवदत, धनंजय, कुरु और कृकल और यह दस प्राण देखो, एक ही प्राण के दस भाग कर देती है, और मुनिवरों! देखो, इसी से संसार गतिवान हो रहा है। क्या लोक-लोकान्तर क्या मानव समाज है, चाहे देखो, स्थावर सृष्टि है चाहे उदभिज है चाहे समुद्रतव है। परन्तु सब उसी से गतिवान हो करके अपने में मानो क्रियाशील हो रहे हैं। तो बेटा! मैं विशेष चर्चा न देता हुआ अपने विचारों को दूरी न ले जाता हुआ केवल यह कि वायु ही मुनिवरों! देखो, अग्नं ब्रह्मणा अग्नि वायु में समाहित हो जाती है, और वायु ब्रह्मणे देखो, वायु गतिवान बना देती है मेरे प्यारे! चाक्राणी ने कहा प्रभु! आपको धन्य है। आपने मुझे अन्धकार से प्रकाश में पंहुचाया है आप प्रकाशक स्वरूप है हे प्रभु! मैं यह और जानना चाहती हूँ कि वायु कहां गमन करता है। उन्होंने कहा कि वायु अन्तरिक्षं ब्रह्वा कृतं देवाः वेद की आख्यिका कहती है कि अन्तरिक्ष में गमन कर जाता है, और इन तीनों प्रकार के परमाणुओं को ले करके मानो गमन करता रहता है मानो देखो, इसी से यह संसार देखो, स्थूल सूक्ष्म और कारण में अपने में लय होता रहता है यह प्राणों का जब तक समूह रहता है जब तक मानो देखो, उपाधि बनी रहती है मन का इससे सहयोग बना रहता है। क्योंकि यह प्रकृति का सूक्ष्म तन्तु है जैसे मानो देखो, आत्मा के सन्निधान मात्र से ही मानो देखो, यह प्राण गमन करता है, इसी प्रकार मनस्तव अपने में रत्त रहता है यह दो प्रकार की शक्ति कहलाती है। एक चेतनामयी ब्रह्म है, जो प्राण को रूप में है, और मनस्तव के वर्णव रूप में मानो देखो, एक मन कहा जाता है। मन इस प्रकृति का सबसे सूक्ष्म तन्तु कहलाता है। सूक्ष्मतम मानो पदार्थ कहलाता है। जिसके ऊपर बेटा! मानव परम्परागतों से ही, अनुसन्धान अन्वेषण और तपस्या में लगा रहा है, और वह अपने में जितेन्द्रिय बनता रहता है और वह मन को प्राण को अपने

में वशीभूत करके मानो देखो, जितेन्द्रियता को प्राप्त होता रहा है। मन और प्राण के दोनों के सन्निधान मात्र ही माता अपने गर्भ में आत्मा को दृष्टिपात करता है मेरे प्यारे! देखो, जो भी देखो, इस संसार के प्रत्येक अवययों में देखो, प्राण देखो, मन के सहयोग से ही मानो देखो, इस ब्रह्माण्ड में नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों में गमन करता रहा है। तो विचार आता रहता है बेटा! एक परमाणु है परमाणु में परमाणु है, उस परमाणु का जब विभक्त किया जाता है तो ब्रह्माण्ड दृष्टिपात आने लगता है। तो बेटा! मैं दूरी न चला जाऊं विचार-विनिमय केवल ये तो विशाल वन है, विचारों का प्रभु यह प्रकरण ले करके केवल प्रकृति तक आपने पंहुचा दी। रसना से तत्त्व तक पंहुच गई हूं प्रकृति सूक्ष्मतम प्रभु की सृष्टि में निहित रहती है। मैं यहां आ करके अपने में मौन हो गई हूँ। तो चाक्राणी गार्गी अपने में यह विचार-विनिमय करते हुए यह घोषणा कर दी कि हे ब्रह्मवेत्ताओं! यह आचार्य कुल में ब्रह्मवेत्ता है, यह अपने में ब्रह्मवेत्ता है, नम्र होता है, जो नम्र होता है और नम्रता का उसमें साम्राज्य होता है मानो देखो, तो यह बेटा! आज का वाक् चाक्राणी गार्गी बेटा! जब प्रश्न किया तो उन्होंने यथोचित उनका उत्तर दिया कल भी इससे आगे चर्चा कल प्रगट करेंगें। आज का वाक् अब समाप्त होने जा रहा है। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह है कि हम परमपिता परमात्मा की महिमा का उच्चारण करते हुए और देव की महिमा का गुणगान गाते हुए हम इस संसार सागर से पार हो जाएं, यह है बेटा! आज का वाक्। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह क्या जो साधना करना चाहता है। वह मानो देखो, प्राण रूपी देखो, कमान को मन रूपी तरकश को अपने में मानो वशीभूत करके उसका लक्ष्य ब्रह्म को प्राप्त होता रहा है। यह प्रसंग ले करके बेटा! चाक्राणी ने बेटा! अपना वाक् प्रारम्भ किया था। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने देखो, ब्रह्म को लक्ष्य जैसे अपने वाक् का व्याख्यान प्रारम्भ किया यह है, बेटा! आज का वाक् आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह है कि हम परमपिता परमात्मा की महिमा को जानें और उसके ऊपर मनन और चिन्तन करते चले जाएं। जिससे हमारे जीवन में सार्थकता प्राप्त हो जाएं। यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा। ओ३म् देवाः आभ्यां रथं मां आपा रथं मां प्राची रथं आ पा म्। ओ३म् देवां भू वर्णाश्चमाः आ पा म्।

१० ३० ०८ १९९२

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी हैं, और उसका जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है। उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वे परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं। क्योंकि वह अनन्तमयी हैं, और उसका ज्ञान और विज्ञान भी प्रायः अनन्तमयी प्रायः मानवीयता में परिणत रहने वाला है। तो वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप है और याग उसका आयतनहै उसका गृह है उसका सदन है और वह प्रायः उसी में वास कर रहा है तो इसीलिए हमारा प्रत्येक वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है, और उसका वर्णन कर रहा है। प्रत्येक वेदमन्त्र उस महान देव की महिमा अथवा उसके गुणों का गुणवादन कर रहा है। तो हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा को जानें, और उसका जो अनन्तमयी ब्रह्माण्ड है। उसके ऊपर मानव को विचार-विनिमय करना चाहिए, परम्परागतों से ही, मानवीयतव अपने में अनुसन्धान करता रहा है, और कोई संसार की ऐसी वस्तु नही परमात्मा का कोई ऐसा चयन या जिसके ऊपर ऋषि-मुनियों ने विचार-विनिमय न किया हो, क्योंकि वह अपने में अपनेपन का ही व्यवधान करते रहे हैं, और विज्ञान के ऊपर जब मानव चला गया तो ऋषि-मुनियों को बेटा! अपने को और ब्रह्माण्ड को मापने का प्रयास किया, और ब्रह्माण्ड को और अपने को माप करके उन्होंने दोनों प्रकार के ज्ञान और विज्ञान को जानने का प्रयास किया।

मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जिस काल में बेटा! देखो, शिकामकेतु उद्दालक के यहां नाना प्रकार की अनुसन्धानशालाएं और यज्ञशालाओं में मानो देखो, उनका विचार-विनिमय होता रहा है कोई ऐसा नृत्त नही है। जो याग के ऊपर उन्होंने चयन नही किया और मानव को एक एक शब्द में मानो देखो, उसको चित्रावलियों में दृष्टिपात किया है। एक-एक रक्त के बिन्दु में ब्रह्माण्ड को उन्होंने मापने का प्रयास किया है। तो आज बेटा! मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा न करता हुआ, केवल ये कि महर्षि भारद्वाज के यहां महर्षि देखो, व्रेतकेतु हुए हैं और व्रेतकेतु दद्दड़ ने अपने में विचार-विनिमय किया। परन्तु उन्होंने एक अणु को जाना, और अणु को जान करके उसका विभाजन किया। और जब उसका विभाजन किया तो उसमें सर्वत्र ब्रह्माण्ड दृष्टिपात आने लगा। और जब उस ब्रह्माण्ड वाले चित्रावलियों का विभाजन किया, तो उसमें और भी ब्रह्माण्ड दृष्टिपात आने लगे। तो बेटा! यह कैसा अनुपम जगत है, जो एक-एक परमाणु में ब्रह्माण्ड निहित रहता है। जैसे शब्द के उच्चारण करने से उस शब्द में बेटा! देखो, शब्द पर ध्वनि पर ध्वनियां होती रहती हैं। और वह ध्वनि को ही मुनिवरों! देखो, अपने में धारण करता हुआ, मानव अपने में ध्वनित होता हुआ वह मानो देखो, ध्वनि को परमाणुओं को दृष्टिपात करता है और जब वह परमाणुवाद में जाता है तो उसमें शब्दों का एक नृतता में दृष्टिपात होने लगता है। तो विचार आता है बेटा! कि ये अनुपम जो परमात्मा का अनुपम है आओ आज मैं तुम्हें उसी क्षेत्र में ले जा रहा हूँ। जहां बेटा! इससे पूर्व काल में चर्चा कर रहे थे इससे पूर्व काल में हम राजा जनक के राष्ट्र में राजा जनक की सभा में जहां नाना प्रकार के यागों का चयन होता रहा है, वहां एक ब्रह्मयाग का भी आयोजन होता रहा, वहां हमारे यहां यूं तो नाना प्रकार के यागों का वैदिक साहित्य में वर्णन आता रहता है। मेरे पुत्रों! देखों कहीं इन्द्र याग है, कहीं ब्रह्मयाग है, तो कहीं विष्णु याग है। कहीं रूद्र याग है, कहीं मानो देखो, पुत्रेष्टि यागों का वर्णन है, कहीं वाजपेयी याग है, कहीं

अग्निष्टोम याग है, कहीं मानो देखो, अश्वमेध और अजामेध यागों का वर्णन प्रायः वैदिक साहित्य में होता रहा हैं। कहीं देवी याग का वर्णन है, तो कहीं मुनिवरों! देखो, अश्वमेधो में रमण करने वाले धनुर्विद्या का वर्णन होता रहता है। उसे धनुर्याग कहा जाता है तो नाना प्रकार के यागों का चयन प्रायः वैदिक साहित्य में होता रहा है आज मैं मुनिवरों! देखो, उन यागों के चयन में तो उनके कर्मकाण्ड में नही ले जा रहा हूँ।

आओ मेरे प्यारे! देखो, मैं ब्रह्मयाग की चर्चा कर रहा था, जहां ब्रह्मवेत्ता अपने अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके अपने में ब्रह्म का चयन करते रहें, और ब्रह्म के ऊपर मानो देखो, अपने में विचार-विनिमय करते हुए और मानो उसके ऊपर अपने संसार को और अपने को मापने का प्रयास होता रहा है। तो राजा जनक की सभा में बेटा! देखो, चाक्राणी गार्गी और याज्ञवल्क्य मुनि महाराज दोनों का विचार-विनिमय हो रहा था। उन्होंने ब्रह्मवेत्ताओं से पुनः ये प्रश्न किया क्या हे ब्रह्मवेत्ताओं! देखो, यह सृष्टि के कर्म से ले करके मैंने आचार्य से ब्रह्मवेत्ता से प्रश्न किए हैं, और वह जिज्ञासु बन करके। परन्तु इन्होंने यथोचित मेरे प्रश्नों का उत्तर दिया है और यदि तुम्हार इच्छा हो तो मैं ध्रुवा से ऊर्ध्वा में गमन करना चाहती हूँ मैनें इससे पूर्व ये क्या मानो देखो, मैंने ध्रुवा से और ऊर्ध्वा में और ऊर्ध्वा से ध्रुवा में एक मानव का वृत होता रहता है। मैं उसके ऊपर विचार-विनिमय करना चाहती हूँ ऋषि से तो ब्रह्मवेत्ताओं ने कहा-देवी! तुम प्रश्न करो, यह यथोचित उसका उत्तर दे सकेंगें, या न दे सकेंगें, यह तो इनका ब्रहा कृति है। तो मेरे पुत्रों! देखो, चाक्राणी उपस्थित हुई और चाक्राणी ने उपस्थित हो करके कहा कि हे ऋषिवर! मैं आपसे कुछ प्रश्न कर सकती हूँ, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा-देवी! तुम प्रश्न करो, हे दिव्या! मैं तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर जानता हूँगा तो मैं अवश्य दे सकूंगा। तो अन्यथा तुम्हें नमः कह करके क्षमा ही बन जाऊंगा, तो मेरे प्यारे! उन्होंने कहा प्रभु! आपने मुझे ध्रुवा से ऊर्ध्वा में पंहुचाया है। मानो देखो, यह संसार पृथ्वी में और पृथ्वी मानो ब्रह्मे आपो में, और आपो जल में आपो अग्नि में, और वायु अग्नि में, और वायु मानो देखो, अवकाश में लय हो जाती है। तो यह परमाणुवाद अपने में अपने ही स्वरूप में नृत्त करता रहता है।

तो यह तो मेरे विचार में मेरे हृदय में अंकित हो गएं हैं, परन्तु आगे मैं ध्रुवा से ऊर्ध्वा में कैसे जाता है? मैं उस जगत को और जानना चाहती हूँ। मेरे पुत्रों! याज्ञवल्क्य ने कहा-देवी! तो तुम प्रश्न करो, तो मेरे पुत्रों! उन्होंने कहा मैं यह जानना चाहती हूँ आपने मुझे महतत्व तक पंहुचाया, शून्य बिन्दु तक पंहुचाया दिया है। मानो देखो, अवकाश में जाने के पश्चात मानो एक दूसरे में प्रतिष्ठित होता हुआ जगत एक बिन्दु में निहित हो जाता है। तो हे प्रभु! मैं यह जानना और चाहती हूँ कि यह जो मह है, यह कहां ओत-प्रोत होता है? और इसकी कहां प्रतिष्ठा होती है। तो उस समय महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा क्या हे देवी! यह जो महतत्व है मानो इसकी जो प्रतिष्ठा है। वह चन्द्र लोकों में रहती है। मानो यह जो चन्द्र लोक हैं, चन्द्रमा अमृत के देने वाला है, और यह चन्द्रमा देखो, रात्रि अन्धकार का उपभोग करने वाला है, और उपभोग करके यही अमृत को देने वाला है। अमृत ही अमृत को बिखेर देता है। तो यह चन्द्रमा देखो, यह महतत्व अपने में ओत-प्रोत हो जाता है, अथवा उसी में यह प्रतिष्ठित हो जाता है, अथवा अपनी प्रतिष्ठा को प्राप्त करता रहता है। यह मानो देखो, यह जो चन्द्रमा है, यह कान्ति युक्त है। यह अमृतमयी यह अमृत का वृत करने वाला है। मानो देखो, यह अपने में शीतल है, और देखो, यह उष्णता को भी इसी प्रकार बनाता रहता है। जब यह रात्रां ब्रह्मे कृतं क्योंकि रात्रि का जो समन्वय है वह सूर्य से विच्छेद को कहते हैं, और चन्द्रमा का जब आता है तो रात्रि के अन्धकार को अपने में सींचने लगता है। अपने में धारण करने लगता है, और उनकी मानो देखो, अमृत को बिखरने लगता है, मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि ने ऐसा कहा तो चाक्राणी उपस्थित हो करके बोली ऋषिवर यह तो मैंने श्रवण कर लिया है। परन्तु मैं यह जानना चाहती हूँ कि जब यह चन्द्रमा की प्रतिष्ठा कहां रहती है? और चन्द्रमा किसमें ओत-प्रोत रहता है। उन्होंने कहा यही चन्द्रमा है, जो

सूर्य में प्रतिष्ठित हो जाता है। यह जो सूर्य इसका प्रकाश आता है, और मानो देखो, चन्द्रमा इसके गर्भ में निहित हो जाता, रात्रि भी इसी के गर्भ में निहित हो जाती है। यह नाना प्रकार के ऊर्ज्वा को देने वाला है। इसको हमारे यहां उदिति कहते हैं। सूर्य का नामोकरण ही मानो देखो, अदिति के नामों से वर्णित किया जाता है।

तो विचार आता है कि मानो देखो, यह सूर्य हमें प्रकाश देने वाला है, सूर्य ही मानो देखो, चन्द्रमा की प्रतिभा को अपने में धारण कर रहा है तो आओ मेरे प्यारे! देखो, वेद का ऋषि कहता है आचार्य कहता है ब्रह्मणे व्रतां ब्रह्वा सूर्य चतं यह सूर्य की ऊर्ज्वा है जिससे यह संसार प्रकाशमान होता रहता है, और ऊर्ज्वा को प्राप्त हो करके मुनिवरों! देखो, नाना वैज्ञानिक पृथ्वी के प्रारम्भ से ही नाना प्रकार वैज्ञानिक बेटा! अपने यन्त्रों का निर्माण करते रहे हैं, और वह निर्माण करने वाले यन्त्रवाद मेरे प्यारे! देखो, वह अपने में मानो देखो, लोकों की परिक्रमा होती रहती है, और लोक के एक दूसरे में प्रतिष्ठित रहते हैं। तो विचार आता है कि यह उदयन कहा जाता है, इसका नाम उदयन भी कहा जाता है, क्योंकि यह उदय होता है और उदय हो करके प्रकाश देता है तो इसको उदयन कहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, इसको अदिति के नाम से अथवा भास्कर भी कहते हैं, यह भासता रहता है तो सदैव मग्न रहता है, मग्न रह करके यह ऊर्ज्वा देता है, और मुनिवरों! देखो, यह ऊर्ज्वा दे करके यह प्रकाशमान बनाता है। तो यह सूर्य में चन्द्रमा अपने में मानो देखो, प्रतिष्ठित हो जाता है। यह चन्द्रमा सूर्य में ओत-प्रोत हो जाता है। यही मेरे प्यारे! देखो, वृष्टि का कारण बनता है, जब वर्षा का काल आता है, वर्षा ऋतु जैसे ही समाप्त होगी मेरे प्यारे! देखो, वर्षा ऋतु मे सूर्य की किरयों टेढ़ी वृत हुई तो उस समय देखो, कृष्णा पक्ष का वृत प्रारम्भ होता है। तो मानो देखो, समुद्रो से जलों को ले करके यह समुद्रों से किरणों का जब मिलान होता है, तो जलों का उत्थान होता है और जलों का उत्थान हो करके वह वृष्टि हो जाती है, और यह वृष्टि मानो देखो, पृथ्वी नाना प्रकार की वृष्टि होते ही व्यंजनों वाली बन जाती है।

तो विचार आता है कि यह मेरे प्यारे! देखो, यह प्रमाणं ब्रहे व्रतं मुनिवरों! विचार आता है कि जब वत्रासुर से इसका समन्वय होता है तो वृष्टि प्रारम्भ हो जाती है प्रारम्भ हो करके यह नाना प्रकार के व्यंजनों वाली यह पृथ्वी बन जाती है, नाना प्रकार के मानो खनिजों वाली बन जाती है, तो विचारवेत्ता कहते हैं कि यह जो सूर्य यह मानो देखो, ऊर्ज्वा के देने वाला है और इसमें चन्द्रमा प्रतिष्ठत हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार विवेचना की तो चाक्राणी गार्गी ने उपस्थित हो करके कहा हे प्रभु! मैं सदैव यह जानती रहती हूँ। क्या अमृत ब्रहे यह मेरी माता भी मुझे जब लोरियों का पान कराती रहती थी, तो वह वर्णन कराती रही हैं, आचार्यां ने भी मुझे इस प्रकार का वर्णन किया है। परन्तु मैं जानना चाहती हूँ कि यह सूर्य कहां प्रतिष्ठित होता है? उन्होंने कहा यह जो सूर्य है यह गन्धर्व लोकों में ओत-प्रोत हो जाता है, और गन्धर्व लोकों में यह प्रतिष्ठित हो जाते हैं। जैसे हमारा यह सूर्य मण्डल है, ऐसे ही एक मण्डल मानो देखो, गन्धर्व कहलाता है। जो सौर मण्डलों का मनका कहलाता है। उसमें मानो देखो, यह चन्द्रमा और सूर्य अपने में ओत-प्रोत हो जाते हैं। यह उसमें प्रतिष्ठित हो जाते हैं, जैसे माता के गर्भस्थल में मानो देखो, शिशु विद्यमान होता है। उसके अंग और प्रत्यंगों का निर्माण होता है। उसमें मानो वह निहित रहता है, उसी में वह प्रतिष्ठा को प्राप्त कर रहा है। इसी प्रकार यह सूर्य भी मानो देखो, गन्धर्व में मानो देखो, अपनी प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है, और ऊर्ज्वा से समन्वय रहता हुआ मानो द्यौ से इसके प्रतिभाषितता होने लगती है।

तो मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया वर्णन करते हुए, उन्होंने कहा कि यह जो मण्डल है, यह जो परमात्मा का ब्रह्माण्ड है। इस ब्रह्माण्ड में जब वैज्ञानिक जन लोकों की गणना करने लगे तो गणना करते-करते अन्तिम जो माला का मनका रह गया वह गन्धर्व कहा जाता है, और वह गन्धर्व भी मानो देखो, लोक

की गणाना का प्रारम्भ होता है। मेरे प्यारे! देखो, मैंने तुम्हें कई कालों में वर्णान कराते हुए कहा है कि आज मैं उस वर्णान में देखो, नही जाना चाहता हूँ, केवल परिचय देने के लिए आया हूँ, और वह परिचय है क्या जब मुनिवरों! देखो, गन्धर्वा ब्रह्मे वर्णासुतं वेद का वाक् कहता है, क्या जब वैज्ञानिक पृथ्वी के ऊपर विचार-विनिमय करते हैं। तो पृथ्वी से विज्ञान का प्रारम्भ होता है, गुरूतव से प्रारम्भ होता है। यही गुरूतव और तरलतव और तेजोमयी परमाणुओं को ले करके मुनिवरों! देखो, यह मानो संसार को जानने का प्रयास करता रहा है। कहीं उन्होंने अणु और परमाणुओं में कहीं उन्होंने अपने अन्तःकरण में प्रवेश करा करके अन्तःकरणीय जगत को जान करके और उसको बाह्य जगत में उसका प्रसारण किया। तो मेरे पुत्रों! देखो, इस सम्बन्ध में आज विचार-विनिमय हमारा यह है कि मुनिवरों! देखो, गन्धर्वाणां ब्रहे गन्धवाणि वह जो गन्धर्व है, वह पृथ्वी से ले करके पृथ्वी और देखो, यह पृथ्वी सूर्य और सूर्य से मुनिवरों! देखो, गन्धर्व और गन्धर्व से गन्धर्व से आरुणि और आरुणि से ध्रुव और ध्रुव से देखो, मूल और मूल से देखो, पुष्प नक्षत्र और पुष्प् से स्वाति नक्षत्र और स्वाति से ही मुनिवरों! देखो, व्रीणि अचंग इत्यादि लोकों में जाने के पश्चात इन सब लोकों की प्रतिष्ठा मानो गन्धर्व में प्राप्त हो जाती है, और यह गन्धर्व ही इस प्रकार का मण्डल है। मानो देखो, ऋषि तो जानते हैं। इतने सौर मण्डलों का एक माला बन जाती है, सौर मण्डलों की माला बनी है और सौर मण्डलों की माला से ही आकाश गंगाओं की माला बनती है, और आकाश गंगा से निहारिका और निहारिका से मुनिवरों! अवन्तिका का निर्माण होता रहा है। आज मैं इसका स्पष्टीकरण विस्तार रूप से नही कर पाऊंगा केवल विचार यह है, कि हम तुम्हें परिचय देने के लिए आए हैं। मेरे प्यारे! देखो, अमृतं देखो, गन्धर्व में वह सूर्य ओत-प्रोत हो जाता है। उसी में प्रतिष्ठित हो जाता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णान किया तो उसमें चाक्राणी बोली कि प्रभु मैं उसमें जानना चाहती हूँ, कि यह गन्धर्व कहां प्रतिष्ठित होता है? उन्होंने कहा यह इन्द्र लोकों में प्रतिष्ठित होता है, हमारे वैदिक साहित्य में इन्द्र के बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं। इन्द्र नाम राजा का है। इन्द्र नाम परमात्मा का है, और इन्द्र नाम आत्मा का है, जो इन्द्रियों का स्वामी है, उसे इन्द्र कहते हैं, और जो राज का स्वामी है। उसे इन्द्र नामो से वर्णित किया गया है। क्योंकि यह संसार अमृतं ब्रह्मे देखो, रचयिता होने से वह देवताओं का भी देवता इन्द्र है, इसी प्रकार मेरे प्यारे! देखो, यहां गन्धर्व यहां लोकों का नाम भी इन्द्र कहा गया है। वह इन्द्र लोकां ब्रह्मणा देखो, जहां गन्धर्व अपने में प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है। जब आचार्यों ने बेटा! एकान्त स्थली में विद्यमान हो करके इन लोक-लोकान्तरों के ऊपर उन्होंने गम्भीरता से विचार-विनिमय किया, तो मेरे प्यारे! इन्द्रां भव प्रहे यह इन्द्र लोको में दृष्टिपात आने लगा समाधि लगा करके मन और प्राण को एक सूत्र में ला करके उन्होंने बेटा! अपने बाह्य जगत को आन्तरिक में और आन्तरिक जगत को बाह्य जगत में ले जाते हुए, उन्होंने इन्द्र को बेटा! लोकों में निहित किया है, और गणाना में लाने से बेटा! उसकी प्रतिष्ठा उसमें निहित हो जाती है। परन्तु इतने में बेटा! चाक्राणी उपस्थित हुई और चाक्राणी ने कहा प्रभु! देखो, यह वाक् तो प्रायः हमारे यहां आचार्यों ने कई कालों में वर्णान किया, परन्तु मैं यह जानना और चाहती हूँ क्या भगवन! यह इन्द्र कहां प्रतिष्ठित रहता है? उन्होंने कहा यह जो इन्द्र है, यह प्रजापति में ओत-प्रोत हो जाता है। प्रजापति में प्रतिष्ठित हो जाता है। मानो देखो, प्रजापति को भी नाना प्रकार के पर्यायवाची जो भी प्रजा का स्वामी है। वही बेटा! योगी शब्द आ करके वही मेरे प्यारे! देखो, अपने में प्रतिष्ठा को प्राप्त होता रहता है। हमारे यहां प्रजापति नाम परमात्मा का है। प्रजापति नाम राजा का है और प्रजापति नाम माता-पिता का है मानो देखो, जहां प्रजाओं का पालन होता हो वही देखो, प्रजामयी ब्रह्वे यह प्रजा में ओत-प्रोत होता है। मेरे पुत्रों! देखो, प्रजां भूतं ब्रह्मणा लोकां मेरी प्यारी माता के सन्तान का जन्म होता है, तो कहीं वह प्रजा के रूप में हैं कहीं सन्तान के रूप में हैं कहीं मानो देखो, पुत्र और पुत्रियों के रूप में विद्यमान रहता है परन्तु देखो, जब वह लोक ब्रहे लोक

इत्यादि जब जाता है तो वह प्रजा है और पुत्र मानो देखो, संकल्प के होने से पुत्र कहलाता है, और प्रजा के होने से वह प्रजापति जो पालक है। मानो देखो, उसकी अमृतियों को प्राप्त हो रहा है। मेरे प्यारे! देखो, जो ममता में मोह में होता है वह मुनिवरों! देखो, वह पुत्र कहलाता है पुत्रियां कहलाती हैं, परन्तु वास्तव में देखो, वेद का जो योगमयी शब्द है, वह प्रजामयी कहलाती है। इसीलिए प्रजा में यह मुनिवरों! देखो, ओत-प्रोत होने वाला इन्द्र है। वही मुनिवरों! देखो, देवतव कहलाता है। राजा कहलाता है, और वह मुनिवरों! देखो, प्रजा में ओत-प्रोत रहता है मुनिवरों! देखो, माता के गर्भस्थल में एक बिन्दु हैं, और बिन्दु में शिशु है और वही शिशु मुनिवरों! देखो, उसी में शिशु का वर्णनं ब्रहे देवताओं से समन्वय रहता है। तो इसीलिए वह प्रजा कहलाती है। तो प्रजा के ऊपर विचार-विनिमय होना चाहिए। राजा के संग रहने वाली प्रजा है, और मुनिवरों! देखो, आचार्यों के संरक्षण में रहने वाला ब्रह्मवर्चोसि है, इसी प्रकार देवतव कहलाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, इसी प्रकार जब ऋषि ने वर्णन किया तो चाक्राणी गार्गी उपस्थित हो करके बोली कि प्रभु! यह जो प्रजा है यह कहां ओत-प्रोत रहती है यह जो प्रजा है, यह याग में प्रतिष्ठित हो जाती है। यागां भूतं यागां देवं ब्रह्मे कृतों देवाः मेरे प्यारे! देखो, यह संसार एक सर्वत्र याग में रहता है। जब प्रजा के सुकामनाओं का जन्म होता है। तो सुकामना का नाम ही याग माना गया है। मेरे पुत्रों! देखो, याग का अभिप्रायः यह है याग कहते हैं, जहां मानव की सदकामना होती है। सु विचार होते हैं सु इन्द्रियों का दृष्टिपान करना होता है वह सर्वत्र मानो देखो, याग में माना गया है एक मेरी प्यारी माता अपने गर्भ में अपने बाल्यों को देखो, अपने योगाभ्यास के द्वारा जब दर्शन कर रही है। वह प्रजा को जन्म दे रही है, वह याग कर रही है और अपने विचार देती है, तो वह याग कर रही है देखो, प्रजामयी यागां भूतं देखो, वह याग कर रहा है राजा अश्वमेध याग के द्वारा देखो, प्रजा को अपने अनुकूल बनाता है। सुकमाना दे करके और दर्शनों का अभ्यास कराता है। प्रजा को महान बनाता है। तो मुनिवरों! देखो, राजा याग कर रहा है, आचार्य अपने आचार्य कुल में विद्यमान हो करके कहता है देखो, अग्नं ब्रह्मा देखो, चक्षुम्मे पाहि श्रोत्रोम्मे पाहि हे ब्रह्मचारी! देखो, तू परमात्मा को सर्वत्र इन्द्रियों के ऊपर अन्वेषण कर, और उसका साकल्य एकत्रित करके तू आत्मा में याग करने का प्रयास कर तू आत्मा का दर्शन होगा। तो मानो देखो, आध्यात्मिक याग वेत्ता बनेगा तो इस प्रकार मुनिवरों! देखो, आचार्य भी याग कर रहा है, तो मुनिवरों! देखो, प्रत्येक मानव कामना है, आत्मीय विचार हैं, आत्मीय जो मानो तरंगें है, उस सर्वत्र का नाम याग माना गया है। तो इसीलिए याग में प्रजा ओत-प्रोत हो जाती है। तो उसी में प्रतिष्ठित हो जाती है। तो मेरे प्यारे! देखो, चाक्राणी बोली कि प्रभु आप तो धिराज है। हे प्रभु! मैं यह और जानना चाहती हूँ कि याग किसमें प्रतिष्ठित हो जाता है? उन्होंने कहा यह जो याग है, वह दक्षिणा में ओत-प्रोत हो जाता है। इसीलिए दक्षिणाम्मे देहि मानो देखो, इसीलिए ब्राह्मण आचार्यों को देखो, यज्ञमान अपनी दक्षिणा प्रदान करता है। दक्षिणा का अभिप्रायः क्या है दक्षिणां भू मुनिवरों! देखो, द्रव्य देना तो दक्षिणा वह तो उदर की पूर्ति के लिए जाता है, परन्तु देखो, यहां दक्षिणा का अभिप्रायः यह है कि यज्ञमान के अन्तर्हृदय में जो त्रुटियां हैं, उन त्रुटियों को जब आचार्यों को जब वह संकल्प के साथ त्यागता है। वह वास्तविक दक्षिणा कहलाई जाती है। दक्षिणा का अभिप्रायः द्रव्य देना नही हैं, वह तो उदर की पूर्ति के लिए संसार का नृत्त होता है। दक्षिणा का ऊर्ध्वा में गमन किया जाता है, तो दक्षिणा कहते हैं जो मेरे प्यारे! देखो, यज्ञमान अपनी त्रुटियों को त्यागता है, और त्याग करके कहता है कि मैं दक्षिणा देना चाहता हूँ, देखो, जैसे बेटा! मुझे स्मरण है जब माता कौशल्या ने देखो, पुत्रेष्टि याग किया था, उन्होंने कहा कि मैं दक्षिणा देना चाहती हूँ। तो आचार्य ने कहा था दिव्या! जब दक्षिणा देने लगी तो उन्होंने कहा प्रभु! क्या चाहते हो आचार्य ने कहा कि हम यह चाहते हैं कि तुम्हारे गर्भ से ऐसे पुत्र का जन्म हो जिससे देखो, वह महापुरूषों की आभा में रत्त रहने वाला हो महापुरूष हो और वही महापुरूष देखो, लोक कल्याण करने वाला हो

वह माता देखो, अपनी दक्षिणा प्रदान करती है और जब हो सकता है जब माता तपस्विनी होगी और तपस्या कहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, माता उस अन्न का पान करें जिस अन्न में रजोगुण, तमोगुण छाया न हो, तो इस प्रकार मुनिवरों! देखो, विचार आता रहता है हे यज्ञमान! तू मुझे दक्षिणा प्रदान कर और दक्षिणा का अभिप्रायः यह है कि तू अपनी त्रुटियों को त्याग अपने अभिमान को त्याग अपने कटुवचन को त्यागने का प्रयास कर मानो देखो, जैसे सूर्य प्रातःकालीन उदय हो करके प्रकाश देता है, और प्रकाश में रहने वाला है मुझे उस दक्षिणा को प्रदान कर तो मेरे प्यारे! देखो, वह दक्षिणां भूतं प्रजा याग में और याग दक्षिणा में निहित रहता है। जब दक्षिणा नही दी जाती है, तो याग असफल हो जाता है। तो मुनिवरों! देखो, दक्षिणां भूतं ब्रह्वे त्रुटियों को त्यागना ही एक याग का एक वृत बन जाता है। तो मेरे पुत्रों! जब देखो, इस प्रकार ऋषि ने कहा तो चाक्राणी गार्गी ने कहा कि हे प्रभु! मैं जानना चाहती हूँ कि यह दक्षिणा कहां प्रतिष्ठित हो जाती है। उन्होंने कहा हे देवी! यह जो दक्षिणा यह हृदय में प्रतिष्ठित हो जाती है। यह हृदय में ओत-प्रोत हो जाती है, इसीलिए मानव का हृदय पवित्र कहलाता है। जब पवित्र हृदय से कोई क्रियाकलाप किया जाता है। तो वह मानव सफलता को प्राप्त होता है। इसीलिए हृदय में हृदयं ब्रह्मा मानो देखो, उसी में प्रजा निहित रहती है। वह जो प्रजा है मानो देखो, श्रद्धा में दक्षिणा निहित रहती है, इसीलिए श्रद्धा होनी चाहिए श्रद्धा में सर्वत्र जगत निहित रहता है। हे देवी! पुत्र के प्रति श्रद्धा है तो वह माता कहलाती है पत्नी के प्रति श्रद्धा है, तो वह देवी कहलाती है और पुत्री के प्रति श्रद्धा है तो वह पुत्री कहलाती है इसी प्रकार यह सर्वत्र जगत एक श्रद्धा में निहित रहता है, और श्रद्धा का जो समन्वय है, वह मानव के हृदय से होता है और वही मानो देखो, हृदयां भूतं ब्रह्मे श्रद्धा में देहि इसीलिए वेद का ऋषि कहता है, क्या मुझे श्रद्धा दो और मैं श्रद्धा से ही मानो देखो, लोकों को विजय करने वाला बनूं और श्रद्धा ही मुनिवरों! देखो, मानव का जीवन है। तो इस प्रकार मुनिवरों! देखो, जब अमृतं देखो, ऋषि ने अपना वर्णन किया तो चाक्राणी गार्गी नत मस्तिष्क हो गई और उसने यह कहा कि हे देवी! तुम आगे प्रश्न मत कर देना, अन्यथा तुम्हारा मस्तिष्क नीचे गिर जाएगा मेरे प्यारे! चाक्राणी बोली कि प्रभु अमृतं ब्रह्मा लोकां तो वेद का ऋषि कहता है क्या मस्तिष्क क्यों नीचे गिर जाएगा क्योंकि जब हृदय से हृदय का समन्वय होता है, तो बेटा! वह परमात्मा को प्राप्त हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, यह जो संसार है, जो परमात्मा का हृदय है और जब मानव के हृदय का हृदय से परमात्मा के हृदय से मिलान होता है। तो मुनिवरों! देखो, आगे अवर्चनीय जगत बन जाता है। अवर्चनीय बन करके देखो, उसके अभिमान हो गया और ऋषि जब मौन हो गया तो वह कहता है प्रश्न कर्त्ता तो प्रश्न कर्त्ता तो प्रश्न कर्त्ता ही चला जाएगा, और प्रश्न कर्त्ता जब प्रश्त कर्त्ता चला जाएगा मानो उत्तर देने वाला मौन हो जाता है, और जब मुनिवरों! देखो, प्रश्नकर्त्ता को अभिमान हो जाता है। तो उसकी मृत्यु हो जाती है। तो मेरे प्यारे! देखो, अति प्रश्न नही होना चाहिए जहां अति प्रश्न बन जाता है, वहां मानव को मौन हो जाना चाहिए। अन्यथा अभिमान ही मानव को मृत्यु को पंहुचा देता है। शरीर को त्यागने का नाम मृत्यु नही हैं। क्योंकि यह तो आज नही कल इसका विच्छेद होना है। जिस वस्तु का निर्माण हुआ है, परन्तु उस पर जब अभिमान हो जाता है। क्योंकि परमात्मा के राष्ट्र में मानो कोई वस्तु नही होती अभिमान केवल क्षुद्रता का एक तो इसीलिए हे चाक्रार्णी! यदि तुम अधिक प्रश्न करोगी, तो तुम्हें अभिमान आ जाएगा और अभिमान से तुम्हारी मृत्यु हो जाएगी तो मेरे प्यारे! देखो, अभिमान से वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः क्या है हम परमपिता परमात्मा के हृदय से अपने हृदय का मिलान करना चाहते हैं। यह जो सर्वत्र जगत है यह परमात्मा का हृदय है मानव का हृदय से हृदय से मिलान होता है और बेटा! आज का विचार-विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, वह हृदय हृदय से श्रद्धा श्रद्धा से दक्षिणा दक्षिणा से याग याग से प्रजा और प्रजा से इन्द्र और इन्द्र से गन्धर्व और गन्धर्व से सूर्य और सूर्य से चन्द्रमा और देखो, यह ऊर्ध्वा से ध्रुवा में और ध्रुवा से भी मानो देखो, परमात्मा के

हृदय से मिलान करना चाहिए। यह है बेटा! आज का वाक् आज मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट नही करूंगा, आज देखो, विशेष चर्चाएं तुम्हें नही ले जाना चाहता हूँ आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह कि मुनिवरों! हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए मानो देखो, अपने में अपनेपन को धारण करते चले जाएं अब मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगें।

पूज्य महानन्द जीः- ओ३म् रथश्चां वेदां भूतं ब्रह्मणा वायु रथाः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल, अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे, और गागर को सागर को भरण कर रहे थे, ऐसा मुझे प्रतीत हो रहा था जैसे हम राजा जनक के यहां हम विद्यमान है। ऐसा इनका विचार हृदय ग्राही कर रहा है, क्या यागां भूतं मानो देखो, याग के ऊपर इनका अपना मन्तव्य रहा है आज जहां हमारी यह आकाशवाणी जा रही है। वहां एक याग का सम्पन्न हुआ है, परन्तु देखो, यागां भवितं मेरे पूज्यपाद ने कर्तव्य की भावना दी है। वह कर्तव्य की इतनी ऊर्ध्वा में तो भावना उद्गीत गाया जाता परन्तु इस मानो देखो, भौतिकवाद में कुछ न करने से कुछ करना बहुत प्रियतम जहां देखो, साकल्य अपनी मानवीयता को अपने में धारयामि बनाता है। ऐसा मेरा सदैव विचार रहता है और मेरा हृदय यज्ञमान के साथ रहता है। हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, और तेरे जीवन में मानो द्रव्य का सदैव सदुपयोग होना चाहिए। जब गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता है। वह द्रव्य मानो देखो, गृह को सजातीय बना देता है, और जिस गृह में द्रव्य का दुरूपयोग होना प्रारम्भ हो जाता है। वह गृह नारकिक बन जाता है, और वही द्रव्य मानो उसको विनाश के मार्ग पर ले जाता है तो मेरे प्यारे! देखो, पूज्यपाद गुरुदेव के विचार गागर में सागर की कल्पना करते रहे, गागर की वार्त्ता तो नही उच्चारण कर सकते। परन्तु यह कि हमारा हृदय यज्ञमान के साथ रहता है, और मैं सदैव यह कहता रहता हूँ कि हे यज्ञमान! तेरा सौभाग्य अखण्ड बना रहे और गृह में सदैव देखो, द्रव्य का सदुपयोग होता रहे ऐसी मेरी कामना रहती है। परन्तु देखो, जहां मैं आधुनिक काल की वार्त्ता प्रगट नही करूंगा, क्योंकि आधुनिक काल जैसा कर रहा है, मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव को कई समय बताया मैं यह कहता रहता हूँ कि राष्ट्र और समाज को ऊँचा बनाने वाला एक नृत्त होना चाहिए। जब तक यह रूढ़िवाद ईश्वर के नाम पर यह रूढ़िवाद चला हुआ है। जब तक रूढ़ि समाप्त नही होगी, जब तक कोई भी राष्ट्र देखो, राष्ट्र में चरित्र की स्थापना नही कर सकता। तो चाहे वह पृथ्वी पर कोई भी राजा हो वह जब तक रूढ़िवाद का विनाश नही होगा, तब तक मानो देखो, कर्तव्य का पालन होना चाहिए और कर्तव्य में विज्ञान है और विज्ञान में कर्तव्य निहित होना चाहिए, और विज्ञान में आध्यात्मिकवाद है और आध्यात्मिकवाद में ही देखो, यह संसार निहित रहने वाला है तो मुनिवरों! देखो, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह कि मानो मैं राजा तू रूढ़ियों को समाप्त करने वाला बने, क्या वे रुढिवाद समाप्त करने वाले बने, ईश्वर के नाम पर मानो जो रुढियां बन रही हैं वे रुढियां ही मानो मानव का विनाश शेष अनुपलब्ध गुणवत्ता .....

११ १४ ०९ १९९२

जीते रहो! देखो, मुनिवरोंआज ! हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठनपाठन किया-, हमारे यहां परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं, और उसका ज्ञान और विज्ञान भी अनन्तमयी माना गया है। क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक नाना विचारवेत्ता हुए हैं, और वे परमपिता परमात्मा की सृष्टि के ऊपर अन्वेषण करते रहे हैं। परन्तु उसके पश्चात भी मानव अपने में शान्त हो गएं हैं। इस संसार को अपने में समा लेता है, और उसके पश्चात भी वह मौन हो जाता है। आज का हमारा वेदमन्त्र क्या कह रहा है, वेदमन्त्र कह रहा है आत्मां भवि वर्णसुतं देवाः वेद का मन्त्र आत्मा के सम्बन्ध में विवेचना कर रहा है। गृहियां ब्रह्मा गृहिय अस्सुतम गृहिताम् वेद का वाक् प्रश्न कर रहा है कि आत्मा के कितने गृह होते हैं? तो वेद का मन्त्र उसका उत्तर देता है, गृहियाण ब्रह्मे देवव्राम् त्रि वर्तो देवाः तो वेद का मन्त्र कहता है कि तीन प्रकार के इसके शरीर और इसके गृह माने गएं हैं। जब महर्षि जालवी मुनि महाराज से यह प्रश्न किया गया क्या महाराज आत्मा का लोक क्या है? लोक कहते हैं गृह को तो महर्षि जालवी ने कहा आत्मा का जो लोक है वह पंच महाभूत माना गया है। मानो पंच महाभूतं ब्रह्मे वर्णनं आत्मा आत्मा का जो लोक है। यह पंच महाभूत हैं, और पंच महाभूतों में बेटातरलतव तेजोमयी गुरूतव अन्तरिक्षां सबसे प्रथम अग्नि वायु और अव्रतं ! देखो !भूतं तो मेरे प्यारे, यह पंच महाभूतों का लोक है, और इस पंच महाभूतों के लोकों में रहने वाला यह आत्मा विद्यमान है। तो इसीलिए वेद के आचार्यों ने यह कहा कि हम पंच महाभूतों के लोकों को विचारने लगे, तो उसके ऊपर अन्वेषण करना हमारा कर्तव्य है। तो यहां परम्परागतों से बेटा,अन्वेषण होता रहा है ! और विचारक इसके ऊपर विचार,विनिमय करते रहे हैं- क्योंकि जिस गृह में आत्मा वास करता है। उस गृह के अव्ययों को जानना बहुत अनिवार्य है। क्योंकि जब तक उन्हें हम नहीं जान पाते तो विवेक ही उपलब्धि नही होती, अथवा विवेक नही होता, और जब तक विवेक नही होता तो ज्ञानाम् भूतं देखो, ज्ञान भी नही होता विवेकानां भूतं विवेक भी नही होता परन्तु दोनो शब्द एक दूसरे के पूरक कहलाते हैं, और जब ज्ञान भी नही होगा तो हम यौगिकवाद में नही पंहुच सकेंगें, और यौगिकवाद नही होगा, तो मेरे प्यारेदेखो !, हमारा जीवन भी अधूरेपन में निहित रहेगा। तो इसीलिए देखो, जो भी मानव इस संसार में, अपनी आत्मा का उत्थान करना चाहता है, जन्मं ब्रह्मे वर्णनं क्योंकि आत्मा का जन्म नही होता, आत्मा सदैव अखण्ड रहने वाला है, तो आत्मा के ऊपर चिन्तन करना, मानव का बहुत ही अत्यन्त कर्तव्य कहलाता है, कि हमारा जो जीवन है आत्मा भूतं ब्रह्मा देखो, आत्मा को परमपिता परमात्मा से इसका समन्वय रहता है।

तो आओ, मेरे प्यारेमैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नही विचार केवल य !े कि जालवी ने यह कहा कि आत्मा का जो लोक है, वह पंच महाभूत माना गया है। इसी में मानो देखो, इस मानव शरीर में गुरूतव, तरलतव, तेजोमयी और मानो देखो, अवकाश और मुनिवरोंखोदे !, गति यह अपने में रत्त रहने वाला एक अवृत कहलाया जाता है। तो विचार आता है वेद का मन्त्र कहता है कि यह पंच महाभूतों का यह मानो पंच महाभूतों का लोक है, जिसमें आत्मा विद्यमान रहती है तो आत्मा मानो देखो, कहीं हृदय है, कहीं बुद्धि है, और कहीं चित्त और मनस्तव अहंकार कहलाया जाता है। तो बेटादेखो !, यह नाना प्रकार के अव्ययों से इसके निर्माणिता होती है। तो विचारवेत्ता कहते हैं कि इसको जानना हमारे लिए बहुत अनिवार्य माना गया है।

तो आओ, मेरे प्यारेदेखो !, आत्मा का लोक सबसे प्रथम स्थूल माना गया है जैसा मुनिवरोंदेखो !, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का प्रसंग भी आता है तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने यह कहा कि अमृतं ब्रह्मा वृतं देवाः कि हमारे दो प्रकार के जगत माने गएं हैं एक बाह्य जगत है, एक आन्तरिक जगत माना गया है। तो बाह्य जगत में यह संसार कहलाता है। परन्तु आन्तरिक जगत हमारा मन, बुद्धि, चित, अहंकार मानो यह आन्तरिक जगत माना गया है। इसका बाह्य जगत इन्द्रियों के द्वारा मानो निर्मित होता रहता है। तो विचार वेत्ता कहते हैं कि एक मानव का शरीर यह है, जो स्थूल रूप में कहलाता है, और द्वितीय जो हमारा शरीर है वह अमृतं देखो, आत्मा का जो लोक है। आत्मा का शरीर सूक्ष्म शरीर कहलाता है। तो सूक्ष्म उसे कहा जाता है, देखो, जहाँ दस प्राण है। दस इन्द्रियाँ हैं, और मुनिवरोंदेखो !, इन्द्रियाँ और स्थूल इन्द्रियाँ पंच रह जाते हैं, देखो, वह प्रकृति की अवयों की मात्रा बन जाते हैं, और मन और बुद्धि यह हो करके सत्रह तत्त्वों का रह जाता है। तो विचारवेत्ताओं ने कहा कि आत्मा का लोक यह हमारा सूक्ष्म शरीर है। परन्तु देखो, एक समय याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से जब यज्ञदत ब्रह्मचारी ने कहा?यह तीसरा मण्डल क्या है !प्रभु- उन्होंने कहा तीसरा मानो देखो, कारण शरीर कहलाता है। जहाँ ज्ञान और प्रयत्न इसका स्वाभाविक गुण माना गया है। दोनों में मानो देखो, गुणाधानं ब्रह्मे जब तक देखो, इन अवव्यों को हम अपने से दूरी नही कर सकते ज्ञान और प्रयत्न को नही जान सकेंगें। तो आत्मा की आभाओं को नही जान सकते तो विचारवेत्ताओं ने कहा कि आत्मा को जानना, आत्मा के लोकों को जानना बहुत अनिवार्य है। क्योंकि संसार में जन्म किसी वस्तु का नही होता जन्मं ब्रह्मा लोकां वाचं प्रह्वा परन्तु मिलन होता है। उस मिलन के लिए मानव अपने में मानो उल्लास को प्राप्त होता रहा है। परम्परागतों से ही, हम मानो देखो, सूक्ष्म जगत में जाते हैं, तो आत्मा का मानो आत्मा का मानो देखो, निधन नही होता, और देखो, जितने भी हमारे अवव्य शरीर में विद्यमान हैं। जो तेजोमयी हैं तरलतव है और देखो, गुरूतव कहलाया जाता है तो यह सर्वत्र मानो देखो, इनका भी विनाश नही होता, गति ज्यों की त्यों रहती है, अवकाश ज्यों का त्यों रहता है। तो मुनिवरोंदेखो !, आत्मां भूतं ब्रह्मा लोकां व्रते ऋषियों ने यह कहा, आचार्यों ने इसका वर्णन करते हुए कहा कि हमारे आत्मा का जो लोक है, यह हमारा शरीर है, आत्मा के लोक मानो देखो, परमपिता परमात्मा की प्रतिभा कहलाई जाती है। तो विचारकों ने कहा कि आत्मा को जानना और देखो, हमारे लिए मृत्यु को जानना बहुत अनिवार्य है। तो यज्ञदत ब्रह्मचारी ने आचार्य याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से यह कहा कि?आत्मा का लोक क्या है !प्रभु- तो उस समय मुनिवरोंदेखो !, उन्होंने एक रूपक बनाया और रूपक बना करके उन्होंने एक ब्रह्मचारी को उपस्थित किया और ब्रह्मचारी से यज्ञदत ने कहा अमृतं प्रश्न करो तो उन्होंने मुनिवरोंयाज्ञवल्क्य मुनि महाराज से यह प्रश्न किया क्या महाराज अमृतं ब्रह्मे लोकां अमृतं ब्रह्मे ! कृते देवाः कि हम अपने इस शरीराणांदेखो, यज्ञमान अपने में याज्ञानाम् ब्रह्मे प्रहे यह याग करना चाहता है। तो याग कैसे करे? तो उन्होंने कहा कि याग वह मानव देखो, संसार में अधिकारी होता है जो यागों को अवव्यों को जान लेता है, अथवा जो अपनी आभा को जान लेता है मेरे प्यारेदेखो !, यही वाक् महर्षि पिप्लाद ने अपनी पत्नी से कहा था कि अमृते ब्रह्मे लोकां वाचसुतं मेरे प्यारेदेखो !, उन्होंने कहा कि देवी तुम रूदन न करो, यह संसार तो मानो कोई अवव्य समाप्त नही होता तो मुनिवरोंदेखो !, इस प्रकार उन्होंने अपनी वार्त्ता प्रगट की तो मेरे प्यारे ! देखो, आज पुनः से मैं यह वाक् प्रगट करने चला हूँ, कि हमारे यहां प्रत्येक मानव को अपनी मानवीयता को जानना है, और मानवीयता को जानने वाला ही मानवतव को प्राप्त होता रहा है।

तो आओ, आज मैं तुम्हें याज्ञाम् भूतं ब्रह्मे देखो, राजा जनक की सभा में ले जाना चाहता हूँ, राजा जनक की सभा में बेटा,एकत्रित हुआ एक ब्रह्मवेत्ताओं का समाज ! हमारे यहां नाना प्रकार के यागों का वर्णन प्रायः वैदिक साहित्य में होता रहा है। उन्होंने बेटादेखो !, जहाँ यह देव याग है। वहीं ब्रह्मयाग का भी उन्होंने वर्णन किया

है, तो राजा जनक के यहां ब्रह्मयाग होता रहता था, जब वह ब्रह्मयाग होता रहता तो बेटाउन्होने एक समय राजा ! जनक ने अपने एक सौ एक गऊओं के मानो देखो, सिंगों पर सोना मथ करके उन्होंने कहा कि जो ब्रह्मवेत्ता सबसे महान हो यह इन गऊओं को अपने आश्रम में ले जा सकता है। तो मुनिवरोंदेखो !, वहाँ सब शान्त थे महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने ब्रह्मचारियों के सहित उस सभा में पधारे और पधार करके उन्होंने उस सभा में कहा देखो, वर्णानं ब्रहे गऊ ब्रहे क्या गऊओं को अपने आश्रम में ले चलो तो मुनिवरोंदेखो !, ब्रह्मचारियों ने देखो, गऊओं को अपने आश्रम में ले गएं। तो वहाँ एक ब्रह्मवेत्ताओं में एक क्रान्ति उत्पन्न हुई, क्या यह याज्ञवल्क्य अपने में ब्रह्मवेत्ता है। यह मेरे विचार में नही आ रहा है परन्तु देखो, सब ब्रह्मवेत्ता अपने में शान्त थे, प्रश्न कोई नही कर रहा था तो मेरे प्यारेदेखो !, इतने महात्मा अश्वल ने कहा क्या हे याज्ञवल्क्य! क्या तुम सबसे ब्रह्मवेत्ता हो यह कहा कि गऊओं को वह ले जा सकता है। जो तुममें सबसे ब्रह्मवेत्ता हो उन्होने कहा कि ब्रह्मवेत्ता तो नही हूँ परन्तु यदि तुम बारी,बारी मुझसे प्रश्न करोगे- तो उसका यथोचित मैं उत्तर दे सकूंगा। मेरे पुत्रोंदेखो !, वह शान्त हो गएं इतने में मुनिवरोंदेखो !, राजा जनक के पुरोहित अश्वाक् केतु ने कहा कि महाराजक्या आप ब्रह्मवेत्ता हैं !। उन्होंने कहा मैं ब्रह्मवेत्ता नही हूँ, मुझसे कोई प्रश्न करेगा, मैं उसका उत्तर दे सकूंगा, तो मेरे प्यारेइतने में चाक्राणी गार्गी उपस्थित ! हुई और चाक्रार्णी गार्गी ने यह कहा कि हे ब्रह्मवेत्ताओं! यदि तुम्हारी आज्ञा हो, तो मैं इस ब्रह्मवेत्ता से दो प्रश्न कर सकती हूँ। तो ब्रह्मवेत्ताओं ने कहा कि अवश्य कीजिए। तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने वर्णन करते हुए कहा सम्भूति ब्रह्मणा लोकां वाचसुतं देवाः मेरे प्यारेदेखो !, उन्होंने कहा ब्रह्मे हे प्रभु,आप ब्रह्मवेत्ता हैं ! उन्होंने कहामैं !देवी- ब्रह्मवेत्ता तो नही हूँ। परन्तु तुम मेरे से कोई प्रश्न करो, तो मैं उसका उत्तर दे सकूंगा, अमृतं चाक्राणी गार्गी ने प्रश्न किया क्या महाराज एक मेरे एक भुज में मानो देखो, कमान है और उस पर तरकश कसा हुआ है, उसका क्या लक्ष्य होना चाहिए। तो मेरे प्यारेदेखो !, जब वह उपस्थित हो करके याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा क्या तुम्हारे भुज में मानो देखो, प्राण रूपी तरकश है, और प्राण रूपी तरकश के ऊपर मानो देखो, मन रूपी तरकश कसा हुआ है, प्राणं ब्रह्मे देखो, कमानं ब्रहे अमृतं देवा और प्राण देखो, मानो वह प्राण है, और तरकश मानो देखो, मन कहा जाता है। तो मन का जो लक्ष्य है। वह ब्रह्म को पाना है। तो इसीलिए ब्रह्म को पान करने के लिए तुम्हारे देखो, कमान रूपी अमृत पर मानो देखो, तरकश कसा हुआ है, उसका लक्ष्य ब्रह्म कहलाता है। तो प्रत्येक मानव जो इस संसार में आया है। उसका एक ही लक्ष्य रहा है, क्या वह ब्रह्म को पाना चाहता है, नाना प्रकार के संसार के सुखद और आनन्द में वह केवल ब्रह्म को ही पाना चाहता है। मेरे प्यारेदेखो !, एक पति पत्नी है, वह अपने गृह में इसीलिए प्रवेश करते हैं कि हमें आनन्द की प्राप्ति हो जाएं। हम मानो देखो, आनन्द में देखो, हमारा लक्ष्य पूर्ण हो जाएं। परन्तु देखो, आचार्यों ने सब वार्त्ता प्रगट करते हुए अन्त में एक ही वाक् कहा कि देखो, आनन्द वहाँ प्राप्त होता है। जहाँ परमपिता परमात्मा की अनूभुति होती है तो मेरे प्यारेदेखो !, उन्होंने देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा,यह जो प्राण पर मानो मन को मानो एकत्रित करते हुए तुम अपने लक्ष्य पर जा सकती हो !देवी- मेरे पुत्रोंदेखो !, याज्ञवल्कय ने जब यह उत्तर दिया तो वह शान्त हो गई शान्त हो जाने के पश्चात उन्होंने कहामैं !प्रभु- एक वाक् और जानना चाहती हूँ। क्या यह जो दृष्टिपात आने वाला जगत है। यह कहाँ प्रतिष्ठित होता है? उन्होंने कहा यह जो जगत है जो हमें दृष्टिपात आ रहा है, यह मानो चार प्रकार की सृष्टियों में निहित रहता है, सबसे प्रथम सृष्टि का नाम स्थावर है, और द्वितीय का नाम अण्डज है, और तृतीय का नाम जंगम है, और चतुर्थ का नाम उदभिज कहा जाता है। तो यह चार प्रकार की सृष्टियों में मानो यह संसार विभक्त हो रहा है। संसार अपनी आभाओं में रत्त हो रहा है, तो इस प्रकार ऋषि ने जब उत्तर दिया उन्होंने कहा इसकी जो चारो प्रकार की जगत की जो प्रतिष्ठा है। यह पृथ्वी में ओतप्रोत हो जाती है-। उन्होंने कहा कि महाराज?यह पृथ्वी कहाँ रहती है ! उन्होंने

कहा यह पृथ्वी जल में प्रतिष्ठित हो जाती है, और जलं ब्रह्मा व्रतं देवत्वां मानो देखो, जल में यह प्रतिष्ठित हो करके अपने में पतिष्ठा को प्राप्त होता रहता है। तो मेरे प्यारेउन्होंने कहा यह गुरूतव भी यह पृथ्वी अपने में ! अपनेपन को ही प्राप्त होती रहती है। यह माता वसुन्धरा के नाम से इसका वर्णन किया गया है। वसुन्धरा कहते हैं, इसमें जो समाहित हो जाता है अथवा जो बसता रहता है। उसका नाम वसुन्धरा है कि प्रत्येक मानव प्राणी मात्र इसके ऊपर वशीभूत रहता है। तो इस पृथ्वी का नाम वसुन्धरा कहा जाता है। तो मेरे प्यारेदेखो !, ऋषि कहता है सम्भवं ब्रह्मा लोकां अस्वति देवां भूतं उन्होंने कहा कि अमृते देखो, देवत्वां अमृत को पान करना है। तो अमृतता को प्राप्त होना होगा, उन्होंने कहा,यह भी मैने जान लिया !प्रभु- परन्तु मैं यह जानना और चाहती हूँ, भगवनक्या यह ! मानो देखो, पृथ्वी कहाँ प्रतिष्ठित हो जाती है? उन्होंने कहा जल में यह जल मग्न हो जाती है। जल मानो देखो, यह अपने में धारण कर लेता है, और अपने में धारण करता हुआ देखो, जल में वृत्ति कहलाता है। मेरे प्यारे ! ,यह जो जल है !उन्होंने पुनः प्रश्न किया कि महाराज यह कहाँ प्रतिष्ठित रहता है? उन्होंने कहा यह जल अग्नि में रहता है, अग्नि को जल को निगल जाता है, परमाणु रूप बना देता है। मानो देखो, इसी में यह ओत,प्रोत होता है- उन्होंने कहा कि मजाराज यह अग्नि कहाँ उन्होंने कहा कि यह अग्नि वायु में प्रतिष्ठित हो जाता है। उन्होंने कहां जहाँ वायु है। वहीं अग्नि विद्यमान हैं। जहाँ वायु नही रहता है, वहाँ अग्नि भी शान्त हो जाती है। तो मेरे प्यारे ! देखो, ऋषि ने कहा क्या हे देवीअमृतं ब्रह्मा तत्त्वा मानो देखो !, यह जो गति है, वायु है। यही प्राण वर्धक कहलाई जाती है। माता के गर्भस्थल में जब शिशु अपने शरीरां देखो, पंच महाभूतों के शरीर को धारण करता है। तो उस समय देखो, यंह पंच मानो देखो, दस प्राण वायु के दस भाग बन गएं। तो शरीर में प्रवेश होते हैं, मानो प्राण अपान उदान, नाग देवदत धनंजय यह दस प्राण अपने में प्रतिष्ठित हो जाते हैं। जैसे प्राण, अपान, उदान, समान, व्यान, नाग, देवदत्त, धनंजय, कुरू और कृकल यह दसों प्राणों के अवृतों में ओतप्रोत हो जाता है-। तो मानो देखो, इस प्रकार जब ऋषि ने कहा क्या यह वायु के ही इस भाग कहलाते हैं, और वही भाग मानो देखो, माता के शरीर में हैं, वही प्राणों के भाग इस बह्माण्ड को स्थिर किए रहते हैं। मानो देखो, वही प्राण स्वरूप बन करके अपने में धारयामि बने रहते हैं। तो मुनिवरोंदेखो !, ऋषि ने जब इस प्रकार अपन वाक् प्रगट किया तो देवी ने पुनः नतमस्तिष्क हो करके कहा,मैं जानना यह और चाहती हूँ !प्रभु- कि वायु कहाँ प्रतिष्ठित रहता है। यह अग्नि में ब्रह्मणां ब्रह्े अग्नि वायु और वायु देखो, अन्तरिक्ष में ओतप्रोत रहता है-। क्योंकि जहाँ भी वायु गति करता है। वह अन्तरिक्ष कहलाता है। वह परमाणुओं को लिए हुए भ्रमण करता रहता है। वैज्ञानिक जन इसी के ऊपर अन्वेषण करते रहे हैं, और वह वायाम् भूतं देखो, वायु में जो नाना प्रकार के तीन प्रकार के परमाणु गति रहते हैं। वह अन्तरिक्ष में रहते हैं और अन्तरिक्ष में ही मानो देखो, उसे अवकाश के रूप में माना गया है यह अवकाश है तो इस प्रकार देखो, ऋषि ने कहा कि हे देवीआप ने जो तुम उच्चारण करना किए जाओ !।

तो मुनिवरोंदेखो !, ऋषिमुनियों के उच्चारण करने की शैली बड़ी विचित्र रही है उन्होंने ध्रुवा से ऊर्ध्वा में - और ऊर्ध्वा से ध्रुवा में उन्ोंने कहा ब्रह्मणे व्रातम् देवत्वां हे प्रभुमैं अमृतं मैं और जानना चाहती हूँ क्या यह ! ?अवकाश कहाँ रहता है उन्होने कहा शून्यां भूतं ब्रहे बिन्दुत्वां यह बिन्दु होता है और मानो इसको महतत्व के रूप से वर्णन करते रहते हैं, उन्होंने कहा यह महतत्व कहाँ प्रतिष्ठित रहता है? उन्होंने कहा कि यह महतत्व यह मानो देखो, चन्द्रमा में ओतप्रोत हो जाता है-। चन्द्रमा ही तो अमृत देने वाला है। चन्द्रमा ही तो रात्रि के भोग में रमण करता रहता है। वह यह गौ स्वान्कृत कहलाता है। तो मानो देखो, जब चन्द्रमा में यह महतत्व अपने में प्रतिष्ठित हो जाता है माता के गर्भस्थल में मानो देखो, चन्द्रमा की आभा चन्द्रमा की छठा को ले करके माता के गर्भस्थल में शिशु अपने में निर्माणित को प्राप्त होता रहा है। तो मेरे प्यारेदेखो !, उन्होंने कहा यह चन्द्रमा ही तो अमृत को देने

वाला है यह चन्द्रमा ही मुनिवरोंखोदे !, अपने में अपनी आभा में परिणत होने वाला है तो मेरे प्यारेदेखो !, उन्होंने कहा क्या भगवनयह चन्द्रमा कहाँ प्रतिष्ठित रहता है !। उन्होंने कहा यह चन्द्रमा सूर्य लोकों में प्रतिष्ठित हो जाता है। यही तो प्रकाश के देने वाला है। यह द्यौ से प्रकाश लेता रहता है, और द्यौ से प्रकाश ले करके ही मानो यह संसार को प्रकाशमान बनाता है। रात्रि को अपने गर्भ में धारण कर लेता है, और यह मानो देखो, प्रकाश का पुंज कहलाया जाता है। वैदिक साहित्य में सूर्य को उदयन कहते हैं, क्योंकि यह उदयन होता है। कहीं सूर्य को अदिति कहते हैं। क्योंकि यह मानो देखो, यह बारह माहों का निर्माण करने वाला है। यह अदिति कहा जाता है। तो इसी प्रकार यह चन्द्रमा कहीं मानो भासता है यह भास रहा है कहीं मानो देखो, सूर्य को हमारे यहां वर्णकेतु कहा जाता है। चन्द्रमा को भी वर्णकेतु कहते हैं, सूर्य को भी कहते हैं ,तो आज मैं बेटातुम्हें पर्यायवाची शब्दों में नही ले जा ! रहा हूँ। विचार क्या मुनिवरोंदेखो !, इसको विष्णु कहते हैं, हमारे यहां वैदिक साहित्य में विष्णु नाम सूर्य का है, और विष्णु उसे कहते हैं। जो पालना करने वाला है। यह यौगिक शब्दों में प्रतिपादित होता है। क्या जो पालना करता है, उसी का नाम विष्णु है, तो वैदिक साहित्य में बेटा,इसके बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं ! क्योकि विष्णु नाम परमात्मा का है, वह पालक है, विष्णु नाम सूर्य का है, वह नाना प्रकार की ऊर्ज्वा के द्वारा प्रकाश देता रहता है। इसी प्रकार मुनिवरोंद !ेखो, विष्णु नाम माता का है। माता के द्वारा हमारी पालना हो रही है। वह भी विष्णु के रूप से वर्णित किया गया है। विष्णु नाम यज्ञोमयी विष्णु क्योंकि यह यज्ञोमयी विष्णु इसीलिए क्योंकि यह भी पालक है। ऊर्ज्वा को नष्ट करने वाला है, और पालना में अपना सहयोग देता है। तो इसका नाम विष्णु है तो बेटा,आज मैं तुम्हें पर्यायवाची शब्दों में विशेष नही ले जा रहा हूँ ! केवल यह क्या हमारे यहां नाना प्रकार की आभाओं में प्रायः देखो, यह सूर्य रत्त रहता है। तो चन्द्रमा सूर्य लोकों में प्रतिष्ठित हो जाता है। तो मेरे प्यारेदेखो !, देवी ने कहायह भी मैंने जान लिया जब मैं आचार्य कुल में प्रायः अध्ययन करती थी तो मुझे यह वर्णन !प्रभु- ,किया जाता परन्तु मैं यह और जानना चाहती हूँ क्या यह सूर्य कहाँ प्रतिष्ठित रहता है? उन्होंने कहा सूर्य यह गन्धर्व लोको में ओतप्रोत हो जाता है-। हमारे यहां देखो, यह जो नाना प्रकार लोकलोकान्तर मानो अपने में गृहित - हो रहे हैं। इन लोकों में ब्रह्मणे अमृतं यह सौर मण्डल का जो अधिपथ्य कहलाता है। वह मुनिवरोंदेखो !, उसको गन्धर्व कहा जाता है। हमारा यहां लोकों की गणना करतेकरते माला बनने लगती है तो माला का अन्तिम मानो - देखो, मनका बन करके वह गन्धर्व कहलाता है। इस गन्धर्व में सब ओतप्रोत हो जाते हैं-। मेरे पुत्रोंदेखो !, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया तो देवी ने कहा,ष्ठित हैयह गन्धर्व कहाँ प्रति !प्रभु- उन्होंने कहा गन्धर्व इन्द्र लोकों में प्रतिष्ठित हो जाता है। यह इन्द्र एक लोक भी कहा जाता है। इन्द्र नाम परमपिता परमात्मा का भी है। इन्द्र नाम सूर्य का भी है। इन्द्र नाम राजा का भी है तो इन्द्र नाना प्रकार से देखो, इन्द्र की प्रतिष्ठा अपने में इन्द्रित होती दृष्टिपात होती रही है।

तो आओ, मेरे प्यारेआज का हमारा वाक् क्या कह रहा है ! क्या हम मुनिवरोंदेखो !, अपनी गम्भीर मुद्रा में प्रवेश करते हुए देखो, उस आभा में रत्त हो जाएं तो मुनिवरोंदेखो !, जब चाक्राणी गार्गी ने यह प्रश्न किया क्या गन्धर्वां भूतं ब्रह्म लोकां हे प्रभु ! यह मानो देखो, इन्द्र कहाँ प्रतिष्ठित होता है? उन्होंने कहा इन्द्र प्रजापति में होता है। इसीलिए प्रजापति ही मानो प्रत्येक मानव प्रजावान बनना चाहता है प्रत्येक मानव की यह इच्छा है कि मैं प्रजावान बनूं, एको बहुधा भूतं ब्रह्मे एक से बहुत हो जाऊं। इसीलिए देखो, उसकी कामना जागरूक होती रहती है। तो इसीलिए उसे प्रजा देखो, हमारे यहां दो प्रकार के सन्तानों का जन्म होता रहा है। एक प्रजा है एक सन्तान कही जाती है परन्तु देखो, जो प्रजां भूतं जो प्रजा मेरे प्यारेदेखो !, जो प्रजापति पालक है। वे प्रजा में ओतप्रोत रहता है-। वह इन्द्र प्रजापति में प्रतिष्ठित हो जाता है। तो मेरे प्यारेदेख !ो, इन्द्रों भवं ब्रह्मा लोकां विश्वंजन्म ब्रहे देवत्वाहं तो वेद का वाक् कहता है। क्या यह जो प्रजापति है मेरे प्यारेप्रोत हो -इन्द्र प्रजापति में ओत !

,जाता है देखो, इसीलिए देखो, प्रजा में इन्द्र में इन्द्र ही ओतप्रोत रहने वाला है-। मेरे पुत्रोंचाक्राणी ने ! कहामैं व्याख्या !प्रभु- ,नही चाहती मैं यह जानना चाहती हूँ कि यह प्रजापति कहाँ प्रतिष्ठित रहता है उन्होंने कहा यह जो प्रजापति है, प्रजापति मानो देखो, याग में प्रतिष्ठित हो जाता है। तो यहां याग का वर्णन आता है, यागां भूतं ब्रह्मा लोकां मेरे प्यारेजितना भी ! मानव का सुक्रियाकलाप है, सुकर्म है, इन सर्वत्र का नाम याग कहा जाता है। याग की विवेचना करते हुए ऋषि ने कहा है कि यह संसार ही एक प्रकार की यज्ञशाला है, इसमें परमपिता परमात्मा मानो देखो, ब्रह्मा बन करके इसका संचालन कर रहे हैं। आत्मा बन करके उसको भोगतव्य में प्राप्त हो रहा है। तो मानो देखो, आत्मां ब्रहे यह याग में प्रतिष्ठित हो जाता है। यह प्रजा ही याग में रहती है क्योकि यदि शुभ कार्य शुभ क्रियाकलाप नही रहेगा तो प्रजा भी नही रहेगी तो इसीलिए प्रजा को स्थिर रहने के लिए मुनिवरोंदेखो !, यागां भूतं याग चाहिए। तो मुनिवरोंदेखो !, चाक्रार्णी गार्गी ने पुनः प्रश्न किया प्रभु! यह याग कहाँ प्रतिष्ठित रहता है? कहाँ प्रतिष्ठा को प्राप्त होता रहता है? उन्होंने कहा याग दक्षिणा में रहता है, दक्षिणा ममं ब्रह्मे देवत्वां हमारे यहां दक्षिणा यज्ञमान देता है, और **दक्षिणा का अभिप्रायः यह है कि जो यज्ञमान के अन्तःकरण में जो त्रुटियां है, वह उनको जब दक्षिणा में परिणत कर देता है तो उसका याग जब सफल होता है** द्रव्य देना कोई दक्षिणा नही हैं, द्रव्य देना तो उसके उदर की पूर्ति का एक साधन बना हुआ है, परन्तु दक्षिणा का अभिप्रायः यह कि जब तक अन्तःकरण की त्रुटियां नही जाएगी, हृदय से तब तक मुनिवरोंदेखो !, याग सफलता को प्राप्त नही होगा तो वेद का ऋषि कहता है, मन्त्र कहता है यागां भवितं यागाम् दिव्यं ब्रह्वा कृतं हे यज्ञमानतू अपने में दिव्य बन !। हे यज्ञमान अपनी त्रुटियों को त्याग करके उन्हें !तू दक्षिणां ब्रह्मे आचार्य को प्रदान कर जो यम है, जो यमराज कहलाता है। जो मृत्यु को विजय करने वाले हैं। उन्हें तू मानो यज्ञ में परिणत करता हुआ चल, मेरे प्यारेदेखो !, उस समय ब्रह्मणे चाक्राणी ने पुनः प्रश्न किया प्रभु मैं इससे आगे आगे मैं यह और जानना चाहती हूँ क्या यह मानो देखो, दक्षिणा कहाँ प्रतिष्ठित रहती है? उन्होने कहा दक्षिणा हृदय में रहती है। इसीलिए मानव का हृदय पवित्र होना चाहिए, और हृदय में जब पवित्रता आ जाती है। तो मानो अपने में अपनेपन को प्राप्त हो करके परमात्मा को प्राप्त हो जाता है। हृदयां गतं ब्रह्मे योगां वाचसुतं देवत्वां मानो देखो, यह हृदय ही श्रद्धा है, श्रद्धा में ही हृदय है। मेरे पुत्रोंदेखो !, उन्होंने कहा चाक्राणी अति प्रसन्न मत कर देना अन्यथा तुम्हारा मस्तिष्क नीचे गिर जाएगा उस समय चाक्राणी ने कहा शान्तं ब्रह्मे आगे प्रश्न नही किया तो बेटाविनिमय क्या क्योंकि प्रश्नकर्त्ता प्रश्न करता रहेगा अन्त -विचार ! ,में उत्तर देने वाला मौन हो जाता है और जब मौन हो जाता है। तो प्रश्नकर्त्ता को अभिमान हो जाता है, और अभिमान ही संसार में मृत्यु है, इसीलिए देखो, मृत्युंजम ब्रह्मे अति प्रश्न करना भी मृत्यु का मूल बन जाता है। तो मेरे प्यारेदेखो !, विचारवेत्ताओं ने कहा क्या यह संसार परमात्मा का हृदय है और इस हृदय से परमात्मा के हृदय से अपने हृदय का मिलान करते हुए अपने मानवीयतव को प्राप्त हो जाना चाहिए। मेरे प्यारेदेखो !, ब्रह्मणे व्रतं देवाम् ऋषि कहता है, याज्ञवल्क्य कहता है कि हृदय यह संसार का परमात्मा का हृदय है। मानव के हृदय का जब दोनों का परस्पर समन्वय हो जाता है। तो परमात्मा से मिलान हो जाता है मानो देखो, हृदय, हृदय से श्रद्धा, श्रद्धा से दक्षिणा, दक्षिणा से याग, याग से प्रजापति, प्रजापति से इन्द्र, इन्द्र से गन्धर्व, गन्धर्व से सूर्य और सूर्य से चन्द्रमा मानो देखो, इस प्रकार मुनिवरोंदेखो !, ध्रुवा से ऊर्ध्वा में और यह ध्रुवां ब्रह्मणे मुनिवरोंदेखो !, यह संसार पृथ्वी में और पृथ्वी मुनिवरोंदेखो !, जल में और जल अग्नि में और अग्नि वायु में और वायु मुनिवरोंदेखो !, मह अमृति अवकाश में प्राप्त हो जाती है। तो ऋषि ने बेटाइस प्रकार ध्रवा से ऊर्ध्वा में ऊर्ध्वा से ध्रुवा ! ,ईमें चाक्राणी को वहाँ भ्रमण कराया वह अपने में मौन हो ग और उन्होंने कहा धन्य है प्रभु! आप ने मेरे मानो देखो, आपने मेरे को प्रकाश में पंहुचाया है, और मैं प्रकाश में पंहुच गई हूँ प्रभु! आपको धन्य है। क्योंकि,आप ब्रह्मवेत्ता हैं !प्रभु- तो मेरे प्यारे,वह अपने आसन पर विद्यमान हो गई ! और गार्गी ने यह कहा कि हे ब्रह्मवेत्ताओंयह याज्ञवल्क्य मुनि महाराज तुम !

सब ब्रह्मवेत्ताओं में सर्वश्रेष्ठ कहलाते हैं। अब देखो, इनके द्वारा प्रश्न करो या न करो परन्तु देखो, यह आदरणीय हैं, और यह अपने एक सहस्र गऊए जो ले गएं हैं वह प्रशंसनीय है मेरे प्यारेगऊ तो !याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने यह कहा क्या हे देवी ! मैं इसीलिए ले गया हूँ। क्या विद्यालय में उनकी आवश्यकता है, ब्रह्मचारियों के दुग्ध आहार करने के लिए मैं गऊओ ले गया हूँ, मैं ब्रह्मवेत्ता जान करके नही तो मेरे प्यारेकह रहा है कि हम परमपिता विनिमय आज का हमारा वाक् क्या-विचार ! आज का वाक् आज के वाक् !परमात्मा की महिमा अथवा उसके ज्ञान और विज्ञान को जानने का प्रयास करें यह है बेटा उच्चारण करने का अभिप्रायः यह क्या इस आत्मा के तीन गृह होते हैं एक स्थूल, एक सूक्ष्म, एक कारण मानो देखो, इसमें आत्मा सदैव रमण करता रहता है, और मुनिवरोंदेखो !, यह आत्मा को जानने के लिए संसार को जानने के लिए मैंने कुछ सूक्ष्म सा अपना वाक् प्रगट किया है। समय मिलेगा तो शेष चर्चाएं कल प्रगट करेंगें। आज का वाक् समाप्त। अब वेदों का पठनपाठन-। ओ३म् देवा आभ्यां मनु गायन्त्वा यम मया। ओ३म् देवाः यम सर्वां गतं आभ्यां मनाः।

१२   २० ०९ १९९२

जीते रहो! देखो, मुनिवरोंआज हम तुम्हारे समक्ष !, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठनपाठन किया-, हमारे यहां परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणागन गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी हैं, और जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है। उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वे परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं। वे परमपिता परमात्मा आनन्दमयी है, और उसका ज्ञान और विज्ञान भी अनन्तमयी माना गया है। क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके, वर्तमान के काल तक नाना विज्ञानवेत्ता हुए हैं। परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नही हुआ, जो इस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान के सीमाबद्ध कर सके। तो वे परमपिता परमात्मा सीमा से रहित है, और वह सीमा में आने वाले नही हैं, इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा का सदैव गुणगान गाते रहते हैं। परम्परागतों से ऋषि,न मस्तिष्कों को एकाग्र करते हुएमुनि अपने म-उन्होंने परमपिता परमात्मा की सम्बन्ध में अथवा उनकी प्रतिभा को अपने में लाने का प्रयास किया है, और प्रायः करते रहे हैं। क्योंकि जब भी एकान्त स्थली में विचारक अपने में विद्यमान होते हैं। तो वे परमपिता परमात्मा की महिमा का यशोगान गाना प्रारम्भ करते हैं, और उसके ज्ञान और विज्ञान के ऊपर प्रायः अन्वेषण करते रहे हैं। तो इसीलिए आज का हमारा वेदमन्त्र यज्ञनं ब्रह्मा यज्ञ प्रह्वा लोकां वेद का वाक् कहता है कि मानव अपने में उस परमपिता परमात्मा का संसार रूपी यज्ञशाला है। इसके ऊपर प्रायः हम विचार,विनिमय करते रहे हैं- आचार्यों का यह कथन रहा है, क्या वह जो परमपिता परमात्मा जो संसार रूपी यज्ञशाला का अपने में व्यवधान कर रहा है। अपने में इसे धारण कर रहा है, उस धारयामि प्रभु को हमें विचारना है।

तो आओ, मेरे प्यारेलिए प्रेरित कर रहा है आज का हमारा वाक् हमें उस आँगन के !। क्या यज्ञनं ब्रह्मा यज्ञप्रहे हमारे आचार्यों ने बेटाभिन्न प्रकार के यागों का आयोजन किया है और मा-भिन्न !नो देखो, उसमें नाना प्रकार के यज्ञों का व्यवधान करने के पश्चात उन्होंने यह कहा कि यज्ञनम ब्रहे विष्णु क्या यज्ञ अपने में विष्णु कहलाता है, और विष्णु शब्द जो पालन करने वाला है। जैसे जो भी पालन करने के मूल में आता है, उसका नाम विष्णु है, इसीलिए यज्ञ भी हमारे यहां विष्णु के रूप में वृणित किया गया है। अथवा उसके ऊपर विचारविनिमय -करता रहा है।

तो आओ, बेटा,विशेष विवेचना नही प्रगट करना चाहता हूँ मैं तुम्हें याग के ऊपर तो कोई ! केवल यह कि हमारे आचार्यों ने यागों ऊपर अपना बड़ा अनुसन्धान किया है, और भिन्नभिन्न प्रकार के यागों का चयन होता रहा -है। तो वैदिक साहित्य कहता है। त्रिवर्धनं ब्रह्मा, यह संसार त्रिवर्धा में रत्त रहने वाला त्रिवर्धा कहलाता है। मानो यह संसार तीन प्रकार के विभागों में रत्त हो रहा है, पालन करने वाला रचाने वाला और जिसके द्वारा मुनिवरोंरची ! जाती है। यह त्रिवर्धा कहलाता है। जैसे ओ३म् की तीन मात्रा कहलाती है। जैसे अ, ऊ और म यह तीन मात्राओं में बेटाजितना भी अक्षर बोध है !। वह इसी के आश्रित रहता है। इसी प्रकार त्रि अमृतां बेटार्भु भुवः स्वः जब ! पाठन में जा-हम गायत्राणी छन्दों के पठनते हैं। तो र्भू भुवः स्वः यह तीन मानो देखो, व्याहृतियों का उद्गीत गाते हैं। तीन व्याहृति में इसमें ऋणीत कर देते हैं। तो यह संसार तीन प्रकार की व्याहृतियों में रत्त हो रहा है। तो तीन प्रकार का बेटार्भू भुवः स्वः यह तीन प्रकार का लोक माना जाता है और तीन ही ! प्रकार के मुनिवरोंपरमाणु होते ! हैं तरलतव और देखो, और गुरूतव और तेजोमयी इन तीन प्रकार के परमाणुओं के ऊपर बेटाविज्ञान अपने में !

एक !नृत्त कर रहा है इसी प्रकार यह जो संसार की रचना होती है यह भी तीन प्रकार के रूपों में होती हैं बेटा रचाने वाला एक रचने वालीवस्तु और एक मानो जिससे रचाया जाता है देखो, भोगतव्य करने वाला आत्मा है, और बनाने वाला वह चैतन्य देव है, और मुनिवरोंदेखो !, प्रकृति अपने आप में रचित कहलाती है। तो इसी प्रकार यह संसार त्रिवर्धा कहलाया जाता है। इसीलिए यज्ञशाला का जब भी यज्ञमान अपने में निर्माण करता है। तो तीन प्रकार की शैली बनाता है। तीन प्रकार का उसकी मेखला बनाता है, और मेखला बना करके देखो, र्भु भुवः स्वः यह तीन मेखला के रूप में परिणत होती हैं इसी प्रकार मेरे प्यारेदेखो !, यह तीन भागों में विभक्त होने वाला जगत अपने में अपनेपन का यशोगान गा रहा है। तो आज मैं बेटात्रिवर्धा में विशेष चर्चा नही केवल यह कि हम ! परमपिता परमात्मा जो हमारा देव है। उसके ऊपर हम सदैव विचारविनिमय करते रहें आओ-, मेरे प्यारेआज का ! ,हमारा वेदमन्त्र कहता है यमं ब्रह्मा यमं ब्रह्रे कृतं देवां भूतं ब्रह्मा अग्नि यह जो अग्नि है ,यह अपने में महान कहलाती है। यह तेजोमयी है इसी तेजोमयी को ले करके अपने में व्यवधान होता रहता है।

आओ, बेटा,आज मैं तुम्हें एक ऋषि के आसन पर ले जाना चाहता हूँ ! जहाँ ऋषिमुनियों का प्रायः अपने - मुझे वह काल स्मरण आता रह !विनिमय होता रहा है मेरे प्यारे-में विचारः है। क्या भगवान राम त्रेता के काल में बेटादेखो !, नित्यप्रति उनके यहां याग होता रहा है, और वह यागों में अपने में परिणत रहे हैं, नाना ऋषिमुनि - अपने में स्थलियों को प्राप्त हो करके और अपने याग में अपने को ले जाने का उन्होंने प्रयास किया है। मेरे प्यारे ! मुझे वह काल स्मरण आता रहा है, जब प्रातःकालीन भगवान राम अपनी प्रातःकाल की यज्ञशाला में देव याग में परिणत होते रहें है। तो देव याग करते थे, अपने में उद्गीत गाने वाले कहते हैं, कि यज्ञनं ब्रह्मा हे राष्ट्रवेत्ताओं तुम्हारे राष्ट्र में मानो यह यशोगान होना चाहिए। तुम्हारा राष्ट्र मानो देखो, याग में होना चाहिए। जब राष्ट्र में होता है, राजा जब याज्ञिक होता है, तो वह मानो प्रजा भी मानो याग में परिणत हो जाती है। तो उन्होंने कहा यागां भविते ब्रह्मा हे प्रजाओं,तुम याज्ञिक बनो ! और मेरे राष्ट्र में कोई गृह ऐसा न हो जिस गृह में याग न होता हो, मेरे प्यारेदेखो !, भगवान राम अपने में घोषित करते रहे हैं। कर्मवेत्ताओं को राष्ट्रवेत्ताओं को अपना निर्णय देते रहे हैं कि तुम अपने राष्ट्र में घोषणा करो, कि तुम अपने राष्ट्र में प्रत्येक गृह में से सुगन्धि आनी चाहिए, और वह सुगन्धि क्या है? वह सुगन्धि है, विचारों की सुगन्धि वह सुगन्धि है, साकल्य की सुगन्धि वही अन्तरिक्ष को बेटाद्यौ मण्डल को ऊँचा ! बनाता है। मेरे प्यारेदेखो !, मैं जब विज्ञान के वांगमय में प्रवेश होता हूँ, तो मुझे बेटातत्त्व मुनि महाराज का ! ,आश्रम भी प्रायः स्मरण आता है और जब मैं और गम्भीरता में जाता हूँ। तो राम ने एक समय बेटा अमृथं विजय ! याग किया था हमारे यहां यागों का प्रकरण कई प्रकार से यागों में परिणत होता रहा है। मेरे पुत्रोंदेखो !, यागाम् भविते वर्णं ब्रह्मे यागा हे याज्ञिक! तू आ और अपने प्रभु का अपने में ध्यानावस्थित हो करके तू अपने साधक बन करके साधना में परिणत हो जा। तो मेरे प्यारे कहता है कि हमें याज्ञिक बनना चाहिए। इस प्रकार वेद का मन्त्र ! और प्रत्येक गृह में सुगन्धि होनी चाहिए। जैसे हम राष्ट्र और समाज और अपने गृह को ऊँचा बनाना चाहते हैं, तो प्रत्येक गृह में देखो, सुगन्धि होनी चाहिए। मेरे प्यारे महानन्द जी मुझे रूढ़िवाद की प्रायः चर्चा प्रगट करते रहते हैं। एक मानव सुखद बनना चाहता है, और सुखी बनने की उसकी प्रबल इच्छा है। तो वह अपने में याज्ञिक बने अपनी प्रत्येक इन्द्रियों को याग में साकल्य में ले जाएं। जिससे देखो, इसकी प्रत्येक इन्द्रियाँ अपने में इन्द्रित होती हुई, और वह अपने याग में परिणत होता रहे।

तो आओ, मेरे प्यारेदेखो !, भगवान राम प्रातःकाल उनके यहां याग होता और याग होने के पश्चात उनका उपदेश प्रारम्भ होता और वह अपने उपदेश में यह कहा करते थे क्या हमें अपने राष्ट्र को प्रायः ऊँचा बनाना है, तो प्रत्येक गृह में सुगन्धि होनी चाहिए। मेरी माता हृदय से और वाणी से मन मस्तिष्क को एकाग्र करते हुए, अपने में

याज्ञिक बनें, और वह उद्घोष करते रहें, यागाम् भविते यागाम् दिव्यं ब्रह्मा क्या हम अपने में याज्ञिक बने रहें। तो ऐसा मुनिवरोंदेखो !, भगवान राम प्रातःकालीन अपने याग करने के पश्चात उनका उपदेश प्रारम्भ होता और वह उपदेश में यह कहा करते सम्भो ब्रह्मणे रायम् अस्वति देवत्वाम् लोकां ऐसा मानो देखो, भगवान राम का उपदेश प्रारम्भ रहता और वह यह कहा करते कि प्रत्येक राजा के राष्ट्र में यह अपने को ऊँचा बनाना राष्ट्र चाहता है। तो राजा के राष्ट्र में सुगन्धि होनी चाहिए। राजा अपने में सुगन्ध विचारों की सुगन्धि बहुत अनिवार्य है। क्रियाकलापों की सुगन्धि बहुत अनिवार्य हैं। क्योंकि दोनों एक दूसरे के पूरक वृत्तियां कहीं जाती हैं। तो मेरे प्यारेदेख !ो, वेद का वाक् कहता है सम्भव वर्णनं ब्रह्मे कृतं देवाः क्या परमपिता परमात्मा का वह याग अपने में बड़ा प्रबल रहता है।

आओ, बेटामुझे देखो !, मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब भगवान राम प्रातःकालीन इस प्रकार का उपदेश देते रहे हैं। मेरे प्यारेदेखो !, इसी उपलक्ष्य में महर्षि वैशम्पायन अपने में विचारविनिमय करते रहे और - महर्षि वैशम्पायन विचारते रहें क्योंकि वह इससे पहले दिवस में महाराजा अश्वपति के यहां वृष्टि याग में से उनका ,पर्दापण हुआ और वह न्यौदा में से वेदमन्त्रों का उद्गीत गाते हुए, अपने में उद्गीत गाने लगे परन्तु देखो, अपने में निमटारा नही हो सका, परन्तु मन्त्रों में आ रहा था चित्रम् देवां चित्रम् रथं ब्रह्म चित्रं रथे कृतं देवत्वाहं मेरे प्यारे ! महर्षि वैशम्पायन अपने में यह विचार रहे थे कि मुझे मानो देखो, अपने चित्रों को ले जाना है। चित्रों में दृष्टिपात करना है, यह यज्ञमान का रथ बन करके द्यौ लोक में कैसे जाता है। तो इसके ऊपर बेटाविनिमय -वह विचार ! देखो !करने लगे क्योंकि प्रत्येक शब्द के साथ में स्वाहाः के साथ में जब मेरे प्यारे, वेदमन्त्रों की तरंगों के ऊपर वेदमन्त्रों के एक समय ओतप्रोत हो करके द्यौ लोक में प्-रवेश कर जाती हैं। तो ऐसा मुनिवरोंदेखो !, उन्होंने अपने में चिन्तन किया, तो महर्षि वैशम्पायन चिन्तन में लग गएं क्या यज्ञमान के रथ को मैं कैसे दृष्टिपात करूं। मेरे प्यारेदेखो !, निद्रा की गोद में चले गएं, मध्य रात्रि में उन्हें जागरूक हुए तो उसी चिन्तन में लग गएं और वेदमन्त्र कहता है, यज्ञनं ब्रह्मे यज्ञा ब्रहे अर्तं देवत्वां यज्ञमानाः यज्ञमान का चित्र बन करके द्यौ लोक में जाता है। उसे मैं कैसे दृष्टिपात करूं? तो मेरे प्यारेदेखो !, महर्षि वैशम्पायन इस चिन्ता में लग गएं, परन्तु जब गम्भीर मुद्रा में मुद्रित हो गएं। तो बेटान नही रहा वह समाप्त हो गएं प्रातः दिवस आ गया तो महर्षि विभाण्डक मुनि रात्रि का ध्या ! ,महाराज का एक आश्रम था विभाण्डक मुनि महाराज ने अपने शिष्य श्वेतकेतु से कहा जाओ, हे ब्रह्मचारीदेखो !, ऋषि ने अपने आसन को नहीं त्यागा है क्या कारण है? तो बेटाद !ेखो, श्वेतकेतु ऋषि महाराज भ्रमण करते हुए जब वह वैशम्पायन के द्वार पर पंहुचे उन्होंने वर्णनं ब्रह्वा कृतं वे शान्त मुद्रा में मुद्रित थे वह वहाँ से देखो, ऋषि के द्वार पर आए उन्होंने कहा पर्भु ऋषि चिन्तन में हैं, और शान्त मुद्रा में मुद्रित हो रहे हैं। मेरे पुत्रोंदेखो !, महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज ने अपने आश्रम को त्यागा, और त्याग करके जब ऋषि के द्वार पर पंहुचे, तो ऋषि वरणं ब्रह्मा देवत्वां लोकाः उन्होंने बेटादेखो !, अपने में अपनेपन को ध्यानावस्थित करने लगे तो मुनिवरोंदेखो !, अमृतं ब्रह्मा देखो, जब वह भी चिन्तन में लग गएं। तो चिन्तन में लग गएं तो कहीं से भ्रमण करते हुए बेटादेखो !, महर्षि वैशम्पायन के आश्रम में बेटादेखो !, ब्रह्मचारी महर्षि प्रवाहण, महर्षि शिलभ, महर्षि दालभ्य, महर्षि श्वेतकेतु और भी नाना ऋषिवर बेटा भ्रमण करते हुए कवन्धि इत्यादि उनके आश्रम !में पहुचे मेरे प्यारेदेखो !, उन्होंने कहा ऋषिवर ! ?कैसे शान्त मुद्रा में हैं उन्होंने कहा भगवनएक वेदमन्त्र हैं और वेदमन्त्र के ऊपर अन्वेषण कर रहे हैं !। वेदमन्त्र कहता है चित्रं रथं ब्रह्मा चित्रं दिव्यां देवत्वां लोकाः उन्होंने कहा कि चित्रं देवं ब्रह्मा मैं उस चित्र को दृष्टिपात करना चाहता हूँ। जिस चित्र में मेरे यज्ञमान का चित्र बन करके द्यौ लोक में जाता है। उन्होंने कहा तो बहुत प्रिय। तो बेटायह वैसे विचार में नही !वह अपने में चिन्तन करने लगे परन्तु ब्रह्मचारी कवन्धि ने यह कहा क्या हे प्रभु ! आयेगा देखो, महर्षि शिकामकेतु उद्दालक के यहां गमन करते हैं, और उद्दालक मानो इसका निर्णय दे सकेंगे, या

एक याग का आयोजन किया जाएं, अयोध्या में चलो वहाँ एक यज्ञ का आयोजन करेंगें, और वहाँ यह सब वस्तु निर्णय हो जाएगी। तो मेरे प्यारेदेखो !, ब्रह्मचारी कवन्धि के वाक्यों को उन्होंने विचार एक विषय अवृत किया वह अपने में विचार,मुझे ऐसा स्मरण आ रहा है !विनिमय करने लगे मेरे प्यारे- क्या विचारविनिमय करते हुए - सांयकाल का समय हो गया तो निर्णायक यह हुआ क्या यज्ञनं ब्रहे कृतं देखो !मुनिवरों, चलो वैशम्पायन के यहां गमन करते हैं। तो मेरे प्यारेदेखो !, वह वैशम्पायन मुनि के यहां उन्होंने गमन किया और वैशम्पायनं ब्रह्मे मुनिवरों ! देखो, वह ब्रह्म उद्दालक गोत्र में एक शिकामकेतु उद्दालक ने ऋषि,मुनियों का स्वागत किया- क्योंकि हमारे यहां अतिथि सेवा का बड़ा एक अपना महत्व माना गया है। अपने में बड़ा महत्वदायक है। तो मुनिवरोंदेखो !, उनके द्वार पर पंहुचे अमृतं ब्रह्मा लोकां अमृतां देवत्वां ब्रहे वाचन्नम देवा सुप्रहा ऐसा वाक् उच्चारण करके बेटाशिकामकेतु ! ,कैसे आगमन हुआ है !उद्दालक मुनि ने कहा कहो भगवन उन्होंने नाना प्रकार का अतिथि करने के पश्चात अपना निर्णायक दिया कि कैसे तुम्हारा आगमन हुआ है? उन्होंने कहाआज हम प्रातःकालीन न्यौदा में से मन्त्रों का !प्रभु- अध्ययन कर रहे थे। तो मन्त्रों में यह यह मन्त्र आया अमृतं देवं यज्ञमानं प्रह्वा देवत्वां चित्रो रथा यज्ञमान का चित्र बन करके द्यौ लोक में जाता है। उन द्यौ लोक वाले चित्र को हम दृष्टिपात करना चाहते हैं। उन्होंने कहा बहुत प्रिय। विराजमान हो जाओ। वह विराजमान हो गएं चिन्तन करने लगे तो उन्होंने बेटाकहा आओ !, मेरे यहां नित्यप्रति याग होता है, और मैं उसके ऊपर अनुसन्धान करता रहता हूँ। तो बेटाशिकामकेतु उद्दालक ने अप !नी यज्ञशाला में नाना प्रकार की यज्ञशाला का उन्होंने दृष्टिपात कराया, उन्होंने कहा यह मेरे यहां यज्ञशाला है। जहाँ आत्मा के ऊपर चिन्तन होता रहता है, और जहाँ आत्मा के ऊपर आत्मीयता का प्रायः मुझे दर्शन होता रहता है, और मैं याग के ऊपर विचारता रहता हूँ। उन्होंने कहा धन्य है। प्रभु आपने कितनी गति की है, इसमें तो शिकामकेतु उद्दालक ने बेटादेखो !, यन्त्र का निर्णायक देने लगे कि यन्त्र मेरे यहां इस प्रकार का है। जहाँ मेरे पिता,महापिता पड़ा पिता मानो मेरे महापिताओं के यन्त्रों में मुझे दर्शन होते हैं- और वह यन्त्र में मानो देखो, यज्ञशाला का रथ बन करके इस यज्ञशाला में विद्यमान हो करके हम याग करते हैं। उसका रथ बन करके द्यौ लोक में जाता है। तो प्रभुमैं उस द्यौ लोक वाले रथ को मैं सदैव दृष्टिपात करता रहता हूँ !। तो मेरे प्यारेदेखो !, उन्होंने यन्त्र के द्वारा ले गएं कि यह जो यन्त्र हैं, इसमें यह विशेषता है क्या हम मानो देखो, वेदमन्त्रों को विचार-विनिमय प्रारम्भ करते हैं। विज्ञान के वांगमय में ले जाते हैं, तो मानो देखो, यज्ञमान का और यज्ञशाला का रथ बन करके अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके द्यौ में प्रवेश हो जाता है, और वह द्यौ में अप्रणां ब्रह्मा देवत्वां वह द्यौ में परिणत होता है। अपने में अपना व्यवधान करता रहता है।

तो विचार आता है बेटादेखो !, उन्होंने अपना निर्णय दिया ऋषि ने क्या मेरे यहां नाना प्रकार के यज्ञशालाओं में एक यज्ञशाला एक यन्त्र है, याज्ञिक यन्त्र उसे कहते हैं यहां मेरे पिताचित्र आते हैं महापिताओं के-। मानो देखो, वह चित्र रथ में विद्यमान हो करके द्यौ में प्रवेश करते हैं तो मेरे प्यारेउनको नाना प्रकार के चित्र ! !दृष्टिपात आने लगे उन्होंने कहा हे ऋषिवर यह मेरे यहां नाना प्रकार का विज्ञानमयी देखो, जीवन बनाया जाता है। तो विज्ञानधाराओं को विचारने से यह प्रतीत हुआ है तो मेरे पुत्रोंदेखो !, ऋषिवर अपने में शान्त होने लगे ऋषिवर ने कहा धन्य है भगवनआपने हमारे अज्ञान और प्रकाश और तरंगों में तरंगित करा दिया है !। उन्होंने कहा वर्णनं ब्रह्मे लोकां मेरे पुत्रोंमुझे कुछ ऐसा स् !मरण आ रहा है, क्या मुनिवरोंदेखो !, यागाम् भविते शिकामकेतु उद्दालक ने नाना प्रकार के यन्त्रों को प्रायः दृष्टिपात कराया, दूसरे यन्त्र में उनके सौवें महापिता तक के चित्र प्रायः देखो, यन्त्र में प्रवेश हो रहे थे, उन्होंने कहा यह चित्रावलियाँ आ रही हैं, और इन चित्रावली मानो देखो, याग के सम्बन्धि हैं उन्होंने बेटा,उनका बड़ा यशोगान गाया और वह अपने में मौन हो गएं ! परन्तु नाना प्रकार के विज्ञान की आभाओं

में रत्त होते ही बेटामन मस्तिष्क को उसमें ले जाने का प्रायः प्रयास किया !। तो मुनिवरोंदेखो !, आज मैं विशेष चर्चा इसमें न प्रगट करता हुआ केवल यह कि मुनिवरोंदेखो !, प्रत्येक मानव को अपने सुखद और आनन्द का प्रायः अनुभव करना चाहता है। उसी में रत्त रहना चाहता है। तो परमपिता परमात्मा आनन्दमयी है। परमपिता परमात्मा अनन्तमयी है, तो हमें उस देव की उपासना करते हुए उसके ज्ञान और विज्ञान के ऊपर अन्वेषण करते रहें। तो मेरे पुत्रोंदेखो !, यह ऋषि अमृतं ब्रह्मा अपने में ब्रह्म का यशोगान गाने वाला है, और यशोगान गाता हुआ अपने में महानता को प्राप्त होता रहा है।

तो आओ, मेरे प्यारे मुझे स्मरण आता रहा है उन्होंने नाना प्रकार के यन्त्रों को !दृष्टिपात कराया अन्त में ऋषिवर अपने में मौन हो गएं और मौन हो करके मुनिवरोंदेखो !, वह विराजमान जब हो गएं तो उन्होंने महर्षि श्वेतकेतु ने कहायह विज्ञान की उपलब्धि कहाँ से तुम्हें प्राप्त हुई है !प्रभु-। क्योंकि तुम्हारा जो गोत्र है, वह उद्दालक गोत्र कहलाता है और उद्दालक गोत्र का यह जो गोत्र है यह बड़ा महान गोत्र रहा है। यह प्रेरणा आपको कहाँ से प्राप्त हुई, क्योंकि ब्रह्मा भी अपने में ब्रह्मयाग करने वाले हैं। विष्णु अपने में विष्णु याग करता है और देवता जन अपने में देवपूजा करते हैं और नाना प्रकार के व्रतों में रत्त हो करके वह यज्ञ में परिणत हो जाते हैं। तो मेरे पुत्रों ! देखो, जब उन्होंने इस प्रकार वर्णन किया तो सम्भूति ब्रह्मा सम्भूति लोकां सम्भूति वर्णनं ब्रह्मे लोकां वर्चसुतः देवाः तो मेरे प्यारेदेखो !, मुझे स्मरण आ रहा है, तो मेरे प्यारेदेखो !, यागाम् भविते तो शिकामकेतु उद्दालक ने कहा कि जब मुझे जो यह प्रेरणा प्राप्त हुई है यह विज्ञान की यागों की जहाँ देखो, याग में नाना प्रकार का यन्त्रवाद मेरा द्यौ लोक में जाता है और यज्ञमान का रथ बन करके मेरे पिता महापिताओं का प्रायः दर्शन हो जाता है। मैं उन दर्शनों का प्रार्थी बना रहता हूँ। तो मुनिवरोंदेखो !, जब उन्होंने इस प्रकार का निर्णायक दिया अपना निर्णय दिया तो वह अपने में मौन भी होने लगे, परन्तु देखो, उसी व्यवधान में अमृतं उन्होंने कहाआप तो मौन हो गएं हैं !प्रभु-। हम नही जान पायें है। हम यह जानना चाहते हैं यह प्रेरणा आपको कहाँ से प्राप्त हुई? क्योंकि तुम्हारा जो गोत्र है, वह उद्दालक गोत्र कहलाता है और उद्दालक गोत्र के जितने भी ऋषि है सब ब्रह्मवेत्ता हुए हैं, वह विज्ञानवेत्ता नही हुए, वह तरंगेंवेत्ता नही हुए हैं इसीलिए हम यह कहते है। ब्रह्मा कृतं आपको यह प्रेरणा कहाँ से प्राप्त हुई, क्योंकि आपका जो गोत्र है, उद्दालक है, उद्दालक गोत्र में देखो, मुझे स्मरण है क्या तुम्हारा यह मानो देखो, एक सौ अस्सीवां वंश प्रारम्भ हो रहा है। तुम्हारा एक सौ अस्सीवां वंश प्रारम्भ हो रहा है। परन्तु देखो, उस गोत्र का जो निकास हुआ है, वह हरितत गोत्रों से हुआ है और हरितत गोत्रों में लाखों वंश चले गएं हैं। उनमें कोई ऐसा विज्ञानवेत्ता नही हुआ वह सब मानो तुम्हारे में ब्रह्मवेत्ता हुए हैं, और देखो, अमृतं देखो, हरितत गोत्र का जो निकास है। वह अंगिरस से हुआ है और अंगिरस गोत्र में भी लाखों वंशलज समाप्त हो गएं एक लाख पचास हजार के लगभग वंश चले गएं हैं। परन्तु उनमें कोई विज्ञानवेत्ता नही हुआ वह सब देखो, अपने में अपनेपन का व्यवधान करते हुए वह ब्रह्मवेत्ता हुए हैं, मेरे प्यारे,अंगिरस गोत्र का जो निकास हुआ है ! वह हरिवर्णो से हुआ है हरिवर्ण जो यह हैं यह भी बड़े विचित्र हैं और हिरवर्ण गोत्र जो निकास है, वह ब्रह्मा के पुत्र अथर्वा से हुआ है। तो मानो देखो, कोई ऐसा गोत्र नही हुआ जिनमें लाखों वंश समाप्त हो गएं हैं। लाखों वर्ष चले गएं हैं। परन्तु कोई ऐसा नही हुआ वह सदैव ब्रह्मवेत्ता हुए हैं। अपनी निष्ठा अपनी धारणा बनाते रहे हैं। परन्तु कोई ऐसा नही हुआ जो भौतिक विज्ञान या परमाणुवाद के ऊपर अन्वेषण करने वाला हो तो उन्होंने कहा कि जो ब्रह्मा के पुत्र जो अथर्वा हुए हैं, अथर्वा मानो देखो, अपने में मानो विज्ञान के युग में रहे हैं, यह विज्ञान में परिणत रहे हैं और विज्ञान मानो देखो, अपने में उड़ान उड़ता रहा है। तो मेरे पुत्रोंदेखो !, जब उन्होंने इस प्रकार अपना मन्तव्य दिया अपना निर्णायक दिया अपना निर्णय दिया तो मेरे प्यारेदेखो !, अपने में ब्रह्मव्रती शान्त हो गएं। मेरे पुत्रोंदेखो !, ब्रह्मं ब्रहे ब्रह्मा के पुत्र अथर्वा से

ले करके नाना वंशलज हुए हैं, और नाना गोत्रों में सब ब्रह्मवेत्ता और यह प्रेरणा आपको कहाँ से प्राप्त हुई? तो उस समय शिकामकेतु उद्दालक ने कहा क्या यह प्रेरणा मुझे मेरी पत्नी से प्राप्त हुई है। मेरी जो पत्नी है मानो देखो, यह वायु गोत्रीय कहलाती है और वायु गोत्रों में यागों का बड़ा व्यवधान रहा है। निर्णायक रहा है। अपने में इसीलिए मेरी पत्नी मुझे प्रेरित किया है जब यह मानो देखो, मेरे द्वार पर आई तो इन्होंने मुझे यह प्रेरणा दी कि याग करें, तो हम याग में परिणत हो गएं, मानो याग करते हैं याग के पश्चात विज्ञानशाला में विज्ञान के ऊपर चिन्तन करते हैं और चिन्तन करके मानो देखो, उसी से नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण करे हैं। हम जैसे स्वाहा किया जाता है तो अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके द्यौ में प्रवेश होता रहा है। तो उसे द्यौ स्वाहाः कह करके अपने में याज्ञिक बने हुए हैं। तो प्रत्येक मानव अपने में याज्ञिक बना हुआ है, और याग के ऊपर अन्वेषण करता रहता है। तो विचार आता रहता है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और देखो, अपने महा पुरुषों का अपने में दर्शन करते हैं। तो बेटादे !खो, विज्ञान अपने में इतना प्रबल और इतना मार्मिक माना गया है। तो इस प्रकार मुनिवरों ! देखो !जब उन्होंने अपना निर्णय दिया तो बेटा, अपने में महानता का दर्शन है, तो याज्ञिक बनना चाहिए। यज्ञोमयी विष्णु तो वेद का मन्त्र कहता है कि चित्रं रथं ब्रह्मा वह चित्र बन करके द्यौ लोक में प्रवेश होता रहा है। उन चित्रों का प्रायः हम अपने में दर्शन करने वाले बनें। तो आज हम देखो, मैं विशेष चर्चा न देता हुआ अब मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगें।

पूज्य महानन्द जीःम् देवां भू वर्णनं ब्रह्मा वाचन्नमा३ओ -। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभीअभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे-। जैसे सागर को गागर में भरण कराया जाता है तो इसी प्रकार वह भी अनोखी वार्त्ता प्रगट कर रहे थे ऋषिमुनियों का विज्ञान में जो जीवन रहा - ,है उनका विज्ञान कितना मार्मिक और कितना प्रबल रहा है। तो वह एकएक मानो अपने पूर्वजों के चित्रों का दर्शन - करते रहे हैं। आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ आज जहाँ हमारी यह आकाशवाणी जा रही है, वहाँ एक याग का आयोजन हुआ और मेरा अन्तरात्मा यज्ञमान के साथ रहता है, हे यज्ञमानतेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे ! क्योंकि जिस गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता है। वह गृह महान होता है और द्रव्य मानो देखो, याग जैसे क्रियाकलापों में जो परम्परागतों का यह क्रियाकलाप है सृष्टि के प्रारम्भ से विचारक इसके ऊपर विचारविनिमय - करते रहे हैं। अपने में अन्वेषण करते रहे हैं तो मैं अब विशेष चर्चा न देता हुआ आधुनिक काल का जो यह समय है। इसे मैं वाममार्ग का समय कहता रहता हूँ। जहाँ सुरा सुन्दरी में और द्रव्य की लोलुपता में मानव देखो, अपने को ले जा रहा है। उसी में रत्त हो रहा है। यह वाममार्ग इसीलिए क्योंकि उल्टे मार्ग पर गमन करने वाले को वाममार्ग कहा जाता है। तो आधुनिक काल में वर्तमान के काल में मानो यह मैं यह विशेषता में नही ले जाऊंगा, कटुता में भी नही ले जाऊंगा, विचारविनिमय क्या यह कि आधुनिक का-ल का प्रजा और राष्ट्र दोनों सूत्रों में सूत्रित हो रहे हैं। इसीलिए राजा का चाहिए क्या अपने राष्ट्र में देखो, अपने मानीवय पद्धति को अपनाने का प्रयास करे, और मानवीय पद्धति वही उसके जीवन में सुगन्धि प्रारम्भ हो जाती है। जैसे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने अभीअभी राम - का अपना उपदेश और राम की चर्चाएं की तो राजा देखो, राम के यहां प्रायः देखो, अयोध्या राष्ट्र में यह बहुत पुरातन काल में यह घोषणा की कि प्रत्येक गृह में याग होना चाहिए। सुगन्धि होनी चाहिए। वह वेदमन्त्रों की सुगन्धि के ऊपर अग्नि की धारा विद्यमान हो करके द्यौ में प्रवेश होनी चाहिए। तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव इन वाक्यों के ऊपर अपन विचार देते रहे, और परमात्मा का जो यह राष्ट्र है। यह अनन्त है, इस अनन्तमयी राष्ट्र में अपने विचारों को याग में ले जाएं, सुगन्धि में ले जाएं, जिससे प्रदूषण समाप्त हो जाएं। क्योंकि वर्तमान के काल में इतना प्रदूषण आ गया है। क्या आज से कुछ समय के पश्चात मानो देखो, श्वास लेने में भी मानो देखो, अपने में दुखित होता रहेगा,

ओर श्वास लेते ही मृत्यु भी हो सकती है। ऐसा मानो देखो, प्रदूषण इस संसार में परिणत हो गया है, और प्रदूषण के दो कारण है उनके कारणों में मानो देखो, अशुद्ध वाक् उच्चारण करना और उनके रहनसहन के खान पान के - ,पद्धतियाँ भ्रष्ट होने से मानो प्रदूषण का जन्म होता है और वह इस प्रकार का होना चाहिए हमारा विचार हमारा अन्नाद भूतं पवित्र होना चाहिए। हमें मानो देखो, दूसरे के रक्त को जब पान करनें में सुरा में लगे रहते हैं, तो उससे प्रदूषण का जन्म होता रहता है। यह प्रदूषण नही होना चाहिए। हमारा आहार और व्यवहार हमारा जीवन पवित्रता में पवित्रता की आभा में रत्त हो जाएं एक मुझे यह वाक् उच्चारण करना है, प्रदूषण यह जो नाना प्रकार की ईश्वर के नाम पर नाना प्रकार की रूढ़ियाँ बनी हुई है, कोई मोहम्मद के मानने वाला है, कोई ईसा के मानने वाला है, कोई नानक के मानने वाला है, परन्तु देखो, एक दूसरे के विचारों में रक्तभरी क्रान्ति का संचार आ रहा है, तो वह जो विचार है वह दूषित वायुमण्डल को जन्म देते हैं, इसीलिए देखो, एकोकी विचार राजा का कर्तव्य है, क्या दार्शनिक बन करके राजा अपने राष्ट्र मे दार्शनिकता का प्रसार करे। जिससे मानव की वाणी पवित्र हो जाएं मानव का रहन विचार पवित्र हो जाएं। आहार पवित्र हो जाएं और यह रूढ़िवाद विचारों का समाप्त हो जाएं। एकोकी धर्मं ब्रह्मा एक मानव के इन्द्रियों में जो धर्म है, उसको विचार करके मानव को ग्रहण करना चाहिए, और राजा अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाएं तो यही राजा का कर्तव्य है। पुरातन काल में जब राष्ट्र का निर्माण हुआ, तो भगवान मनु ने सबसे प्रथम राष्ट्र का निर्माण करते हुए उन्होंने कहा कि राजा को चाहिए कि धर्म मानवीयता पद्धति में लाने का प्रयास करे इसीलिए राष्ट्र का जन्म होता है। राष्ट्र का जन्म इसीलिए नही होता कि धर्म की अवहेलना की जाएं और धर्म कहते किसे हैं, जो मानव की इन्द्रियों में समाहित रहता है। इन्द्रियों का दृष्टिपात करना ही वही धर्म है। उसको विचारना ही राष्ट्र का कर्तव्य है। और नाना प्रकार की रुढियाँ नही रहनी चाहिएं, यह रूढ़ियाँ राष्ट्र के लिए घातक हैं मानो समाज के लिए घातक है ,और यही मानो प्रदूषण को जन्म देती रहती हैं। तो आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ केवल यह कि मेरा अन्तरात्मा यज्ञमान के साथ रहता है। हे यज्ञमानतेरे ज !ीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, और तेरी मानवीयता अपने में पवित्रता को धारा करती रहे। आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने विज्ञान के वांगमय में प्रवेश हो करके और चित्रों का उन्होंने दर्शन कराया है हमें ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे शिकामकेतु उद्दालक मुनि की यज्ञशाला में हम विद्यमान हैं और अपने में अन्वेषण कर रहे हैं विचार-विनिमय कर रहे हैं। तो आज का विचार क्या कि यज्ञमान तेरा जीवन तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे गृह में जितना भी द्रव्य का सदुपयोग होता है। उतना गृह उन्नत बनता है, और गृह में जितना दुरूपयोग द्रव्य का हो जाता है सुरा में सुन्दरी में अव्रत हो जाता है तो वही त्याग जाता है, और राष्ट्र में गृह को ऊँचा न बना करके निचली स्थलियों पर ले जाता है। तो आज का विचारविशेष चर्चा न देता हुआ केवल यह कि राष्ट्र विनिमय क्या मैं-को ऊँचा बनना है। तो राजा को चाहिए कि रूढ़िवाद को नष्ट करने वाला हो, और अब एकोकी धर्म मानवीयता को जन्म देने वाला राजा होना चाहिए। जैसा भगवान मनु का अपना मन्तव्य रहा है। स्वर्गशचं ब्रह्वे वह स्वर्ग में लाने का समाज को प्रयास करे। भगवान राम की यह घोषणा रही क्या मेरे राष्ट्र में प्रत्येक गृह में याग और सुगन्धि होनी चाहिए। विचारों की सुगन्धि सबसे प्रथम उन्होंने स्थान दिया है, द्वितीय स्थान साकल्य की सुगन्धि के लिया दिया है। तृतीय स्थान संगतिकरण के लिए दिया है। तो हम एकत्रित हो करके अपने विचारविनिमय करते रहें - विचारों में महानताको लाने का प्रयास करें। तो आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊंगा। और आज्ञा पाने से पूर्व हे यज्ञमानतेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे गृह मे उन्नतं ब्रह्मा ! देवत्वां जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे तो यह आज का यह वाक्समाप्त अब वेदों का पठनपाठन मैं अपने - पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊंगा।

पूज्यपाद गुरुदेवः जी ने अपना मन्तव्य दिया इनके प्रति अभी मेरे प्यारे महानन्द-अभी !मेरे प्यारे ऋषिवर - राष्ट्र के प्रति इनके हृदय में कितनी दाह बनी रहती है इसीलिए राष्ट्र समाज राजा को महान बनना चाहिए और राजा के जीवन में अशुद्धियां नही होनी चाहिएं यह ब्रह्मज्ञान का स्रोत होना चाहिए। यह प्रायः देखो, मुझे मेरे प्यारे महानन्द जी के हृदय में यह दाहमयी शब्द हैं। वह द्रव्य के प्रति कितनी आभा वृत्तियां हैं। क्या द्रव्य का सदुपयोग हो मानव के जीवन में महानता वाणी का हो और जीवन अपने में परमपिता परमात्मा से सुगठित हो तो यह आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठनमनु रथं वाचन्नमाः म् देवाः आभ्यां३पाठन होगा। ओ-। ओ३म् रथं ब्रह्म वसु आभ्यां देवाः यम मयाः ओ३म् यशश्चाहं वाचन्नमाः।